॥०॥ श्रीगणे शायमः ॥०॥

श्री सर्वांग-दुर्गापूजा-पद्धति

विविधोपयोगि विषयोपेता

संग्रहीता :—

श्री माधोपुर वास्तव्य ज्योतिर्विद्

पं० नानगराम शर्मणः

प्रकाशक :—

मोतीलाल केजड़ीवाल

१५६, चित्तरंजन एवेन्यू,

कलकत्ता—७

वैक्रमाब्द ২০१६ — तृतीय संस्करणम् ११००

विषय-सूची

समर्पण

श्री जगदम्बाजी,

आपकी कल्याणगुणगरिमामयी अपार अनुकम्पा से प्राप्त असीम सुरभिसमन्वित नाना पुष्परूप विविध विधान समलङ्कृत "सर्वाङ्ग श्री दुर्गापूजा पद्धति" नामक पुष्पोपहार आप ही के वरद अरुणराग-परिपूरित कर-कमलों में सादर समर्पित है।

प्रणामेनैव सन्तुष्टाऽनुक्तानिष्टान् ददाति या।
कल्पनादायिनः श्रेष्ठा कथं कल्पतरोर्न सा॥

चरणचञ्चरीक :
मोतीलाल केजड़ीवाल

नम्र निवेदन

इस कराल कलिकाल में महामहिमाशालिनी पराम्बा भगवती की आराधना ही सम्पूर्ण कामनाओंको देनेवाली हैं। मेरे पूज्य पिता स्व०श्रीमान् बाबू कालूरामजी केजड़ीवाल की यह अमर अभिलाषा रही कि भगवती की सेवा में उनकी प्रशस्ति को विधि-विन्यासपूर्वक प्रस्तुत किया जाय। पितुःश्री के जीवन काल में यह सब केवल उनकी हार्दिक कामना व स्वप्न ही रहा। आज वह भगवती के पादपद्मों में तीसरी बार अधिक विकसित रूप में विद्वज्जनों को भेंट कर उन पुण्यात्मा पूर्वजों की अमिट अभिलषित दुर्गापूजन पद्धति का द्वितीय परिवर्द्धन किया हुआ संस्करण सभी सहृदय देवीभक्त विद्वद्वर्ग के कण्ठों का हार बने इस अभिलाषा से उपस्थित करता हूँ। पहले जो 'चण्डी हवन विशेष विधान' केवल दुर्गा सप्तशती के फलदायी मन्त्रों के वर्गीकरण और उन-उन मन्त्रों में अपेक्षित सामग्री से हवन का ही संक्षिप्त विधान था वही "श्री दुर्गापूजन पद्धति" के रूप में सम्वत् २०१४ में प्रवर्द्धित संस्करण २२५ पृष्ठों में छपा था। मेरे जैसे स्वल्प अर्जन करनेवाले व्यक्ति की स्व० पितृपाद की प्रेरणा ही उत्तरोत्तर इस महामहिम भगवती की सर्वतः प्रसृत कला को मानव जीवन में ग्राह्यी तनु बनाने के उद्देश्य में साकार रूप देने को सर्वसमर्थ हुई यह निर्विवाद है। विद्वद्वर्ग ने गत संस्करण में जो त्रुटियाँ मुझे बतलाईं उन्हें दूर करते हुए श्रीमाधोपुर (जयपुर—राजस्थान) निवासी ज्योतिर्विद् कर्मकाण्ड विशारद पण्डित नानगरामजी त्रिवेदी ने अपना अमूल्य समय ग्रन्थ के सम्पादन, सामग्री सङ्कलन एवं आवश्यक संशोधन-परिवर्द्धनादि में सदा की तरह योग दिया है। श्री पण्डितजी इस कार्य में इतना अधिक एकरस हुये हैं कि सभी सम्भावित त्रुटियों के लिये इस महान् अर्चन क्रियाकलाप के परम्पराप्राप्त विद्वद्वर्ग से उचित परामर्श लेकर उन्हें दूर कर नई योजना साजसज्जा से आप विद्वद्वर्ग के सेवार्थ अत्यधिक निर्दुष्ट संस्करण निकालने में उन्हें सफलता मिली।

पूर्व संस्करणों की उपयोगिता से बराबर मुझे पत्रों द्वारा अवगत किया जाता रहा जब पूर्व संस्करण समाप्त हो चुका तो यह नूतन संस्करण भगवती की कृपा से ३५० पृष्ठों में तैयार कर समादर पूर्वक लोगों की सेवा में उपहार योग्य बना है। इसमें सारी विधि शास्त्रीय विधान से दी गई है साथ ही सन्ध्या एवं गायत्रीजप का विधान इस सारी पद्धति का मूल है, यह समझ कर उसे यथास्थान दिया है। पूर्ण सन्ध्योपासना और १००८ गायत्री जप बिना भगवती का अर्चन-विधान अधूरा है। इसलिए त्रिकाल-सन्ध्या कर भगवती की आराधना सद्यः सिद्धिदात्री है। मेरी विद्वद्वर्ग से प्रार्थना है कि इस ग्रन्थ को अत्यधिक भगवती के पूजन में काममें लाकर दास की सेवा को सफल बनावें।

शिवचतुर्दशी २०१६वि०

कृपाभिलाषी :

मोतीलाल केजड़ीवाल

सम्पादकीय

श्री जगदम्बा की महती कृपा से आज "श्री दुर्गापूजन पद्धति" का नवीन संस्करण "सर्वाङ्ग श्री दुर्गापूजन पद्धति" नाम से पाठक-वृन्द के करकमलों में प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इसके प्रकाशन का उपक्रम तो "चण्डी हवन विशेष विधान" केवल ८ पृष्ठ की छोटी पुस्तिका रही जिसमें गौरी तिलक मण्डल पर ही देवी की पूजन के प्रचलन का मुख्य उद्देश्य था। कालक्रम से पाठक-वृन्द ने उस लघु पुस्तिका के सार को समझ उसे अतीव उपयोगी समझा और पुस्तिका की मांग बढ़ने लगी। जब सब संस्करण समाप्त हुआ तो इस ग्रन्थ प्रकाशन यज्ञ के यजमान श्री सेठ मोतीलालजी केजड़ीवाल ने इसे उपयोगी पूजन प्रकार और भगवती चण्डी के पाठ के क्रम को अविकल देने का प्रस्ताव रक्खा और नये संस्करण में वह सब यथाशक्ति पूरा करने का प्रयत्न भी हुआ। उस संस्करण को अतिशीघ्र विद्वद्वर्ग ने अपनाया और प्रस्तुत संस्करण में कई अत्यधिक उपयोगी विषयों का समावेश कर इसे सर्वजनहिताय लाभकारी बनाया गया है। माननीय पाठक इस "सर्वाङ्ग श्री दुर्गा-पूजन पद्धति" में प्रारम्भ से पूर्व संस्करण से बहुत अधिक सुनियोजित विषय पायेंगे, जैसे भूमिपूजा, कुण्डमण्डप क्षेत्रकालीन, वास्तुपूजा, स्तम्भादि पूजा, कुण्डमण्डप रचना और इनके साथ भगवती के कुछ संग्राह्य स्तोत्रों का भी सङ्कलन इस संस्करण में आप लोगों को मिलेगा, जो अवलोकन से सुस्पष्ट हो जायगा।

पूर्व संस्करण में जिन-जिन महानुभावों ने मुझे अपना अमूल्य सहयोग दिया उन्हें सधन्यवाद कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हुए प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशन में जिन विद्वानों का सहकार्य मिला है उन्हें हार्दिक सम्बर्द्धनासहित स्मरण करता हुआ भगवती भुवनेश्वरी से उनके इहलौकिक और पारलौकिक अभ्युत्थान की सतत कामना करता हूँ।

अन्त में श्री मोतीलालजी केजड़ीवाल और चिरञ्जीवी गिरधारी-लाल तथा चि० सन्तोष कुमार व उनके परिवार के सभी सदस्यवृन्द को शुभाशीर्वाद देता हुआ भगवती जगदम्बा से इस क्रियाशील भगवती-भक्त का मातृ-चरणों में अनुराग दिनानुदिन बढ़ता रहे यही प्रार्थना करता हूं। इसमें रही त्रुटियों को विद्वद्वर्ग सोधने की कृपा करें।

भवदीय :

नानगराम ज्योतिर्विद

श्री माधोपुर निवासी

॥ अथ श्वेतयवांकुरपूजाविधिः ॥

स्थिरलक्ष्मीप्रापिका श्वेतयवांकुरपूजा कात्यायनीतन्त्रे

शिव उवाच ॥ यवांकुरं प्रवक्ष्यामि श्वेतं सिद्धिकरं परम् । एतेन विधिना देवि ग्रहितव्यम् महास्तुतौ ॥ आश्विने शुक्लपक्षस्य अष्टमी नवमी दिने । तथैव चैत्रमासे वै गन्धपुष्पैः सदीपकैः ॥ श्वेतयवांकुरं गौरि पूर्वेद्यु रभिमन्त्रयेत् ॥ मन्त्रोयथा ॥ येनत्वामानयिष्यामि सर्वसिद्धिकरो भव ॥ इति । द्वितीये दिवसे—पुष्पं दीपंच नैवेद्यंच सदक्षिणाम् । एकीकृत्वातु संध्यायेत् महाश्वेतयवांकुरम् । तमर्चयेद्विधानेन वित्तशाठ्यविर्जितः । त्वं मया च विभूतिस्त्वं त्वमेव प्रकृतिःपुरा ॥ त्वमर्चनप्रयत्नेन सर्वसिद्धिकरोभव । इति प्रार्थयेत् ॥ ततः ऐं नमः श्वेतयवांकुराय यं ह्रीं ह्रूं ह्रं सः जूं स्वाहा इत्यनेन मन्त्रेण समुद्धरेदिति ॥ यवांकुरं समुद्धृत्य सुवर्णस्य शलाकया । संस्थाप्य स्वर्णमध्येतु धारयेत् दक्षिणेभुजे ॥ ह्रींदिवा धारयेद्धीमान् गृहे लक्ष्मीः स्थिराभवेत् । रिपुक्षयो भवेत्तस्य न रोगाः प्रभवंतिहि ॥ अष्टगन्धेन संपूज्य अष्टमीनवमीदिने ॥ राजद्वारे स मान्यः स्यात् सदा लक्ष्मीः स्थिरा भवेत् ॥ इति श्वेतयवांकुरपूजाविधिः ॥

॥ सिद्धान्तशेखरोक्तयवांकुरपरीक्षा ॥

यजमानाभिवृद्ध्यर्थमङ्कुराणि परीक्षयेत् । सम्यगूर्ध्वं प्ररूढानि कोमलानि सितानि च ॥ धूम्रवर्णान्यपूर्वाणि तथातिर्यग्गतानि च । श्यामलानि च कुब्जानि वर्जयेदशुभानि च ॥

॥ यवांकुर से फलज्ञान ॥

अवृष्टिं कुरुते कृष्णं धूम्राभं कलहं तथा । अपूर्णं जननाशं च दुर्भिक्षं श्यामलांकुरम् ॥ तिर्यग्गते भवेत् व्याधिः कुब्जे शत्रु भयं तथा ॥ अशुभे चांकुरेजाते शान्तिहोमं समाचरेत् ॥ मूलमन्त्रेणजुहुयात् गुरुमूर्तिधरैःसह ॥ अघोरास्त्रेण चास्त्रेण शतं वाथ सहस्रकम् ॥

॥ सारस्वतेऽपि ॥

प्ररूढैरंकुरै कर्तर्निर्दिशेत्र शुभाशुभम् ॥ श्यामैः कृष्णैरंकुरैरर्थहानिस्तिर्यग्रूढै व्याधिरांदोलितैस्तैः । कुब्जैर्दुःखं दुष्प्ररूढै मृतिंचरोगं भुग्नैः स्थानदेशोष्टहानिः ॥

॥ अथ सन्ध्याप्रयोगः ॥

वामे बहून् कुशान् दक्षिणे पाणौ सपवित्रं कुशत्रयञ्च धृत्वा सप्रणवगायत्र्या शिखां बद्ध्वा ऐशान्यभिमुख आचम्य प्राणायायम्य। ॐ अपवित्रः पवित्रोवेत्यस्य वामदेव ऋषिः। विष्णुर्देवता गायत्री छन्दः। हृदि पवित्रकरणे विनियोगः॥ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ इत्यात्मानं दर्भैर्जलेन संप्रोक्ष्य॥ ॐ पृथिवीत्यस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः। कूर्मो देवता। सुतलं छन्दः। आसने विनियोगः। ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ इति भूमिंप्रार्थयेत्। ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चा भीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥ समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरोअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतोवशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीं चांतरिक्षमथो स्वः॥

अथ संकल्पः॥ ॐ तत्सदद्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्त्तैकदेशे कुमारिकानामक्षेत्रे श्रीगंगायमुनयोरमुकदिग्भागे नर्मदाया उत्तरे श्रीबौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथावमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकदेवगुर्वादिशेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु एवं ग्रहगुणविशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलसिद्ध्यर्थ मम उपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थ प्रातः सन्ध्योपासनं करिष्य इति संकल्प्य वारिणात्मानं वेष्टयित्वा सप्रणवगायत्र्या रक्षां कुर्यात्।

ॐ कारस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लोवर्णः सर्व-कर्मारम्भे विनियोगः ॥ ॐ सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पंक्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि । अग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः । अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः ॥ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताऽग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः ॥ ॐ शिरसः प्रजापतिऋषिब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः यजुश्छन्दः प्राणायामे विनियोगः । इति ऋष्यादिकं स्मृत्वा । बद्धासनः सम्मीलितनयनो मौनी प्राणायामत्रय कुर्यात् । तत्र वायोरादानकाले पूरकनामा प्राणायामस्तत्र श्यामं चतुर्भुजं विष्णुं नाभौ ध्यायेत् । धारणकाले कुम्भकस्तत्र कमलासनं रक्तवर्णं ब्रह्माणं चतुर्मुखं हृदि ध्यायेत् । त्यागकालेरेचकस्तत्र श्वेतं त्रिनेत्रं शिवं ललाटदेशे ध्यायेत् । त्रिष्वप्येतेषु प्रत्येकं त्रिर्मन्त्राभ्यासः । प्रत्येकमोंकारादिसप्तव्याहृतयः ॥ ॐकारादिसावित्री ॐकारद्वयमध्यस्थः शिरश्चेति मंत्रस्तस्य स्वरूपम् ॥ "ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहि॥ धियो यो नःप्रचोदयात्॥ ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्" इति प्राणायामः॥ ॐ सूर्यश्चेति ब्रह्माऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्योदेवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥ ॐ सूर्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा इति प्रातराचामेत् ॥ (ॐ आपः पुनन्त्विति विष्णुऋषिरनुष्टुप्छन्द आपोदेवता अपामुपस्पर्शने विनियोग ।

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु मां पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु मां यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम ।। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसताञ्च प्रतिग्रहॅं स्वाहा ।। इति मध्यान्ह आचामेत्) ।। (ॐ अग्निश्चमेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।। "ॐ अग्निश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुंपतु यत्किंचिद्दुरितं मयि इदमहमाममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा" इति सायमाचामेत्) ।।

तत आपोहिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सप्तभिः पदैः शिरसि, अष्टमेन भूमौ, नवमेनापि शिरसि कुशत्रयेण जलं क्षिपेत् ।

ॐ आपोहिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिंधुद्वीप ऋषिर्गायत्रो छन्दः आपो देवता मार्ज्जने विनियोगः ।। ॐ आपोहिष्ठामयोभुवः । ॐ तानऽऊर्जेदधातन । ॐ महेरणायचक्षसे । ॐ योवः शिवतमोरसः । ॐ तस्य भाजयतेहनः । ॐ उशतीरिवमातरः । ॐ तस्माऽअरङ्गमामवः । ॐ यस्यक्षयाय जिन्वथ । ॐ आपोजनयथाचनः ।। इति मार्ज्जनम् ।।

ततः करे जलमादाय वारत्रयं द्रुपदां पठित्वा तज्जलं शिरसि क्षिपेत ।

ॐ द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिः । आपो देवता । अनुष्टुप्छन्दः । अघमर्षणे विनियोगः ।। ॐ द्रुपदादिवमुमुचानः स्विन्नः स्नातोमलादिव ।। पूतम्पवित्रेणवाज्ज्यमापः

ततः दक्षिण करे जलमादाय करस्थजलं नासायां संयोज्य आयातासुरनायतासुर्वा त्रिः सकृद्वाऽघमर्षणं जलंच स्ववामभागे क्षिपेत् ।

ॐ ऋतञ्च सत्यं चेति अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः ॥ ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवञ्च पृथिवीं चान्तरिक्षमथोस्वः ॥ ततः ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता आचमने विनियोगः । अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः । त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपोज्योती रसोमृतम् ॥

इति अनेनाचामेत् ॥ ततः अर्घ्यदानम् ॥ उत्थाय ॐ भूर्भुवः स्वरिति गायत्र्या पुष्पमिश्रं जलं सूर्याभिमुखो वारत्रयं प्रक्षिपेत् ॥ कालातिक्रमे सति ॐ आकृष्णेन इति मन्त्रेण चतुर्थार्घ्यं दद्यात् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिऋषिः । अग्निवायुसूर्या देवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि । ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः । सविता देवता । गायत्री छन्दः । अर्घ्यदाने विनियोगः ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः ॐतत्सवितु० ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः । इदमर्घ्यं दत्तं न मम असौ आदित्यो ब्रह्म ।

इत्यर्घ्यं दत्त्वा प्रातः सायं च कृताञ्जलिर्मध्यान्हे ऊर्ध्वबाहुः सूर्यं ध्यायन्नुपतिष्ठेत् एभिर्मन्त्रैः ॥

ॐ उद्वयन्तमित्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप्छन्दः ॥ सूर्यो देवता ॥ सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ उद्वयन्तमसस्परिस्वः पश्यन्तऽउत्तरम् ॥ देवन्देवत्रासूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम् ॥१॥ ॐ उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः ॥ सूर्यो देवता ॥

सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ उदुत्यञ्जातवेदसन्देवंवहन्ति-केतवः ॥ दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥ ॐ चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्यव्वरुणस्याग्नेः ॥ आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳसूर्यऽआत्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ ३ ॥ ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतिपुर उष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ तच्च-क्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शतꣳशृणुयामशरदः शतंप्रब्रवामशरदः शतमदीनाःस्यामशरदः शतं भूयश्चशरदः शतात् ॥

इत्युपस्थाय प्रदक्षिणीकृत्योपविश्य ॥ ततः अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां ॐ हृदयाय नमः ॥ ॐ भूः शिरसे स्वाहा ॥ ॐ भुवः शिखायै वषट् ॥ ॐ स्वः कवचाय हुम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वनेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ॥ इत्यंगानि त्रिरावर्त्य ॥ ॐ तत्पदं पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदम् ॥ वरेण्यं कटि-देशं तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥१॥ देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा ॥ धियो मे पातु जिह्वायां यः पदं पातु लोचने ॥२॥ ललाटे नः पदं पातु मूर्द्धानं मे प्रचोदयात् ॥ इति गायत्रीन्यासं च कुर्यात ॥ ततः ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता जपे विनियोगः ॥ ॐ त्रिर्व्याहृतीनां प्रजापतिऋ्षिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्या देवताः जपे विनियोगः ॥ ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः । गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः । इति ऋष्यादिकं स्मृत्वा ॥ ॐ मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखै-

स्त्रीक्षणैर्युक्तामिंदुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥ गायत्रीं वरदाभयांकुशकशां शूलं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविंदयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥१॥ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता ॥ आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोक गताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगताशुभा ॥ इति गायत्रीं ध्यायेत् ॥ ततः ॐ तेजोसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्री छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ तेजोऽसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामासिप्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि ॥ इति गायत्रीमावाह्य ॐ तुरीयस्य विमल ऋषिः परमात्मा देवता गायत्री छन्दः गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि न हि पद्यसे। नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदोम् ॥

इत्युपस्थाय प्रातः प्राङ्मुखो मध्यान्हे सूर्याभिमुखस्तिष्ठन् सायं पश्चिमाभिमुख उपविष्ट उक्तविधिना सहस्रं शतं वा गायत्रीं जपेत् ॥

जप्यस्वरूपं यथा ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

ततो जपांते कवचं पठित्वा देवागात्विति पठेत् ॥ ततः प्रदक्षिणीकृत्य प्रणिपत्य विसर्जयेत्। इति सन्ध्याप्रयोगः ॥

ब्रह्मशापविमोचन

विनयोगः—ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्यब्रह्मा ऋषिः भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता गायत्रीछन्दः ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः ॥ मन्त्र—ॐ गायत्री ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः। तां पश्यन्ति धीराः सुमनसा वाचामग्रतः। ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्। ॐ देवि गायत्रि। त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥

वशिष्ठ-शापविमोचन

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीवशिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्त्ता वसिष्ठ ऋषिः वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥ मन्त्र—ॐ सोऽहंकर्ममयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम् ।' इत्युक्त्वा योनिमुद्रां प्रदर्श्य गायत्रीत्रयं पठित्वा' (योनिमुद्रा दिखा ३ बार गायत्री जपें) ॐ देवि गायत्रि ! त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव।

विश्वामित्रशापविमोचन

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्त्ता विश्वामित्र ऋषिः विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्रशाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥ मन्त्र ॥ ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवा। देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये । यन्मुखान्निःसृतोऽखिलवेदगर्भः ॥ शापयुक्ता तु गायत्री सफला न कदाचन । शापादुत्तारिता सा तु भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥ ॐ देवि । गायत्रि । त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ॥ प्रार्थना—ॐ अहो देवि ! महादेवि सन्ध्ये ! विद्ये ! सरस्वति !। अजरे ! अमरे ! चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तुते । ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥ वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव ॥ विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ॥

प्रातःकाले ब्रह्मरूपा गायत्री ध्यानम्

ॐ बालां विद्यान्तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम् । रक्ताम्बर-

द्वयोपेतामक्षसूत्रकरां तथा ॥ कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहन-संस्थिताम्। ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम् । मन्त्रे-णावाहयेद्देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात् ॥

गायत्री हृदय

ॐ अस्य श्रीगायत्रीहृदयस्य नारायण ऋषिर्गायत्री छन्दः परमेश्वरी गायत्री देवता गायत्रीहृदय जपे विनियोगः ॥ अथाङ्गन्यासः ॥ द्यौर्मूर्ध्नि दैवतम् । दन्तपंक्तावश्विनौ । उभे सन्ध्ये चोष्ठौ ॥ मुखमग्निः जिह्वा सरस्वती । ग्रीवायां तु बृहस्पतिः । स्तनयोर्वसवोऽष्ठौ । बाह्वोर्मरुतः । हृदये पर्जन्यः । आकाशमुदरम् । नाभावन्तरिक्षम् । कट्योरिन्द्राग्नी । जघने विद्यानघनः प्रजापतिः कैलाशमलये उरः । विश्वेदेवा जान्वोः । जंघायां कौशिकः । गुह्ममयने । उरू पितरः । पादौ पृथ्वी । वनस्पतयोऽङ्गुलिषु ऋषयो रोमाणि । नखानि मुहू-र्तानि । अस्थिषु ग्रहाः । असृङ्मांसम् ऋतवः । संवत्सरा वै निमिषम् । अहोरात्रावादित्यश्चन्द्रमाः। प्रवरां दिव्यां गायत्री सहस्रनेत्रां शरणमहं प्रपद्ये । ॐ तत्सवितुर्वरेण्याय नमः । ॐ तत्पूर्वा जयाय नमः । तत्प्रातरादित्याय नमः । तत्प्रातरदित्य-प्रतिष्ठायै नमः । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातरधीया-नोऽपापोभवति । सर्वतीर्थेु स्नातो भवति । सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति । अवाच्यवचनात्पूतोभवति । अभक्ष्यभक्षणात्पूतो भवति । अभोज्यभोजनात्पूतो भवति । अचोष्यचोषणात्पूतो भवति । असाध्यसाधनात्पूतो भवति । दुष्प्रतिग्रहशतसहस्रात्पूतो भवति । सर्वप्रतिग्रहात्पूतो भवति । पंक्तिदूषणात्पूतो भवति । अनृतवचनात्पूतो भवति । अथाऽब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति । अनेन हृदयेनाधीतेन क्रतुसहस्रेणेष्टं भवति । षष्टिशतसहस्र-गायत्र्या जाप्यानि फलानि भवन्ति । अष्टौ ब्राह्मणान् सम्य-

ग्राहयेत् । तस्य सिद्धिर्भवति । य इदं नित्यमधीयानोब्राह्मणः प्रातः शुचिः सर्वपापैः प्रमुच्यत इति ॥ ब्रह्मलोकेमहीयते ॥ इत्याह भगवान् श्रीनारायणः ॥ भागवतम् ॥

जप के पूर्व की
२४ मुद्रायें

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा । द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्च-मुखं तथा ॥ षण्मुखाऽधो-मुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा। शकटं यमपाशं च ग्रन्थितं चोन्मुखोन्मुखम्॥ प्रलम्बं मुष्टिकंचैव मत्स्यः कूर्मोवराहकम् । सिंहा-क्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा। एता मुद्रा-श्चतुर्विंशज्जपादौ परि-कीर्तिताः ॥

चित्र देखकर मुद्रा करें।
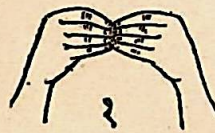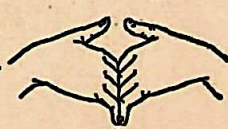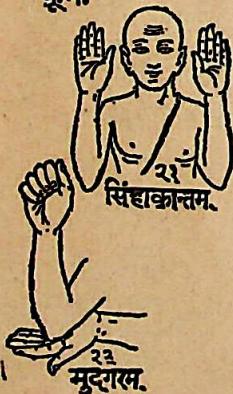
जप के बाद की आठ मुद्रा

सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिः शंखोऽथ पङ्कजम् ।
लिङ्गं निर्वाणमुद्राश्च जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत् ॥

नीचे लिखे अनुसार चित्र देखकर मुद्रा करें।

गायत्री कवच

ॐ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीश्छन्दो गायत्री देवता ॐ भूः बीजम् भुवः शक्तिः स्वः कीलकम् गायत्री प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम् ॥ पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्यकोटिसमप्रभाम् । सावित्रीं ब्रह्मवरदां चन्द्रकोटिसुशीत-लाम् । त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहारविराजिताम् । वरा-भयांकुशकशाहेमपात्राक्षमालिकाः ॥ शङ्खचक्राब्जयुगलं कराभ्यां दधतीं पराम् । सितपङ्कजसंस्थां च हंसारूढां सुखस्थिताम् । ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गायत्रीकवचं जपेत् ॥ ॐ ब्रह्मोवाच ॥ विश्वामित्र महाप्राज्ञ गायत्रीकवचं शृणु । यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत्क्षणात् ॥१॥ सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी । ललाटं ब्रह्मदैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी ॥२॥ कर्णौ मे पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बिके । गायत्रीवदनं पातु शारदा दशनच्छदौ ॥ ३ ॥ द्विजान् यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती । सांख्यायनी नासिका मे कपोलौ चन्द्रहासिनी ॥४॥ चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघनाशिनी । स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवादिनी ॥५॥ उदरं विश्व-भोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया । जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी ॥६॥ पार्श्वौ मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गोगोप्त्रि-काऽवतु । ऊर्वोरोंकाररूपा च जान्वोः सन्ध्यात्मिकाऽवतु ॥७॥ जंघयोः पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका । सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रा पादांगुलीषु च ॥८॥ सर्वाङ्गं वेदजननी पातु मे

सर्वदाऽनघा। इत्येतत् कवचं ब्रह्मन् गायत्र्याः सर्वपावनम्। पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्वरोगनिवारणम् ॥९॥ त्रिसन्ध्यं यः पठे-द्विद्वान् सर्वान् कामानवाप्नुयात्। सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञः स भवे-द्वदवित्तमः ॥१०॥ सर्वयज्ञफलं प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात् प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थांश्चतुर्विधान् ॥११॥

॥ श्रीविश्वामित्रसंहितोक्तं कवचं सम्पूर्णम् ॥

गायत्री तर्पण (केवल प्रातः सन्ध्या में करें)

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः सविताः देवता गायत्री छन्दः गायत्री तर्पणे विनियोगः॥ ॐ भूः ऋग्वेदपुरुषं तर्पयामि। ॐ भुवः यजुर्वेदपुरुषं त०। ॐ स्वः सामवेदपुरुषं त०। ॐ महः अथर्ववेदपुरुषं त०। ॐ जनः इतिहासपुराणपुरुषं त०। ॐ तपः सर्वाङ्ग पुरुषं त०। ॐ सत्यं सत्यलोकपुरुषं त०। ॐ भूः भूर्लोकपुरुषं त०। ॐ भुवः भुवर्लोकपुरुषं त०। ॐ स्वः स्वर्लोकपुरुषं त०। ॐ भूः एकपदां गायत्रीं त०। ॐ भुवः द्विपदां गायत्रीं त०। ॐ स्वः त्रिपदां गायत्री त०। ॐभूर्भुवः स्वः चतुष्पदां गायत्री त०। ॐ उपसीं त०। ॐ गायत्रीं त०। ॐ सावित्रीं त०। ॐ सरस्वतीं त०। ॐ वेद-मातरं त०। ॐ पृथिवीं त०। ॐ अजां त०। ॐ कौशिकीं त०। ॐ सांकृतिं त०। ॐ सर्दजितां त०॥

ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु॥ (देवीभागवतम्)॥

श्रीसर्वाङ्गदुर्गापूजनपद्धतिः

श्रीत्रिगुणात्मिकायै महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती
स्वरूपायै जगदम्बिकायै नमः

श्रीवत्स
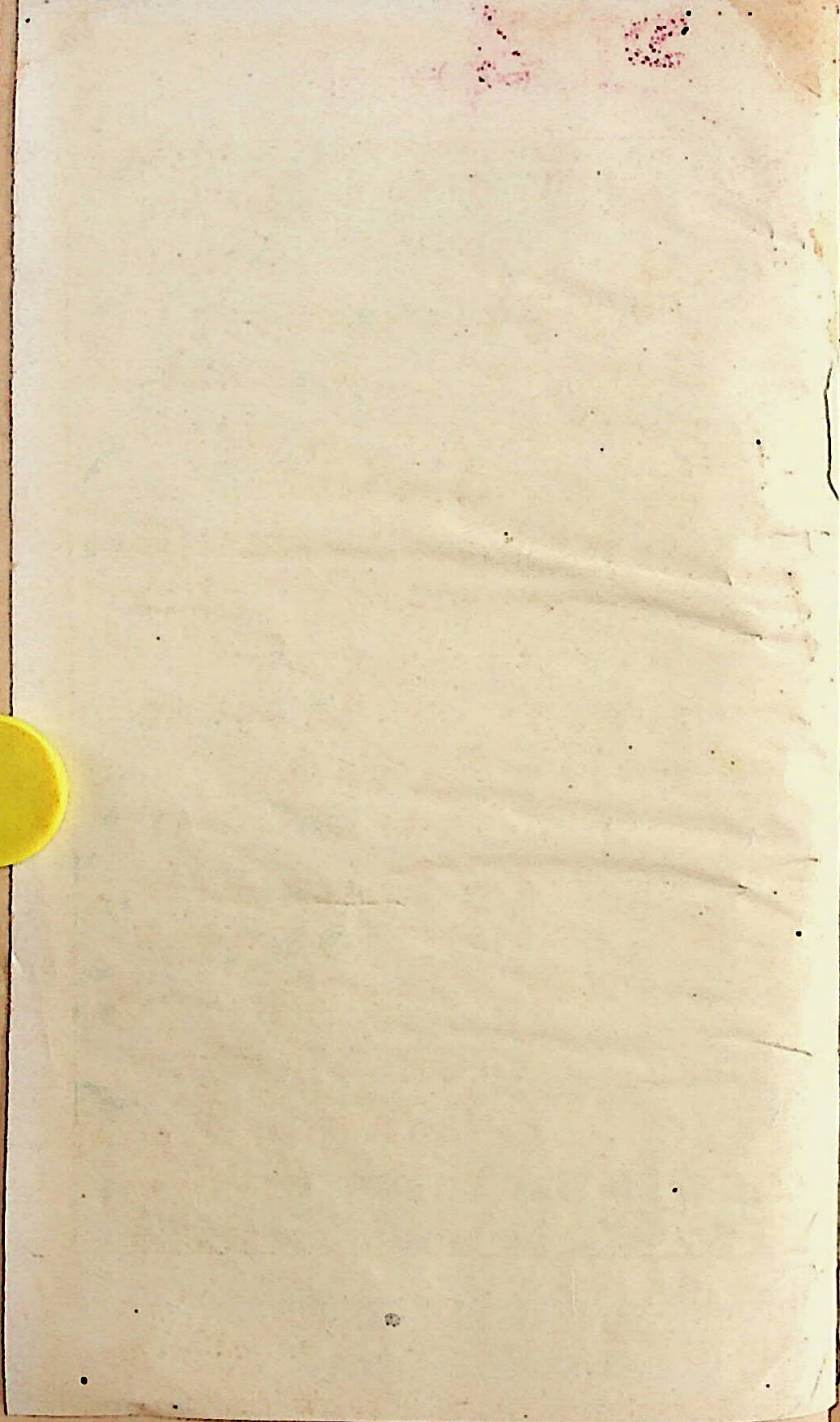
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथेयमारभ्यते

सर्वाङ्ग-दुर्गापूजा-पद्धतिः

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

ज्ञानेन्द्रं विघ्नहर्तारं ऋद्धिसिद्धिसमन्वितम् ।
शिवाय बुद्धिदातारं भजेऽहं गिरिजासुतम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

यस्या दक्षिणभागके दशभुजा काली करालास्थिता ।
यद्वामे च सरस्वती वसुभुजा भाति - प्रसन्नानना ॥
यत्पृष्ठे मिथुनत्रयं च पुरतो यस्या हरिः सैरिभ-
स्तामष्टादशबाहुमम्बजगतां लक्ष्मीं स्मरेन्मध्यगाम् ॥
उद्यद्भानुसहस्रकोटिसदृशां केयूरहारोज्ज्वलां ।
विम्बोष्ठीं स्मितदन्तपंङ्क्तिरुचिरां चित्राम्बरालंकृताम् ॥
विष्णुब्रह्मसुरेन्द्रसेवितपदां तत्त्वस्वरूपां शिवाम् ।
श्रीचण्डीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं कारुण्यवारांनिधिम् ॥२॥

पूर्वदिने कृतनियमः पूजादिने पूर्वाह्णे पुष्पतैलादिना कृत-मङ्गलस्नानः नववाससी परिधाय संक्षेपेण नित्यक्रियां सम्पाद्य ऊर्ध्वपुण्ड्रं त्रिपुण्ड्रं वा कृत्वा पूर्वाभिमुखः उत्तराभिमुखो वा कुशत्रयं पवित्रञ्च करे धृत्वा गङ्गाजलमादाय ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा । यः स्मरेत्पुण्डरी-काक्षं स बाह्याऽभ्यन्तरः शुचिः ॥ ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ

सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यर श्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेत्तच्छकेयम् ॥
आभ्यामात्मानमभिषिच्य मूलमन्त्रेणाचामयेत्[1]।
ॐ मूलम् आत्मतत्त्वाय स्वाहा। ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहा।
ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा। इति मन्त्रत्रयेण त्रिराचामेत्। ततः
श्रोत्रवन्दनं कुर्यात् तद्यथा दक्षिणा नाऽमिकाङ्गुष्ठाभ्यां
सप्तस्थानानिनेत्रद्वयकर्णद्वयनासिकाद्वयमुखनाभिहृदयानि स्कन्ध-
द्वयं च स्पृष्ट्वा पञ्चांगुलिभिः शिरः स्पृष्ट्वा जलेन हस्तद्वयं
प्रक्षालयेत्। इति

प्राणायामः

मूलमन्त्रेण प्रथमं षोडशवारं जपन् दक्षिणाङ्गुष्ठेन दक्षिण-
नासापुटं निरुध्य प्राणवायुमुपरि नीत्वा पुनः अनामिका कनि-
ष्ठिकाभ्यां द्वितीयमपि नासापुटं निरुध्य चतुःषष्टिसंज्ञकं
मूलं जप्त्वा कुम्भकं कुर्यात्। ततश्च मुक्तदक्षिणनासापुटो
द्वात्रिंशद्वारं जपन् रेचयेत्। अशक्तौ चतुः षोडशाष्टवारंवा
जपन् क्रमेण पूरक कुम्भक रेचकानि कुर्यात्।

---

[1]अत्र मूलशब्देन इष्टदेवतायाः योमन्त्रः स तन्त्रेमूलमन्त्रेणोच्यते।
येन मन्त्रग्रहणं न कृतं तस्य प्रणवः ॐकारः प्रणवोऽथवा
ह्रीं इति तांत्रिक प्रणवो वा बोध्यः। सर्वत्र मूलमन्त्रस्थाने
इदं ज्ञेयम्।

[2]टिप्पणीः

(प्रक्षाल्यादौ पाणिपादं शिखांबद्ध्वाऽचमेत् द्विजः। स्वस्वशाखोक्त
मथवा पौराणं सर्वतश्चरेत्। केशवाद्यै स्त्रिभिः पीत्वा द्वाभ्यां

सूर्यायार्घदानम्

ताम्रपात्रे जलतिलाक्षतं चन्दनरक्तपुष्पादीन्यादाय पूर्वाभिमुखः ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे जगत्—सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने एषाऽर्घः ॐ भगवते श्री सूर्यनारायणाय नमः। पुनस्तथैव सर्वाणि वस्तून्यादाय ॐ एहिसूर्य! सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पयमाम्भक्त्या गृहाणार्घं दिवाकर एषोऽर्घः ॐ भगवते श्री सूर्यनारायणाय नमः। पुनः तथैवसर्वाणि वस्तून्यादाय ॐ आकृष्णेनरजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवोयाति भुवनानि पश्यन्। एषोर्घ्यः ॐ भगवते श्री सूर्यनारायणाय नमः ॥

॥ शान्ति पाठः ॥

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनांन्त्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।

प्रक्षालयेत् करौ। द्वाभ्यामोष्ठौतु संस्पृश्य द्वाभ्यामुन्मार्जनंतथा एकेन हस्तं प्रक्षाल्य पादावपि तथैकतः। संप्रोक्ष्यैकेन मूर्द्धानं ततः संकर्षणादिभिः। आस्यनासाक्षिकर्णांश्च नाभिवक्षः शिरोंऽसकान्। अङ्गुष्ठेन प्रदेशिन्या घ्राणं तत उपस्पृशेत्। अङ्गुष्ठाऽनामिकाभ्यांच चक्षुःश्रोत्रे पुनःपुनः। कनिष्ठाङ्गुष्ठयोर्नाभिं हृदयन्तु तलेन वै। सर्वाभिस्तु शिरःपश्चाद् बाहूचाग्रेण संस्पृशेत्।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ।
विष्णोररराटमसिविष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णाः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ।
अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमादेवता वसवोदेवता रुद्रदेवता दित्यादेवता मरुतोदेवता विश्वेदेवादेवता वृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता वरुणोदेवता ।

ॐआनोभद्राः क्रतवो यन्तुविश्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः॥ देवानोयथा सदमिद्वृधेऽअसन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥१॥ देवानाम्भद्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवानाᳬरातिरभिनोनिवर्तताम् ॥ देवानाᳬ सख्यमुपसेदिमा व्वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥ तान् पूर्व्वयानिविदाहूमहेव्वयं भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम् ॥ अर्यमणम्वरुणᳬ सोममश्विना सरस्वतीनः सुभगामयस्करत् ॥३॥ तन्नो व्वातो मयोभुवातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिताद्यौः । तद्ग्रावाणः सोमसुतोमयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या युवम् ॥४॥ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहेव्वयम् । पूषानो यथा व्वेदसामसद्वृद्धे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥ स्वस्तिनऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु ॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंय्यावानो व्विदथेषुजग्मयः ॥ अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह ॥७॥ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्ष-

भिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬं सस्तनूभिर्व्यशे महिदेव-
हितंयदायुः ॥८॥ शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्रा-
जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानोमध्यारीरिष-
तायुर्गन्तोः ॥९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता-
सपितासपुत्रः। विश्वेदेवाऽदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्जातमदि-
तिर्ज्जनित्वम् ॥ १० ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳬं शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः
शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वᳬं शान्तिः शान्ति-
रेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥११॥ यतोयतः समीहसे
ततोनोअभयंकुरु शन्नः कुरु प्रजाभ्याऽभयन्नः पशुभ्यः ॥१२॥
विश्वानिदेवसवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रन्तन्न आसुव।
एतन्तेदेव सवितुर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमवतेनयज्ञ
पतिन्तेन मामव।

मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञᳬं
समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इहमादयन्तामो३म् प्रतिष्ठ।
एष व प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठि-
तम्भवति। ॐ शान्तिः सुशान्तिः सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ॥

अथ संकल्पः

ॐविष्णुःविष्णुः विष्णुः। श्रीपरमात्मनः पुराणपुरुषोत्तमस्य श्री
विष्णाराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयप्रहरार्द्धे श्रीश्वेत
वाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे
कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत

ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुकनक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुकामुकराशिस्थिते रव्यादि ग्रहस्थितवेलायामममुक गोत्रोत्पन्नोऽमुक शर्म्माऽहं (यजमानस्य वा) जन्म ग्रहाणां मध्ये वर्ष ग्रहाणां मध्ये गोचर ग्रहाणां मध्ये चतुर्थ - अष्टम - द्वादशस्थानस्थितसूर्यादिक्रूर ग्रहास्तः सूचितं सूचयिष्यमाणं पिशाचापद्रवादि यत् सर्वारिष्टं तन्निवृत्तिपूर्वकं एकादश स्थान स्थितवत् शुभफलप्राप्त्यर्थं विंशोत्तरी अष्टोत्तरी योगिनी मुग्धादिदशा अन्तरदशा सूक्ष्मान्तरदशा जनितारिष्ट ज्वरदाह पीड़ा नेत्रकर्णोदरादि-पीड़ानिवृत्तिपूर्वकं अल्पायुनिवृत्तिपूर्वकश्चाधिदैविकाधिभौतिकाध्यात्मिकादिजनितक्लेश कायिक वाचिक मानसिक त्रिविधाघौघनिवृत्तिपूर्वकं शरीरारोग्यं परमैश्वर्यादिप्राप्त्यर्थं अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्मीं चिरकालसंरक्षणार्थं सकलकामना सिद्ध्यर्थं सर्वत्र यशो विजयलाभादि प्राप्त्यर्थं पुत्र पौत्रादिसंततेरविच्छिन्नवृद्ध्यर्थं आधिदैविक - आधिभौतिक आध्यात्मिक त्रिविधतापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विध-पुरुषार्थसिद्ध्यर्थं क्षेमायुःसकलैश्वर्यसिद्धिप्राप्त्यर्थां अद्य शारदीय (अथवा वासन्तीय) नवरात्रौ प्रतिपदि विहितं कलशस्थापनं दुर्गापूजां (चण्डी सप्तशती पाठं) कुमारी पूजाद्युत्सवाख्यं कर्म करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गौरीगणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं चण्डी-सप्तशती जपाद्यर्थं ब्राह्मणवरणं च करिष्ये।

॥ अथ कलशार्चनम् ॥

ततः स्ववामभागे कर्मार्थजलपूरितं कलशं संस्थाप्य ततः

पूजनं कुर्यात् । ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्भिः ॥ अहेड़मानोवरुणेहवोध्युरूशꣳ समान आयुः प्रमोषीः॥ॐभूर्भुवः स्वः अपां पतये वरुणाय नमः आवाहनं समर्पयामि । ॐ भूर्भुवः स्वः अपां पतये वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । इति संपूज्याभिमन्त्रयेत् । ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥१॥ कुक्षौतुसागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग् वेदोऽथयजुर्वेदः सामवेदोह्यथवऽणः ॥२॥ अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशंतु समाश्रिताः ॥ इत्याद्यभिमंत्र्य गंगाद्यावाहनम् ॥ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिंकुरु ॥१॥ अस्मिन् कलशे सर्वाणितीर्थाण्यावाहयामि पूजयामि नमस्करोमीत्यावाह्य कलशस्यमुखेविष्णुरित्यादिप्रार्थयेत् ॥ ततः कलशोदकेन संभारान् स्वात्मानं च दूर्वाभिः संप्रोक्षयेत् ॥ ॐ आपोहिष्टामयोभुवस्तानउर्जेदधातन ॥ महे रणायचक्षसे ॥१॥ योवः ॥२॥ तस्माअरं ॥३॥
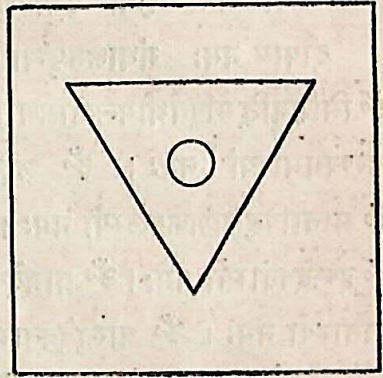
दीप पूजन पञ्चोपचार से करें

(प्रार्थना)

भो दीप त्वं ब्रह्मरूप, अन्धकारनिवारक ।
इमां मया कृतां पूजां गृह्णस्तेजः प्रवर्द्धय ॥
दीपाय नमः गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ सिद्धिबुद्धिसहितश्रीमन्महागणाधिपतये नमः । ॐ वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः । ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः । ॐ कुलदेवताभ्यो नमः । ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः । ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः । ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः । ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो-देवेभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । ॐसर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः । ॐ एतत्कर्मप्रधानश्रीदुर्गादेव्यैनमः । ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु । वामे गुँ गुरुभ्यो नमः । दक्षिणे भं भद्रकाल्यै नमः । ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्तदहनो-पम । भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि ।

अथ गौरीगणपतिपूजनम्

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ॥
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥१॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ॥
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ॥
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥३॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥

प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वं विघ्नोपशान्तये ॥४॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ॥
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥५॥
सर्वमंङ्गल मांङ्गल्ये शिवे सवार्थसाधिके ॥
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥६॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ॥
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः ॥७॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ॥
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥८॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरान् ॥
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥९॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ॥
देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥१०॥
वक्रतुण्ड ! महाकाय ! सूर्यकोटिसमप्रभ ! ॥
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥११॥

हस्ते पुष्पाण्यादाय—ध्यानम्

श्वेताङ्ग श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः,
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरतरुविमले रत्नसिंहासनस्थम् ॥
दोर्भिःपाशांकुशेष्टाभयधृतिशिवदंचन्द्रमौलिं त्रिनेत्रम्,
ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम् ॥१२॥
हे हेरम्ब ! त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज ! ॥
सिद्धिबुद्धिप्रद त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः ॥१३॥
नागस्य नागहारत्वं गणराज चतुर्भुजः ॥

भूषितःस्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुशपरश्वधैः ॥१४॥
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः ॥
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां क्रतुञ्च रक्ष मे ॥१५॥

इति अभ्यर्थ्य ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम आहमजानि गर्भधमात्वमजासिगर्भधम् । ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि इत्यावाह्य तदुत्तरतोऽम्बिकां स्थापयेत् । ॐ हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् । ॐ गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि । ॐमनोजूतिर्जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु विश्वेदेवा सइह मादयन्तामो३म् प्रतिष्ठ । ततोऽक्षतान् गृहीत्वा ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥ ॐ गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम् । विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरण संयुतम् । स्वर्णसिंहासनंचारु गृह्णीष्वसुरपूजित ॥ ॐ पुरुष एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम् । उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि । ततः पाद्यं । ॐ सर्वतीर्थ समुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम् । विघ्नराज गृहाणेदं भगवन् भक्तवत्सल । ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च

पुरुषः। पादोऽस्यविश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। ततोऽर्घ्यम्। गणाध्यक्षनमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर। अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्। ॐ त्रिपादूर्ध्वमुदैत् पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः। ततोविष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेअभि। ॐ गणेशाम्बिकाभ्याम् हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। ततो आचमनीयम्। विनायकनमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित। गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो। ॐ ततोविराडजायत-विराजो अधिपूरुषः। सजातोअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो-पुरः। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां अर्घ्याङ्गमाचमनीयम् समर्प-यामि। ततो स्नानीयम्। मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्याग्राम्याश्चये। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां स्नानीयं समर्पयामि। स्नानान्ते पुनराचमनीयं समर्पयामि। ततः पयः स्नानम्। ॐ पयः पृथिव्याम्पयओषधीषु पयोदिव्यन्त-रिक्षेपयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्। ॐ गणेशा-म्बिकाभ्यां पयः स्नानं समर्पयामि। ततो दधिस्नानम्। ॐ दधिक्राव्णो अकारिषञ्जिष्णोरश्वस्यवाजिनः। सुरभिनो-मुखाकरत्प्रणआयूंषितारिषत्। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां दधि-स्नानं समर्पयामि। ततो घृतस्नानम्। ॐ घृतम्मिमिक्षेघृत-मस्ययोनिर्घृते श्रितोघृतम्वस्यधामा अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतम्वृषभवक्षिहव्यम्। ॐगणेशाम्बिकाभ्यां घृतस्नानं सम-

र्पयामि । ततो मधुस्नानम् । ॐ मधुवाताऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः मधुद्यौरस्तुनः पिता मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्य्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः । ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां मधुस्नानं समर्पयामि। ततो शर्करास्नानं। ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳसूर्येसन्तꣳ समाहितम्। अपाꣳ रसस्येयोरसस्तम्वोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णाम्येषतेयो निरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् । ततः पञ्चामृत स्नानम् । ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां शर्करास्नानं समर्पयामि । पयोदधि घृतंचैव मधुशर्करायुतम्। पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ पञ्चनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वतीतु पञ्चधा सोदेशेऽभवत्स रित्। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। ततः शुद्धोदकस्नानम्। ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तान ऊर्ज्जेदधातनमहेरणायचक्षसे। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते आचमनीयम् समर्पयामि। ततो वस्त्रम्। युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान्भवति जायमानः तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः। ॐ सुजातो ज्योतिषा सहशर्म्म वरुथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपः संव्ययस्व विभावसो। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि। ततः उपवस्त्रम्। शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जायारक्षणं परम्। देहालङ्करणंवस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचम-

नीयम् समर्पयामि। १। ततो यज्ञोपवीतम्। यन्नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपनीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर। यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः। यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि। ॐ गणेशाय यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि। ततश्चन्दनम्। श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्। ॐ त्वाङ्गन्धर्वा अखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वा-म्बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां चन्दनं समर्पयामि। ततोऽक्षतानि। ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी। ॐ गणेशाम्बिका-भ्यामक्षतानि समर्पयामि। ततो पुष्पं पुष्पमालाञ्च। माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं स्वीकुरु प्रभो। ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्प-वतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां पुष्पं समर्पयामि। पुनः आभ्याम् माल्यं दद्यात्। ततो दूर्वादलानि। दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान-मृतान्मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक। ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च। ॐ गणेशाय दुर्वाङ्कुरान् समर्प-यामि। ततोऽबीरम्। नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्। अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्। ॐ अहिरिव भोगैः

पर्य्येतिबाहुज्ज्यायाहेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नोविश्वावयुनानि विद्वान्पुमान्पुमां सम्परिपातु विश्वतः। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यांमवीरं समर्पयामि। ततः सिन्दूरम्। सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्। शुभदं कामदञ्चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्। ॐ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेशूघनासो वातप्रमियः पतयन्तियह्वाः। घृतस्यधारा अरुषोनवाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां सिन्दूरं समर्पयामि। ततोधूपम्। वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्। ॐ धूरसिधूर्वधूर्वन्तन्धूर्वन्तयोऽस्मान्धूर्वति तन्धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसिवह्नितमᳬसस्नितमम्पप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम्। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां धूपं समर्पयामि ततोदीपम्। साज्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निनायोजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्। भक्त्यादीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। त्राहि मां निरयाद्घोराद्दीपज्योतिर्नमोस्तुते। ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चोज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा सूर्योवर्च्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां दीपं समर्पयामि। ततो नैवेद्यम्। नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्ति मे ह्यचलां कुरु। ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परांगतिम्। शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च। आहारंभक्ष्यभोज्यञ्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्। ॐ अन्नस्य नो देह्यनमीवस्यशुष्मिणः। प्रप्रदातारन्तारिष ऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदे चतुष्पदे। ॐ प्राणाय स्वाहा

(१) ॐ अपानाय स्वाहा (२) व्यानाय स्वाहा (३) ॐ समानाय स्वाहा (४) ॐ उदानाय स्वाहा (५) ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयम् समर्पयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि। ततो गन्धम्। चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्तिम्। करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर। ॐ अंशुनाते अंशुः पृच्यतां परुषापरुः। गन्धस्तेसोममवतुमदायरसो अच्युतः। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां करोद्वर्तनार्थं गन्धानुलेपनं समर्पयामि। ततो ताम्बूलम्। पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्। ॐ याः फलनिर्याअफलाअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वं हसः। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलं समर्पयामि। ततो ऋतुफलम्। इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि। ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मइध्मः शरद्धविः। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां ऋतुफलं समर्पयामि। ततो दक्षिणा। हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे। ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेकआसीत्। स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमांकस्मै देवायहविषाविधेम। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां कृतायाः पूजायाः दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि। ततो पुष्पाञ्जलिः। नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मयादत्तो गृहाण परमेश्वर। ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमानः सचन्त-

यत्रपूर्वेसाध्याः सन्ति देवाः । ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि । ततः प्रार्थना ---

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय शितिकण्ठविभूषिताय,
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥१॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ॥
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्नवरदाय नमोनमस्ते ॥२॥
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति-
भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति ॥
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति-
तेभ्यो गणेश वरदो भवनित्यमेव ॥३॥

कृतेनानेन पूजनेन गणेशाम्बिके प्रीयेतां नमम । इति गौरी-गणपति पूजनम् ।

॥ पुण्याह वाचनम् ॥

सम्पूज्यगंधमाल्याद्यैर्ब्राह्मणान्स्वस्तिवाचयेत् ॥ धर्म्मकर्मणिमांगल्ये संग्रामेऽद्भुतदर्शने ॥१॥ पुण्याहवाचनं दैवं ब्राह्मणस्य विधीयते ॥ एतदेवनिरांकारं कुर्य्यात्क्षत्रियवश्ययोः ॥२॥ अवनिकृत जानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमं जलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन

पाणिना सुवर्णपूर्णकलशं धारयित्वा दीर्घानागानद्योगिरय-
स्त्रीणि विष्णुपदानि च तेनायुः प्रमाणेनपुण्याहंदीर्घमायुरस्तु ॥
अपां मध्येस्थितादेवाः सर्वमप्सुप्रतिष्ठितम्। ब्राह्मणानांकरेन्य-
स्ताः शिवाआपोभवन्तुताः ॥१॥ शिवाआपः सन्तु॥ लक्ष्मीर्वसति
पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसतिपुष्करे ॥ सा मे वसतुवै नित्यं सौमनस्यं
तथास्तु नः ॥१॥ सौमनस्यमस्तु ॥ अक्षतंचास्तुमेपुण्यं दीर्घमा-
युर्यशोबलम् ॥ यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तुसदा मम ॥१॥
अक्षतं चारिष्टं चास्तु ॥ ब्राह्मणानांहस्तेगंधादिदत्त्वा ॥ गंधः
प्रदेयोदेवानामपत्यपुष्टिदश्चनः॥ गंध द्वारां दुराधर्षामितिमंत्रेण-
भक्तितः ॥१॥ गन्धाः पान्तुसौमंगल्यं चास्तु ॥ पुष्पाणि-
पान्तु सौश्रेयमस्तु ॥ अक्षताः पान्तु आयुष्यमस्तु ॥ तांबूलानि-
पान्तु ऐश्वर्यमस्तु ॥ दक्षिणाः पान्तुआरोग्यमस्तु दीर्घमायुः
श्रेयः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ॥ श्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तंबहु
पुत्रंचारोग्यंचायुष्यंचास्तु ॥ यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरण-
कर्म्मारंभाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा-
ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनंबहुऋपिसंमतमनुज्ञातंभवद्भिरनुज्ञातः
पुण्यंपुण्याहंवाचयिष्ये ॥ वाच्यताम् ॥ ऋक् ॥ द्रविणोदाद्र-
विणस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रियं सत् ॥ द्रविणोदावीरवती
मिषन्नोद्रविणोदारासतेदीर्घमायुः ॥१॥ यजुः ॥ द्रविणोदाः
पिपीषतिजुहोतप्रचतिष्ठत ॥ नेष्टाद्दतुभिरिष्यत ॥२॥ ऋक् ॥
सवितापश्चात्तात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताऽधरा-
त्तात् ॥ सवितानः सुवतु सर्वतातिंसवितानोरासतांदीर्घमायुः ॥१।
यजुः ॥ सवितात्वाप्रसवानाठसुवतामग्निर्गृहपतीनाठंसोमोव्वं-

नस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्योव्वरुणोधर्मपतीनाम् ॥२॥ ऋक् ॥ ॐ नवोनवो-भवतिजायमानोऽह्नांकेतुरुषसमेत्त्यग्रम् ॥ भागंदेवेभ्यो विदधात्यायन् प्रचन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥१॥ यजुः ॥ ॐ नतद्रक्षा-ᳬसिनपिशाचास्तरंति देवानामोजः प्रथमजᳬह्येतत् ॥ योबिभर्तिदाक्षायणᳬ-हिरण्यᳬ सदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुः स मनुष्ये-षुकृणुतेदीर्घमायुः ॥२॥ ऋक् ॥ ॐ उच्चादिविदक्षिणावन्तो अस्थुर्येअश्वदाः सहतेसूर्य्येण ॥ हिरण्यदाऽअमृतत्वंभजन्ते वासोदाः सोमप्रतिरन्तआयुः ॥१॥ यजुः ॥ उच्चातेजातमन्धसोदिविसद्-भूम्याददे ॥ उग्रᳬशर्म्ममहिश्रवः ॥ इत्येताऋचᳬपुण्याहेब्रूयात् ॥ व्रतनियमतपःस्वाध्यायक्रतुदयादमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् ॥ समाहितमनसः स्मः प्रसीदन्तु भवन्तः । प्रसन्नाः स्मः ॥ अथपूर्वस्थापितकलशात्ताम्रपात्रे जलमादाय यजमानमूर्द्धनि दूर्वया सेचनं कुर्यात् ॥ शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तुतुष्टिरस्तुवृद्धिरस्तुऋद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवंकर्म्माऽस्तु कर्म्म समृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु वेदसमृद्धिरस्तु शास्त्रसमृद्धिरस्तु पुत्र-पौत्रसमृद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु इष्टसम्पदस्तु अनिष्ट-निरसनमस्तु । भूमौ ॥ यत्पापंरोगमशुभमकल्याणंतद्दूरेप्रति-हतमस्तु ॥ पात्रे ॥ यद्यच्छ्रेयस्तत्तदस्तु उत्तरेकर्मणिनिर्विघ्न मस्तु उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यन्तां तिथिकरणमूहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नसंपदस्तु तिथि-करणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयंताम् ॥ तिथिकरणस-

मुहूर्त्ते सनक्षत्रे सग्रहहेसलग्ने सदैवते प्रीयेतां दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम् ॥ अग्निपुरोगाविश्वेदेवाः प्रीयंताम् इन्द्रपुरोगामरुद्गणाः प्रीयंताम् वशिष्ठपुरोगाऋषिगणाः प्रीयन्ताम् माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयंताम् अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयंताम् विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयेताम् ब्रह्मपुरोगाः सर्वेवेदाः प्रीयंताम् आदित्यपुरोगाः सर्वेग्रहा प्रीयंताम् ब्रह्मचब्राह्मणाश्च प्रीयंताम् अम्बिकासरस्वत्यौ प्रीयेताम् श्रद्धामेधे प्रीयेताम् भगवती कात्यायनी प्रीयताम् भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् भगवती सिद्धिकरी प्रीयताम् भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् भगवन्तौविघ्नविनायकौ प्रीयेताम् सर्वाः कुलदेवताः प्रीयंताम् सर्वाग्रामदेवताः प्रीयंताम् सर्वाइष्टदेवताः प्रीयंताम् । भूमौ ॥ हताश्च ब्रह्मद्विषः हताश्चपरिपंथिनः ॥ हताश्चविघ्नकर्तारः शत्रवः पराभवं यान्तु शाम्यन्तुघोराणिशाम्यन्तु पापानि शाम्यन्त्वीतयः । पात्रे शुभानि वर्धन्ताम् शिवाआपः सन्तु शिवाऋतवः सन्तु शिवा अग्नयः सन्तु शिवा आहुतयः सन्तु शिवा ओषधयः संतु शिवावनस्पतयः संतु शिवा अतिथयः संतु अहोरात्रे शिवे स्याताम् ॥ ऋक् ॥ ॐशन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योअभिवर्षतु ॥ शन्नोद्यावा पृथिवीशंप्रजाभ्यः शन्नएधि द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१॥ यजुः शाखिनांमन्त्रः ॥ ॐ निकामेनिकामे नः पर्जन्योवर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यंतां योगक्षेमोनः कल्पताम् ॥२॥ पूर्णपात्रे जलं क्षिपेत् ॥ शुक्रांगारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वेग्रहाः

प्रीयंताम् भगवान्नारायणः प्रीयताम्भगवान्त्स्वामी महासेनः प्रीयताम् पुरोनुवाक्यययायत्पुण्यं तदस्तु याज्यययायत्पुण्यं तदस्तु-वषट्कारेणयत्पुण्यं तदस्तु प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यंतदस्तु एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यमस्तु पुण्याहकालान्वाचयिष्ये वाच्यताम् ॥ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्चसृष्टयुत्पादनकारकम् । वेदवृक्षोद्भवंनित्यं-तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥१॥ भोब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु॥३॥ ॐ पुण्याहम् ३ ऋक्॥ ॐ उद्गातेवशकुने सामगायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि वृषेववाजी शिशुमतीरपीत्या सर्वतो नः शकुने भद्रमावदविश्वतोनः शकुनेपुण्यमावद ॥ यजुः ॥ ॐ पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तु-मनसाधियः ॥ पुनन्तुविश्वाभूतानिजातवेदः पुनीहि मा ॥२॥ पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम् ॥ ऋषिभिः सिद्धगंधर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ॥१॥ भोब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहेकल्याणं भवन्तो ब्रुवंतु ॥३॥ ॐ कल्याणम् ॥३॥ ऋक् ॥ ॐ अपासोममस्तमिन्द्रप्रयाहि कल्याणीर्जाययासुरणं गृह्येते ॥ यात्र रथस्य वृहतो निधानं विमोचनंवाजिनोदक्षिणावत् ॥१॥ यजुः ॥ ॐ यथेमांवाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ॥ ब्रह्मराजन्याभ्यांशूद्रायचार्य्याय च स्वायचारणा-यच ॥ प्रियोदेवानां दक्षिणायै दातुरिहभूयाः समयम्मेकामः समृद्ध्यतामुपमादोनमतु ॥२॥ सागरस्यतुयाऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता ॥ संपूर्णासुप्रभावाचतां तामृद्धिं ब्रुवन्तु नः ॥१॥ भोब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यगृहे ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥३॥ ॐ ऋद्ध्यताम् ॥३॥ ऋक ॥ ॐ ऋद्ध्यामस्तोमंस-

नुयाम वाजमानो मन्त्रं सरथेहोपयातम् ॥ यशोनपक्वं मधु-
गोष्वन्तराभूतां सोअश्विनोः काममप्राः ॥१॥ यजुः ॥ ॐ
सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽअभूम ॥ दिवंपृथिव्याऽअध्द्या
रुहामाविदामदेवान्स्स्वज्योंतिः ॥५॥ स्वस्त्यस्तुयाविनाशाख्या
पुण्यकल्याणवृद्धिदा ॥ विनायकप्रिया नित्यं तांतां स्वस्तिं
ब्रुवन्तुनः ॥१॥ भोब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यगृहे
स्वस्ति भवन्तोब्रुवन्तु ॥३॥ ॐ स्वस्ति ॥३॥ ऋक् ॥ ॐस्वस्ति
ऋद्धि प्रपथे श्रेष्ठोरक्णस्वत्यभियावाममेति ॥ सानोअमासो
अरेण नियातुस्व वेशा भवतु देवगोपाः ॥१॥ यजुः ॥ ॐ
ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः ॥
स्वस्तिनस्ताक्ष्योंऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥२॥
मृकंडसुनोरायुर्यद्ध्रुवलोमशयोस्तथा ॥ आयुषातेनसंयुक्ता-
जीवेमशरदः शतम् ॥१॥ जीवन्तु भवंतः ॥ ऋक् ॥ ॐ शतं जी-
वशरदोवर्द्धमानः शतंहेमंताञ्छतमुवसंतान् ॥ शतमिंद्राग्नी
सवितावृहस्पतिः शतायुषाहविषेमंपुनर्दुः ॥ यजुः ॥ ॐ शत-
मिन्नुशरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्राजरसंतनूनाम् ॥ पुत्रासो यत्र
पितरोभवंति मानोमध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥२॥ शिवगौरी-
विवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे ॥ धनदस्यगृहेयाश्रीरस्माकंसा-
स्तुसद्मनि ॥१॥ भोब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य
गृहेश्रीरस्त्वितिभवन्तो ब्रुवंतु ॥३॥ ॐ अस्तु श्रीः ॥३॥ ऋक् ॥
ॐ श्रियंजातः श्रियआनिरियायश्रियंवयोजरितृभ्यो दधाति ॥
श्रियंवसानाऽअमृतत्वमायन्भवन्ति सत्यासमिथामितद्रौ ॥१॥
यजुः ॥ ॐ मनसः काममाकूतिंवाचः सत्यमशीमहि ॥ पशू-

नार्ठ-रूपमन्नस्य रसोयशः श्रीः श्रयताम्मयि स्वाहा ॥२॥
प्रजापतिर्लोकपालोधाताब्रह्मासदेवराट् ॥ भगवाञ्छाश्वतो-
नित्यंसनोरक्षतुसर्वतः ॥१॥ भगवान्प्रजापतिः प्रीयताम् ॥ ऋक् ।
ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानि परिताबभूव ।
यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नो अस्तुवयंस्यामपतयोरयीणाम् ॥१॥
यजुः ॥ ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वारूपाणि परिताबभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तुवयमनुष्य पितासावस्यपितावयं
स्यामपतयोरयीणा ᳪ स्वाहा ॥२॥ आयुष्मतेस्वतिमतेयज-
मानायदाशुषे ॥ कृताः सर्वाशिषः संतुऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥१॥
देवेन्द्रस्ययथास्वस्तियथास्वस्तिगुरोर्गृहे ॥ एकलिंगेयथास्वस्ति
तथास्वस्तिसदामम ॥२॥ ॐ आयुष्मतेस्वस्ति ॥३॥ ऋक् ।
ॐ स्वस्तयेवायुमुपब्रुवामहे सोमंस्वस्तिभुवनस्ययस्पतिः ॥ बृह
स्पतिंसर्वगणंस्वस्तये स्वस्तयआदित्यासौ भवन्तुनः ॥१॥ यजुः ।
ॐ प्रतिपन्थामपद्महिस्वस्तिगामनेहसम् ॥ येनविश्वाः परि
द्विषोवृणक्ति विन्दतेवसु ॥२॥ ऋक् ॥ ॐ महो अग्नेसमिधा-
नस्य शर्म्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये ॥ श्रेष्ठेस्यामसवितु
सवीमनितद्देवानामवो अद्यावृणीमहे ॥१॥ यजुः ॥ ॐ विश्वा
निदेवसवितदुरितानिपरासुव ॥ यद्भद्रंतन्नऽआसुव ॥ मंत्रार्थाः
सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथः ॥ शत्रूणांबुद्धिनाशोऽस्तु
मित्राणामुदयोऽस्तु नः ॥१॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोह्यथ-
र्वणः ॥ ब्रह्मवक्त्रोस्थितानित्यंनिघ्नन्तु तवशात्रवम् ॥२॥ अक्षतान्वि
प्रहस्तात्तु नित्यंगृह्णन्ति ये नराः ॥ चत्वारितेषांवर्धन्ते आयुः
कीर्तिर्यशोबलम् ॥३॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्य० ॥४॥ धनवा-
न्पुत्रवाँल्लक्ष्मीवान्भव ॥

इति दानखण्डोक्तं पुण्याहवाचनं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ षड्विनायकपूजनम् ॥

ॐ मोदाय नमः मोदमावाहयामि ॥ प्रमोदाय नमः प्र० । ॐ सुमुखाय नमः सुमु० । ॐ दुर्मुखाय नमः दुर्मु० । ॐ अविघ्नाय नमः अवि० । ॐ विघ्नहर्त्रे नमः विघ्न० । ॐ गणानांत्वा—आवाहन करके नीचे लिखे मन्त्रसे स्थापन करे—

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं-यज्ञᳬसमिमन्दधातु । व्विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ ॥ मोदादिषड्विनायकेभ्यो नमः स्थापयामि ।

पाद्यम् - अर्घ्यम् - आचमनम्-स्नानम्-वस्त्रम् - यज्ञोपवी-तम् - पुन आचमनीयम् - गन्धम् - अक्षतम् - पुष्पम् - धूपम्-दीपम् -नैवेद्यम्-आचमनम्-ऋतुफलम् - ताम्बूलम् – दक्षिणाम् । कृतेनानेन पूजनेन मोदादि षड्विनायकाः प्रीयन्ताम् न मम ।

॥ अथ कलश पूजनम् ॥

तत ईशानकोणे अव्रणं कलशं अक्षतभूपितं स्थाप्य भूमिस्पर्श मन्त्र ॥ ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृᳬह पृथवीं माहिᳬसीः॥ इति भूमिस्पर्शनम् ॥ धान्यमसिधिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानायत्वा । व्यानायत्वा दीर्घामनु प्रसिति मायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोऽसि ॥ इति मन्त्रेण धान्यं प्रक्षिप्य तत्रैव यवान्वाप्य (तदुक्तं रुद्रयामले) शुद्धाभिः मृतिकाभिश्च पूर्वं कृत्वा तु वेदिकाम् । यवान्वापये त्त्रैव

गोधूमश्च समन्वितान् ॥ तदुपरि ॐ आजिघ्रकलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनरुर्जा निवर्तस्वसानः सहस्रं धुक्षोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः । इति मन्त्रेण स्ववर्णादिनिर्मितं कलशं स्थापयेत् । ततस्तस्मिन्—वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्यऋत सदनमासीद ॥

इति मन्त्रेण पटपूतं पवित्रं जलमापूर्य कलशे—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः । इति मन्त्रेण वस्त्रं वेष्टयित्वा कलशे—

ॐ याः फलिनीर्य्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चंत्वꣳहसः ॥ इतिमन्त्रेण पूगीफलं प्रक्षिप्य तत्र—ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यात्न्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ इति मन्त्रेण वज्र-मौक्तिक-वैडूर्य पुष्परागेन्द्रनील पञ्च रत्नानिक्षिपेत् । हिरण्यगर्भः समवर्ततताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥ सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमांकस्मैदेवाय हविषा विधेम ॥ सुवर्णं क्षिपेत् ।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ इति मन्त्रेण गन्धम् ।

ॐ या औषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगंपुरा । मनैनु बभ्रुणा महꣳशतं धामानि सप्त च ॥ इति मन्त्रेण कुष्ठमासी हरिद्राद्वय मुराशैलेय चन्दन वचा चंपक मुस्तेतिदश सर्वौषधि

क्षिपेत् ॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी यक्छानः शर्म्मः सप्रथाः इति मन्त्रेण सप्तमृत्तिका निक्षिपेत् ॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहंति परुषः परुषस्परि। एवानो-दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ इति मन्त्रेण दूर्वां प्रक्षिप्य।

ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता गोभाज इत्किला सथयत्सनवथ पूरुषम् ॥ इति मन्त्रेण पञ्च पल्लवानि प्रक्षिप्य ।

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छि-द्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपतेपवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥ इति मन्त्रेण पवित्रंक्षिपेत् ।

ततः कलशोपरि, पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत वस्नेव व्क्रिकीणा वहा इषमूर्जᳪ शतक्रतो । इति मन्त्रेण पूर्ण-पात्रं संस्थाप्य । तत्र—श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्म-ऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ इति मन्त्रेण श्रीफलं निधाय ततः ओं मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तना-त्वरिष्टं यज्ञᳪसमिमं दधातु विश्वेदेवासइहमोदयन्तामो३म्प्र-तिष्ठ ॥ इति मन्त्रेण प्रतिष्ठां कुर्यात् । ततः कलशे वरुणमा वाहयेत् ॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह वोध्युरुशᳪ समान आयुः प्रमोषीः ।

ॐ भूर्भुवः स्व वरुण इह आगच्छ इह तिष्ठ । इत्यावाह-

नादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य ॥ प्रार्थनां कुर्यात् । कलशे गंगाद्यावाहनम् ॥

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥
उत्पन्नोऽसि यदा कुम्भः विधृतो विष्णुना स्वयम् ।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाःप्रतिष्ठिताः ॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव !
सान्निध्यं कुरु मे देव ! प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

कृतेनानेन पूजनेन वरुणः साङ्गः सपरिवारः प्रीयताम् न मम ।

॥ इति कलशपूजनम् ॥

।। अथ गौर्यादिषोडश मातृकापूजनम् ।।

आदौ गौरीं पूजयेत् । हिमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरव-प्रियाम् ॥ लंबोदरस्य जननींगौरीमावाहयाम्यहम् ।।१।।

ॐ शर्मास्यवधूत ὑ रक्षोऽवधूताऽ आरातयोदित्यात्वगसि प्रतित्वादितिर्व्वेतु । अद्रिरसिव्वानस्यत्योग्रावासि पृथुबुध्नः प्रतित्वादित्यास्त्वग्वेतु ॥ गौर्य्यै नमः गौरीमा० ।।

सुवर्णाभां पद्महस्तां विष्णोर्व्वक्षःस्थलेस्थिताम् ॥ त्रैलोक्यपूजितांदेवीं पद्मामावाहयाम्यहम् ।।२।।

ॐ पावकानः सरस्वतीव्वाजेभिर्व्वाजिनीवती । यज्ञंव्वष्टु-धियावसुः ।। पद्मायै नमः पद्मामा० ।।

उत्पलाक्षीं सुदर्शनां शचीं कुण्डलधारिणीम्।। देवराजप्रियां-भद्रां शचीमावाहयाम्यहम् ।।३।।

ॐ निवेशनः सङ्गमनो व्वसूनां विश्वरूपाभिचष्टे शचीभिः।। देवऽइव सविता सत्यधर्मेन्द्रोनतस्थौ समरेपथीनाम्। शच्यै नमः शचीमा० ।।३।।

विवस्वतः करोत्फुल्लां संस्तुतां पद्मवासिताम्। बुद्धि-प्रसादिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ।।४।।

ॐ मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः मेधा-मिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधांधाता ददातु मे स्वाहा। मेधायै नमः मेधामा० ।।४।।

जगत्स्रष्ट्रीं जगद्धात्रीं पक्षिरूपेण संस्थिताम्। ओंकाराक्षीं भगवतीं सावित्रीमावाहयाम्यहम्।।५।।

ॐ सवितात्वासवानाὑसवितामग्निर्गृहपतिनाὑ सोमोव्वन-

स्पतीनाम् ॥ व्वृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोऽज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुभ्योमित्रः सत्योव्वरुणो धर्मपतीनाम् । सावित्र्यै नमः सावित्रीमा० ॥५॥

दैत्यपक्षक्षयकरीं देवानांचाभयप्रदाम् । गीर्वाणवन्दितां-देवीं विजयामावाहयाम्यहम् ॥६॥

ॐ विज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्योव्वाणवां३उत। अनेशन्नस्य-याऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः। विजयायै नमः विजयामा० ॥६॥

विश्वभद्रांजयारक्तां रक्ताम्वरधरांसदा। त्रैलोक्यवन्दितांदेवीं जयामावाहयाम्यहम् ॥७॥

ॐ वह्वीनाम्पिता बहूरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समना-वगत्य । इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठेनिनद्धो जयति प्रसूतः ॥ जयायैं नमः जयामा० ॥७॥

मयूरवाहनारूढां शक्तिखड्गधनुर्धराम् । आवाहयेद्देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ॥८॥

ॐइन्द्रऽआसांनेता वृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतुसोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्ममरुतोयन्त्वग्रम् ॥ देव-सेनायै नमः देवसेनामा० ॥८॥

कव्यमादाय सततं पितृभ्योयाप्रच्छति । पितृलोकार्चितां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम् ॥६॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधा-यिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः ॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ स्वधायै नमः स्वधाम ॥६॥

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्योयाप्रयछति । स्वर्गलोकाच्चता स्वाहा समागच्छ ममाध्वरे ॥१०॥

ॐस्वाहाप्प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः । पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा ।। स्वाहायै नमः स्व।हामा० ।।१०।।

भूतग्राममिमं कृत्स्नं यया उत्पादितंपुरा । त्रैलोक्य-पूजितां देवीं मातॄरावाहयाम्यहम् ।।११।।

ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्म्मेदाः पुत्रवती दक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्ये प्रजाम्मेदाः ।। सुपदापश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्म्मेदाऽआश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषम्मेदाः ।। विधृतिरुपरिष्टाद्बृहस्पतेराधिपत्यऽओजो मे-दाव्विश्वाभ्योमानाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि । मातृभ्यो नमः मातॄरावा० ।।११।।

आवाहयेल्लोकमात्रीं जगत्पालनसंस्थिताम् । शक्राद्यै-र्वन्दितांदेवीं तत्रत्यैश्च सुरैरपि ।।१२।।

ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टश्च मे पुष्टिश्च मे विभुच मे प्रभुचमे पूर्णश्च मे पूर्णतरश्च मे कुयवश्च मे क्षितश्च मे न्नश्च मे क्षुच्च मे यज्ञेनकल्पन्ताम् ।। लोकमातृभ्योनमः लोक० ।।१२।।

नमस्तुष्टि करीं देवीं लोकानुग्रहकारिणीम् । सर्वकामस मृध्यर्थे धृतिमावाहयाम्यहम् ।।१३।।

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनुभिर्व्यशेमहिदेवहितं यदायुः। हृष्टयै नमः हृष्टिमा० ।।१३।।

प्रणताइवलोकेऽस्मिन्पुत्रपुष्टिसुखप्रदा । भक्तेभ्यश्चापि वरदा विद्युज्ज्वालार्ककुण्डला ।।१४।।

ॐ अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात्सरस्वती। इन्द्रस्य रूप ँ शतमानमायुश्चन्द्रेणज्योतिरमृतन्दधान। पुष्ट्यै नमः पुष्टिमा० ॥१४॥

आवाहयामि तां तुष्टिं सर्वलोकेषु पूजिताम्। संतोषभावनादींश्च रक्षणायाध्वरे मम ॥१५॥

ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहातिव्वेदः सनः पर्षदति दुर्गाणिव्विश्वानावेवसिन्धुन्दुरितात्यग्निः। तुष्ट्यै नमः तुष्टिमा० ॥१५॥

तामात्मादिहितांदेवीं सर्वकामफलप्रदाम्। वंशरक्षाकरींगोत्रीं देवीमावाहयाम्यहम् ॥१६॥

अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयतिकश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्। आत्मनः कुलदेवतायै नमः कुलदेवीमा० ॥१६॥

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु। व्विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।

ॐ गौर्यादि षोडशमातृकाभ्यो नमः। आवाहयामि स्थापयामि। ततः षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थनां कुर्यात्।

गौरीपद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहामातरो लोकमातरः॥
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिकाश्चैव पूज्याः षोडशमातरः॥

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृत-धियां हृदयेषु बुद्धिः श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देविविश्वम् ॥
कृतेनानेन पूजनेन गौर्यादि षोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम ।

॥ अथ वसोर्द्धारा पूजनम् ॥

कुड्ये वस्त्राच्छन्ने पीठादौवाघृतेन सप्तधारा उदक्संस्थाः प्रादेशमात्रीः कुर्यात् । तत्र मन्त्रः—

ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्र-धारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः इति मन्त्रेण वसोर्द्धाराः सप्तबिन्दून् ऊर्ध्व-भागे गुड़ादिनामिथः श्लिष्टाः कुर्यात् । ततस्तेषु सप्तसुबिन्दुषु क्रमेण देवता आवाहयेत् । तद्यथा—

ॐ मनसः काम माकूतिं व्वाचः सत्यमशीमही । पशूना-ᳪरूप मन्नस्य रसोयशः श्री श्रयतां मयि स्वाहा ॐ श्रियै नमः श्रियमा० ॥१॥ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण । ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमा० ॥२॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्य्यजत्राः स्थिरै-रङ्गैस्तुष्टुवाᳪसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितं यदायुः ॥ ॐ धृत्यै-नमः धृतिमा० ॥३॥ ॐ मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ॥ मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥ ॐ मेधायैनमः मेधामा० ॥४॥ ॐ प्राणाय स्वाहा

अपनाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा। त्वचे स्वाहा मनसे स्वाहा स्वाहायै नमः स्वाहा। मा० ॥५॥ ॐ आयङ्गौ पृश्निरक्रमीदसदन्नमातरम्मपुरः पितरञ्च- प्रयन्त्स्वः॥ ॐ प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामा० ॥६॥ ॐ पावकानः सरस्वतीव्वाजेभि र्व्वाजिनीवति यज्ञं व्वष्टुधियावसुः। ॐ सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमा० ॥७॥ ॐ श्री र्लक्ष्मी र्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती। माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैताघृतमातरः इति मन्त्रेण वा ॐ वसोर्द्धारा देवताभ्यो नमः इत्यावाह्य॥ ॐ मनोजूति रित्यादि पठित्वा पोडशोपचारैः सम्पूज्यप्रार्थयेत्॥ यदङ्गत्वेन भोदेव्यः पूजिता विधिमार्गतःकुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥ अनया पूजया वसोर्द्धारा देवताः प्रीयंताम् न ममः इति वसोर्द्धारा करणम्।

॥ अथ स्थलमातृका पूजनम्॥

तत्रैव तण्डुल पुञ्जेषु। ॐ ब्राह्मयै नमः। ब्राह्मीमावाहयामि।१। ॐ माहेश्वर्य्यै नमः। माहेश्वरीमा० ॥२॥ ॐ कौमार्य्यै- नमः। कौमारीमा० ॥३॥ ॐ वैष्णव्यैनमः। वैष्णवी- मा० ॥४॥ ॐ वाराह्यै नमः॥ वाराहीमा० ॥५॥ ॐ इन्द्रा- ण्यै नमः। इन्द्राणीमा० ॥६॥ ॐ चामुण्डायै नमः। चामुण्डा मावाहयामि ॥७॥ इत्यावाह्य॥ ॐ ब्राह्मयादि स्थलमातृ- काभ्योनमः इतिषोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्॥

ॐ आयुष्यंवर्च्चस्यꣳ रायस्पोषꣳ मोद्भिदम्॥ इदꣳहिरण्यं वर्च्चस्वज्जैत्रैयाविशताद्‌माम्॥१॥ ॐ नतद्रक्षाह सिनपिशा-

न्वास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳह्येऽतत् ॥ योबिभर्तिदाक्षायणꣳहिरण्यꣳ सदेवेषु कृणुतेदीर्घमायुः समनुष्येषु कृणुतेदीर्घमायुः ॥२॥ ॐ यदाबध्नं दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ॥ तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥३॥ इति मातृकापूजाविधानम् ॥

॥ अथ सांकल्पिक नान्दीश्राद्धम् ॥

सव्येनयवकुशजालान्यादाय अद्यामुककर्माङ्गत्वेन सांकल्पिकविधिना ब्राह्मणयुग्मभोजन पर्याप्तान्न निष्क्रयीभूत यथाशक्ति हिरण्येन नान्दीश्राद्धं करिष्ये। ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः। अमुकगोत्राः अस्मन्मातृ-पितामही प्रपितामह्यः नांदीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदंवः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। अमुक गोत्राअस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदंवः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। द्वितीय गोत्रा अस्मन्मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नांदीमुखाः। ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

॥ अथ आसनदानम् ॥

ॐ सत्यवसु संज्ञकानां विश्वेषांदेवानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवःस्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः॥ नांदी श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्। तथा प्राप्नुतांभवन्ताप्राप्नुवः। ॐ अमुक गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां नांदीमुखीनां

ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः ॐ नान्दी श्राद्धेक्षणौ क्रियेताम्। तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवः। ॐ अमुक गोत्राणाम् अस्मत्पितृ पितामहप्रपितामहानां नांदी मुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः। ॐ नांदीश्राद्धं क्षणौ क्रियेताम्। तथा प्राप्नुताम् भवन्तौ प्राप्नुवः। द्वितीय गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमा-तामहानां सपत्नीकानां ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः। नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्। तथा प्राप्नुताम् भवन्तौ तथा प्राप्नुवः। ततो गन्धा दिदानम्। ॐ सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यताम् वृद्धिः। अमुक गोत्राभ्योऽस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्प-द्यताम् वृद्धिः। अमुकगोत्रेभ्योऽस्मत्पितृपितामहप्रपिता महेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यताम् वृद्धिः। द्वितीयगोत्रेभ्योऽस्मन्मातामह प्रमाता-मह वृद्धप्रमातामहेभ्योः सपत्नीकेभ्यः नान्दीमुखेभ्यो ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यताम् वृद्धिः। ततो भोजन निष्क्रय द्रव्यदानम्।

ॐ अद्य तत् सन्मात्रादि त्रय पित्रादि त्रयमाता महादि-त्रय नान्दीश्राद्ध सम्बन्धिनौ सत्यवसुनामानौ विश्वेदेवौ एतत्त-न्नं सोपस्कर रहितं तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यम् अमृतरूपेण दत्तं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ अद्यतत्सदद्यामुक गोत्रा

मातृपितामहीप्रपितामह्यौ अमुक्यमुकीदेव्यैगायत्री सावित्री सरस्वती स्वरूपायै नान्दीमुख्यै अमुकगोत्रेभ्यः पितृपितामह-प्रपितामहेभ्यः अमुकामुकशर्म्मभ्यः वसुरुद्रादित्य स्वरूपेभ्यः नान्दीमुखेभ्यः अमुक गोत्रेभ्यः मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमाता महेभ्यः अमुकामुकशर्मभ्यः वसुरुद्रादित्यस्वरूपेभ्यः सपत्नी-केभ्यः नान्दीमुखेभ्यः एतद्वोऽन्नं सोपस्कररहितं तन्निष्क्रयीभूतं किंचिद्धिरण्यं दत्तं (द्वादश) नवधा विभज्यताभ्यस्तेभ्यस्तेभ्यो वृद्धिः। सक्षीरमुदकदानम्।

ॐ सत्य वसुसंज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। अमुक गोत्राः मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यःप्रीयंताम् गो०। पितृपितामहप्रपितामहाः गोत्रामातामहप्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः नान्दीमुखाः सपत्नीकाश्च प्रीयन्ताम्। ततः ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः इति मन्त्रं पठेत्।

॥ अथ दक्षिणादानम् ॥

ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्योदेवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्यफलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। ॐ अमुक गोत्राभ्यो मातृप्रितामही प्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः कृतस्य-०। ॐ अमुकगोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य-०। ॐ अमुक गोत्रेभ्यः मातामह प्रमातामह वृद्ध-प्रमातामहेभ्यः नान्दीमुखेभ्यः कृतस्यः०। ततः आशिषा-ग्रहणम्।

गोत्रंनोवर्द्धताम् । (वर्द्धतांवोगोत्रम्) दातारोनोऽभिवर्द्धन्ताम् । (अभिवर्द्धन्तां वो दातारः) । वेदाश्चनोऽभिवर्द्धताम् । (अभिवर्द्धताम्वोवेदाः) सन्ततिर्नोवर्द्धताम् । (वर्द्धताम्वः सन्ततिः) श्रद्धा च नो माव्यगमत् । (माव्यगमद्वः श्रद्धा) बहुदेयं च नोऽस्तु । (अस्तुवो बहुदेयम्)। याचितारश्चनः सन्तु (सन्तु वो याचितारः) एताः आशिषः सत्याः सन्तु । (सन्त्वेतास्सत्याआशिषः) ॐ मातापितामहीचैवतथैव प्रपितामही । पितापितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः । मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः । एते भवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम् । वाजेवाजे इत्यादिना विसर्जनं कुर्यात् ।

॥ अथ आचार्यादि वरणम् ॥

तत्र वरण सामग्रीः—

वस्त्रयुग्म उत्तरीयकटिसूत्राङ्गुलीयकासन यज्ञोपवीत जलपात्रपञ्चपात्र पूजापात्रं पुस्तकानि तथा अन्यान्यपि यथा सम्भवानि वस्तून्यादाय ॐ अद्य अमुकेमासे अमुकेपक्षे अमुकतिथौ अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्माचर्मागुप्तोवा यजमानः अमुक प्रवरं अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं शतचण्डीयागं कर्तुमेभिः वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेनत्वामहं वृणे । तत आचार्यः वृतोऽस्मीति प्रतिवचनं ब्रूयात् । ततः यजमानेन ॐ यथाविहितं कर्मकुरु इत्युक्ते आचार्यः करवाणीति प्रतिवचनं दत्वा तां वरणसामग्रीमादाय वस्त्रादिकं परिदध्यात् । ततो यजमानः आचार्यं प्रार्थयेत् । ॐ आचार्यस्तु यथास्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः । तथात्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भवसुव्रत ।

ततो ब्रह्मवरणम्ः—

पूर्ववद् वरणसामग्रीमादाय ॐ अद्यामुकेमासे अमुकेपक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रः अमुकप्रवरः अमुकशर्मवर्मादि यजमानः अमुकप्रवरम् अमुकगोत्रम् अमुकशर्माणं ब्राह्मणं कृतकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म कर्तुमेभिर्वरणद्रव्यैस्त्वामहं वृणे। ततो ब्रह्मावृतोऽस्मीति प्रतिवचनं ब्रूयात्। यथा चतुर्मुखो ब्रह्मासर्वलोकपितामहः। तथा त्वं मम यज्ञेऽअस्मिन् ब्रह्माभवद्विजोत्तम ॥ इति पठित्वा यजमानः ब्रह्माणम्प्रार्थयेत् ॥

द्वारपालवरणम्ः—

पूर्ववद्वरणसामग्रीमादाय ॐ अद्येत्यादितः मासे पक्षे तिथौ गोत्रः प्रवरः शर्मवर्मादि यजमानः अमुक प्रवरम् गोत्रम् शर्माणं ब्राह्मणंअस्मिन् चण्डीयाग कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः क्षेत्रप।लत्वेनत्वामहं वृणे ॥ ततो वृतोऽस्मीति प्रतिवचनं ब्रूयात्। सति शक्तौ पृथक् २ चत्वारः क्षेत्रपालाः कुर्युः अन्यथा तु एकएव।

ततो गाणपत्यवरणम्ः—

ॐ अद्येत्यादितः अमुकशर्माणं ब्राह्ममित्यंतं प्रपठ्यअस्मिन् चण्डीयाग कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः गाणपत्यत्वेनत्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि। ततोयजमानः—वाञ्छितार्थफलावाप्त्यै पूजितऽसि सुरासुरैः। निर्विघ्नं क्रतुसंसिद्ध्यै त्वामहं गणपंवृणे। इति पठेत्।

तयो ऋत्विजां वरणम्ः—

पूर्ववद्वरणसामग्रीमादाय ॐ अद्येत्यादितः अमुकशर्माणं

ब्राह्मणमित्यन्तं प्रपठ्य अस्मिन् चण्डीयागकर्मणि पाठ-जप-होमकर्मकर्तुमेभिर्वरणद्रव्यैः ऋत्विक्त्वेनत्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति ऋत्विक्ब्रूयात्। ततो यजमानः। भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरायण। वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नृत्विक्त्वम्मेमखेभव। इति पठेत्। यौगपद्येन तु नानागोत्रान् नानानामधेयान् नाना प्रवरान् ब्राह्मणान् एभिर्वरणद्रव्यैः पाठजपहोमकर्मकर्तुं ऋत्विक्त्वेन युष्मान् वृणे। ततः सर्वे पृथक् २ प्रतिवचनं ब्रूयात्।

सति सम्भवे सदस्योपदेष्टृ नवग्रह मंत्र जापकादीनामपि वरणं कार्यम्। ततः शक्तौ सत्यां सर्वेषां ब्राह्मणानां मधुपर्कं कुर्यात्। ततः सर्वान् प्रार्थयेत्। अस्मिन् कर्मणि येये तु वृता गुरुमुखादयः। सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम्॥ अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया। सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्। यथाविहितं कर्मकुरु। (कुरुध्वम्) यथाज्ञानं करवाणि (करवामः) इति।

॥ अथ रक्षाविधानम् ॥

हाथ में गौरसर्षप ग्रहण करे। अभिमन्त्रण कर सर्वत्र विकीरण करे।

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्॥
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्॥
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्॥
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्॥
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्॥

राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥
शक्राद्या देवताः सर्वा मुनींश्च कथयाम्यहम् ॥
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ॥
वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं तथैव च ॥
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम् ॥
विद्याधिका ये मुनय आचार्याश्च तपोधनाः ॥
तान् सर्वान्प्रणमाम्येव यज्ञरक्षाकरान्सदा ॥
पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुडध्वजः ॥
याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते ॥
वारुण्यां केशवोरक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः ॥
उत्तरे श्रीधरो रक्षेदीशानेतु गदाधरः ॥
उर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः ॥
एवं दशदिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः ॥
शङ्खो रक्षेच्च यज्ञाग्रे पृष्ठे खड्गस्तथैव च ॥
वामपार्श्वे गदारक्षेद्दक्षिणे तु सुदर्शनः ॥
ब्रह्माणं माधवो रक्षेदाचार्यं पातु माधवः ॥
अच्युतोऽवतु ऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः ॥
कृष्णश्च सामगं रक्षेदाथर्विकं च माधवः ॥
उपदेष्टा तु यो विप्रस्तंरुद्रोऽवतु सर्वदा ॥
यजमानं सपत्नीकं कमलाक्षश्च रक्षतु ॥
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षतां हरिः ॥
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा ॥
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥

ब्राह्मणमित्यन्तं प्रपठ्य अस्मिन् चण्डीयागकर्मणि पाठ-जप-होमकर्मकर्तुमेभिर्वरणद्रव्यैः ऋत्विक्त्वेनत्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति ऋत्विक्ब्रूयात् । ततो यजमानः । भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मपरा-यण । वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नृत्विकूत्वम्मेमखेभव । इति पठेत् । यौगपद्येन तु नानागोत्रान् नानानामधेयान् नाना प्रवरान् ब्राह्मणान् एभिर्वरणद्रव्यैः पाठजपहोमकर्मकर्तुं ऋत्विक्त्वेन युष्मान् वृणे । ततः सर्वे पृथक् २ प्रतिवचनं ब्रूयात् ।

सति सम्भवे सदस्योपदेष्टृ नवग्रह मंत्र जापकादीनामपि वरणं कार्यम् । ततः शक्तौ सत्यां सर्वेषां ब्राह्मणानां मधुपर्कं कुर्यात् । ततः सर्वान् प्रार्थयेत् । अस्मिन् कर्मणि येये तु वृता गुरुमुखादयः । सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम् ॥ अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया । सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् । यथाविहितं कर्मकुरु । (कुरुध्वम्) यथाज्ञानं करवाणि (करवामः) इति ।

॥ अथ रक्षाविधानम् ॥

हाथ में गौरसर्षप ग्रहण करे । अभिमन्त्रण कर सर्वत्र विकीरण करे ।

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् ॥
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम् ॥
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् ॥

राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥
शक्राद्या देवताः सर्वा मुनींश्च कथयाम्यहम् ॥
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ॥
वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं तथैव च ॥
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम् ॥
विद्याधिका ये मुनय आचार्याश्च तपोधनाः ॥
तान् सर्वान्प्रणमाम्येव यज्ञरक्षाकरान्सदा ॥
पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुडध्वजः ॥
याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते ॥
वारुण्यां केशवोरक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः ॥
उत्तरे श्रीधरो रक्षेदीशानेतु गदाधरः ॥
उर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः ॥
एवं दशदिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः ॥
शङ्खो रक्षेच्च यज्ञाग्रे पृष्ठे खड्गस्तथैव च ॥
वामपार्श्वे गदारक्षेद्दक्षिणे तु सुदर्शनः ॥
ब्रह्माणं माधवो रक्षेदाचार्यं पातु माधवः ॥
अच्युतोऽवतु ऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः ॥
कृष्णश्च सामगं रक्षेदाथर्विकं च माधवः ॥
उपदेष्टा तु यो विप्रस्तंरुद्रोऽवतु सर्वदा ॥
यजमानं सपत्नीकं कमलाक्षश्च रक्षतु ॥
रक्षाहीनं तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षतां हरिः ॥
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा ॥
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूताः भूमिसंश्रिताः॥
ये भूताविघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

इन मन्त्रों से सर्वदिशाओं में सर्षप विकीरण करे—

ततो देवताभ्यो रक्षासूत्रदानम् ॥ ततो ब्राह्मणानां हस्तेषु रक्षा बन्धनं कर्तव्यं तत्र मन्त्रः ॥ ॐ वृतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणाश्रद्धामाप्नोतिश्रद्धयासत्य-माप्यते॥ ततस्तिलकं कुर्यात् ॥ ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषंचरंतं परितस्तस्थुषःरोचंतेरोचनादिभिः। युञ्जन्त्यस्य काम्याहरि-विपक्षसारथे शोणाधृष्णूनृवाहसा॥२॥

॥ अथ यजमानहस्ते रक्षाबन्धनम् ॥

ॐ त्वं यविष्ठदाशुषोनॄः पाहिशृणुधीगिरः ॥ रक्षातोक-मुतत्वमना ॥ येनबद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥ इति रक्षाविधानम् ॥

॥ अथ भूमिपूजा ॥

तत उत्थाय सम्भारान् गृहीत्वा सुवासिनीर्ब्राह्मणानग्रतः कृत्वासतूर्यघोषः सपरिकरः सपूर्णकुम्भोयजमानः ॥ ॐ भद्रं-कर्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रं पश्येमा क्षभिर्य्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गै-स्तुष्टुवाᳬसस्तनूभि र्व्यशे महिदेवहितंयदायुः ॥ इति मन्त्रेण महामण्डपंप्रदक्षिणीकृत्यमण्डपस्य पश्चिमद्वारमागत्य पाणि-भ्यांचार्घमादाय शान्ति पठेत्---आशुः शिशानः ०.१ ऋचंवाचं ०१ स्वस्तिन० इत्यादिकं च पठेत् ॥ ततोद्वारदेशे-सार्घः ॥ पृथ्वींचतुर्भुजां शुक्लां कूर्मपृष्ठोपरिस्थितां पद्मशंख

चक्रशूलकरां विहसितां सुप्रसन्नां गोरूपधरां सवत्सां वसुन्धरां-ध्यात्वा। ॐ आगच्छदेवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणि। पृथ्वि त्वं ब्रह्मदत्ताऽसि काश्यपेनाभिनन्दिता ॥१॥ भूतधात्री-रत्नगर्भाविपुलासागराम्बरा। अस्मिन्यज्ञे महादेवि विघ्नं विध्वंस-याम्बिके ॥२॥ इति सम्प्रार्थ्यफलपुष्पांजलिंदत्वा ॐ भूम्यै नमः इति मन्त्रेण पाद्यादिभिरुपचारैः सम्पूज्य पुनः प्रार्थयेत्। उद्धृ-तासि वराहेण विष्णुनाशतबाहुना। दंष्ट्राग्रे लीलयादेवि यज्ञार्थे त्वां वृणोम्यहम् ॥१॥ ब्रह्मणानिर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च। पार्वत्याचैव गायत्र्यास्कंदेन श्रवणेन च ॥२॥ यमेनपूजितादेवि धर्मबुद्धिजिगीषया। सौभाग्यं देहि पुत्रांश्चधनं रूपं च पूजिता ॥३॥ गृहाणाऽर्घ्यं चमे देवि सौभाग्यं च प्रयच्छमे ॥ इति भूम्यै अष्टाङ्गार्घ्यं दत्वा साष्टांगं प्रणिपत्य मण्डपपश्चि-मद्वारेण प्रविशेत्। होमद्रव्यप्रवेशः पूर्वद्वारेण ॥ दानद्रव्यप्रवेशो-दक्षिणद्वारेण ॥ दानार्थान्दक्षिणार्थान्प्रतिष्ठार्थान्संभारानुत्तर द्वारेण प्रवेशयेत्॥ तत आचार्यो वामहस्तेगौरसर्षपाँल्लाजा-मिश्रितान् गृहीत्वादिग्रक्षणं कुर्यात् ॥ तत्र मन्त्राः ॥

ॐ रक्षोहणंव्वलगहनं व्वैष्णवीमिदमहन्तं व्वलगमुत्किरामियम्मेनिष्ट्योयममात्योनिचखानेदमहन्तंव्वलगमुत्किरामि-यम्मेसमानोयम समानोनिचखानेदमहन्तंव्वलगमुत्किरामि यम्मेसबन्धुर्य्यमसबन्धुर्निचखानेद महन्तंव्वलगमुत्किरामियम्मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि ॥१॥ ॐ रक्षो-हणोवोव्वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्रक्षोहणोवोव्वलगहनो वनयामि वैष्णवान्रक्षोहणोवोव्वलगहनो वस्तृणामि वैष्णवान्र-

क्षोहणौवांव्लगहनाऽउपदधामि वैष्णवीरक्षोहणौवांव्लगहनौ पर्य्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्त्थ ॥२॥ रक्षसाम्भागोसिनिरस्तꣳ रक्षऽइदमहꣳ रक्षोभिस्तिष्ठामीदमहꣳ रक्षोव—वाधइदमहꣳ रक्षोधमन्तमोनयामि। घृतेनद्यावा पृथिवी प्रोर्णुवाथां व्वायोव्वेस्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहा कृतेऽऊर्ध्वंनभसंमारुतङ्गच्छतम् ॥३॥ रक्षोहाविश्वचर्षणिरभियोनिमयोहते ॥ द्रोणसधस्त्थमासदत् ॥४॥ अपसर्पन्तु तेभूतायेभूता भूमिसंस्थिताः ॥ ये भूताविघ्नकर्तारस्ते नश्यंतुशिवाज्ञया ।१। अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् ॥ सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे ॥२॥ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्यसर्व्वतःस्थानंत्यक्त्वातु तत्सर्वं यत्रस्थंतत्रगच्छतु॥३ भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामंतु राक्षसाः॥ स्थानादस्माद्व्रजंत्वन्य स्त्रीकारोमिभुवंत्त्विमाम् ॥४॥ भूतानि राक्षसा वापिअत्र तिष्ठन्तिकेचन॥ ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु शांतिकंतु करोम्यहम् ।५। एतैर्मन्त्रैरीशानादिसर्वदिक्षु विकीर्यदेवा आयान्तु ॥ यातुधाना अपयांतुविष्णो देवयजनं रक्षस्वेति रक्षांकृत्वा पंचगव्येन कुशैर्मण्डपभूमिं यज्ञसम्भारांश्च प्रोक्षयेत्।

॥ अथ पंचगव्यसम्मेलनप्रकारः ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियोयोनः प्रचोदयः अनेनगोमूत्रम्। ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ गोमयम्। ॐ आप्यायस्व समेतुतेव्विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवाव्वाजस्य संगथे। पयः। ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णो रश्वस्य व्वाजिनः। सुरभिनोमुखाकरत्प्रण आयूꣳषितारिषत्।

दधि। ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि। प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि। इत्याज्यम्। ततः ॐ देवस्य-त्वां सवितुः प्रसवे श्विनोर्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम्। अनेन कुशोदकमादाय "ॐ" इति प्रणवेन यज्ञकाष्ठेनालोड्य आपो-हिष्ठेति तिसृभिर्मन्त्रैः कुशैः यज्ञभूमिं प्रोक्षयेत्।

॥ अथ पावमानसूक्तम् ॥

पावमानः सुवर्जनः॥ पवित्रेणविचर्षणिः॥ यः पोतास पुनातुमा॥ पुनंतुमादेवजनाः पुनंतु मनवोधिया। पुनंतु विश्व-आयवः॥ जातवेदः पवित्रवत्॥ पवित्रेण पुनीहिमा॥ शुक्रेण-देवदीद्यत्॥ अग्ने क्रत्वाक्रतूँ्रनु ॥१॥ यत्ते पवित्रमर्चिषि॥ अग्नेवितत्तमन्तरा॥ ब्रह्मतेनपुनीमहे॥ उभाभ्यां देवसवितः॥ पवित्रेण सवेन च॥ इदं ब्रह्म पुनीमहे॥ वैश्वदेवी पुनती देव्या गात्॥ यस्यै बह्वीस्तनुवो वीतपृष्ठाः तया मदन्तः सध माद्येषु॥ वयँस्यामपतयोरयीणाम्॥२॥ वैश्वानरो रश्मिभि-र्मापुनातु॥ वातः प्राणेनेषिरोमयोभूः॥ द्यावा पृथिवी पयसा पयोभिः॥ ऋतावरीयज्ञिये मापुनीताम्॥ बृहद्भिः सवितस्तृभिः वर्षिष्ठैर्देवमन्मभिः॥ अग्नेदक्षैः पुनीहिमा। येनदेवा अपुनत॥ येनापो दिव्यंकशः। तेन दिव्येन ब्रह्मणा। इदंब्रह्म पुनीमहे।३। यः पावमानीरध्येति॥ ऋषिभिः सम्भृतँरसम्॥ सर्वँस पूतमश्नाति॥ स्वदितं मातरिश्वना॥ पावमानीर्योअध्येति॥ ऋषिभिः संभृतँ रसम्॥ तस्मै सरस्वतीदुहे॥ क्षीरँ सर्पि-मधूदकम्॥ पावमानीः स्वस्त्ययनीः॥४॥ सुदुघाहि पयस्वतीः।

ऋषिभिः संभृतोरसः ॥ ब्राह्मणेष्वमृतᳯंहितम् ॥ पावमानी-दिशंतुनः । इमं लोकमथोअमुम् । कामान्त्समधयंतुनः ॥ देवी देवैः समाभृताः ॥ पावमानीः स्वस्त्ययनीः ॥ सुदुघाहिघृत-श्चुतः ॥ ऋषिभिः संभृतोरसः ॥५॥ ब्राह्मणेष्वमृतᳯंहितम् ॥ येन देवाः पवित्रेण ॥ आत्मानं पुनतेसदा ॥ तेन सहस्रधारेण । पावमोन्यः पुनंतुमा ॥ प्राजापत्यं पवित्रम् ॥ शतोद्यामᳯं हिर-ण्मयम् ॥ तेन ब्रह्मविदोवयम् ॥ पूतंब्रह्म पुनीमहे ॥ इन्द्रः सुनीती सहमापुनातु ॥ सोमःस्वस्तया वरुणःसमीच्या ॥ यमो-राजाप्रमृणाभिः पुनातुमा । जातवेदा मोर्जयत्या पुनातु ॥६॥ इत्यनुवाकेनाऽभिषिच्य ॥ ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जे-दधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥१॥ योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः ॥ उशतीरिवमातरः २॥ तस्माऽअरङ्गमामवो-यस्य क्षयायजिन्वथः आपोजनयथाचनः ॥३॥ इति त्र्यृचेन सर्वत्रप्रोक्ष्य ॥ ततो यजमानोहस्तप्रमाणंचतुरस्रं चतुरंगुलो-च्चंस्थंडिलं कृत्वा ॥ तत्र ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्व-धाया विश्वस्य भुवनस्यधर्त्री ॥ पृथिवीं यच्छपृथिवीं दृᳯंह-पृथिवीम्माहिᳯंसीः ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिवीकूर्मानंत-देवताभ्यो नमः । इति मन्त्रेणषोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ ततः कृतांजलिः स्वस्त्ययनमिति स्वस्तिन इति च मन्त्रद्वयं पठेत् । अथस्वस्त्ययनम् ॥

ॐ स्वस्तिनो मिमीतामश्विनाभगः स्वस्ति देव्यदिति-रनर्वणः ॥ स्वस्तिपूषा असुरोदधातुनः स्वस्तिद्यावा पृथिवी सुचेतुना ॥१॥ स्वस्तयेवायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य

यस्पतिः ॥ बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तुनः ॥२॥ विश्वेदेवानो अद्यास्वस्तयेवैश्वानरोवसु राग्नेः स्वस्तये ॥ देवा अवन्त्वभवः स्वस्तयेस्वस्तिनोरुद्रः पात्वंहसः ।३। स्वस्तिमित्राव्वरुणास्वस्ति पथ्येरेवति ॥ स्वस्तिनइन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्तिनो अदितेकृधि ॥४॥ स्वस्ति पंथामनुचरेमसूर्या चन्द्रमसाविव ॥ पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ॥५॥ इति ऋग्वेदीयं स्वस्त्ययनम् । ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु । इति त्रिःपठेत् ॥ केचिन्मण्डपपूजनमत्रापि कुर्वन्ति तदपि समीचीनम् ।

॥ अथ वास्तुपूजनम् ॥

मण्डप नैर्ऋत्यकोणेरचितं वास्तुमण्डलं तत्समीप उपविश्याचम्यप्राणानायम्य देशकालौसंकीर्त्याद्यामुकदेव प्रतिष्ठा कर्मणि वास्तु कर्माहं करिष्य इति संकल्प्य वास्तु मण्डल चतुष्कोणेष्वौदुम्बरस्यवालोहस्य शंकुचतुष्टयमीशानादि प्रदक्षिण क्रमेण रोपयेत् ॥ तत्र मन्त्रः ॥ ॐ विशंतु भूतलेनागा लोकपालश्च सर्वतः । मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तुह्यायुर्बल कराःसदा ॥१॥ इति मन्त्रेण चतुर्दिक्षु रोपणम् । ततः शंकूनां पार्श्वेरोपणक्रमेणमाषभक्तदध्योदनेन बलिदानम् ॥ तत्र मन्त्राः ॥ ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः ॥ बलिंतेभ्यः प्रयच्छामि गृहन्तु सततोत्सुकाः ॥ इतीशाने ॥१॥ ॐ अग्निभ्योऽप्यथसर्पेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः ॥ बलिंतेभ्यः प्रयच्छामि-

पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ इत्याग्नेय्याम् ॥२॥ ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां येच राक्षसाः ॥ बलितेभ्यः प्रयच्छामि सर्वेगृह्णन्तुमन्त्रितम् ॥ इतिनैर्ऋत्याम् ॥३॥ ॐ वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां येच राक्षसाः ॥ बलितेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ इति वायव्याम् ॥४॥ ततोवास्तुपीठे कुङ्कुमादिना कनकशलाकया रत्नेन वारजत फलपुष्पाणामन्यतमेनवा नवरेखा कार्याः ॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः ॥१॥ ॐ यशोवत्यै नमः ॥२॥ ॐ कान्तायै नमः ॥३॥ ॐ सुप्रियायै नमः ॥४॥ ॐ विमलायै नमः ॥५॥ ॐ श्रियै नमः ॥६॥ ॐ सुभगायै नमः ॥७॥ ॐ सुमत्यै नमः ॥८॥ ॐ इडायै नमः ॥९॥ इत्योङ्कारदिनमोन्तैर्नामभिः पश्चादारंभाः प्रागंताः प्राक्पश्चिमायताद्व्यङ्गुलांत नवरेखाः कृत्वा । पुनः ॐ धान्यायनमः ॥१॥ ॐ प्राणाय नमः ॥२॥ ॐ विशालायै नमः ॥३॥ ॐ स्थिरायै नमः ॥४॥ ॐ भद्रायै नमः ॥५॥ ॐ जयायै नमः ॥६॥ ॐ निशाय नमः ॥७॥ ॐ विरजायै नमः ॥८॥ ॐ विभवायै नमः ॥९॥ इत्येता दक्षिणारम्भा उदगंताः प्राक्संस्था नवरेखा कृत्वा ता अपिपूजयेत् ॥ एवं चतुः पष्टि कोष्ठात्मक वास्तु मण्डलंभवति ॥ तत्र मध्यगंपदचतुष्टयमेकीकृत्य तत्कोण चतुष्टयाद्बहिः कोणचतुष्टयेरेखाभिः पदान्युत्कृत्यशिख्यादीन् स्थापयेत्तत्रतावत् ॥ ॐ सर्वज्ञानक्रियाव्यक्तकमलासनाय योगपीठात्मने नमः इति पीठोपरिपुष्पाक्षतचंदनानिप्रक्षिपेत् ॥ ततो वास्तोश्चतुरस्रं शरीरं देवा आक्रम्यस्थिता इति तत्तद्देव पदेचतत्तद्देवावाहनम् ॥ तत्रईशानपददक्षिणार्द्धे वास्तोःशिरसि शिखिनम् ॥

ॐ नमः शंभवायच मयोभवायच नमः शिवायचशिवतरा-यच ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिन्इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ शिखिने नमः ॥१॥ तद्दक्षिणसार्द्धपदे दक्षिणनेत्रे पर्जन्यम् ॥ ॐ शन्नो व्वातः पवताᳬं शन्नस्तपतु सूर्य्यः ॥ शन्नःकनिक्रद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पर्ज्जन्यइहागच्छ इहतिष्ठ ॐ पर्जन्याय नमः ॥२॥ तद्दक्षिणपदद्वये दक्षिण श्रोत्रे जयन्तम् ॥ ॐ मर्म्माणि ते वर्म्मणाच्छदयामि सोमस्त्वाराजा मृतेनानु-वस्ताम् । उरोर्व्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानुदेवामदंतु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जयंतइहागच्छ इहतिष्ठ ॐ जयन्ताय नमः ॥३॥ तद्दक्षिणपदद्वये दक्षिणांसे कुलिशायुधम् ॥ ॐ आयात्विन्द्रोवसऽउपनऽइहस्तुतः सधमादस्तु शूरः ॥ वावृधा-नस्तविषीर्य्यस्य पूर्व्वीर्द्यौर्नक्षत्रिमभि भूति पुष्यात् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रइहागच्छ इहतिष्ठ ॐ इन्द्रायनमः ॥४॥ तद्दक्षिणपद-द्वये दक्षिणबाहौ सूर्यम् ॥ ॐ बण्महाँ२ऽअसि सूर्य्य बडादित्य महाँ२ऽअसि ॥ महस्तेसतोमहिमा पनस्यतेद्धादेवमहाँ२ऽअसि ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः सूर्यइहा० ॐ सूर्याय नमः ॥५॥ तद्दक्षिण पदद्वये दक्षिणबाहौ सत्यम् ॥ ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षया-प्नोतिदक्षिणाम् ॥ दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्य-माप्यते ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सत्यइहागच्छ इहतिष्ठ ॐ सत्याय नमः ॥६॥ तद्दक्षिण सार्द्ध पदे दक्षिणकूर्परे भृशम् ॥ ॐ आत्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः ॥ विशस्त्वा सर्वा-वाञ्छन्तुमात्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भृश इहा-गच्छ इहतिष्ठ ॐ भृशाय नमः ॥७॥ दक्षिणाग्नेयपदार्द्धे

दक्षिणप्रबाहौह्याकाशम् ॥ ॐ याचांकशा मधुमत्यश्विनासू-
नृतावती ॥ तयायज्ञम्मिमिक्षितम् ॥ उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यां
त्वैषते यानिर्माध्वीभ्यान्त्वा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशइहा-
गच्छ इहतिष्ठ ॐ आकाशाय नमः ॥८॥ तत्पश्चिमसार्द्ध-
पदे दक्षिणप्रबाहौ वायुम् ॥ ॐ वायोयेते सहस्रिणोरथा
सस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्त्सोमपीतये॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
वायो इहागच्छ इहतिष्ठ । ॐ वायवे नमः ॥९॥ तत्पश्चिम
सार्द्धपदे दक्षिणमणि बन्धेपूषणम् ॥ ॐ पूषन्तववृते वयन्नरि-
ष्येमकदाचन॥ स्योतारस्तऽइहस्मसि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वःपूषन्नि-
हागच्छ इहतिष्ठ ॐ पूष्णे नमः ॥ ॥१०॥ तत्पश्चिमपदद्वये
दक्षिणपार्श्वे वितथम् । ॐ तत्सूर्य्यस्यदेवत्वन्तन्महित्वम्मध्या
कर्त्तोर्विततꣳसंजभार ॥ यदेदयुक्तहरितः सधस्थाद्रात्री
वासस्तनुतेसिमस्मै ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वितथइहागच्छ
इहतिष्ठ ॐ वितथाय नमः ॥ ११ ॥ तत्पश्चिमपदद्वये दक्षिण
पार्श्वे गृहक्षतम् ॥ ॐ अक्षन्नमीमदंतह्यवप्रियाऽअधूषत ॥
अस्तोपतस्वभानवो विप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गृहक्षत इहा० ॐ गृहक्षताय नमः ॥१२॥
तत्पश्चिमपदद्वये दक्षिणोरुभागे यमम् ॥ ॐ यमायत्वांगिरि
स्वतेपितृमते स्वाहा ॥ स्वाहाघर्माय स्वाहाघर्मꣳपित्रे ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ यमाय नमः ॥१३॥
तत्पश्चिपदद्वये दक्षिणजानौ गन्धर्वम् ॥ ॐ गंधर्वस्त्वाविश्वा-

वसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्नि-रिडईडितः ॥ इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै-यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडईडितः ॥ मित्रावरुणौत्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेणधर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधि-रस्यग्निरिडईडितः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गंधर्व इहागच्छ इह-तिष्ठ ॥ ॐ गंधर्वायनमः ॥१४॥ तत्पश्चिमसार्द्धपदे दक्षिण-जङ्घायां भृङ्गराजम् ॥ ॐ सौरी बलाक शार्गः सृजयः शया-ण्डकस्तेमैत्रा सरस्वत्यैशारिः पुरुषवाक्छ्वाविद्भूमीशार्द्दूलोवृकः पृदाकुस्तेमन्यवे सरस्वते शुकः पुरुषवाक् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भृङ्गराज इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ॐ भृङ्गराजायनमः ॥१५॥ तत्पश्चिमनैर्ऋत्यपदार्धे दक्षिणस्फिचि मृगम् ॥ ॐ मृगोन भीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावतऽआजगंथा परस्याः ॥ सृकꣳ सꣳशाय पविमिंद्रतिग्मंव्विशत्रूताढ्विव्मिमृधोनुदस्व ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मृगइहागच्छ इहतिष्ठ ॐ मृगायनमः ॥१६॥ तदुत्तरार्द्धेपितॄन् ॥ ॐ उशंतस्त्वानिधी मह्युशंतः समिधी-महि ॥ उशन्नुशतऽआवह पितॄन्हविषेऽअत्तवे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पितरइहागच्छत इहतिष्ठत ॥ ॐ पितृभ्योनमः॥१७॥ तदु-त्तरसार्द्धपदेवामस्फिचि दौवारिकम् । ॐ द्वे विरूपेचरतः स्वर्थे अन्यान्या वत्समुधापयेते ॥ हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छु-क्रोऽअन्यस्यां दधृशेवर्चाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दौवारिक इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ ॥ दौवारिकायनमः ॥१८॥ तदुत्तर पदद्वये वामजङ्घायां सुग्रीवम् ॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकंठा-दिवꣳ रुद्राऽउपश्रिताः ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेवधन्वानि-

तन्मसि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सुग्रीव इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ॐ सुग्रीवायनमः ॥१६॥ तदुत्तरपदद्वये वामजानुप्रदेशे पुष्पदंतम् ॥ ॐ नमोगणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमोनमोव्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चवो नमोनमो गृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवो नमोनमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चवोनमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्पदंत इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ पुष्पदंतायनमः ॥२०॥ तदुत्तरपदद्वयेवामोरौवरुणम् । इमम्मेवरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ । ॐ वरुणायनमः ॥२१॥ तदुत्तरपदद्वये वामपार्श्वे असुरम् ॥ ॐ यमश्विनानमुचेरासुरादधिसरस्वत्यसुनोदिंद्रियाय ॥ इमन्तꣳ शुक्रं मधुमंतमिंदुꣳ सोमꣳ राजानमिह भक्षयामि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असुर इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ असुरायनमः ॥२२॥ तदुत्तरसार्द्धपदे वामपार्श्वे शेषम् ॥ ॐ याऽइषवोयातुधानानांयेवा वनस्पतिꣳरनु । येवा वटेषु शेरतेतेभ्यः सर्पेभ्योनमः । ॐ भूर्भुवः स्वःशेष इहागच्छ इहतिष्ठ । ॐ शेषायनमः ॥२३॥ तदुत्तरवायव्ये पदार्द्धे पापम् ॥ ॐ एतत्ते रुद्रावसंतेन परोमूजवतोतीहि ॥ अवतत धन्वाः पिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहिꣳसन्नः शिवोतीहि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पाप इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ पापायनमः ॥२४॥ तत्प्राक्पदार्द्धे वामबाहौ रोगम् ॥ ॐ द्रापे ऽअन्धसस्पते दरिद्रन्नील लोहित आसाम्प्रजानामेषांपशूनाम्माभेर्म्मा रोङ्मोचनः किञ्चनाममत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रोग इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ रोगायनमः ॥२५॥ तत्प्राक्सार्द्धपदे वामबाहावहिर्बुध्न्यम् ॥ ॐ अहिरिव भोगैः

पर्य्येति वाहुं ज्यायाहेतिम्परिवाधमानः ॥ हस्तघ्नोविश्वाव्वयु नानि विद्वान्पुमाᳬंसंपरिपातु विश्वतः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अहिर्बुध्न्य इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ॐ अहिर्बुध्न्यायनमः ॥२६॥ तत्प्राक्पदद्वये वामकूर्प्परे मुख्यम् । ॐ अवतत्यधनुष्ट्वᳬं सहस्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य्यशल्यानां मुखाशिवोनः सुमनाभव॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मुख्य इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ मुख्यायनमः ॥२७॥ तत्प्राक्पदद्वये वामवाहौ भल्लाटम् ॥ ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिनेक्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः ॥ यथाशमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्नातुरम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भल्लाट इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ भल्लाटायनमः ॥२८॥ तत्प्राक्पदद्वये वामवाहौ सोमम् ॥ ॐ सोमᳬं राजानमवसेभिमन्वारभामहे ॥ आदित्यान्विष्णुᳬं सूर्य्यंब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॐ भूर्भुवःस्वः सोम इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ सोमायनमः ॥२९॥ तत्प्राक्पदद्वये वामांसे सर्प्पम् । ॐ विष्णोर्नुकं वीर्य्याणि प्रवोचंयः पार्थिवनिविममेरजाᳬंसि ॥ योऽअस्कभायदुत्तरᳬं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सर्प्प इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ॐ सर्प्पायनमः ॥३०॥ तत्प्राक्सार्द्धपदद्वये वामश्रोत्रेऽदितिम् ॥ ॐ इडऽएह्यदितऽएहि- काम्याऽएत ॥ मयिवः कामधरणंभूयात् । ॐ भूर्भुवः स्वः अदिते इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ अदितयेनमः॥३१॥ तत्प्रागर्द्धपदे वामनेत्रे दितिम् । ॐ अदितिर्द्यौरदितिरंतरिक्षमदितिर्म्माता- सपिता सपुत्रः । विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्जात मदितिर्ज्जनित्वम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दिते इहागच्छ इहतिष्ठ

ॐ दितयेनमः ॥३२॥ मध्यपदेष्वीशानपदोत्तराद्धें अपः । ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऊर्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ ॐभूर्भुवःस्वः आप इहागच्छत इहतिष्ठत ॐअद्‌भ्योनमः ।३३। ईशानपददक्षिणार्द्धे आपवत्सम् ॥ ॐ आतेवत्सो मनोजमत्प- रमाच्चित्सधस्स्थात् ॥ अग्नेत्वं कामयागिरा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आपवत्स इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ आपवत्सायनमः ॥३४॥ तद्दक्षिणपदद्वयेऽर्यमणम् ॥ ॐ यदद्य सूरऽउदिते नागामित्रो- ऽअर्य्यमा सुवाति सविताभगः। ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यमन्निहा- गच्छइहतिष्ठ ॐ अर्यम्णेनमः ॥३५॥ तद् दक्षिणे आग्नेयपदार्द्धे सावित्रम् । ॐ हस्तऽआधाय सविता विभ्रदभिᳪ हिरण्ययीम् ॥ अग्नेर्ज्ज्योतिर्निचाय्यपृथिव्याऽअद्‌ध्या भरदानुष्टुभेनच्छन्द साङ्गिरस्वत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ सावित्रायनमः ॥३६॥ आग्नेयपदपश्चिमार्द्धे सवितारम् ॥ ॐ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रंतन्नऽआसुव। ॐ भूर्भुवःस्वः सवितरिहागच्छ इहतिष्ठ ॐ सवित्रेनमः ॥३७॥ तत्पश्चिमपदद्वये विवस्वन्तम् । ॐ विवस्वन्नादित्यैषते सोमपी- थस्तस्मिन्मत्स्व ॥ श्रदस्मैनरोव्वचसेदधातनयदाशीर्दादंपती वाममश्नुतः ॥ पुमान्पुत्रो जायते विदन्ते वस्वधाव्विश्वाहारप एधतेगृहे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विवस्वन्निहागच्छ इहतिष्ठ ॐ विवस्वतेनमः ॥३८॥ तत्पश्चिमेनैर्ऋत्यपदार्द्धे विबुधाधिपम् । ॐ सवोधिसूरिर्म्मघवाव्वसुपते वसुदावन् ॥ युयोद्ध्यस्म द्वेषाᳪसि विश्वकर्मणेस्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विबुधाधिप इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ विबुधाधिपायनमः ॥३९॥ तदुत्तरार्द्धे

जयन्तम् ॥ अपाढंग्युत्सुपृतनासुप्रप्रिꣳ स्वर्पामप्सां वृजनस्य-गोपाम् । भरेषुजाꣳसुक्षितिꣳ सुश्रवसं जयंतंत्वामनुमदे-मसोम ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जयन्त इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ जय-न्तायनमः ॥४०॥ तदुत्तरपदद्वयेजठरवामे मित्रम् ॥ ॐ मित्रो-नऽएहि सुमित्रधऽइन्द्रस्योरुमाविश दक्षिणमुशन्तुशंतꣳस्योनः स्योनम् ॥ स्वानभ्राजांघ्रारेबंभारेहस्तसुहस्तकृशानवेतेवः सोम क्रयणास्तान्रक्षध्वम्मा वोदभन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मित्र इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ मित्रायनमः ॥४१॥ तदुत्तरे वायव्य-पदार्द्धे वामहस्ते राजयक्ष्माणम् ॥ ॐ नाशयित्रा बलासस्या-र्शसऽउपचितामसि । अथोशतस्ययक्ष्माणम्पाकारोरसिनाशनी ॐ भूर्भुवः स्वः राजयक्ष्मन्निहागच्छ इहतिष्ठ ॐ राजयक्ष्मणे नमः ॥४२॥ तत्पूर्वार्द्धे वामहस्ते रुद्रम् । ॐ अवरुद्रमदीमह्य-वदेवंत्र्यम्बकम् ॥ यथानोव्वस्यसस्करद्यथानःश्रेयसस्करद्यथानो व्यवसाययात् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्र इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ रुद्रायनमः ॥४३॥ तत्पूर्वपदद्वये वामहस्ततले पृथ्वीधरम् । ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्म्मसप्रथाः । ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वीधर इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ पृथ्वीधराय-नमः ॥४४॥ ततोमध्यपदचतुष्के हृदये ब्रह्माणम् ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञा-नंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनआवः ॥ सबुध्न्याऽउपमा-ऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्निहागच्छ इहतिष्ठ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥४५॥

ततो मण्डपाद्बहिरीशानादिषु चरक्यादीनावाहयेत् । ॐ यन्तेदेवी निर्ऋतिराबबंधपाशङ्ग्रीवा स्वविचृत्यम् ॥ तन्ते

विप्याम्यायुषानेमध्यादधैतम्पितुमद्भिप्रसूतः ॥ नमो भूत्यैयेदं-
चकार ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चरकि इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ
चरक्यैनमः ॥ इतीशाने ॥१॥

ॐ अक्षराजायकितवंकृतायादिनवदशंत्रेतायै कल्पिनं
द्वापरायाधि कल्पिनमास्कंदायसभास्थाणुं मृत्यवेगोन्यच्छमन्त
कायगोघातंक्षुधंयोगां विकृतंतंभिक्षमाणऽउपतिष्ठति दुष्कृताय
चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः विदारि इहागच्छ
इहतिष्ठ ॐ विदार्य्यैनमः ॥ इत्यग्निकोणे ॥२॥

ॐ इन्द्रस्य क्रोडोदित्यै पाजस्यन्दिशां जत्रवोदित्यैभसज्जा
मूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षम्पुरी तता नभऽउदर्येणचक्रवाकौमत-
स्नाभ्यां दिवंवृकाभ्यां गिरीन्प्ला शिभिपरुलान्प्लीह्ना वल्मीका-
न्क्लोमभिग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्तौह्रदान्कुक्षिभ्यांᳬ
समुद्रमुदरेणवैश्वानरंभस्मना ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पूतने इहागच्छ
इहतिष्ठ ॐ पूतनायैनमः इति नैर्ऋत्यकोणे ॥३॥

ॐ यस्यास्तेघोरऽआसंजुहोम्म्येषांबन्धानामवसजनाय ॥
यांत्वाजनो भूमिरितिप्रमन्दते निर्ऋतिं त्वांहपरिवेद विश्वतः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः पापराक्षसि इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ पापराक्षस्यै
नमः इति वायवीयकोणे ॥४॥

ततः पूर्वादिदिक्षुस्कन्दादीन् । ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति
कुमारा विशिखाइव ॥ तन्नइन्द्रोबृहस्पतिरदितिःशर्म्मयच्छतु
विश्वाहा शर्म यच्छतु । ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्द इहागच्छ इहतिष्ठ
ॐ स्कन्दायनमः ॥ इति पूर्वस्याम् ॥१॥

ॐ यद्यसरऽउदिते नागामित्रोऽअर्यमा ॥ सुवाति सविता

भगः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यमन्निहागच्छ इहतिष्ठ ॐ अर्यम्णे नमः ॥ इति दक्षिणस्याम्॥२॥

ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणायस्वाहा विचृतायस्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहा यनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः जृम्भक इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ जृम्भकाय नमः ॥ इति पश्चिमस्याम् ॥३॥ ॐ कास्विदासीत् पूर्वचित्तिः किꣳ स्विदासीद् बृहद्वयः कास्विदासीपिलिप्पिलाकास्विदासीत्पिशंगिला ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पिलिपिच्छ इहागच्छ इहतिष्ठ । ॐ पिलिपिच्छायनमः । इत्युत्तरस्याम् ॥४॥ ततः प्रागादिदिक्ष्विन्द्रादीन् ॥ पूर्वे ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रम् पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः ॥१॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्नेवरुणस्यविद्वान्देवस्य हेडोअवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानोविश्वा द्वेषाꣳसिप्प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः अग्नेइहागच्छ इहतिष्ठ ॐ अग्नयेनमः॥२॥ याम्ये ॥ ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वातपसे । देवस्त्वासवितामध्वा नक्तुपृथिव्याःसꣳस्पृशस्पाहि ॥ आचरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥ भूर्भुवः स्वः यमं-

इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ यमायनमः ॥३॥ नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ असुन्वंतमयजमानमिच्छस्ते नस्येत्यामन्विहितस्करस्य ॥ अन्य मस्मदिच्छसातऽइत्यानमो देविनिर्ऋते तुभ्यमस्तु । ॐभूर्भुवः स्वः निर्ऋतेइहागच्छ इहतिष्ठ ॐ निर्ऋतयेनमः॥४॥ पश्चिमे। ॐ वरुणस्योत्तंभनमसिवरुणस्यस्कंभसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्य-ऽऋत सदन्यसिवरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणइहागच्छ इहतिष्ठ ॐ वरुणायनमः ॥५॥ वायव्ये ॥ ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरᳫं सहस्त्रिणीभि-रुपयाहियज्ञम् ॥ वायोऽस्मिन्त्सवनमादयस्वयूयंपातस्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐभूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ वायवे नमः ॥६॥ उत्तरे ॥ ॐ वयᳫं सोमव्रतेतवमनस्तनूषु विभ्रतः॥ प्रजावंतः सचेमहि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेर इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ कुबेरायनमः ॥७॥ ईशान्याम् ॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थु-षस्पतिंधियंजिन्वमवसेहूमहेवयम् ॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः ईशान इहागच्छ इहतिष्ठ ॐ ईशानायनमः ॥८॥ ईशानपूर्वयोर्मध्येब्रह्माणम् ॥ ॐअस्मेरुद्रामेहनापर्वतासोवृत्रहत्येभरहूतौ सजोषाः । यᳫंशᳫं-सतेस्तुवतेधायिपज्रऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँ२ अवन्तुदेवाः ॥ ॐ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्निहागच्छ इहतिष्ठ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥९॥ निर्ऋतिवरुणयोर्मध्येऽनंतम् । ॐ स्योना पृथिविनोभवानृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ॐ अनन्तायनमः ॥१०॥ इत्यावाह्य ॐ वास्तुपीठदेवताभ्योनम इति प्रणम्य प्रतिष्ठांकुर्यात् ॥ तत्रमंत्रः।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं-यज्ञꣳ समिमंदधातु ॥ विश्वेदेवासऽइहमादयंतामों३ प्रतिष्ठ ॥ इतिप्रतिष्ठांकृत्वा । तदुत्तरेताम्रकलशं स्थापयेत् ॥ तत्पूजन प्रकारस्तु कलश पूजने २३ पृष्ठे द्रष्टव्य इति कलशं सम्प्रार्थ्य । तदुपरिसुवर्णमयीं कृकलासरूपां वास्तुप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकं सन्निधाय पट्टवस्त्राद्यैराच्छद्य ततस्तं सकलदेवताधिष्ठितावय-वमुत्तानमीशान कोणस्थितशिरसं नैर्ऋत्यकोणस्थितपादं च यथाकारं वास्तुपुरुषं ध्यायेत्। अथाग्न्युत्तारणविधिः-देशकालौ संकीर्त्य अस्यामूर्त्तावघातादिदोषपरिहारार्थमग्न्युत्तारणं देवता-सान्निध्यर्थं च प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ इति संकल्प्य मूर्तिंपात्रे निधायघृतेनाभ्यज्य ॥ तदुपरिदुग्धधारां जलधारां च (यथाक्रमं पृथक्-पृथक्) पातयेत् ॥ सूक्तं वारद्वयं पठेत्॥ ॐ समुद्रस्यत्वावक याग्नेपरिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥१॥

ॐ हिमस्यत्वा जरायुणाग्नेपरिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्म भ्यꣳ शिवो भव ॥२॥

ॐ अपामिदं न्ययनꣳ समुद्रस्यनिवेशनम् ॥ अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥३॥

ॐ नमस्ते हरसेशोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ॥ अन्याँस्ते-अस्मत्तपंतुहेतयःपावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवोभव ।४। ॐप्राणदा-अपानदाव्यानदाव्वर्चोदा वरिवोदाः ॥ अन्याँस्तेअस्मत्तपन्तुहे-तयः पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवोभव ॥५॥ एवमग्न्युत्तारणं कृत्वा पञ्चामृतेन संस्नाप्य कलशोपरि स्थापयेत् । अथध्यानम् । आसीत्पूर्वं महादैत्यो वास्तुर्यज्ञापकारकः ॥ स देवैर्बहुकालेन

युद्धेहत्वा महीतले ॥१॥ निपात्य बहुभिर्देवैर्निबद्धश्चतुरस्रकः।
ईशाने मस्तकोन्यस्तोनैर्ऋत्ये पादसंपुटम् ॥२॥ जानुनी कूर्परी
कृत्य बाहुयुग्मं तथैव च ॥ वायव्याग्न्योस्ततोजानु हृदये चाञ्ज-
जलिस्तथा ॥३॥ पादौकृत्य च तस्योर्ध्वं स्वयं मुक्ताः सुराः
स्थिताः ॥ इति ध्यात्वा ।

ॐ भूः वास्तुपुरुषमावाहयामि ॥ ॐ भुवः वास्तुपुरुषमावा-
हयामि ॥ ॐ स्वः वास्तुपुरुषमावाहयामि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
वास्तुपुरुष महाबमपराक्रम सर्वदेवाश्रितशरीर ब्रह्मपुत्र सकल
ब्रह्माण्ड धारक भगवन्निहागच्छ ॥ ॐआगच्छ भगवानवास्तु
सर्वदेवैरधिष्ठित ॥ भगवन्कुरुकल्याणं यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौभव ॥
ॐ वास्तोष्पते इति मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिर्वास्तोष्पतिर्देवता
त्रिष्टुप्छन्दो वृषवास्तुप्रतिष्ठापये विनियोगः ॥ ॐ वास्तोष्पते
प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवो भेवानह ॥ यत्त्वेमेहेप्रति
न्नोंजुषस्वशन्नोंभवद्विपदेशंचतुष्पदे ।१। भो वास्तुपुरुष इहति
इत्यावाह्य ॥ ॐ वास्तोष्पतये नम इति पञ्चोपचारैः
संपूज्य ॥ ॐ वास्तोष्पते सङ्कटेभ्यो मां रक्ष रक्ष स्वाहेति
सम्प्रार्थ्य ॥ ततोऽङ्गदेवताः शिख्यादीन्प्रणवादिनमोनमोऽन्त
नाममन्त्रैर्गन्धादिभिकलितोपचारैर्यथोक्तप्रकारेण प्रत्येकं वा
एकत्र काण्डानुसमयेन वा पञ्चोपचारैः पूजयेत् ॥

तत्रादौ प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा
मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसिक्रिया
मयवपुः प्राणाख्या देवता ओं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौंकीलकं
प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्योनमः

शिरसि ॥ ऋग्यजुःसामच्छन्दोभ्यो नमोमुखे। प्राणाख्य-देवतायैनमः हृदि ॥ ओं बीजायनमः गुह्ये। ह्रीं शक्त्यैनमः पाद्योः ॥ क्रौंकीलकाय नमः सर्वाङ्गे। ॐ कं खं गं घं ङं अं पृथ्व्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयायनमः॥ ॐ चं छं जं झं ञं इं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने इं शिरसे स्वाहा॥ ॐ टं ठं डं ढं णं उं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊँ शिखा-यैवषट्॥ ॐ तं थं दं धं नं एं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचायहुँ। ॐ पं फं बं भं मं ओंवचनादानविहरणोत्सर्गानंदा-त्मने औं नेत्रत्रयावौषट। ॐ यं रं लं वं शं षं सं हं लं ठं क्षं अमनोबुद्ध्येहंकारचित्तात्मने अः अस्त्रायफट् एवं मात्मनि-मूर्तौ च कृत्वा मूर्तिं स्पृष्ट्वा जपेत्॥ आँ क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ स हँ लँ क्षँ हँ सः सोऽहम्॥

अस्यदेवस्य प्राणा इहप्राणाः॥ पुनः ॐ आँह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ लँ क्षँ हं सः सोऽहम्। अस्यदेवस्यजीव इह स्थितः॥ पुनः ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ हं सः सोऽहम्। अस्यदेवस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राण-पाणिपाद पायूपस्थानीहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥ तत अर्चाघ्रङ्गुष्ठंदत्वा जपेत्॥ ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यैप्राणाश्चरन्तु च॥ अस्यै देवत्वमर्चायै माम हेतिचकश्चन ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्व-रिष्टं यज्ञꣳसमिमंदधातु॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों३प्र-तिष्ठ ॐ एषवै प्रतिष्ठानामयज्ञोयत्र तेन यज्ञेन यजन्तेसर्व-मेवप्रतिष्ठितंभवति ॥२॥ इति प्रतिष्ठाप्य॥ ॐ भगवन्देवदेवेश

ब्रह्मादिदेवतात्मक !॥ तवपूजां करिष्यामि प्रसादं कुरुमेप्रभो ! इत्युक्त्वा ॥ ॐ वास्तुपुरुषायनमः पाद्यंसमर्पयामि ॥ एवमर्घ्यम् ॥ आचमनम् ॥ पञ्चामृतस्नानम् ॥ शुद्धोदकम् ॥ यज्ञोपवीतम् ॥ वस्त्रम् ॥ गन्धम् ॥ पुष्प—धूप—दीप—नैवेद्य फलताम्बूलदक्षिणादिसमर्प्यार्घ्यंदद्यात् ॥ ॐ पूज्योऽसि त्रिषुलोकेषु यज्ञरक्षार्थहेतवे ॥ त्वद्विना च न सिद्ध्यंति यज्ञदाना-न्यनेकशः॥१॥ अयोनेभगवन्भर्गललाटस्वेदसंभव ! । गृहाणार्घ्यं मयादत्तं वास्तोस्वामिन्नमोऽस्तुते ॥२॥ इत्यर्घ्यं दत्त्वा प्रणम्य वेदीसमीपे प्राङ्मुखः पायसबलिदानं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ ॐ शिखिनेनमः एषपायसबलिर्नमम ॥१॥ ॐ पर्जन्याय नमः एषपायसबलिर्नमम ॥२॥ ॐ जयन्तायनमः एषपायस-बलिर्नमम ॥३॥ ॐ कुलिशायुधायनमः एषपायसबलिर्नमम ॥४॥ ॐ सूर्यायनमः एषपायसबलिर्नमम ॥५॥ इत्येवं प्रयोगेण सर्वे-भ्यो बलीन्दद्यात् ॥ ततश्चरक्यादिभ्योदिक्पालेभ्यश्चमाष-भक्तबलीन्दद्यात् ॥ सयथा ॥ ॐ चरक्यैनमः एषमाषभक्त-बलिर्नमम ॥१॥ इत्येवंक्रमेण ॥ ततः प्रधानवास्तुपुरुषाय बलिंदद्यात् ॥ तत्रमन्त्रः ॥ नानापक्वान्नसंयुक्तं नानागन्धसम-न्वितम् । बलिंगृहाणदेवेश वास्तुदोषप्रणाशक ! । ॐ वास्तु-पुरुषायनमः एषबलिर्नमम ॥१॥ (यथोक्तसंभारैः बलिदान-करणे प्रतिदेवं बलिद्रव्यभेदामन्त्रभेदाश्च अत्रविस्तरभया-न्नोक्ताः) अथप्रार्थना ॥ ॐ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिश्रद्धा-विवर्जितम् ॥ यत्पूजितंमयादेव परिपूर्णं तदस्तुमे ॥१॥ नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वविघ्नहरोभव ॥ शान्तिं कुरु सुखंदेहि सर्वान्

कामान् प्रयच्छ मे ॥ इत्युक्त्वावास्तुपुरुषाय नारिकेलं ससुवर्णं समर्प्य प्रणमेत् ॥ ततः पावमानेनरक्षोघ्नेन च सूक्तेन रक्त-त्रिसूत्र्या मण्डपंवेष्टयेत् ॥ ॐ पवमानः सुवर्जनः इत्यादि पावमानसूक्तम् ॥ इति वास्तुपूजनप्रकारः ।

॥ अथ वास्तुदेवानां होमः ॥

तत्रादौ शिख्यादिभ्यः प्रणवादि स्वाहन्तैस्तन्नामभिर्वा वैदिकमन्त्रैः प्रत्येकमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिर्वाष्टौवाहुतीः समित्तिलपायसाज्यैर्जुहुयात् ॥ अत्र समिधउदुम्बरस्य मुख्या-स्तदभावेऽश्वत्थादीनामपिसर्वाः समिधोमधुघृतक्षीरैर्युक्ता-होतव्यास्तिलाः कृष्णा एव पयो गोरेव ॥

ॐ शिखिने स्वाहा इदं शिखिने० ॥१॥ ॐ पर्ज्ज-न्याय स्वाहा इदं पर्ज्जन्याय ॥२॥ ॐ जयन्ताय स्वाहा इदं-जयंताय ॥३॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय ॥४॥ ॐ सूर्य्याय स्वाहा इदं० ॥५॥ ॐ सत्याय स्वाहा इदं० ॥६॥ ॐ भृशाय स्वाहा इदं० ॥७॥ ॐ आकाशाय स्वाहा इदं० ॥८॥ ॐवायवे स्वाहा इदं० ॥९॥ ॐ पूष्णे स्वाहा इदं० ॥१०॥ ॐ वितथाय स्वाहा इदं० ॥११॥ ॐ गृहक्षताय स्वाहा इदं० ॥१२॥ ॐ यमाय स्वाहा इदं० ॥१३॥ ॐ गन्धर्वाय स्वाहा इदं० ॥१४॥ ॐ भृङ्गराजाय स्वाहा इदं० ॥१५॥ ॐ मृगाय स्वाहा इदं० ॥१६॥ ॐ पितृभ्यः स्वाहा इदं० ॥१७॥ ॐ दौवारिकाय स्वाहा इदं० ॥१८॥ ॐ सुग्रीवाय स्वाहा इदं० ॥१९॥ ॐ पुष्पदंताय स्वाहा इदं० ॥२०॥ ॐ वरुणाय स्वाहा इदं० ॥२१॥

ॐ असुराय स्वाहा इदं०॥२२॥ ॐ शेषाय स्वाहा इदं०॥२३॥ ॐ पापाय स्वाहा इदं०॥२४॥ ॐ रोगाय स्वाहा इदं० रोगायः ॥२५। ॐ सर्पाय स्वाहा इदं० ॥२६॥ ॐ मुख्याय स्वाहा इदं० ॥२७॥ ॐ भल्लाटाय स्वाहा इदं० ॥२८॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं० ॥२९॥ ॐ सर्पाय स्वाहाइदं० ॥३०॥ ॐ अदितये स्वाहा इदं० ॥३१॥ ॐ दितये स्वाहाइदं०॥३२॥ ॐ अद्भ्य स्वाहाइदं० ॥३३॥ ॐ सावित्राय स्वाहाइदं०।३४॥ ॐ जयाय स्वाहा इदं०।३५। ॐ रुद्रायस्वाहा इदं० ॥३६॥ ॐ अर्यम्णे स्वाहाइदं० ॥३७॥ ॐ सवित्रे स्वाहा इदं सवित्रे ॥३८॥ ॐ विस्वस्ते स्वाहा इदं० ॥३९॥ ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा इदं० ॥४०॥ ॐ मित्राय स्वाहा इदं० ॥४१॥ ॐ राजयक्ष्मणेस्वाहा इदं० ॥४२॥ ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा इदं० ॥४३॥ ॐ आपवत्साय स्वाहा इदं० ॥४४॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ॥४५॥

ॐ चरक्यै स्वाहा इदं०॥१॥ ॐ विदार्य्यै स्वाहा इदं०॥२॥ ॐ पूतनायैस्वाहा इदं०॥३॥ ॐ पापराक्षस्यै स्वाहाइदं०।४।

ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय ॥१॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये ॥२॥ ॐ यमाय स्वाहा इदं०॥३॥ ॐ निर्ऋतये स्वाहा इदं० ॥४॥ ॐ वरुणाय स्वाहा इदं० ॥५॥ ॐ वायवे स्वाहा इदं० ॥६॥ ॐ कुबेराय स्वाहा इदं० ॥७॥ ॐ ईशानाय स्वाहा इदं० ॥८॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं० ॥९॥ ॐ अनंताय स्वाहा इदं० ॥१०॥

ॐ उग्रसेनाय स्वाहा इदं० ॥१॥ ॐ डामराय स्वाहा

इदं० ॥२॥ ॐ महाकालाय स्वाहाइदं० ॥३॥ ॐ अश्विभ्यां स्वाहा इदं० ॥४॥ ॐ दुर्गायै स्वाहा इदं० ॥५॥

ॐ अद्यकृतेनानेन समित्तिलपायसाज्यहोमेनशिख्या-दयइन्द्रादयश्चदेवताः प्रीयन्तामितिजलमुत्सृजेत्। अथप्रधान वास्तुदेवहोमः ॥

ॐ इहरतिरिहरमध्वमिहधृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा ॥ इद-मग्नयेनमम ॥१॥ ॐ उपसृजंधरुणंमात्रेधरुणंमातरंधयन्। राय-स्पोषमस्मासुदीधरत्स्वाहा ॥ इद मग्नयेनमम ॥२॥ इत्याज्या-हुतिद्वयंहुत्वा ॥ ततोवास्तोष्पतयेतैरेवसमित्तिलपायसाज्यै-रष्टोत्तरशतमाहुतीर्जुहुयाच्चतुर्भिर्मन्त्रैस्तत्रैकैकेन च मन्त्रेण सप्तविंशतिराहुतयः। इत्यष्टोत्तरशतम्। तद्यथा ॥ ॐ वास्तो-ष्पते इति चतुर्णां वशिष्ठऋषिर्वास्तोष्पतिर्देवता त्रयाणाम् त्रिष्टुब्छन्दोऽन्त्यस्य गायत्रीच्छन्दो होमे विनियोगः।

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानिनीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमी-वोभवानः ॥ यत्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्व शन्नोभवद्विपदेशश्च-तुष्पदे स्वाहा ।१। इदं वास्तोष्पतये० ॥२७॥ ॐ वास्तो-ष्पते प्रतरणो नऽएधिर्गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिंदो। अजरा-सस्ते सख्येस्यामपितेव पुत्रान्प्रतितन्नोजुषस्व शन्नोभवद्विपदे शश्चतुष्पदे स्वाहा ॥२॥ इदं वास्तोष्पतये ।२७। ॐ वास्तो-ष्पतेशग्मयासꣳ सदाते सक्षीमहिरण्वयागातुमत्या। पाहिक्षेम-ऽउतयोगेवरन्नोयुयंपाः स्वस्तिभिः सदानः स्वाहा ॥३॥ इदं वास्तोष्पतये ।२७। ॐ अमीवहावास्तोष्पते विश्वारूपाण्या-विशन्। सखासुशेवएधि नः स्वाहा ।४। इदं वास्तोष्पतये ।२७।

॥१०८॥ ततः स्थाली पाकेनषडाहुतयः॥ ॐ अग्निमिद्रं वृहस्पतिं विश्वान्देवानुषह्वये॥ सरस्वतीं च वाजीनं वास्तुमेदत्त वाजिनः स्वाहा। इदमग्नये इन्द्राय वृहस्पतये विश्वेभ्योदेवेभ्यः सरस्वत्यै वाजिने च न मम।१।ॐसर्प्यं देवजनान्त्सर्वान्हिमवंतं सुदर्शनम्। वसूश्च रुद्रानादैत्यानीशानं जगदैः सह॥ एतान्त्सर्वान्प्रपद्येऽहं वास्तुमेदन्तवाजिनः स्वाहा॥ इदं सर्प्पदेवजनेभ्योहिमवते सुदर्शनाय वसुभ्योरुद्रेभ्य आदितेभ्यईशानाय जगदेभ्यश्चनमम॥२॥ ॐपूर्वाह्णमपराह्णश्चउभौमध्यन्दिनासह। प्रदोषमर्द्धरात्रश्चव्युष्टां देवीम्महापथाम्॥ एतान्त्सर्वान्प्रपद्येऽहं वास्तुमेदत्तवाजिनः स्वाहा॥ इदं पूर्वाह्णायापराह्णायप्रदोपाय अर्धरात्रायव्युष्टयै देव्यैमहापथायनमम॥३॥ ॐ कर्तारश्च विकर्तारं विश्वकर्माणमोषधीश्च वनस्पतीन्॥ एतान्त्सर्वान्प्रपद्येऽहं वस्तुमेदत्त वाजिनः स्वाहा॥ इदं कर्त्रे विकर्त्रे विश्वकर्मणे ओषधीभ्योवनस्पतिभ्यश्चनमम।४। ॐधात्रश्चविधातारंनिधीनां चपतिंसह। एतान्त्सर्वान्प्रपद्येऽहं वास्तुमेदत्त वाजिनः स्वाहा॥ इदंधात्रेविधात्रेनिधीनां पतयेचनमम ॥५॥ ॐ स्योनꣳ शिवमिदं वास्तुदत्त ब्रह्मप्रजापतीन् सर्वाश्चदेवताः स्वाहा॥ इदं ब्रह्मणे प्रजापतये सर्वाभ्योदेवाभ्यश्चनमम॥ ततोवास्तोस्पते इत्युक्तैश्चतुर्भिर्मंत्रैरेकेन वक्ष्यमाणेनचप्रतिमंत्रमेकैकं घृताक्तं बिल्वंतद्वीजंवाजुहुयात्॥४॥ अथ पंचमंघृताक्तबिल्वंगृहीत्वा। ॐ वास्तोष्पतेध्रुवास्थूणामिति मंत्रस्य वशिष्ठऋषिर्वास्तोस्पति देवताबृहतीछन्दोहोमे विनियोगः॥ ॐ वास्तोष्पतेध्रुवास्थूणाꣳ सत्रꣳ सोम्यानाद्रप्सभेत्तापुराशश्वतीनामिंद्रोमुनीनां

सखाशन्नोभवद्विपदेशंचतुष्पदे स्वाहा ॥इदंवास्तोस्पतये०॥५॥
इति हस्तेन जुहुयात् ॥ ततः ॥ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोर-
घोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तुरुद्ररूपेभ्यः ।१।
इत्यघोरमंत्रेणतिलाज्येनाष्टोत्तरशतं वा वास्तुमर्म संधानाय
जुहुयुः । ततः शिख्यादिभ्यः पुनस्तत्तन्नाममंत्रेणप्रणवादि
स्वाहान्तेनयथा शक्त्याऽऽज्याहुतिः प्रत्येकंहुत्वा शिख्या-
दीन्पंचोपचारैः संपूज्य ततो रक्षोघ्नपावमानसूक्ताभ्यांरक्तत्रि-
सूत्र्या प्रासादं वेष्टयपरिता जलदुग्धयोःपृथगविच्छिन्नेधारे
दद्यात् ॥ ततः पीठे पूजितांहैमीं वातुप्रतिमां दधिदूर्वा सप्त--
धान्यशैवालगंधाक्षतपुष्पयुतेऽपक्वमृद्भांडेसंस्थाप्य तत्काष्ठपेटि-
कायां पिधायचतुःषष्टिधाभाजितप्रासादाग्नेयकोणेकोणपदादुत्तरे
आकाशपदे जानुमात्रं गर्तं कृत्वा । ॐ नमोवरुणाय इति जले-
नापूर्यसप्तधान्यगंधपुष्पाणि प्रक्षिप्यपेटिकांतत्रनिधाय ॥ याव-
च्चन्द्रोनगाः सूर्यस्तिष्ठंति प्रतिपादिताः॥ तावत्त्वयात्रदेवेशस्थेयं
भक्तानुकंपया ॥१॥ इति प्रार्थ्य ॥ गर्तं तथैव मृदापूरयेत् ॥
मृदाधिक्ये शुभम् ॥ इति वास्तुदेवानां होमः ॥

॥ अथ क्षेत्रकीलनम् ॥

जपस्थाने गत्वा पृथ्वीग्रहणं कुर्यात् ॥ तद्यथा—
गृहीतस्यास्य मंत्रस्य पुरश्चरणसिद्धये ॥ मयेयं गृह्यते भूमि-
मंत्रोऽयंसिद्धिमाप्नुयात् ॥ इति भूमिं संगृह्य॥ अश्वत्थोदुम्बर-
प्लक्षाणामन्यतम वितस्ति मात्रान् दशकीलान् ॥ ॐ सुदर्शनाय
अस्त्राय फट् इति मंत्रेण अष्टोत्तरशतकृत्वाभिमंत्रितान् ॥ ॐ
ये चात्र विघ्नकर्तारो भुविदिव्यंतरिक्षगाः ॥ विघ्नभूताश्च ये

चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु ॥१॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः ॥ अपसर्पन्तु ते सर्वे निर्विघ्नासिद्धिरस्तुमे ॥२॥ इति मंत्रद्वयेन १० दिक्षु १० कीलान्निखनेत् ॥ ततस्तेषु ॥ ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्रायफट् ॥ इति मन्त्रेण प्रत्येकं कीलं संपूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपतिभ्यश्च माषभक्तवलिं दत्वा ॥ तद्वाह्मे भूत (पंचमहाभूत) वलिंदद्यात् ॥ आचम्य प्राणानायम्य । अद्येत्यादि मम (यजमानस्य) कल्पोक्त फलावाप्तये श्री दुर्गादेव्याः पुरश्चरणसिद्धये चतुर्दिक्षु वटु-कादि देवताभ्यो दधिमाषान्नद्रव्यैः पञ्चमहाभूतबलिदानं करिष्ये ।। चक्रस्य पूर्वे भूमौ सिंदूरेण विन्दुत्रिकोण वृत्तचतुर-स्रात्मकं यन्त्रं विलिख्य ॥ वटुक बलिपात्राधारमंडलायनमः, इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ अन्नव्यंजनयुतमाधारं वलिं च निधाय ॥ ॐ वं वटुक बलिद्रव्याय नमः इति गंधपुष्पा-भ्यां संपूज्य ॥ पूर्वे वं वटुकाय नमः इति संपूज्य । बलिमुप-नीय ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिलजटा-भारभास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय सर्वोपचार-सहितं वलिंगृह्ण २ स्वाहा । इति वामांगुष्ठानामिकाभ्यां बलिमुत्सृजेत् । दक्षहस्तेन जलंत्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ ॐ करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञो-पवीती । क्रतुसमयसपर्याविघ्नविच्छेदहेतुर्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् । बलिदानेन संतुष्टो बटुकः सर्व सिद्धिदः शान्ति करोतु मे नित्यं भूतवेतालसेवितः ॥ इति पुष्पांजलिं दद्याद् ॥ चक्रस्य दक्षिणे पूर्ववत् यन्त्रं विलिख्य,

योगिनीबलिपात्राधारमंडलाय नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ तदुपरि अन्नव्यंजनयुतमाधारंबलिं च निधाय ॥ ॐ यां योगनीबलि द्रव्याय नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य ॥ दक्षिणे यां सर्वयोगिनीभ्यो नमः इति संपूज्य बलिमुपनीय । ॐ सर्ववर्ण योगिनीभ्य इमं बलिंगृह्ण २ हुँफट् स्वाहा इति वामांगुष्ठमध्यमा नामिकाभिः बलिमुत्सृजेत् ॥ दक्षहस्तेन जलंत्यजेत् ॥प्रार्थना ॥ ॐ उर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्फले वा पातालेवा (स्थले) ऽनले वा सलिलपवन योर्यत्रकुत्र स्थिता वा ॥ क्षेत्रेपीठोपपीठादिशि च कृतपदा-धूपदीपादिकेभ्यः प्रीता देव्यः सदा नः शुभविधिबलिनःपांतु वीरेन्द्रवन्द्याः ॥ या काचिद्योगिनीरौद्रा सौम्या घोरपरात्पराः खेचरी भूचरी व्योमवती प्रीतास्तुमेसदा ॥ यां योगिनीभ्यः स्वाहा सर्वाभ्योयोगिनीभ्योफट् ॥ पुष्पांजलिंदद्यात् ॥

चक्रस्य पश्चिमे पूर्ववत् यन्त्रं विलिख्य ॥ क्षेत्रपालबलि-पात्राधारमण्डलाय नमः इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य ॥ अन्नव्यंजनयुतमाधारं बलिं च निधाय ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालबलि द्रव्याय नमः इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य ॥ पश्चिमे क्षं क्षेत्र-पालाय नमः इति सम्पूज्य ॥ बलिमुपनीय ॥ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः भोस्थान क्षेत्रपालाय इमं बलिं गृह्ण२ सर्वकामान् पूरय२ स्वाहा वामांगुष्ठ तर्जनीभ्यां बलिमुत्सृजेत ॥ दक्षहस्तेन जलं त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ याऽस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालः सकिंकरः ॥ प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतुमे ॥पुष्पांजलिं दद्यात् ॥

चक्रस्य ऊत्तरे पूर्ववत् यन्त्रं विलिख्य, गंगणेशबलिपात्राधारमण्डलाय नमः इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य तदुपरि अन्नव्यंञ्जनयुतमाधारबलिं च निधाय। ॐ गं गणेशबलि-द्रव्याय नमः इति गन्ध पुष्पाभ्यां सम्पूज्य ॥ उत्तरे गं गणेशाय नमः इतिसम्पूज्य बलिमुपनीय॥ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचारसहितं बलिंगृह्ण२स्वाहा ॥ इति वामांगुष्ठमध्यमाभ्यां बलिमुत्सृजेत् ॥ दक्षहस्तेन जलन्त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ सर्वदा सर्वकार्याणिनिर्विघ्नं साधयेन्मम ॥ शान्तिंकरोतु सततं विघ्नराजः स शक्तिकः ॥ पुष्पांजलिं दद्यात् ॥

स्ववामे चतुष्कोणयन्त्रं विलिख्य ह्रीं सर्वभूतविघ्नकृत् बलिपात्राधारमण्डलायनमः इति गन्ध पुष्पाभ्यां सम्पूज्य तदुपरि अन्नव्यंजनयुतमाधारं बलिं च निधाय॥ सर्वभूतविघ्नकृतबलिद्रव्याय नमः॥ इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य ॥ बलिमुपनीय ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः इमं बलिंगृह्ण २ हुँफट् स्वाहा ॥ इति सर्वाङ्गुलिभिः बलिमुत्सृजेत् ॥ दक्षेनजलं त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ येभूता विघ्नकर्तारः दिविभूम्यन्तरिक्षगाः ॥ येच पातालसंस्थाश्च शिवयोगेनभाविताः ॥ क्रूराद्याः शतसंख्याकाः पाखण्डाद्या व्यवस्थिताः ॥ ध्रुवाद्याः सत्यसंख्याश्च इन्द्राद्याशा व्यवस्थिताः ॥ तृप्यन्तुप्रीतिमनसोभूतागृह्णन्त्विमं बलिम् ॥ नगरेवाथसंग्रामे अटव्यां वैसरित्तटे॥ वापीकूपेश्मशाने च राजद्वारे चतुष्पथे ॥ नानारूपधरा येच बहुरूपधराश्चये॥ ते सर्वे चैव सन्तुष्टा बलिंगृह्णन्तुमेसदा ॥ इति पुष्पांजलिं दद्यात्॥

॥ प्रधानबलिः ॥

देवताग्रे मध्येभूमौ सिन्दूरेण विन्दुत्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं यन्त्रं विलिख्य ॥ मूलं चण्डिकाबलिपात्राधारमण्डलाय नमः ॥ इति गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य ॥ अन्नव्यंजनयुतमाधारं वलिं च निधाय ॥ ॐ मूलं, दुर्गाबलिद्रव्याय नमः इति गन्ध-पुष्पाभ्यां सम्पूज्य ॥ मूलं सांगायै सायुधायै सवाहनायै सप-रिवारायै सशक्तिकायै ब्रह्मविष्णुरुद्रसहितायै त्रिगुणात्मिका-चण्डिका देव्यैनमः इति सम्पूज्य बलिमुपनीय ॥ मूलम्, एह्येहि जगतां जननि ! इममामिषान्नबलिंगृह्ण२ सिद्धिं देहि२ शत्रुक्षयं कुरु२ ह्रीं ह्रीं हुँफट् स्वाहा एषवलिः साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सशक्तिकायै ब्रह्माविष्णु-रुद्रसहि-तायै त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गादेव्यै नमः ॥ इति वामाङ्गुष्ठा-नामिकाभिः बलिमुत्सृजेत् दक्षहस्तेन जलन्त्यजेत् ॥ प्रार्थना ॥ ॐ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्तिहरेदेवि, नारायणि नमोऽस्तुते॥ देव्याः दक्षिणभागे सिंहवलिं-वामभागे महिषवलिं च कुर्यात् ॥ सिंह बलिमन्त्रोऽयम् शारदातन्त्रे ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधायसिंहाय हुँफट् नमः ॥ अन्यच्च॥ ॐ सौ वनस्पति-पुत्राय सिंहाय इमं बलिं गृह्ण२ स्वाहा ॥ महिषबलि-मन्त्रः ॥ ॐ भूं महिषशृंगेभ्यो महिषेभ्यः इमं बलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ महिषबलि मन्त्रः॥ पुष्पांजलिं दद्यात्॥

ॐ सर्वेभ्यो बलिदेवताभ्यो नमः इति सर्वमभ्यर्च्य॥ नाराच-मुद्रां बद्ध्वा ॥ बलिदानेन सन्तुष्टाः क्षमध्वं बलिदेवताः ॥

यथासुखं वितरन्तु यथेष्टमुद्रितावराः । वटुकाद्याः सुराःसर्वे सर्व-सिद्धिं विधायिनः ॥शान्तिपुष्टिंप्रयच्छन्तुत्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ स्तुत्वामुद्रांविसृज्य प्रोक्षणी जलेनात्मानं प्रोक्षयेदिति ॥

तत्र मन्त्राः ये रौद्राः रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः॥ मातरोप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥१॥ भूचराः खचरा-श्चैव तथाचैवांतरिक्षगाः ते सर्वे प्रीतिमनसः प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ॥२॥ इति मन्त्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्येमाषभक्तबलिं दद्यात् ॥ ततो वामकराङ्गुलिभिरर्घ्यजलेनोत्सृज्य पुष्पांजलिं गृहीत्वा ॥ ॐभूतानि यानीहवसन्तिभूतलेबलिं गृहीत्वाविधि-वत्प्रयुक्तम् । संतोषमासाद्य व्रजन्तु सर्वे क्षमन्तुतान्यत्रनमो-स्तुतेभ्यः। इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा प्रणम्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्या-चामेत् । इति क्षेत्रकीलनम् ॥

तत्रादौ गुरुर्त्विग्भिः सर्वौषधीयुतजलेन स्नापितः शुक्ल-माल्याम्बरधरः शुक्लगन्धानुलेपनः सपत्नीकः पुत्रपौत्रयुतो यजमानः साचार्यः सर्त्विक् सम्पूर्णकलशहस्तो मंगलतूर्यनिस्वने जायमाने ॐ भद्रङ्कर्णेभिःशृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्य-जत्राः॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदायुः ॥ इत्यादिवेदघोषेण मण्डपपूजनं कुर्यात् ॥ आचम्य प्राणानायम्य॥ ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकदेवप्रतिष्ठायज्ञाङ्गतया गणेशपूजापूर्वकमण्डपदेवतास्थापनादि च करिष्य इति सङ्कल्प्य यथाविधि गणेशं सम्पूज्य स्तम्भपूजनं कुर्यात् ॥ मध्यवेद्या ईशानादितः प्रदक्षिणक्रमेणेशान्यां ब्रह्माणम् आवाहयामि

देवेशं ब्रह्ममूर्तिं पितामहम् ॥ पुस्तकं चाक्षसूत्रं च शूलहस्तं कमण्डलुम् ॥१॥ हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणसेवितम् ॥ आगच्छ भगवन्ब्रह्मन्प्रथमस्तम्भसंस्थितः ॥२॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्निहागच्छ इह तिष्ठेत्यावाह्य। ॐ ब्रह्मणे नमः इति गन्धादिषोडशोपचारैः पूजयेत् ॥१॥ तत आग्नेयस्तम्भे विष्णुम् । आवाहयामि देवेशं विष्णुं त्रैलोक्यपूजितम् । शंखचक्रगदापद्मचतुर्बाहुं सुशोभनम् ॥१॥ गरुडे च समारूढं लक्ष्मीगणसमायुतम् ॥ आगच्छ भगवन्विष्णो द्वितीयस्तम्भसंस्थितः ॥२॥ ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमेत्रेधानिदधे पदम् ॥ समूढमस्यपाꣳसुरे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ॐ विष्णवे नम इति पूजयेत् ॥ ततो नैर्ऋत्यस्तम्भे रुद्रम् ॥ आवाहयामि देवेशं शिवं त्रैलोक्यधारिणम् ॥ वृषभे च समारूढं चन्द्रार्धकृतशेखरम् ॥१॥ त्रिशूलायुधसंयुक्तं मुण्डमालाविभूषितम् ॥ उमागणसमायुक्तं नागयज्ञोपवीतकम् ॥ आगच्छ देवदेवेश तृतीयस्तम्भ संस्थितः ॥२॥ ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः ॥ बाहुभ्यामुततेनमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शिव इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य। ॐ शिवाय नम इति पूजयेत् ॥३॥ वायुकोणे इन्द्रम् । आवाहयामि देवेशं सहस्राक्षं पुरन्दरम् ॥ ऐरावतगजारूढ वज्रायुधसमन्वितम् ॥१॥ शचीपतिं महाबाहुं नानाभरणभूषितम् ॥ आगच्छ देवराजेन्द्र चतुर्थस्तम्भसंस्थितः ॥२॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवेहवेसुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ।

ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रँ स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य ॥ ॐ इन्द्राय नम इति पूजयेत् ॥४॥ ततो बाह्यस्तम्भेषु ईशानकोणादारभ्य द्वादशस्तम्भ पूजनम् ॥ तत्र ईशाने सूर्यम्॥ आवाहयामि देवेशं भास्करं तिग्मतेजसम् ॥ सप्ताश्ववाहनारूढं रथे काञ्चननिर्मिते ॥१॥ रक्ताङ्गं पद्महस्तं च त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ सर्वदुःखहरं देवं ब्रह्मण्यमधिकप्रभम् ॥ आगच्छ रक्षक त्वं च पञ्चमस्तम्भसंस्थितः ॥ ॐ आकृष्णेनरजसाव्वर्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानि पश्यन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य । ॐ सूर्याय नमः इति पूजयेत् ॥५॥ ईशानपूर्वयोरन्तरालस्तम्भे गणेशम् ॥ आवाहयामि देवेशं गणनाथं विनायकम् ॥ लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं गणेश्वरम् ॥१॥ सिद्धिबुद्धिप्रदातारं सर्वविघ्नविनाशकम् । सर्वेषामेव देवानां मुख्यं देवं महाबलम् ॥ आगच्छ गणनाथस्त्वं षष्ठस्तम्भसमाश्रितः ॥२॥ ॐ गणानान्त्वागणपति ँ हवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिँहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिँहवामहे व्वसोमम ॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्वम जासिगर्ब्भधम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणपत इहागच्छ इह तिष्ठेत्यावाह्य ॐ गणपतये नमः इति पूजयेत् ॥६॥ ततः पूर्वाग्न्योरन्तरालस्तम्भे यमम् ॥ आवाहयामि देवेशं यमं जन्तुभयङ्करम् ॥ रौद्रमूर्तिं विरूपाक्षं कृष्णाञ्जनसमप्रभम् ॥१॥ माहिषं रथमारूढं दण्डायुधसमन्वितम् ॥ कर्मणां साक्षिणं देवं

धर्मार्थकामचिन्तनम् ॥ आगच्छ धर्मराजेन्द्र सप्तमस्तम्भ-संस्थितः ॥२॥ ॐ यमायत्वामखायत्वासूर्य्यस्यत्वा तपसे ॥ देवस्त्वा सविताम द्ध्वानक्तुपृथिव्यासᳪस्पृशस्पाहि ॥ अर्च्चि-रसिशोचिरसितपोऽसि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ॐ यमाय नमः इति पूजयेत् ॥७॥ ततोऽग्निकोण-स्तम्भे शेषम् । आवाहयामि देवेशं पातालतलवासिनम् ॥ सहस्रशिरसं देवं फणामणिविभूषितम् ॥ आशीविषशतो-पेतमष्टमस्तम्भसंस्थितम् ॥१॥ ॐनमोऽस्तुसर्प्पेभ्योयेकेचपृथिवी-मनु ॥ येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यः सर्प्पेभ्योनमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शेष इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ॐ शेषाय नमः इति पूजयेत् ॥८॥ आग्नेयदक्षिणयोरन्तरालस्तम्भे स्कन्दम् ॥ आवाहयामि देवेशं षण्मुखं कृत्तिकासुतम् ॥ रुद्रवीर्यसमुद्भूतं देवं गणसम-न्वितम् ॥१॥ सर्वशास्त्रपरिज्ञातं तत्त्वज्ञं ब्रह्मवादिनम् ॥ मयूरा-सनमारूढं सौम्यमूर्तिं शुभाननम् ॥ आगच्छ देवदेवेश ! नव मस्तम्भसंस्थितः॥२॥ ॐ यदक्रन्दःप्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्रा-दुतवापुरीषात् ॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्यंमहिजा-तन्तेऽअर्व्वन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य ॥ ॐ स्कन्दाय नमः इति पूजयेत् ॥९॥ दक्षिण-नैर्ऋत्यान्तरालस्तम्भे वायुम् ॥ आवाहयामि देवेशं भूतानां प्राणसंज्ञितम् ॥ सर्वाधारं महादीप्तिं बाह्याभ्यन्तरसंस्थितम्॥१॥ कृष्णमृगसमारूढं ध्वजायुधसमन्वितम् ॥ आगच्छ भगवन्वायो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधौ भव ॥२॥ ॐ व्वायोयेतेसहस्रिणोरथ-सस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः

वायो इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य॥ ॐ वायवे नमः इति पूजयेत् ॥१०॥ ततो निऋतिस्तम्भे सोमम्। आवाहयामि देवेशं शशिनं रात्रिनायकम्॥ क्षीरोदधिसमुद्भूतं रुद्रशीर्षनिवासिनम् ॥१॥ शुद्धस्फटिकसंकाशं मुकुटोज्ज्वलभूषितम्॥ आगच्छ सोम देवेश स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधौ भव ॥२॥ ॐ आप्यायस्वसमेतुतेव्विश्वतः सोमवृष्ण्यम्॥ भवाव्वाजस्यसंगथे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सोम इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य॥ ॐ सोमाय नमः इति पूजयेत् ॥११॥ ततो निऋतिपश्चिमयोर्मध्यस्तम्भे वरुणम्। आवाहयामि देवेशं वरुणं जलनायकम्॥ कुम्भे रथसमारूढं श्वेताद्रिशिखरोपमम्॥ पाशहस्तं महाबाहुं सर्वेषामभयप्रदम्॥ आगच्छ वरुणेशान द्वादशस्तम्भसंस्थितः ॥२॥ ॐ इमम्मेव्वरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय॥ त्वामवस्युराचके॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य॥ ॐ वरुणाय नमः इति पूजयेत् ॥१२॥ पश्चिमवायव्ययोर्मध्यस्तम्भे अष्टवसून्। आवाहयामि देवेशान्वसूनष्टौ महाबलान्॥ अश्ववाहनसंयुक्तान्पुष्पमालाविभूषितान् ॥ वसवोऽष्टावागच्छन्तु त्रयोदशसमाश्रिताः ॥१॥ ॐ व्वसोः पवित्रमसिशतधारंव्वसोः-पवित्रमसिसहस्रधारम् ॥ देवस्त्वासवितापुनातुव्वसोःपवित्रेण शतधारेणसुप्वाकामधुक्षः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वसव इहागच्छत इह तिष्ठत इत्यावाह्य॥ ॐ वसुभ्यो नमः इति पूजयेत् ॥१३॥ ततो वायव्यस्तम्भे धनदम्॥ आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्॥ महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतं विभुम् ॥१॥ दिव्यमालाम्बरधरं गदाहस्तं महाभुजम्॥ आगच्छ यक्षराज त्वं

स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधौ भव ॥२॥ ॐ व्वयꣳसोमव्रतेतवमनस्तु-नूषुबिभ्रतः ॥ प्रजावन्तःसचेमहि ॥ॐ भूर्भुवः स्वः धनद इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य॥ ॐ धनदाय नमः इति पूजयेत्॥१४॥ ततो वायव्योत्तरयोरन्तरालस्तम्भे बृहस्पतिम्।आवाहयामिदेवेशं गुरुं त्रैलोक्यपूजितम् । हेमरोचनवर्णाभं पीतस्कन्धं महौजसम् ॥१॥ देवानां मन्त्रिणं प्राज्ञं सर्वविद्याविशारदम् ॥ आगच्छ देवदेवेश स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधौ भव ॥ २ ॥ ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽ-अर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वसऽऋतप्रजाततद-स्मासुद्रविणंधेहिचित्रम् । ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते इहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य ॐबृहस्पतये नम इति पूजयेत् ॥१५॥तत उत्तरे-शानयोर्मध्यस्तम्भे विश्वकर्माणम्। आवाहयामि देवेशं विश्व-कर्माणमीश्वरम् ॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥१॥ देवर्षिपितृभूतानां गर्भितारं सनातनम् ॥ आगच्छ विश्व-कर्मंस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधौ भव ॥ ॐ विश्वकर्म्मन्हविषा-व्वर्धनेनत्रातारमिन्द्रमकृणारवद्ध्यम् ॥ तस्मैव्विशः समन-मन्तपूर्वीरयमुग्रोव्विहव्योयथासत् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विश्व-कर्मन्निहागच्छ इह तिष्ठ इत्यावाह्य । ॐ विश्वकर्मणे नमः इति पूजयेत् । इति षोडशस्तम्भपूजनम् ॥ ॐ नागमात्रे नमः इति वलिकाष्ठानि पूजयेत् ॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः इति शाखो-द्वन्धनादि पूजनम् । ततः पश्चिमद्वारेण निर्गत्य पूर्वादिद्वार-तोरणपूजां कुर्यात् ।। तत्रादौ पूर्वस्यां दिशि मण्डपाद्बहिर्हस्त-मात्रे आश्वत्थं सुदृढनामकं सिन्दूरसदृशं महेन्द्रपर्वतयुतं शङ्खाङ्कितं तोरणं न्यस्य अश्वत्थतोरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्ना-

न्निवारय ॥ ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम्। होतारंरत्नधातमम् ॥ ॐ ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः सुदृढतोरणमावाहयामि । ॐ सुदृढतोरणाय नमः गन्धं समर्पयामि । पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं ताम्बूलं दक्षिणां च समर्पयामीति गन्धादिना सम्पूज्य ॥ ॐ कृतयुगाय नम इति कृतयुगं सम्पूज्य । तत्रैव राहवे नमः राहुमावाहयामि । बृहस्पतये नमः बृहस्पतिमावाहयामि इत्यावाह्य। ॐ राहुबृहस्पतिभ्यां नमः इति गन्धादिभिः पूजयेत् ॥ तत्रैकः कलशः स्थाप्यः तत्पूजनं कुर्यात् ॥

तस्मिन्कलशे ॐ ध्रुवमावाहयामि इत्यावाह्य ॥ ॐ ध्रुवाय नमः इति गन्धाद्युपचारान्समर्पयेत् ॥ ततः आचम्य दक्षिणे गत्वा औदुम्बरं विकटनामकं चक्राङ्कितं विन्ध्यनामगिरियुतं धूम्रवर्णाभं तोरणं न्यस्य। एह्येहि विकटतोरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान्निवारय ॥ ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वाव्वायवस्थदेवो वः सविता प्रार्प्पयतुश्रेष्ठतमाय कर्म्मणऽआप्यायध्वमघ्न्यऽइन्द्रायभागंप्रजापतीरनमीवाऽअयक्ष्मावस्तुनऽइशतमाघशꣳ सोध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौस्यातबह्वीर्य्यजमानस्यपशून्पाहि ॥ ॐ यजुर्वेदाधिष्ठिताय विकटतोरणाय नमः विकटतोतणमावाहयामि ॥ ॐ विकटतोरणाय नमः त्रेतायुगाय नमः, इति गन्धाद्युपचारान्समर्पयेत् ॥तत्र॥ ॐ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि ॥ ॐ अङ्गारकाय नमः अङ्गारकमावाहयामि ॥ ॐ सूर्याङ्गारकाभ्यां नमः इति गन्धादीन्समर्पयेत् ॥ तत्रैकः कलशः पूर्वोक्तविधिना संस्थाप्यः । तस्मिन्कलशे । धरायै नमः धरामावाहयामि।

ॐ धरायै नमः इति गन्धाद्युपचारान्समर्पयेत् ॥ तत आचम्य पश्चिमे गत्वा प्लाक्षं सुभीमाख्यं स्वर्णसदृशप्रभं गन्धमादन पर्वतसहितं गदाङ्कितं तोरणं न्यस्य ॥ एह्येहि सुभीमतोरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान्निवारय । ॐ अग्नआयाहि व्वीतये गृणानो हव्यदातये ॥ निहोता सत्सिबर्हिषि ॥१॥ सामवेदाधिष्ठिताय सुभीमतोरणाय नमः सुभीमतोरणमावाहयामि ॥ ॐ सुभीमतो-रणाय नमः द्वापरयुगाय नमः इति गन्धादिभिः सम्पूज्य । तत्र शुक्रायनमः शुक्रमावाहयामि बुधायनमः बुधमावाहयामि । ॐ शुक्रबुधाभ्यां नमः इति गन्धाद्यर्पणम् तत्रैकः कलशः स्थाप्यः । तस्मिन्कलशे वाक्पतिमावाह्य वाक्पतये नमः इति पूजयेत् ॥ तत आचमनमुत्तरे गत्वा । चाटं सुप्रभाख्यं शुद्ध-स्फटिकप्रभं हिमवत्पर्वतसहितं पद्माङ्कितोरणं न्यस्य । एह्येहि सुप्रभतोरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान्निवारय । ॐ शन्नोदेवीर-भिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंय्योरभिस्रवंतुनः ॥ अथर्ववेदा-धिष्ठिताय सुप्रभतोरणाय नमः सुप्रभतोरणमावाहयामीत्या-वाह्य ॐ सुप्रभतोरणाय नमः कलियुगाय नमः इति गन्धा-दिना पूजयेत् । तत्र । सोमाय नमः सोममावाहयामि । केतवे नमः केतुमावाहयामि । शनैश्चराय नमः शनैश्चरमावाहयामि सोमकेतुशनैश्चरेभ्यो नम इति गन्धादिना पूजयेत् । तत्रैकः पूर्ववत्कलशः स्थाप्यः । तस्मिन्कलशे विघ्नेशमावाहयामि । ॐ विघ्नेशाय नमः इति गन्धादिना पूजयेत् ॥ ततः पूर्वे गत्वा । पूर्ववन्महीद्यौरित्यादिविधिना प्रतिद्वारशाखं कलशद्वयं संस्थाप्य प्रतिकलशं मन्त्रावृत्तिः । अस्मिन्कलशद्वये ऐरावतदिग्गजमा-

वाहयामि । ऐरावतदिग्गजाय नम इति गन्धादिना पूजयेत् । कलशोपरि घृतेन दीपो देयः । तत्र ऋग्विधिना ऋत्विजौ । ऋग्वेदः पद्मपत्राक्षो गायत्र्यः सोमदैवतः ॥ अत्रिगोत्रस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥ इति प्रार्थ्य ॥ ॐ अग्निमीळेपुरोहितंयज्ञस्यदेवमृत्विजम् । होतारंरत्नधातमम् । इति मन्त्रेण प्रत्येकं गन्धादिना पूजयेत् । श्रीसूक्तं पावमानं च सोमसूक्तं सुमङ्गलम् । पौरुषं रुद्रसूक्तं च वामदेव्यं तथैव च ॥४॥ श्रीसूक्तं 'हिरण्यवर्णामि'ति पञ्चदशर्चम् ॥ ५ ॥ पावमानं 'स्वादिष्ठयाम'इत्यादि। सोमसूक्तं 'त्वं सोमप्रचिकितो'इत्यादि। सुमङ्गलं 'कनिक्रददि'त्यादि । पौरुषं 'सहस्रशीर्षे'त्यादि । रौद्रं 'मिमारुद्राय तवसे' इत्यादि । वामदेव्यं 'कयानश्चित्र'त्यादि ऋग्वेदीयम् ॥ ६ ॥ ततः सहस्राक्षमैरावतसंस्थितं पीतकिरीटिनं कुण्डलधरं दक्षिणवामकरस्थवज्रोत्पलमिन्द्रं ध्यात्वा । ॐ एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतो वज्रधरोऽमरेशः ॥ सम्वीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ इति साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमिन्द्रं द्वारकलशे आवाह्य ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रᳬंहवेहवेसुहवᳬंशूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रᳬंस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ इन्द्राय नमः इति गन्धादिभिः प्रपूज्य ॥ ॐ आशुःशिशानो वृषभोनभीमोघनाघनःक्षोभणश्चर्षणीनाम् । संक्रन्दनोनिमिषएककवीरःशतᳬंसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥

इति मन्त्रेण पीतौ पताकाध्वजावुच्छ्रयेत् ॥ ततो द्वार-

शाखयोर्दक्षिणोत्तरयोः । धात्रे नमः विधात्रे नमः ।:(ऊर्ध्व) द्वारश्रिय नमः । गणपतये नमः ॥ (तदुपरि) वास्तुपुरुषाय नमः ।(अधो)देहल्यै नमः । वामदक्षिणस्तम्भयोर्गणेशाय नमः । स्कन्दाय नमः । कलशद्वये गंगायै नमः । यमुनायै नमः । इन्द्राय नमः । इति सम्पूज्य इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः॥ शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥ इति नत्वा । ततो माषभक्तबलिं गृहीत्वा ॥ ॐ इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैतंमाषभक्तबलिं समर्पयामि। इति बलिं दत्त्वाऽऽचामेत् । तत आग्नेय्यां गत्वा तत्र पूर्वव-त्कलशं संस्थाप्य ॥ तत्र ॥ पुण्डरीकाय नमः पुण्डरीकमावा-हयामि ॥ अमृताय नमः अमृतमा० ॥ पुण्डरीकामृताभ्यां नम इति गन्धादिना सम्पूज्य तत्र दीपो देयः । ततः छागस्थं रक्तवर्णं दक्षिणवामकरद्वयधृतशाक्तकमण्डलुं यज्ञोपवीतिनमग्निं ध्यात्वा ॐ एह्येहि सर्वामरहव्यवाहमुनिप्रवर्यैरभितोऽभिजुष्टः॥ तेजोवता लोकगणेन सार्द्धं ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ इति साङ्गं सपरि-वारं साधुयं सशक्तिकं कलश आवाह्य। ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव-देवपायुभिर्म्मघानो रक्षतन्वश्चवन्द्य ॥ त्राताताोकस्यतनये-गवामस्यनिमेषꣳरक्षमाणस्तवव्रते ॥१॥ ॐ अग्नये नम इति गन्धादिना प्रपूज्य। ॐ अग्निंदूतंपुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२ आसादयादिह ॥ इति मन्त्रेण रक्तौ ध्वजापताकावुच्छ्र-येत् (रक्ते ध्वजपताके उच्छ्रयेत्)। अथ प्रार्थना। आग्नेयः पुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः ॥ धूमकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं

नमो नमः ॥ १ ॥ अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं माषभक्तबलिं समर्पयामि इति बलिं दत्त्वाऽऽचमेत् ॥२॥ ततो दक्षिणे गत्वा। प्रतिद्वारशाखं कलशद्वयं संस्थाप्य तत्र कलशद्वये। वामनाख्यं दिग्गजमावाहयामि। ॐ वामनाख्यदिग्गजाय नम इति संपूज्य दीपं दद्यात्। तत्र यजुर्वेदिनौ द्वारपालौ। कातराक्षौ यजुर्वेदस्त्रैष्टुभो विष्णुदैवतः ॥ काश्यपेयस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥ इति प्रत्येकं वृत्वा। इषेत्वोर्ज्जेत्वा० इति मन्त्रेण गन्धादिभिः प्रत्येकं सम्पूज्य। आनोभद्रानुवाकश्च आशुःशिशानकस्तथा। यद्देवान्त्रीणि च पठेत्ततोऽष्टौ च पुनन्तु माम् ॥ २ ॥ आनोभद्रानुवाकः 'आनोभद्राक्रतवो'इत्यादिदशमन्त्रात्मकः। आशुःशिशानकः 'आशुःशिशानो'इत्यादिअष्टादशमन्त्रात्मकः यद्देवा देवहेडनमित्यादिमन्त्रत्रयम्। 'पुनन्तु मा देवजना'इत्याद्यष्टौमन्त्राः ॥ ततो महिषारूढधृतदण्डपाशदक्षिणवामकरं कृष्णाञ्जनगोपममग्निसमलोचनं यमं ध्यात्वा ॥ ॐ एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चितधर्ममूर्ते ॥ शुभाशुभानन्दशुचामधीश शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ इति यमं साङ्गं० द्वारकलशे आवाह्य। ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे ॐ यमाय नम इति गन्धादिना प्रपूज्य ॥ ॐ आयङ्गौःपृश्निरक्रमीदसन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्चप्रयन्त्स्वः ॥ इति कृष्णौपताकाध्वजावुच्छ्रयेत् ॥ प्रार्थना। वैवस्वत महादेव नमस्ते धर्मसाक्षिक। शिवाज्ञापिहितो देव दिशं रक्ष

भवानिह ॥१॥ ततो द्वादशाखयोः । बलाय नमः । सबलाय नमः । (ऊर्ध्वम्) । श्रियै नमः । गणपतये नमः । (अधः) । देहल्यै नमः । वास्तुपुरुषाय नमः । स्तम्भयोः । पुष्पदन्ताय नमः । कपर्दिने नमः । कलशद्वये गोदावर्यै नमः। कृष्णायै नमः इति सम्पूज्य । ॐ यमाय साङ्गाय० एतं माषभक्तबलिं समर्पयामि । इति बलिं दत्त्वाचामेत् ॥ ततो नैर्ऋत्यां गत्वा । तत्र पूर्ववत्कलशं संस्थाप्य तस्मिन् कुमुदमावाहयामि । दुर्ज्जयमावाहयामि । कुमुददुर्ज्जयाभ्यां नम इति प्रपूज्य दीपो देयः । तत्र निर्ऋतिं नरारूढं महाकायं खड्गहस्तं महाबलं नीलं राक्षसवेष्टितं पीताभरणभूषितं ध्यात्वा । एह्येहि रक्षो-गणनायकस्त्वं विशालवेतालपिशाचसङ्घैः॥ ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वरस्त्वं भगवन्नमस्ते ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छ इहतिष्ठ इति साङ्गं निर्ऋतिं कुम्भे आवाह्य। ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्वि हि तस्करस्य ॥ अन्न्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥ ॐ निर्ऋतये नम इति संपूज्य ॥ ॐ मोषूणइन्द्रात्रपृत्सुदेवैरस्ति-हिष्मातेशुष्मिन्नवयाः महश्चिद्यस्यमीढुषोयव्याहविष्मतोमरुतो-वन्दतेगीः ॥ इति नीलपताकाध्वजावुच्छ्रयेत् । राक्षसेभ्यो हि रक्षार्थं भवानेत्र प्रतिष्ठितः ॥ निर्विघ्नां यज्ञभूमिं मे कुरुष्व शववाहन ॥ निर्ऋतये साङ्गाय० एतं माषभक्तबलिं ॥ ततः पश्चिमे गत्वा कलशद्वयं प्रतिशाखं पूर्ववत्संस्थाप्य कलशद्वये अञ्जनाख्यदिग्गजमावाहयामि इत्यावाह्य गन्धादिना प्रपूज्य। तत्र सामवेदिनौ द्वौ द्वारपालौ । सामवेदस्तु पिङ्गाक्षो जागतः

शक्रदैवतः ॥ भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥
इति वृत्वा ॥ ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
निहोतासत्सिबर्हिषि ॥ इति मन्त्रेण प्रत्येकं गन्धादिना
सम्पूज्य वामदेव्यं बृहत्साम ज्येष्ठसाम रथन्तरम् । तथा पुरुष-
सूक्तं च रुद्रसूक्तमतः परम् ॥ आज्यदोहादिसामानि पश्चिमे
द्वारपालकौ ॥१॥ वामदेव्यं 'कयानश्चित्रे'त्यादि । बृहत्साम
'त्वामिद्धिहवामहे' इत्यादि । ज्येष्ठसाम 'मूर्द्धानंदिव'इत्यादि
रथन्तरम् 'अभित्वाशूरनोनुम' इत्यादिकम् । पुरुषसूक्तं 'सहस्र-
शीर्षा' इत्यादिकम् । रुद्रसूक्तम् 'आवोराजानमि'ति वर्गद्वयम्
आज्यदोहादि 'देवव्रतानी'त्यादिकम् । ततो मकरस्थं, पाश-
हस्तं शुक्लवर्णं किरीटधारिणं वरुणं ध्यात्वा ॥ ॐ एहि
यादोगणवारिधीनां गणेन पर्ज्जन्य महाप्सरोभिः ॥ विद्या-
धरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥ ॐ भूर्भुवः
स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ साङ्गं वरुणं कलशयोरावाह्य ।
ॐ तत्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः ।
अहेडमानोव्वरुणेहबोद्ध्युरुशꣳ समानऽआयुःप्रमोषीः ॥ ॐ
ॐ वरुणाय नमः इति मन्त्रेण गन्धादिभिः सम्पूज्य ॥ ॐ
इमम्मेव्वरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ इति
मन्त्रेण श्वेतौ पताकाध्वजावुच्छ्रयेत् ॥ पाशहस्तात्मको देवो
जलराश्यधिपो महान् ॥ निम्नगामीति विख्यातस्तस्मै वरुण
ते नमः ॥ इति नत्वा ॥ द्वारशाखयोः ॥ जयाय नमः ।
विजयाय नमः (ऊर्ध्वम्) ॥ श्रियै नमः गणपतये नमः ।
(अधः) ॥ देहल्यै नमः । वास्तुपुरुषाय नमः ॥ स्तम्भयोः ॥

नन्दिने नमः । चन्द्राय नमः ॥ कलशद्वये ॥ रेवायै नमः ॥ नर्मदायै नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥ वरुणाय साङ्गाय नमः एतं माषभक्तबलिं ततो वायव्यां गत्वा पूर्ववत्कलशं निधाय तत्र पुष्पदन्तमावाहयामि । ॐ पुष्पदन्ताय नमः । सिद्धार्थमावाहयामि ॐ सिद्धार्थाय नमः । इति गन्धादिना सम्पूज्य दीपो देयः ॥ ततो मृगाधिरूढं धूम्रवर्णं चित्राम्बरधरं युवानं दक्षिणवामहस्तद्वये वरध्वजधरं वायुं ध्यात्वा ॥ ॐ एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढं सह सिद्धसङ्घैः ॥ प्राणाधिपः कालकवे सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इहतिष्ठ इति साङ्गं वायुं कलशे आवाह्य ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरᳪंसहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम् ॥ वायोऽस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयम्पातस्वस्तिभिः सदानः ॐ वायवे नमः इति सम्पूज्य ॥ ॐ वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्सोमपीतये ॥ इति धूम्रौ पताकाध्वजावुच्छ्रयेत् ॥ अनाकारो महौजाश्च पश्चाद्दृष्टिर्गतिर्दिवि ॥ तस्मै पूज्याय महते वायवेऽहं नमामि ते । इति नत्वा । वायवे साङ्गाय० एतं माषभक्तबलिं० ॥ तत उत्तरे गत्वा प्रतिद्वारशाखं कलशद्वयं निधाय तत्र कलशद्वये सार्वभौमदिग्गजमावाहयामि इत्यावाह्य ॐ सार्वभौमदिग्गजाय नमः इति सम्पूज्य दीपं दद्यात् ॥ तत्र अथर्ववेदिनौ द्वारपालौ वृहन्नेत्रोऽथर्ववेदो ह्यनुष्टुब्रुद्रदैवतः ॥ वैशम्पायन विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥ इति वृत्वा ॥ ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तुपीतये । शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ इति

मन्त्रेण गन्धादिना सम्पूज्य। अथर्वाङ्गिरसं नीलरुद्रं चैवा. पराजिता॥ देवी च मधुसूक्तं च रोधसं शान्तिकाभयम्॥ अथर्वाणा द्वारपाल। पठेतामुत्तराश्रितौ ॥१॥ (अथर्वणम्, छन्दोगाय बृहद्गाय इत्यादि। आङ्गिरसम्, अङ्गिरसो जन्मनीत्यादि। नीलरुद्रम् या रुद्रपत्न्यावित्यादि। अपरा- जितादेवी परिवर्त्मनी इत्यादि। मधुसूक्तम्, मधुवाता इत्यादि रोधसम, अभयंद्यावापृथिवी इत्यादि। शान्तिकाध्यायः शन्न इन्द्राग्नीत्यादिको द्वारपालजपः)। ततो नरयुतविमानस्थं कुण्डलहारकेयूररुचिरं दक्षिणवामभुजद्वये वरगदाधरं मुकुटिनं महोदरं महाकायं हरितवर्णं कुबेरं ध्यात्वा। एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्द्धम्॥ सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सोम इहागच्छ इह तिष्ठ इति साङ्ग सोमं कलशयोरावाह्य। ॐ व्वयꣳसोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः॥ प्रजावन्तः सचेमहि। ॐ सोमाय नमः इति गन्धादिना संपूज्य॥ ॐ आप्यायस्व- समेतु तेविश्वतः सोमवृष्ण्यम्॥ भवाव्वाजस्यसंगथे॥ इति श्वेतौ पताकाध्वजौ हरितौ वा उच्छ्रयेत्। सर्वनक्षत्रमध्ये तु सोमो राजा प्रकीर्तितः॥ तस्मै सोमाय देवाय नक्षत्रपतये नमः॥ इति नत्वोत्तरद्वारशाखयोः॥ चण्डाय नमः। प्रचण्डाय नमः। (ऊर्ध्वम्) द्वारश्रियै नमः। गणपतये नमः। (अधः) देहल्यै नमः। वास्तुपुरुषाय नमः। स्तम्भयोः॥ महाकालाय नमः। भृङ्गिणे नमः। कलशद्वये॥ वारुण्यै नमः। वेण्यै नमः। इति सम्पूज्य। सोमाय सांगाय एतं माषभक्तबलिं०॥ तत

ऐशान्यां गत्वा तत्र पूर्ववत्कलशं निधाय। तत्र सुप्रतीकाय नमः। मंगलाय नमः। इति सम्पूज्य। दीपं दत्वा। ततो वृषारूढं दक्षिणवामहस्तयार्वरत्रिशूलधरं त्रिनेत्रं शुक्लवर्णमीशानं ध्यात्वा। ॐ एह्येहि विश्वेश्वर विश्वनाथकपालखट्वांगधरेण सार्द्धम्॥ लोकेश यज्ञेश्वर यज्ञसिद्धये गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ इति सांगमीशान- मावाह्य। ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिंधियंजिन्वमवसेहूमहे- वयम्॥ पूषानोयथावेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॐ ईशानाय नमः॥ इति गन्धादिभिः पूजयेत्। सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्ल ईश्वरः॥ शूलपाणिर्विरूपाक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥ इति नत्वा॥ ॐ तमीशानमिति पूर्वोक्तमन्त्रेण श्वेतौ पञ्चवर्णौ पताकाध्वजावुच्छ्रयेत्। तत ईशानाय साङ्गाय० एतं भाषभक्तबलिं समर्पयामीति बलिं दत्वाचामेत्॥ तत ईशानपूर्वयोर्मध्ये ऊर्ध्वमुद्दिश्य पूर्ववत्कलशं निधाय तत्र ब्रह्माणं पूजयेत्। अक्षसूत्रकुशमुष्टिधरं दक्षिणकरे, स्रुवकमण्डलुधरं वामकरे चतुर्मुखं श्मश्रुलं जटिलं लम्बोदरं रक्तवर्णं ब्रह्माणं ध्यात्वा॥ ॐ एह्येहि सर्वाधिपते सुरेन्द्र लोकेन सार्द्धं पितृदेव- ताभिः॥ सर्वस्य धातास्यमितप्रभावो विशाध्वरन्नः सततं शिवाय॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्निहागच्छ इह तिष्ठ इति साङ्गं ब्रह्माणमावाह्य॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरु- चोव्वेनऽआवः॥ सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनि- मसतश्चविवः॥ इति मन्त्रेण गन्धादिना प्रपूज्य तेनैव मन्त्रेण रक्तौ पताकाध्वजौ उच्छ्रयेत्। ॐ पद्मयोनिश्चतुर्मूर्तिर्वेदावासः

पितामहः ॥ यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ इति नत्वा सांगाय ब्रह्मणे एतं माषभक्तबलिं समर्पयामीति बलि दत्त्वाचामेत् ॥ ततो निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये पूर्ववत्कलशं निधाय तत्राधः, अनन्तशयनासीनं फणासप्तकमण्डितम् ॥ पद्मशंखधरमूर्ध्वाधोदक्षिणकरद्वये इति नीलवर्णमनन्तं ध्यात्वा ॥ ॐ एह्येहि पातालधरामरेन्द्र नागाङ्गनाकिन्नरगीयमान ॥ रक्षोरगेन्द्रामरलोकसंघैरनन्त रक्षाध्वरमस्मदीयम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वरनन्त इहागच्छ इह तिष्ठ इति सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमनंतमावाह्य ॥ ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्चप्रयन्त्स्वः ॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥ इति गन्धादिभिः सम्पूज्य ॥ योऽसावनन्तरूपेण ब्रह्माण्डं सचराचरम् ॥ पुष्पवद्धारयेन्मूर्ध्नि तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ इति नत्वा ॥ ॐ आयंगौरिति पूर्वमन्त्रेण धूम्रौ श्वेतौ वा पताकाध्वजावुच्छ्रयेत् । ततः सांगाय सपरिवाराय सशक्तिकाय सायुधायानन्तायैतं माषभक्तबलिं समर्पयामीति बलिं दत्त्वाचामेत्॥ ततो मण्डपमध्ये चामरकिङ्किणीयुतः षोडश हस्तदण्डो वा दशहस्तदण्डावलम्बितो दशसप्तपञ्च वा हस्तदीर्घस्त्रिहस्तविस्तारैकहस्तविस्तारो वा पञ्चवर्णविचित्रो महाध्वजः ॥ ॐ इन्द्रस्य वृष्णो इत्युच्छ्रयेत् ॥ ॐ इन्द्रस्यवृष्णोवरुणस्यराज्ञआदित्यानांमरुताᳬंशर्द्धउग्रम् ॥ महामनसाम्भुवनच्यवानांघोषोदेवानांजयतामुदस्थात् ॥१॥ तत्र ब्रह्मयज्ञानमिति ब्रह्माणं पूजयेत् ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोवेनऽआवः॥ सबुध्न्याउपमाअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चविवः॥२॥ ततो मण्डपषोडशस्तम्भेषु

सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। वंशेषु किन्नरेभ्यो नमः। पृष्ठे पन्नगेभ्यो नमः इति पूजयेत्। ततः पूर्वस्यां दिशि मण्डपाद्बहिः किञ्चिद्भूमिमुपलिप्य तत्रोपविश्य॥ त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च। ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु ते सदा॥ देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः। ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च। सर्वे ममाध्वरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालो गणैः सह। रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः॥ त्रैलोक्यस्थानि स्थावराणि भूतान्यावाहयामि॥ ॐ त्रैलोक्यस्थस्थावरभूतेभ्यो नमः त्रैलोक्यस्थानि चराणि भूतान्यावाहयामि। त्रैलोक्यस्थेभ्यश्चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। देवेभ्यो नमः। दानवेभ्यो नमः। गन्धर्वेभ्यो नमः। यक्षेभ्यो नमः। राक्षसेभ्यो नमः। पन्नगेभ्यो नमः। गोभ्यो नमः। ऋषिभ्यो नमः। मनुष्येभ्यो नमः। देवमातृभ्यो नमः। इत्यावाहनपाद्यादिभिः प्रत्येकं सम्पूज्य प्रत्येकं माषभक्तबलीन्दद्यात्। ततो यजमानः साचार्यर्त्विक् प्रक्षालितपादपाणिराचान्तः प्राग्द्वारेण मण्डपं प्रविश्य दक्षिणद्वारसमीपे पश्चिमगत उदङ्मुख उपविश्य भो गुर्वादयो यथाविहितं कर्म कुरुध्वमिति सविनयं प्रार्थयेत्॥ यथायोग्यं करवामेति प्रतिवचनम्॥ ततः पूर्वकुण्डे ऋग्वेदिनो होतारावुपविशेताम्॥ तत्रैको ब्रह्मा स च पश्चिममुखः अपरो होमकर्त्ता स चोदङ्मुखः॥ ततो दक्षिणकुण्डे यजुर्वेदिनौ॥ तत्र ब्रह्मा उदङ्मुखः। होमकर्त्ता पूर्वमुखः॥ ततः

पश्चिमकुण्डे सामवेदिनौ ॥ उत्तरकुण्डेऽथर्ववेदिनौ ॥ एवं तत्तत्कुण्डसन्निधौ च तत्तद्वेदविदौ होतृवद् द्वौ द्वौ जापकावुपविशेताम्। तत आचार्य्य इन्द्रेशानयोर्मध्ये स्वकुण्डे प्राङ्मुख उपविशेत्। तत्र ब्रह्मा उदङ्मुखः। (ततो गुरुः स्वकुण्डे आगत्य स्वगृह्योक्तविधिनाग्निं स्थापयेत्। तेऽपि च कुर्युः॥ एवं क्रमः पञ्चकुण्डीपक्षे ज्ञेयः। एककुण्डीपक्षे त्वाचार्यः प्राङ्मुखः) तत्रादौ कुण्डपूजा॥ यजमानोऽग्न्यायतनाद्दक्षिणतः उपविश्य। आचार्यस्तु कुण्डपश्चिमतः उपविश्य। आचम्य प्राणानायम्य॥ॐअपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ इति गौरसर्षपान्विकीर्य पञ्चगव्येन कुण्डं प्रोक्ष्य॥ ॐ गुरुभ्यो नमः। गणपतये नमः। इति नत्वा हस्ते गन्धाक्षतपुष्पजलादीनि गृहीत्वा। अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्य० अमुकदेवप्रासादोत्सर्गकर्मण्यग्निप्रतिष्ठां करिष्ये। तदङ्गतया संमार्जनमेखलायोनिदेवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये इति सङ्कल्प्याग्न्यायतनं सम्मृज्य कुशोदकेन कुण्डं प्रोक्ष्याञ्जलौ पुष्पाण्यादाय कुण्डं स्पृष्ट्वाऽऽवाहयेत्॥ ॐ आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्मविनिर्मितम्॥ शारीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम्॥ १॥ इत्यावाह्य ॐ कुण्डाय नमः इति गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्॥ ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुण्डांगे याश्च देवताः॥ ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं मुदान्विताः॥१॥ हे कुण्ड! तव निर्माणं रचितं विश्वकर्मणा॥ अस्माकं वाञ्छितां सिद्धिं यज्ञसिद्धिं ददातु भोः॥२॥ इति संप्रार्थ्य कुण्डमध्ये विश्वकर्माणं पूजयेत्। ॐ

विश्वकर्मन्निति मन्त्रस्य भौवन ऋपिस्त्रिष्टुप् छन्दो विश्वकर्मा देवता विश्वकर्मपूजने विनियोगः। ॐ व्विश्वकर्म्मन्हविपाव्व-र्धनेनत्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्धयम्। तस्मैविशःसमनमन्तपूर्वी-रयमुग्रोव्विहव्योयथासत्॥ उपयामगृहीतोऽसींद्रायत्वाविश्वकर्म-णएषतेयोनिरिंद्रायत्वाव्विश्वकर्मणे॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः॥ इति चन्दनादिभिः सम्पूज्य॥ अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोपाः स्युः खननोद्भवाः॥ नाशाय त्वं हि तान्सर्वान्विश्वकर्म्मन्नमो-ऽस्तु ते॥ इति सम्प्रार्थ्य॥ उपरिगतमेखलायां श्वेतवर्णा-लङ्कृतायां विष्णुमावाहयेत्। ॐ विष्णो यज्ञपते देव दुष्ट-दैत्यनिषूदन॥ विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुण्डे सन्निहितो भव॥ इत्यावाह्य॥ ॐ इदंविष्णुरिति मन्त्रस्य मेधातिथिऋषिर्गा-यत्रीछन्दः विष्णुर्देवता विष्णुपूजने विनियोगः॥ ॐ इदं-व्विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्॥ समूढमस्यपाᳬसुरे॥ इति मन्त्रेण विष्णुं सम्पूज्य। प्रथममेखलायै विष्णुदैवत्यै श्वेतवर्णा-लङ्कृतायै नम इति मेखलां च पूजयेत्॥१॥ ततो मध्यमे-खलायां रक्तवर्णालङ्कृतायां ब्रह्माणम्। ॐ हंसपृष्ठसमारूढ़ देवदेवगणावृत॥ रक्षार्थं मम यज्ञस्य कुण्डेऽस्मिन्सन्निधौ भव॥ इत्यावाह्य॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानमिति मन्त्रस्य विवस्वानृपिस्त्रिष्टुप् छन्दः ब्रह्मा देवता ब्रह्मपूजने विनियोगः॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोव्वेनआवः॥ सबुध्न्याऽउपमाऽ-अस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चव्विवः॥ इति मन्त्रेण ब्रह्माणं सम्पूज्य॥ मध्यमेखलायै ब्रह्मदैवत्यै रक्तवर्णालङ्कृतायै नम इति मेखलां च पूजयेत्॥२॥ ततोऽधोमेखलायां कृष्णवर्णा-

लङ्कृतायां रुद्रं० ॐ गङ्गाधरमहादेव वृषारूढ महेश्वर ॥ आगच्छ भगवन्रुद्र कुण्डेऽस्मिन्सन्निधौ भव ॥ इत्यावाह्य॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिर्गायत्री छन्दः रुद्रो देवता रुद्रपूजने विनियोगः। ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः ॥ बाहुभ्यामुतते नमः ॥ इति रुद्रं सम्पूज्य तृतीयायै रुद्रदैवत्यै कृष्णवर्णालंकृतायै मेखलायै नम इति मेखलां च पूजयेत् ॥ ३ ॥ अथ योनिपूजा ॥ जगदुत्पत्तिहेतुकायै मनोभवयुतायै योन्यै नमो नमः। ॐ क्षत्रस्य योनिरिति मन्त्रस्य विश्वावसुऋषिः द्विपदा गायत्री छन्दः योनिर्देवता योनिपूजने विनियोगः ॥ ॐ क्षत्रस्ययोनिरसिक्षत्रस्यनाभिरसि ॥ मात्वाहिꣳसीन्माहिꣳ सीः ॥ इति गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्। सेवन्ते महतीं योनिं देवाद्यैसिद्धमानवाः ॥ चतुरशीतिलक्षाणि पन्नगाद्याः सरीसृपाः ॥१॥ पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि ॥ योनिरित्येवविख्याता जगदुत्पत्तिहेतुका ॥२॥ मनोभवयुता देवी रतिसौख्यप्रदायिनी ॥ मोहयन्ती सुरान्सर्वाञ्जगद्धात्रि नमोऽस्तुते ॥३॥ योने त्वं विश्वरूपासि प्रकृतिर्विश्वधारिणी ॥ कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमोऽस्तु ते ॥४॥ इति योनिपूजा ॥ ततः कण्ठपूजनम् ॥ जीवनं सर्वजन्तूनां स्वगादिस्थानमुत्तमम् ॥ उत्तमाङ्गस्य चाऽधारं कण्ठमावाहयाम्यहम् ॥ इत्यावाह्य ॥ ॐनीलग्रीवा इतिमन्त्रस्य परमेष्ठी प्रजापतिऋषिरनुष्टुप् छन्दो रुद्रो देवता कण्ठपूजने विनियोगः॥ ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठादिवꣳ रुद्राऽउपश्रिताः ॥ तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥१॥ इति मन्त्रेण कण्ठं सम्पूज्य

प्रार्थयेत् । कण्ठमङ्गलरूपेण सर्वकण्ठे प्रतिष्ठितः ॥ परितो मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा ॥ ततो नाभिपूजा । पद्माकाराथवा कुण्डसदृशाकृतिबिभ्रती ॥ आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयाम्यहम् ॥ इत्यावाह्य ॥ ॐ नाभिर्मेति मन्त्रस्य प्रजापतिऋषिर्महापङ्क्तिजगती छन्दो रुद्रो देवता रुद्रपूजने विनियोगः ॥ ॐ नाभिर्मेचित्तं विज्ञानम्पायुर्मेपचितिर्भसत् ॥ आनन्दनन्दावाण्डौमेभगःसौभाग्यंपसः ॥ जंघाभ्यांपद्भ्यांधर्मोऽस्मिविशिराजाप्रतिष्ठितः ॥ इति मन्त्रेण संपूज्य । नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु देवैः सह प्रतिष्ठिता ॥ अतस्त्वं पूजिता देवि ! शुभदा ऋद्धिदा भव ॥ इति नत्वा ततः कुण्डमध्ये नैर्ऋतिकोणे वास्तुपुरुषं पूजयेत् । पुष्पाण्यादाय । आवाहयामि देवेशं पुरुषं च महाबलम् । देवदेवं गणाध्यक्षं पातालतलवासिनम् ॥ इत्यावाह्य ॐ वास्तोष्पतेति प्रजापतिऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःवास्तु देवता वास्तुपूजने विनियोगः ॥ ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवाभवानः ॥ यत्त्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्व-शन्नोऽभवद्विपदेशंचतुष्पदे ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय नम इति गंधा-दिभिः संपूज्य ॥ वास्तुपुरुषाय इमं बलिं समर्पयामीति बलिं दत्त्वा प्रार्थयेत् ॥ अस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्व-मण्डलम् ॥ व्यापिनं भीमरूपं च सुरूपं विश्वरूपिणम् ॥१॥ पितामहसुतो मुख्यस्तुभ्यं वास्तुपते नमः ॥ इति सम्प्रार्थ्य वक्ष्यमाणविधानेनाग्निं स्थापयेत् ॥

*अथाग्निस्थापनप्रकारः *

ततो यथापरिमिते तुपकेशशर्करादिरहिते कुण्डे स्थण्डिले वा

चतुरस्रां भूमिं कुशैः[१] परिसमुह्य तान्कुशानीशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य[२] स्फ्येन स्रुवमूलेन वा प्रागग्रं प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्योल्लेखनक्रमेणैवाऽनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य[३] जलेनाभ्युक्ष्य[४] ततः कांस्यपात्रस्थं वह्निं द्वितीयकांस्यपात्रेण पिहितं कुण्डाद्बहिराग्नेय्यां दिशि निधाय ॐ हुँ फट्स्वाहेति क्रव्यादांशं नैर्ऋत्यां दिशि परित्यज्य गायत्र्या संपूज्य योनिमार्गेण ॥ ॐ अग्निदूतम्पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँ२ऽआसादयादिह ॥ इति मन्त्रेण कुण्डे स्वाभिमुखं स्थापयेत् । तद्रक्षार्थं कश्चिन्नियुज्यानीताग्निपात्रयोर्जलादिप्रक्षेपणं ततोऽग्नेर्ध्यानम् ॥ ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महा देवो मर्त्यां२ऽआविवेश ॥१॥ रुद्रतेजःसमुद्भूतं द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम् ॥ षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रं द्विपादं सप्तहस्तकम् ॥१॥ याम्यभागे चतुर्हस्तं सप्तभागे त्रिहस्तकम् ॥ स्रुवं

१—त्रिभिर्दर्भैः पांसूनपसारयति—हरिहरः—'धृत्वाङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्याम् मूलैः साग्रैः कुशत्रयम् । तदग्रैस्तस्य रजसः पूर्वस्यामपसारणम् । कृमिकीटपतङ्गाद्या विचरन्ति महीतले । तेषां संरक्षणार्थाय परिसमूहनमुच्यते' ॥ इति

२—स्रणा वृद्धा प्रसूता च वन्ध्या सन्धिन्यमेध्यभुक् ॥ मृतवत्सा च नैतासां ग्राह्यं मूत्रं शकृत्पयः ॥ इति कल्पवल्ल्याम् ॥ पुरा शक्रेण वज्रेण हतो वृत्रो महासुरः । व्यापिता मेदसा पृथ्वी तदर्थमुपलेपनम् ॥

३—ये भ्रमन्ति पिशाचाद्या अन्तरिक्षनिवासिनः । तेषां प्रहरणार्थाय समुद्धननः कथितोबुधैरिति ।

४—इदमभ्युक्षणं न्युब्जपाणिनावधेयं तत्रप्रमाणम् । 'अधोक्षणं तु कर्तव्यमुत्तानेनैव पाणिना । तद्वदभ्युक्षणंचैव कर्तव्यं न्युब्जमुष्टिना' इति ॥

स्रुचं च शक्तिं च त्र्यक्षमालां च दक्षिणे ॥२॥ तोमरं व्यजनं चैव घृतपात्रं तु वामके ॥ बिभ्रतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तजिह्वकम् ॥३॥ दक्षिणं च चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वमुत्तरे मुखम् ॥ द्वादशकोटिमूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत्कलायुतम् ॥४॥ स्वाहास्वधावषट्कारैरङ्कितं मेषवाहनम् ॥ रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम् ॥५॥ रौद्रं तु वह्निनामानं वह्निमावाहयाम्यहम् ॥ त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते ॥ आगच्छ भगवन्देव यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव ॥ २ ॥ अग्ने वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलेति त्रिप्रवरान्वितभूमिमातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव इत्यग्निं प्रतिष्ठाप्य ॥ ॐ अग्नये नमः इति वायव्यकोणे वहिः गन्धादिभिः पूजयेत् । ततः । ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ॥ हिरण्यवर्णमनलं समृद्धं विश्वतोमुखम् ॥ १ ॥ इति प्रार्थ्य । तस्मादाचार्यकुण्डादुद्धरणं सर्वेषु पूर्व्वादिषु कुण्डेषु कर्तव्यम् ॥ इत्यग्निस्थापनम् ॥ अथ नवग्रहस्थापनम् ॥ ईशान्यां ग्रहपीठे सूर्यादिनवग्रहाणामावाहनम् । आचम्य देशकालौ स्मृत्वा ॥ अमुकदेवप्रतिष्ठायज्ञकर्मण्यादित्यादिग्रहादीनां स्थापनमर्चनं च करिष्य इति सङ्कल्प्य स्थापयेत ॥ तत्र मध्ये वर्त्तुलाकारे रविं प्राङ्मुखं रक्तपुष्पाक्षतैः । ॐ आकृष्णेनेति मन्त्रस्य हिरण्यस्तूपऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः सविता देवता सूर्यावाहने विनियोगः

अथ सूर्यादीनांनवग्रहाणामावाहनम् । रक्तपुष्पाक्षतैः मध्ये-वर्तुलाकारेचक्रेरविमावाहयेत् । ॐ दिवाकरंसहस्रांशुं सुरासुरनमस्कृतम् ॥ लोकनाथंविश्वनेत्रं सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ

आकृष्णेनरजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतंमर्त्यंश्च ॥ हिरण्ययेन-
सवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
कलिंगदेशोद्भवकाश्यपसगोत्रसूर्यइहागच्छइहतिष्ठ सूर्याय
नमः सूर्यं आवाहयामि । एवंक्रमः सर्वत्र ॥ आग्नेय्यामर्ध-
चंद्राकारेश्वेतपुष्पाक्षतैश्चन्द्रमावाहयेत् ॥ हिमरश्मिनिशानाथं-
तारकाभिःसमन्वितम् ॥ औषधीनांतुराजानंसोममावाहयाम्य-
हम् ॥ ॐइमंदेवाऽअसपत्नᳬंसुवध्वंमहतेक्षत्रायमहतेज्यैष्ठ्यायमहते
जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविशऽ-
एषवोमीराजासोमोऽस्माकंब्राह्मणानाᳬंराजा ॥ ॐभूर्भुवः स्वः
यमुनातीरदेशोद्भवआत्रेयस् गोत्र चन्द्रइहागच्छइहतिष्ठ ॥
याम्यांत्रिकोणेचक्रे रक्तपुष्पाक्षतैः भौममावाहयेत् ॥ धरणी-
गर्भसंभूतंलोहितांगंसुवर्चसम् ॥ कुमारंक्रूरकर्माणंभौममावाह-
याम्यहम् ॥ ॐ अग्निमूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥
अपाᳬंरेताᳬंसिजिन्वति ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अवंतिदेशोद्भव-
भारद्वाजसगोत्रभौमइहागच्छइहतिष्ठ ॥ ईशान्यां पीतपुष्पा-
क्षतैः बुधमावाहयेत् । बुधंबुद्धिप्रदातारं सोमवंशविवर्द्धनम् ॥
यजमानहितार्थायबुधमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने-
प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्तेसᳬंसृजेथामयंच ॥ अस्मिन्त्सधस्तेऽ-
अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवायजमानस्यसीदत ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्रबुधइहागच्छइहतिष्ठ ॥ उत्तरे-
पीतपुष्पाक्षतैः गुरुमावाहयेत् ॥ बुद्धिश्रेष्ठोंगिरःपुत्रोदेवानां-
योगुरुःस्मृतः ॥ तमिन्द्रमंत्रिणंभक्त्यागुरुमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जने ॥ यद्दी-

द्यच्छवसक्रतप्रजाततदस्मासुद्रविणंधेहिचित्रम् ॥ ॐ भूर्भुव स्वः सिंधुदेशोद्भव आंगिरसगोत्रवृहस्पतेइहागच्छइहतिष्ठ ॥ पूर्वं-श्वेतपुष्पाक्षतैः भृगुमावाहयेत् । प्रविष्टोजठरेशंभोर्निस्सृतः पुनरेवयः ॥ तंसुरारिगुरुं भक्त्या शुक्रमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसंब्रह्मणाव्यपिवत् क्षत्रंपयः सोमं प्रजापतिः ऋतेनसत्यमिंद्रियंविपानँ शुक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽ-मृतंमधु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भवभार्गवस गोत्रशुक्र इहागच्छइहतिष्ठ । पश्चिमेकृष्णपुष्पाक्षतैः शनिमावाहयेत् । धर्मराजानुजंदेवंभिन्नांजनसमुद्भवम् । छायामार्तण्डसंभूतंशनि-मावाहयाम्यहम् ॥ ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव-काश्यपसगोत्रशनेइहागच्छइहतिष्ठ । नैऋत्यांधूम्रपुष्पाक्षतैः राहुमावाहयेत् ॥ चक्रेणछिन्नमूर्द्धानंविष्णुनाचनिरीक्षितम् ॥ सैंहिकेयंमहाकायंराहुमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ कयानश्चित्रऽ-आभुवदूतीसदावृधःसखा ॥ कयाशचिष्ठयावृता ॥ ॐ भूर्भुवः राठिनादेशोद्भवपैठिणसगोत्रराहोइहागच्छइहतिष्ठ ॥ वाय-व्यांधूम्रपुष्पाक्षतैः केतुमावाहयेत् । अंजनाभंमहारुद्रंबहुरूपं महाग्रहम् ॥ महाकायंक्रूरकर्माणंकेतुमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याअपेशसे ॥ समुषद्भिरजायथाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अंतर्वेदिसमुद्भवजैमिनसगोत्र केतोइहा-गच्छइहतिष्ठ ॥६॥

॥ ततोऽधिदेवतानां स्थापनं ग्रहदक्षिणपार्श्व ॥

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशञ्च त्रिलोचनम् ॥ आवाहयामीश्वरं तं

खट्वाङ्गवरधारिणम् ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि-
वर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात् ॥
ॐ भू० ईश्वर इहा० ईश्वराय नमः ॥ ईश्वरं० ॥१॥ हेमाद्रि-
तनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ॥ लम्बोदरस्य जननीमुमा-
मावाहयाम्यहम् ॥ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण
सर्व्वलोकंमऽइषाण ॐ भू० उमेइहा० उमायै नमः ।।उमां० ।२।
रुद्रतेजः समुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम् ॥ षण्मुखं कृत्तिका
सूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जाय-
मानऽउद्यन्त समुद्रादुतवापुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य
बाहूऽउपस्तुत्यं महिजाततेऽअर्व्वन् ॥ ॐ भू० स्कन्देहा०
स्कन्दाय नमः ॥ स्कन्दं० ॥ ३ ॥ देवदेवं जगन्नाथं भक्तानु-
ग्रहकारकम् ॥ चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि व्विष्णवेत्त्वा ॥ ॐ भू० विष्णो इ०
विष्णवे नमः ॥ विष्णुं० ॥४॥ कृष्णाजिनाम्बरधरं पद्म संस्थं
चतुर्मुखम् ॥ वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः
शूरऽइषव्योऽतिव्याधीमहारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वा-
नाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्य्योषा जिष्णुरथेष्ठाः सभेयोयुवास्य
यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो
व्वंतु फलवत्यींनऽओषधयः पच्य तां योगक्षेमोनः कल्पताम् ॥
ॐ भू० ब्रह्मन् ✓ ब्रह्मणेन नमः ॥ ब्रह्माणं ॥५॥ देवराजं गजा-

रूढं शुनासीरं शतक्रतुम् ॥ वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिबवृत्रहा शूर
विद्वान् जहि शत्रूँर रपमृधोनुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतोनः।
ॐ भू० इन्द्रेह० इन्द्राय नमः ॥ इन्द्रं० ॥६॥ धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्। रक्तेक्षणंमहाबाहुंयममावाहयाम्यहम् ॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा
घर्म्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ ॐ भू० यमाय नमः ॥ यम० ॥
॥७॥ अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिनेदिने ॥ कलाकाष्ठादि
रूपेण कालमावाहयाम्यहम्॥ ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्वाक्षित्याऽउन्नयामि ॥ समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ
भू० कालइह० कालाय नमः ॥ कालं०॥८॥ धर्मराजसभासंस्थं
कृताकृत विवेकिनम् आवाहये चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम् ॥
ॐ चित्रावासो स्वस्ति ते पारमसीय। ॐ भू० चित्रगुप्तेहा०
चित्रगुप्ताय नमः ॥ चित्रगुप्तं० ॥६॥ इति षोडशोपचारैः
सम्पूजयेत्। ततः प्रत्यधिदेवता स्थापनं ग्रहवामपार्श्वे।
रक्तमाल्याम्बरधरंरक्तपद्मासनस्थितम् ॥ वरदाभयदंदेवमग्नि
मावाहयाम्यहम् ॥ ॐ अग्निंदूतं पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥
देवाँऽआसादयादिह ॥ ॐ भू० अग्नये इ० अग्नये नमः ॥
अग्निम् ॥१॥ आदिदेवसमुद्भूता जगच्छुद्धिकराः शुभाः ॥
औषध्याप्यायनकराअपमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ आपोहिष्ठामयो
भुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन ॥ महेरणाय चक्षसे ॥ ॐ भू० अप
इहा० अद्भयो नमः ॥ अपः आ०॥२॥ शुक्लवर्णां विशालाक्षीं
कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम् ॥ सर्वसस्याश्रयांदेवींधरामावाहयाम्यहम्॥

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशिनी ॥ यच्छानः शर्म्म सप्रथाः ॥ ॐ भू० पृथिवी इ० पृथिव्यै नमः ॥ पृथिवीं० ॥३॥ शङ्खचक्रगदापद्महस्तं गरुडवाहनम् ॥ किरीट कुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् ॥ समूढमस्यपाᳪसुरे स्वाहा ॥ ॐ भू० विष्णोइ० विष्णवे नमः ॥ विष्णुं० ॥४॥ ऐरावतगजारूढं सहस्राक्षं शचीपतिम् । वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्महम् ॥ ॐ इन्द्रऽआसांनेता वृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतोयन्त्वग्रम् ॥ ॐ भू० इन्द्रेहा० इन्द्राय नमः ॥ इन्द्रमा० ॥५॥ प्रसन्नवदनांदेवींदेवराजस्यवल्लभाम् ॥ नानाऽलङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ अदित्यै रास्ना-सीन्द्राण्याऽउष्णीषः ॥ पूषासि घर्म्मायदाष्व ॥ ॐ भू० इन्द्राणि इ० इन्द्राण्य नमः ॥ इन्द्राणीं० ॥६॥ आवाहयाम्यहं देवं देवेशं च प्रजापतिम् ॥ अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पिता-महम् ॥ ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तुव्वयᳪस्यामपतयो रयी-णाम् ॥ ॐ भू० प्रजापतेइ० प्रजापतयेनमः ॥ प्रजापतिमा० ॥७॥ अनन्ताद्यान्महाकायान्नानामणिविराजितान् ॥ आवाहयाम्यहं सर्प्पान् फणासप्तकमण्डितान् ॥ ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्योयेकेच पृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ ॐ भू० सर्पा इहाग० सर्प्पेभ्यो नमः ॥ सर्पान्० ॥८॥ हंसपृष्ठ समारूढं देवतागणपूजितम् ॥ आवाहयाम्यहंदेवंब्रह्माणंकमला-सनम् ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽ

आवः। स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ ॐ भू० ब्रह्मन् इ० ब्रह्मणे नमः ॥ ब्रह्माणम्० ॥६॥

इति षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्

॥ अथ पञ्चलोकपालपूजनम् ॥

ॐ गणानांत्वा गणपतिᳬंहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिᳬंहवामहे निधीनां त्वा निधीपतिᳬंहवामहेवसो मम। आहमजानिगर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ इहतिष्ठ गणपतये नमः ॥ ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीं यतो निदहाति वेदः। सनः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धु दुरितात्यग्निः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इहतिष्ठ दुर्गायैनमः ॥ ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरᳬंसहस्त्रिणीभिरुपयाहि यक्षम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व पूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इहतिष्ठ वायवे नमः ॥ ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसा पावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश इहागच्छ इहतिष्ठ आकाशाय नमः ॥

ॐ यावाङ्कशा मधुमत्यश्विना सुनृतावती। तथा-यज्ञम्मिमिक्षतम् ॥ उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यान्त्वैषते योनि र्माध्वीभ्यां त्व ॥ ॐ भूर्भुवः स्वरश्विनौ इहागच्छतम् इह-तिष्ठतम् अश्विभ्यां नमः (इत्यावाह्य) ॐ गणपत्यादि पञ्चलोक पालेभ्यो नमः—षोडशोपचारैः सम्पूजयेत् पुनः अनया पूजया पञ्चलोकपालाः प्रीयन्तां नमम ॥ अक्षतछाड़े ॥

॥ अथ दश दिक्पालपूजनम् ॥

वामहस्तेऽक्षतानादाय

पूर्वे— ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे-हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः (इन्द्राय नमः) इन्द्रमावा० स्थाप० ॥

आग्नेय्यां—ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवां आसादयादिह ॥ (अग्नये नमः) अग्निमावा० स्थाप० ॥

दक्षिणे—ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन । असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥ (यमाय नमः) यम० आ० स्थाप० ॥

नैर्ऋत्ये—असुन्वंतम यजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य अन्यमस्मदिच्छसात इत्यानमोदेवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु । (निर्ऋतये नमः) नैर्ऋतिं० आ०स्था० ॥

पश्चिमे—ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥ वरुणाय नमः ॥ वरुणमा० स्था० ॥

वायव्ये—ॐ वायुरग्रेगा यज्ञप्रतीः साकंगन्मनसायज्ञम् शिवोनियुद्भिः शिवाभिः । (वायवे नमः) वायुमा० स्था० ॥

उत्तरे—ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथादान्त्यानुपूर्वं वियूय । इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमः उक्तिं यजन्ति ॥ (कुबेराय नमः) कुबेर० आ० स्था० ॥

ऐशान्यां—ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिंधियञ्जिन्वम- वसे हूमहे वयम् ॥ पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायु- रदब्धः स्वस्तये ॥ (ईशानाय नमः) इशान० आ० स्था० ॥

ईशान-पूर्वयोर्मध्ये—ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः ॥ स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः ॥ (ब्रह्मणे नमः) ब्रह्माणं० आ० स्था० ॥

नैऋत्य पश्चिमयोर्मध्येऽनन्तम् —ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यःसर्पेभ्यो नमः ॥ (अनन्ताय नमः) अनन्त० आ० स्था० ॥

ॐ इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यो नमः । पाद्यं अर्घ्य–आचमनम्–स्नानम्–वस्त्रं–यज्ञोपवीतम्–आचमनम्–गंधाअक्षत-पुष्प - धूप-दीप-नैवेद्याचमन-फल-ताम्बूल-दक्षिणाः पश्चात् अनयापूजया दश दिक्पालदेवताः प्रीयन्ताम् नमम ॥ अक्षत छोड़े ॥

ततः चतुःषष्टि योगिनीपूजनम्

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहे व्वयम् ॥ पूषानोयथाव्वेदसामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये ॥ (आवाहयामितांदेवींदिव्यानाम्नेतिविश्रुताम् ॥ यजमानहितार्थाय कोष्ठेचाद्ये प्रपूजयेत् ॥) ॐ भू०दिव्ययोगिन्यैनमः दिव्य योगिनीमा० ॥१॥ ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरइषव्योऽति व्याधी महारथो जायताम् दोग्ध्री धेनुर्व्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषाजिष्णूरथेष्ठा सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतान्निकामेनिकामेनः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यन्ताम्योगक्षेमोनः कल्पताम् ॥ (आवाहयामि तां देवीम्महाशब्देति विश्रुताम् ॥ सर्वसिद्धिप्रदां पूज्यां कोष्ठेचैव द्वितीयके ॥) ॐ भू० महायोगिन्यै० महायोगिनीमा० ॥२॥ ॐ महाँ२ऽइन्द्रो व्वज्रहस्तः

षोडशी शर्म्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि उपयामगृहीतोसि महेन्द्रायत्वषते योनिर्म्महेन्द्रायत्वा ॥ (आवाहयामि तां देवीं सिद्धि पूर्वेति विश्रुताम्। महासिद्धिकरांदेवीम्पूज्यां कोष्ठे तृतीयके) ॐ भू० सिद्धियोगिन्यै० सिद्धियोगिनीमा०॥३॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्चप्रयन्त्स्वः॥ (आवाहयामि तांदेवींम्माहेश्वरीतिवास्वयम्। यजमानहितार्थाय पूज्या काष्ठे चतुर्थके) ओं माहेश्वर्यै० माहेश्वरीमा० ॥४॥ ॐ आदित्यंगर्भम्पयसा समङ्धि सहस्रस्य प्रतिमां व्विश्वरूपम् परिवृङ्धि हरसामाभिमᳬंस्था: शतायुषङ्कृणुहिचीयमानः॥ (आवाहयामि तांदेवींम्प्रेताक्षीनामविश्रुताम्। महाभयहरींदेवीं पूजयेत्पञ्चमेदले)॥ ॐ भू० प्रेताक्ष्यै०प्रेताक्षीमा०॥५॥ ॐ स्वर्ण घर्म्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्णज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्य्यः स्वाहा ॥ (आवाहयामि तांदेवींडाकिनीनामविश्रुताम्। सर्वरोगहरांदेवीं षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत्)॥ ॐ भू० डाकिन्यै नमः डाकिनीमावाहयामि ॥६॥ॐ सत्यंचमे श्रद्धाचमे जगच्चमे धनञ्चमे विश्वञ्चमे महश्चमे क्रीडाचमे मोदश्चमे जातञ्चमे जनिष्यमाणञ्चमे सूक्तंचमे सुकृतञ्चमेयज्ञेनकल्पताम्॥ (आवाहयामि तांदेवीं कालींकिल बलप्रदाम्। प्रसन्नां सर्वकालेच पूजयेत्सप्तमेदले) ॥ ॐ भू०काल्यै नमः कालीमावा० ॥७॥ ॐ भायैदार्व्वाहारम्प्रभायाऽअग्न्येधम्ब्रध्नस्य व्विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठायनाकाय परिवेष्टारन्देवलोकाय पेशितारम्मनुष्यलोकाय प्रकरितारᳬंसर्वेभ्योलोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऋत्यैव्वधायोपमन्थितारम्मेधायव्वासः पल्पूलीम्प्रकामायरजयित्रीम्॥ (आवाहयामि

तांदेवींकालरात्रीति विश्रुताम् । सर्वदासुखदांदेवींकोष्टेवाष्टमिते तथा)॥ ॐ भू० कालरात्र्यै नमः कालरात्रीमा० ॥८॥ (इति प्रथमाष्टकपंक्तिः)॥ॐजिह्वामेभद्द्रं व्वाङ्‌महो मनोमन्न्युः स्वराड्‌भामः । मोदाः प्प्रमोदाऽङ्गुलीरङ्गानि मित्रम्मेसहः ॥ (आवाहयामि तांदेवीं निशाकरीति विश्रुताम् । यजमानहितार्थाय पूजयेत्प्रथमेदले)॥ ॐ भू० निशाकर्यै० निशाकरीमा० ॥१॥ ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्‌कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा प्प्रप्प्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा व्वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्ग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृताय स्वाहा सᳬहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहा यनाय स्वाहा प्प्रायणाय स्वाहा ॥ (आवाहयामितांदेवीं हुङ्कारीनाम विश्रुताम् । यजमान हितार्थाय पूज्याकोष्ठे द्वितीयके)॥ ॐ भू० हुङ्कार्यै० हुङ्कारीमा० ॥२॥ ॐ अग्निश्चमे घर्मश्चमेऽर्क्कश्चमे सूर्यश्चमे प्प्राणश्चमे श्श्वमेधश्चमे पृथिवीचमे दितिश्चमे दितिश्चमे द्यौश्चमेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ (आवाहयामि तांदेवीं सिद्धिवैतालिकां शुभाम् । यज्ञसिद्धिकरींदेवीम्पूजयेत्तां तृतीयके) ॥ ॐ भू० सिद्धिवैतालिकायै० सिद्धिवैतालिकामा० ॥३॥ ॐ पूषन् तवव्व्रते व्वयन्नरिष्येमकदाचन । स्तोतारस्तऽइहस्मसि ॥ (आवाहयामि तांदेवीं ह्रींकारीनामविश्रुताम् । यजमानहितार्थाय पूज्याकोष्ठे चतुर्थके) ॐभू० ह्रींकार्यै नमः ह्रीं कारीमा० ॥४॥ ॐ व्वेद्याव्वेदिः

समाप्यते वर्हिषावर्हिरिन्द्रियम्। यूपेनयूपऽआप्प्यतेप्प्रणीतोऽ-आग्निराग्निना ॥ (आवाहयामि तांदेवीं नामतोभूतडामराम्। भूतरक्षाकरींदेवीम्पूजयेत्पंचमेदले ॥ॐ भू० भूतडामरायै० भूत-डामरामा० ॥५। ॐ अयमग्निः सहस्रिणो व्वाजस्यशतिनस्पतिः मूर्द्धाकवीरयीणाम्। (आवाहयामि तांदेवीमूर्ध्वकेशीति विश्रु-ताम्। सर्वशत्रुविनाशाय षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत्) ॥ ओं भू० ऊर्ध्वकेश्यै नमः उर्ध्वकेशीमा० ॥६॥ ओं इमम्मे व्वरुणश्रुधी-हवमद्याचमृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ (आवाहयामि तांदेवी-म्विरूपाक्षीति विश्रुताम्। यजमानहितार्थाय पूजयेत्सप्तमेदले)॥ ओं भू० विरूपाक्ष्यै० विरूपाक्षीमा० ॥७॥ ओं यमाययमसूम-थर्व्वभ्योवऽतोकाᳫ संवत्सराय पर्य्यायिणीम्परिवत्सराया विजातामिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं व्वत्सराय व्विजर्जरा ᳫ संव्वत्सराय पलिक्क्रीमृभुभ्यो जिनसन्धᳫ साद्ध्येभ्यश्चर्म्मम्नम् ॥(आवाहयामि तांदेवीं शुष्काङ्गींनामतः शुभाम्। सर्वकार्य्यकरांदेवींकोष्ठे चैव तथाष्टमे ॥ ॐ भू० शुष्काङ्ग्यै० शुष्काङ्गी मा०॥८॥ (इति द्वितीयाष्टकपङ्क्तिः)। ॐ असियमोऽ अस्यादित्योऽअर्व्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्व्रतेन। असिसोमेनसमयाव्विपृक्तऽआहुस्तेत्रीणिदिवि बन्धनानि॥ (आवाहयामि तांदेवीं सुप्रीतांनरभोजनीम्। सुमुखे यज-मानस्य पूजयेत्प्रथमेदले)॥ ॐ भू० नरभोजन्यै नर-भोजनीमा० ॥१॥ ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोवोदेवस्यसानसि। द्युम्मश्चित्रश्रवस्तमम्॥ (आवाहयामि तांदेवीम्फेत्कारी नामतोमताम्। यज्ञे विघ्नहरादेवी पूज्या कोष्ठे द्वितीयके)॥

ॐ भू० फेत्कार्यै० फेत्कारीमा० ॥२॥ ॐ अग्ने बृहन्नुपसा-मूर्द्धोऽअस्त्थान्निर्जगन्वान्तमसोज्ज्योतिषागात् । अग्निर्भानु-नारुशता स्वङ्गऽआजातो व्विश्वासद्मान्यप्प्राः ॥ (आवाहयामि तांदेवीम्वीरभद्रेति विश्रुताम् । वीरभद्रकरींदेवीम्पूजयेच्च तृतीयके) ॥ ॐ भू० वीरभद्रायै० वीरभद्रामा० ॥ ॐ भग-प्प्रणेतर्भगसत्यराधो भगेमान्धियमुदवाददन्नः । भगप्प्रनोजनय गोभिरश्वैर्भग प्प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम ॥ (आवाहयामि तांदेवी-न्धूम्राक्षींधूम्रलोचनाम् । यजमानहितार्थाय पूज्याकोष्ठे चतुर्थके) ॥ ॐ भू० धूम्राक्ष्यै० धूम्राक्षी०॥४ ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृते शिरो गायत्रञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोमऽ-आत्माछन्दाᳫंस्यङ्गानि यजूᳫंषिनाम । सामते तनूर्व्वामदेव्यं य्यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवङ्ग-च्छस्वः पत ॥ (आवाहयामि तांदेवीं सुपूज्यां कलहप्रियाम् यज्ञदोषहरांदेवीम्पूजयेत्पञ्चमे दले) ॥ ॐ भू० कलहप्रियायै० कलहप्रियामा० ॥५॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्प्रपितामहेभ्यः स्व-धायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्नपितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ (आवाहयामि तांदेवीं राक्षसीं राक्षसप्रियाम् ॥ रक्षार्थं यजमानस्य षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत्)॥ ॐ भू०राक्षस्यै० राक्षसीमा० ॥१६॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋत सदन्न्यसि व्वरुणस्यऽ ऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ (आवाहयामि तांदेवीं रक्ताक्षींघोरपूर्वकाम् । महाभयहरांदेवीम्पूजयेत्सप्त-

मेदले) ॥ॐ भू० घोररक्ताक्ष्यै० घोररक्ताक्षीमा० ॥७॥ ॐ व्वरुणः प्प्राविता भुवन्मित्रो व्विश्वाभिरूतिभिः । करतान्नः सुराधसः ॥ (आवाहयामि तांदेवीम्विशालाक्षीति विश्रुताम् । विशालां सर्वकार्येषु कोष्ठे चैव तथाष्टके) ॥ ॐ भू० विशालाक्ष्यै० विशालाक्षीं० ॥८॥ (इति तृतीयाष्टकपंक्तिः) ॥ ॐ हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष सद्धोता व्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतम्बृहत् ॥ (आवाहयामि तांदेवीं कौमारींचैव विश्रुताम् ॥ वरपुष्टिकरां देवीम्पूजयेत्प्रथमेदले) ॥ ॐ भू० कौमार्यै० कौमारीमा० ॥१॥ ॐ सुसन्दृशन्त्वा व्वयमघवन्वन्दिषीमहि । प्रनूनम्पूर्ण बन्धुरस्तुतोयासि वशाँ२ऽअनुयोजान्विं द्रतेहरी ॥ (आवाहयामि तां देवीं नाम्ना चण्डीं च विश्रुताम् । अभयां सर्वभक्तानाम्पूजयेद् द्वितये दले) । ओं भू० चण्ड्यै० चण्डीमा० ॥२॥ ओं प्रतिपदसि प्प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदेत्वा सम्पदसि सम्पदेत्वा तेजोऽसि तेजसेत्वा ॥ आवाहयामि तांदेवीं वाराहीनाम विश्रुताम् । पुत्रपौत्रसुखार्थाय पूजयेत्तां तृतीयके) ॥ ओं भू० वाराह्यै० वाराहीमा० ॥ ओं देवीरापोऽअपान्नपाद्योवऽऊर्मिर्हविष्यऽइन्द्रियावान्मदिन्तमः । तन्देवेभ्योदेवत्रादत्तशुक्रपेभ्योयेपाम्भागस्थ स्वाहा ॥ (आवाहयामि तांदेवीं मुण्डधारिणिविश्रुताम् । सर्वशत्रुविनाशायतुर्ये कोष्ठे प्रपूजयेत्)॥ ओं भू० मुण्डधारिण्यै० मुण्डधारिणीमा ॥ ओं देवीर्द्वारोऽअश्विनाभिषजेन्द्रे सरस्वती ॥ प्राणन्नवीर्यन्न सिद्द्वारोदधुरिन्द्रियंवसुवनेव्वसुधेयस्यव्यन्तुयज ॥ (आवाहयामि तांदेवीम्भैरवीम्भैरवप्रियाम् । यजमानहिता-

र्थाय पूजयेत्स्वमेदले)॥ ओं भू० भैरव्यै० भैरवीमा० ॥५॥ ओं देवीजाष्ट्री सरस्वत्यश्विनेन्द्रमवर्द्धयन् । श्रोत्रन्नकर्णयोर्यशो जोष्ट्रीभ्यान्दधुरिन्द्रियं व्वसुवने व्वसुधेयस्य व्यन्तुयज ॥ (आवाहयामि तांदेवीम्वीराम्वीरवलप्रदाम् । वीरपुष्टिकरीं-देवीं षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत्)॥ ओं भू० वीरायै० वीरामा० ।६। ओं देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्व्वाहुभ्याम्पूष्णोहस्ताभ्याम् अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन व्वीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण वला-यश्रियैयशसेभिषिञ्चामि ॥ (आवाहयामि तांदेवीं नाम्नाचैव भयङ्करीम् । अभयां सर्वभक्तानां पूजयेत्सप्तमे दले)॥ ओं भू० भयङ्कर्यै० भयङ्करीमा० ॥७॥ ओं कदाचनस्तरीरसिनेन्द्रसश्च सिदाशुषे । उपोपेन्नुमघवन्भूयऽइन्नुतेदानन्देवस्यपृच्यते ॥ (आवाहयामि तांदेवीम्वज्रिणीम्वज्रधारिणीम् । इन्द्रप्रियाम्म-हादेवीम्पूजयेदष्टमेदले) ॥ ओं भू० वज्रधारिण्यै० वज्रधारि-णीमा० ॥८॥ (इति चतुर्थाष्टकपंक्तिः)॥ ओं भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ (आवाहयामि तांदेवीं-क्रोधानाम्नेति विश्रुताम् । वैरिणामुपरिक्रुद्धाम्पूजयेत्प्रथमे दले)॥ ओं भू० क्रोधायै० क्रोधामा० ॥१॥ ओं इषेत्वोर्जेत्वा व्वायवस्थदेवावः सवितापप्रार्पयतुश्रेष्ठतमायकर्म्मणऽआप्या यद्ध्वमघ्न्याऽइन्द्रायभागम्प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मामावस्ते-नऽईशत माघशᳬंसोध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौस्यातवह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ (आवाहयामि तांदेवींदुर्मुखां सुमुखप्रियाम् ॥

सर्वविघ्नहरांदेवींपूज्या कोष्ठे द्वितीयके)॥ ओं भू० दुर्मुख्यै० दुर्मुखीमा० ॥२॥ ओं देवीद्यावां पृथिवीमखस्यवामद्यशिरोराद्ध्यासन्देवयजने पृथिव्याः मखायत्वा मखस्यत्वा शीर्ष्णे॥ (आवाहयामि तांदेवींनाम्ना वै प्रेतवाहिनीम्। सर्वरोगहरांदेवीम्पूज्या कोष्ठे तृतीयके)॥ ओं भू० प्रेतवाहिन्यै० प्रेतवाहिनीं० ॥ ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥ (आवाहयामि तांदेवीं कर्का नाम्नेति विश्रुताम्। यजमानहितार्थाय पूज्या कोष्ठे चतुर्थके) ॥ ओं भू० कर्कायै नमः कर्कामा० ॥४॥ ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेवि निर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥ (आवाहयामि तांदेवीं दीर्घलम्बोष्ठपूर्विकाम्। यजमानहितार्थाय पूज्या सा पञ्चमे दले)। ओं भू० दीर्घलम्बोष्ठ्यै० दीर्घलम्बोष्ठीमा० ॥५॥ ॐ अग्निश्चमे घर्मश्चमे० ॥(आवाहयामि तांदेवीम्मालिनींगणशालिनीम्। रूपलावण्यसंयुक्तां षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत्)॥ ओ भू ०मालिन्यै० मालिनीमा० ॥६॥ ओं वह्वीनाम्पिताब्बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोतिसमनावगत्य। इषुधिः सङ्काः पृतनाश्चसर्वाः पृष्ठेनिनद्धो जयतिप्रसूतः॥ (आवाहयामि तांदेवीं योगिनीम्मन्त्रपूर्विकाम् सिद्ध्यर्थं मन्त्रबीजानाम्पूजयेत्सप्तमेदले)॥ ओं भू० मन्त्रयोगिन्यै० मंत्रयोगिनीमा० ॥७॥ ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः॥ बाहुभ्यामुतते नमः॥(आवाहयामि तांदेवीं कालाग्निमग्निमोहिनीम्। सुखहर्षप्रदां देवीम्पूज्या साचाऽष्टमेदले)॥ ओं भू० कालाग्निमोहिन्यै० कालाग्निमोहिनीमा० ॥८॥

(इति पञ्चमाष्टक पंक्तिः) ॥ ॐ ऋतञ्चमे मृतञ्चमे यक्ष्मञ्चमे नामयञ्चमे जीवातुश्चमे दीर्घायुत्वञ्चमे न मित्रञ्चमेऽभयञ्चमे सुखञ्चमे शपनञ्चमे सूपाश्चमे सुदिनञ्चमे यज्ञेनकल्पताम् ॥ (आवाहयामि तांदेवीम्मोहिनीम्विश्वमनोहिनीम् यजमान हितार्थाय पूज्यातुप्रथमेदले)॥ ओं भू० मोहिन्यै० मोहिनीमा० ॥१॥ ॐतेऽआचरन्तीसमनेवयोयोषामातेव पुत्रम्बिभृतामुपस्थे अपशत्रूं निद्धयताॅं सम्विदानेऽआर्त्नीऽइमेव्विष्फुरन्तीऽअमित्रान् ॥ (आवाहयामि तांदेवीश्चक्रानामेतिविश्रुताम् । नित्यं शत्रुगणेवक्क्रम्पूजयेत्तां द्वितीयके)॥ ॐ भू०चक्रायै० चक्रामा० ॥२॥ ॐ वेद्याव्वेदिः समाप्यते वर्हिषावर्हिरिन्द्रियम् । यूपेनयूपऽ आप्यतेप्रणीतोऽअग्निरग्निना ॥ (आवाहयामि तांदेवीं कुण्डलिनीनामतोमताम् । शोभिते कुण्डले यस्यापूज्याकोष्ठेतृतीयके ॥ ॐ भू० कुण्डलिन्यै० कुण्डलीमा० ॥३॥ॐ पावकानः सरस्वती व्वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञम्व्वष्टुधियाव्वसुः ॥ (आवाहयामि तांदेवीम्बालुकां सूक्ष्मरूपिणीम् । सुखदांधनदांदेवींतुर्येकोष्ठे प्रपूजयेत्)॥ ॐ भू०बालुकायै०बालुकामा०॥४॥ ओं अस्कन्न मद्यदेवेभ्यऽआज्यॅं सम्भ्रियया समङ्घ्रिणा व्विणोमात्वावक्र मिषंव्वसुमतीमग्नेतेच्छायामुपस्थेषं व्विष्णोस्स्थानमसीतऽइन्द्रो व्वीर्यमकृणोदूर्द्ध्वोंदूध्वरऽआस्स्थात् । (आवाहयामि तांदेवीं कौबेरी नामतोमताम् । धनधान्यप्रदादेवीसम्पूज्या पञ्चमेदले)॥ ओं भू० कौबेर्यै० कौबेरीमा० ॥५॥ ॐ तेऽआचरन्ती समनेवयोषामातेव पुत्रम्बिभृता मुपस्थे । अपशत्रून्विन्यताॅं संव्विदानेऽआर्त्नीऽइमे व्विष्फुरन्तीऽअमित्त्रान् ॥(आवाहयामि

तांदेवीं यमदूतीति विश्रुताम्। यजमानसुखार्थाय षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत्) ॥ ओं भू० यमदूत्यै० यमदूतीमा० ॥६॥ ओं महीद्यौः पृथिवीचनऽ इमंयज्ञम्मिमिक्षताम्। पिपृतान्नोभरीमभिः ॥ (आवाहयामि तांदेवीं शुभाम्वापि करालिनीम्. ऋत्विजां क्षेमकामाय पूजयेत् सप्तमेदले) ॥ ओं भू० करालिन्यै० करालिनी० ॥७॥ ओं उपयामगृहीतोसिसावित्रोसि चनोधाश्चनोधांऽअसिचनोमयिधेहि। जिन्वयज्ञञ्जिन्वयज्ञपतिम्भगाय देवायत्वासवित्रे ॥ (आवाहयामि तांदेवींकौशिकीनामतोमताम् ॥ अष्टचत्वारिकेस्थाने पूजयेदष्टमेदले) ॥ ओं भू० कौशिक्यै० कौशिकीमा० ॥८॥ (इति षष्ठाष्टक पङ्क्तिः)। ओं आप्यायस्व समेतुतेव्विश्वतःसोमव्वृष्ण्यम्। भवाव्वाजस्यसङ्गथे ॥ (आवाहयामि तांदेवीं यक्षिणीं यक्षवल्लभाम् ॥ अवलाश्वमहाकायाम्पूजयेत्प्रथमेदले) ॥ ओं भू० यक्षिण्यै०यक्षिणीमा० ॥१॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वाक्षित्याऽउन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ आवाहयामि तांदेवीम्पञ्चाशत्स्थानसंस्थिताम्। भक्षिणीनाम या प्रोक्ता पूज्याकाष्ठे द्वितीयके)। ॐ भू० भक्षिण्यै नमः भक्षिणीमा० ॥ २ ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पति वेदनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीयमामुतः ॥ (आवाहयामि तांदेवीं कौमारींकामरूपिणीम्। पुत्रकामसमृद्ध्यर्थं पूज्या कोष्ठे तृतीयके) ॐ०भू०कौमार्य्यै०कौमारीमा० ॥३॥ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वे

नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वं लोकम्मऽइषाण ॥ (आवाहयामि तांदेवीं नाम्ना या मंत्र वाहिनी । मन्त्राणिसकलार्थायपूज्या कोष्ठे चतुर्थके) ॐ भू० मन्त्रवाहिन्यै० मन्त्रवाहिनी मा० ॥४॥ ॐ विष्णोरराट मसिव्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्द्ध्रुवोसि । व्वैष्णवमसि विष्णवेत्वा (आवाहयामितां- देवीम्विशालाम्विश्वतोमुखाम् । उपरागाय विश्वेषां पूजयेत् पञ्चमे दले) ॐ भू० विशालायै० विशाला मा० ॥५॥ ॐ ब्राह्मण मद्यव्विदेयम्पितृमन्तम्पैतृमत्यमृषिमार्षेयᳬं सुधातु दक्षिणाम् । अस्म्मद्द्राता देवत्त्रागच्छत प्प्रदातारमाविशत (आवाहयामि तांदेवींकार्मुकी नाम विश्रुताम् । उपरागाय विश्वेषांषष्ठ कोष्ठे प्रपूजयेत्) ॐ भू० कार्मुक्यै० कार्मु- कीमा० ॥६॥ ॐ भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयामदेवा भद्रम्पश्ये माक्ष भिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬंसस्तनूभि र्व्यशेमहि देव हितंय्यदायुः (आवाहयामि तांदेवीं व्याघ्री नामेति विश्रु- ताम् । यजमान हितार्थाय पूजिता सप्तमे दले) ॐ भू० व्याघ्र्यै नमः व्याघ्रीमावाह० ॥७॥ ॐ एकाचमे तिस्रश्चमे तिस्रश्चमे पञ्चचमे पञ्चचमे सप्तचमे सप्तचमे नवचमे नवचमऽ एकादशचमऽएकादशचमे त्रयोदशचमे त्रयोदशचमे पचदशचमे पंचदशचमे सप्तदशचमे सप्तदशचमे नवदशचमे नवदशचमऽ एकविᳬंशतिश्चमेऽएकविᳬं शतिश्चम त्रयोविᳬंशतिश्चमे त्रयोविᳬंशतिश्चमे पंचविᳬंशतिश्चमे पंचविᳬंशतिश्चमे सप्त- विᳬंशतिश्चमे सप्तविᳬंशतिश्चमे नवविᳬंशतिश्चमे नवविᳬं

शतिश्चमेऽएकत्रिऊँशच्चमऽ एकत्रिंऽशच्चमे त्रयस्त्रिंऽश्च्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् (आवाहयामि तांदेवीं महापूर्वांतु राक्षसीम् । रक्षो भयहरांदेवीम्पूजयेदष्टमे दले) ॐ भू० महाराक्षस्यै० महाराक्षसीमा० ॥८॥ (इति सप्तमाष्टक पंक्तिः)॥ ॐ प्रेता जयता नरऽइन्द्रो वः शर्म्म यच्छतु । उग्रावः सन्तु बाहवो ना धृष्या यथासथ (आवाहयामि तांदेवीं नाम्ना या प्रेतभक्षिणी । सर्वरोगहरांदेवीं पूजयेत्प्रथमेदले) ॐ भू० प्रेतभक्षिण्यै० प्रेतभक्षिणीमा० ॥१॥ ॐ असङ्ख्यातासहस्राणि ये रुद्राऽअधिभूम्याम् । तेषांऽसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ (आवाहयामि तांदेवीं धूर्जटां जटिलां सदा । यजमान हितार्थाय पूज्या कोष्ठे द्वितीयके)॥ ॐ भू० धूर्जट्यै० धूर्जटीं०॥२॥ ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्वृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोमऽआत्मा छन्दांऽस्यङ्गानि यजूंऽषिनाम । सामते तनूर्व्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः सुपर्णोसि गरुत्मान्दिव गच्छस्वः पत ॥(आवाहयामि तांदेवीं विकटांनामतो मताम् ॥ सर्वदोषेषु विकटा पूज्या कोष्ठे तृतीयके)॥ ॐ भू० विकटायै० विकटामा० ॥३॥ ॐ याते रुद्र शिवातनूरघोरा पापकाशिनी । तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ आवाहयामि तांदेवीं षष्ठिस्थाने स्थितांशुभाम् । घोररूपां महाकायांतूर्यकोष्ठे प्रपूजयेत्)॥ ॐ भू० घोररूपायै० घोररूपामा० ॥४॥ ॐ देवी द्यावा पृथिवी मखस्यवामद्यशिरोराद्ध्या सं देवयजने पृथिव्याः । मखायत्वा मखस्यत्वा शीर्ष्णे ॥ (आवाहयामि

तांदेवीं सकपालिकपालिकाम् । यजमान हितार्थाय पूजये-त्पंचमेदले ॥ ॐ भू० कपालिकायै० कपालिकामा० ॥५॥ ॐ इदम्विष्णु० ॥ आवहयामि तांदेवीं निकला सकलां शुभाम् । सकलाभीष्टदां देवीं षष्ठकोष्ठे प्रपूजयेत् ॥ ॐ भू० निकलायै० निकलमा० ॥६॥ ॐ व्वृष्णऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा । वृष्णऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्म्मै देहि व्वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा व्वृषसेनोऽसि राष्ट्रदो राष्ट्रममुष्म्मै देहि ॥ (आवाहयामि तां देवीममलां बलसंयुताम् ॥ यज्ञेऽस्मिन् निर्मलां स्थाप्या पूज्या सा सप्तमे दले ॥) ॐ भू० अमलायै० अमलामा० ॥ ७ ॥ ॐ भायै दार्व्वाहारं प्रभायाऽअग्न्येधं ब्रध्नस्य व्विष्टपायाभि-षेक्तारं व्वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारॐ सर्व्वेभ्यो लोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऽ-ऋत्यै व्वधायोपमन्थितारं मेधाय व्वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम् ॥ (आवाहयामि तां देवीं सर्वदा सर्वसिद्धिदाम् ॥ यजमानहितार्थाय पूज्या कोष्ठेऽष्टमे दले ॥) ॐ भू० सिद्धि-प्रदायै० सिद्धिप्रदामा० ॥८॥ (इति अष्टमाष्टकपंक्तिः) ॥ ईशाने - जयायै० जयां० ॥ पूर्वे - विजयायै० विजयामा० ॥ आग्नेये - अजितायै अजितामा० ॥ दक्षिणे - अपराजितायै० अपराजितामा० ॥ नैर्ऋत्ये - क्षेमकर्त्र्यै० क्षेमकर्त्रीमा० ॥ पश्चिमे-लक्ष्म्यै० लक्ष्मीमा० ॥ वायव्ये-वैष्णव्यै० वैष्णवीमा० ॥ उत्तरे - पार्वत्यै० पार्वतीमा० ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु ॥ विश्वे

देवासऽइह मादयन्तामों३ प्प्रतिष्ठ ॥ साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः दिव्यादिचतुःषष्टियोगिन्यः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ॥ ततः षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजयेत् ॥ इति योगिनी पूजनं समाप्तम् ॥

* अथ अजरादिक्षेत्रपाल पूजनम् *

तत्रमन्त्राः ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याब्भ्याᳬं रक्षाᳬं स्यपहᳬंस्यग्ग्रे ॥ ताब्भ्यां पतेम सुकृतामु लोकं य्यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः ॥ [एह्येहि सर्वामर रक्षक ! त्वं सः क्षेत्रपालः प्रथमो मतो यः ॥ तं क्षेत्ररक्षाकरमुख्यपूज्यं समाह्वे त्वाजरनामधेयम् ॥] ॐ भू० अजराय नमः अजरामावाहयामि ॥ १ ॥ ॐ प्रथमावाᳬं सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि व्विश्श्वा ॥ अपिप्प्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्ज्योतिः प्प्रदिशा दिशन्ता ॥ [एह्येहि सद्व्यापितसर्वलोक व्याप्यस्वयं रक्षति जीवलोकम् ॥ सद्व्यापकाख्याय महाभुजाय क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते ॥] ॐ भू० व्यापकाख्याय० व्यापकाख्यं० ॥ २ ॥ ॐ इन्द्रस्य व्वज्ज्रोसि मित्त्राव्वरुणयोस्त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा युनज्मि ॥ अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वारिष्टोऽअर्ज्जुनो मरुता प्रसवेन जयापाम मनसा समिन्द्रियेण ॥ [एह्येहि विघ्नान् हि विनाशय त्वं, रक्षां कुरुष्वाखिलभूतकेभ्यः ॥ सदीन्द्रचौराह्वयकाय तस्मै क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते ॥] ॐ भू० इन्द्रचौराय० इन्द्रचौरमा० ॥ ३ ॥ ॐ एवेदिन्द्रं व्वृषणं व्वज्रब्बाहुं व्वसिष्ठासोऽअब्भ्य-

र्चन्त्यर्क्कैः ॥ स न स्तुतो व्वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः [एह्येहि वृत्रासुरनाशनाय महाभयायाऽसुरघातिने च ॥ सदिन्द्रमूर्त्ते स्फुरदाह्वयाय सत्क्षेत्रपालाधिपते ! नमस्ते ॥) ॐ भू० इन्द्रमूर्त्तये० इन्द्रमूर्ति० ॥ ४ ॥ ॐ उक्षा समुद्रोऽअरुणः सुपर्ण्णः पूर्व्वस्य योनि पितुराविवेश ॥ मद्ध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्म्मा व्विचक्क्रमे रजसप्पात्यन्तौ ॥ (एह्येहि सर्व्वामरवन्दितांघ्रे दैवीकृपालोचनवर्द्धिताय ॥ कठोर शब्दाखिलभीतिकर्त्रे उक्षाभिधानाय नमो नमस्ते ॥] ॐ भू० ऊक्षाभिधाय० उक्षाभिधमा० ॥ ५ ॥ ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा व्वयम् ॥ अग्निर्म्मा तस्म्मादेनसो व्विश्श्वान्म्मुश्चत्वꣳहसः ॥ [एह्येहि कूष्माण्ड महानुभाव ! रक्षोगणान् नाशय नाशय त्वम् ॥ क्षेत्रेशमार्ग्यादिमहाभयेभ्यः त्रायस्व त्रायस्व विभो ! नमस्ते ॥] ॐ भू० कूष्माण्डाय० कूष्माण्डमा० ॥६॥ ॐ स नऽइन्द्राय यज्ज्यवे व्वरुणाय मरुद्भ्यः ॥ व्वरिवोवित्परिस्रव ॥ [एह्येहि विख्यातयशोधिपुञ्ज विवेकविद्याविनयाधिवास ! ॥ क्षेत्राधिपं विघ्नविनाशशीलं महानुभावं वरुणं प्रणौमि] ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥७॥ ॐ व्बाहू मे वलमिन्द्रियꣳ हस्तौ मे कर्म्म व्वीर्य्यम् ॥ आत्मा क्षत्रमुरो मम ॥ [एह्येहि बौद्धादिमतापहारिन् हराशु वन्दीजनवन्धनानि ॥ तं वाहुकाख्यं वटुबुद्धिपुञ्जं क्षेत्राधिप ! त्वां भगवन् ! नमामि ॥] ॐ भू० वाहुकाख्याय० वाहुकाख्यं० ॥ ८ ॥ ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो व्वरुण्यादुत । अथो यमस्य पड्वीशात्सर्व्वस्म्माद्देवकिल्बिषात्

[एह्येहि वैकुण्ठपदाब्जभृङ्ग विवेकविद्याविनयाम्बुराशे ! ॥ विमुक्तसंज्ञाय वराय तस्मै क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते ॥] ॐ भू० विमुक्ताय० विमुक्तमा० ॥ ९ ॥ ॐ कुर्व्वन्नेवेह कर्म्माणि जिजीविषेच्छतᳬ समाः ॥ एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म्म लिप्यते नरे [एह्येहिं लीलालय लिप्तकाय कस्तूरिकाचन्दनचर्चिताय ॥ लक्ष्मीपते लोलविलोचनाय क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते ॥] ॐ भू० लिप्तकाय० लिप्तकमा० ॥१०॥ ॐ सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्द्रोऽभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्प्रप्प्लुतो ययोरोजसा स्कभिता रजाᳬसि व्वीर्य्येभिर्व्वीरतमा शविष्ठा ॥ या पत्त्येतेऽअप्प्रतीता सहोभिर्व्विष्णूऽअगन्न्वरुणा पूर्व्वहूतौ ॥ (एह्येहि लीलाकसुनामधेय ! लोकाधिनाथैरभिपूजितस्त्वम् ॥ लूतादिविस्फोटकभीतिहन्त्रे लीलाकसंज्ञाय नमो नमस्ते ॥) ॐ भू० लीलालोकाय० लीलाकमा० ॥११॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्श्चवो नमो नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्यश्श्चवो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्श्चवो नमोनमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्श्चवो नमः ॥ (एह्येहि दीर्घास्य कठोरनेत्रत्रयेणविद्द्रावितभूतजाल ! ॥ महोग्रदंष्ट्राविकरालधाम्ने सदैकदंष्ट्राय नमो नमस्ते ॥) ॐ भू० एकदंष्ट्राय० एकदंष्ट्रमा० ॥१२॥ ॐ अर्म्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं व्वीर्य्यायाविपालं तेजसेऽजपालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्द्राय गृहपᳬश्रेयसे वित्तधमाद्ध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम् ॥ (एह्येहि शक्रस्य सुवाहनाय चतुर्महादन्तविराजिताय ॥ ऐरावताख्याय

रिपुप्रहर्त्रे सत्क्षेत्रपालाय नमो नमस्ते) ॐ भू० ऐरावताख्याय० ऐरावताख्यं० ॥ १३ ॥ ॐ याऽओषधीः पूर्व्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगंपुरा ॥ मनैनु बभ्रूणामहॅं शतं धामानि सप्त च (एह्येह्यनाचाररतान् हराशु त्वामोषधीघ्नं प्रणमामि सिद्ध्यै ॥ सदौषधीवीर्यहराय तस्मै महौषधीघ्नाय नमो नमस्ते) ॐ भू० ओषधीघ्नाय० ओषधीघ्नं० ॥ १४ ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं० (एह्येहि विद्याधर ! बुद्धिदातः ! सद्बाणबाणासनहस्तयुग्मः ॥ करालदोर्दण्डविबाधतारिं तं बन्धनाख्यं प्रणतोऽहमस्मि ॥) ॐ भू० बन्धनाख्याय० बन्धनाख्यं० ॥ १५ ॥ ॐ देव सवितः प्प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय ॥ दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु व्वाचस्पतिर्व्वाचं नः स्वदतु (एह्येहि दीर्घास्य कठोरनेत्र दोर्दण्डसंत्रासितदैत्यवृन्द ! ॥ मत् दुःखदारिद्र्यविनाशनाय आ दिव्यकायाय नमो नमस्ते) ॐ भू० दिव्यकायाय० दिव्यकायं० ॥१६॥ ॐ सीसेन तन्त्रंमनसा मनीषिण ऽऊर्णासूत्रेण कवयो व्वयन्ति ॥ अश्विना यज्ञॅं सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं व्वरुणो भिषज्ज्यन् (एह्येहि कस्तूरिविलिप्तकाय दोर्दण्डविद्रावितकोटिदैत्य ॥ काश्मीरशल्कम्बल शोभिताय शल्कम्बलाख्याय नमो नमस्ते) ॐ भू० कम्बलाख्याय० कम्बलाख्यं० ॥१७॥ॐ आशुः शिशानो व्वृषभोनभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शतॅं सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः (एह्येहि शूराधिपगीतकीर्ते शीघ्रम् हि संक्षोभय सर्व विघ्नान् ॥ क्षुद्रारि-पुञ्ज-क्षयकाय तस्मै संक्षोभणाख्याय नमो नमस्ते) ॐ भू० क्षोभणाख्याय०

क्षोभगाख्यं० ॥ १८ ॥ ॐ इमꣳ साहस्रꣳ शतधारमुत्सं व्यच्च्यमानꣳ सरिरस्य मध्ये ॥ घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने माहिꣳसीः परमे व्योमन् ॥ गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्न्वानस्तन्न्वो निषीद ॥ गवयं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु (स्वरावविद्रावितसर्वभूत कान्तारनानापशुपालकाय॥ गोतुल्यरूपाय गरिष्ठधाम्ने क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते) ॐ भू० गवे० गवां० ॥ १९ ॥ ॐ कुम्भो वनिष्ठुर्ज्जनिता शचीभिर्य्यस्मिन्नग्ग्रे योन्यां गर्भोऽअन्तः ॥ प्लाशिर्व्यक्तः शतधारऽउत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः (घोरारवाघर्घरितस्वराय घारास्यदंष्ट्राय करालधाम्ने ॥ क्षेत्राधिनाथाय घण्टाभिधाय महानुभावाय नमो नमस्ते) ॐ भू० घण्टाभिधाय० घण्टाभिधमा० ॥२०॥ ॐ आक्रन्दय बलमोजोनऽआधानिष्टनिहिदुरिताबाधमानः ॥ अपप्रोथ दुन्दुभे दुच्छुनाऽइतऽइन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व (एह्येहि पाथोनिधिमन्दिराय विशालनेत्राय वरिष्ठधाम्ने ॥ नागाधिनाथाय विरोधहन्त्रे व्यालाभिधानाय नमो नमस्ते) ॐ भू० व्यालाय० व्यालमा०॥२१॥ ॐ इन्द्रायाहि तूतुजानऽउप ब्रह्माणि हरिवः ॥ सुते दधिष्व नश्चनः [एह्येहि वीराधिपवन्दितांघ्रे सूक्ष्मातिसूक्ष्मस्वकरूपधत्र ॥ अरिष्टहर्त्रे परमाणुनाम्ने ह्यणुस्वरूपाय नमो नमस्ते] ॐ भू० अणुस्वरूपाय० अणुस्वरूपमा० ॥२२॥ ॐ चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ॥ रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहꣳ हरिरेति कनिक्रदत् (प्रचण्डभुजदण्डाय ह्यतिक्रान्तेन्दुकान्तये । चन्द्रवारुणसंज्ञाय क्षेत्राधिपतये नमः) ॐ भू० चन्द्रवारुणाय०

चन्द्रवारुणमा० ॥२३॥ ॐ प्रतिश्रुत्कायाऽअर्तनंघोषाय भष-मन्ताय वहुवादिनमनन्ताय मूकꣳ शब्दायाडम्बराघातं महसे व्वीणावादं क्रोशाय तूणवध्मम वरस्पराय शंखध्मं व्वनाय व्वनपमन्न्यतोऽरण्याय दावपम् [फेत्कारविद्रावितसर्वभूतं पाप घ्नकायं हनुउग्रदेहम् ॥ देवंफटाटोप सुनामधेयं क्षेत्राधिनाथंशिरसा नमामि] ॐ भू० फटाटोपाय० फटाटोपमा० ॥२४॥ ॐ उग्रं लोहितेन मित्त्रꣳ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्वर्त्येनेन्द्रं प्प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान्प्रमुदा ॥ भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् [स्फुरज्जटाजूटविराजिताय जाड्यान्धकाराय शरीरधाम्ने ॥ जगज्जनानन्दकराय तस्मै जटालसंज्ञाय नमो नमस्ते] ॐ भू० जटालाय० जटालमा० ॥२५॥ ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देवदीद्यत् ॥ अग्ग्ने क्रत्वाक्रतूँ १ रनु [कृपाकटाक्षयुक्ताय कर्ण कुण्डलशोभिने ॥ कुठारपाणये क्षेत्रस्वामिने क्रतवे नमः] ॐ भू० क्रतवे० क्रतुं० ॥२६॥ ॐ आजिघ्र कलशं० [घण्टारव-ध्वस्तादिगन्तभीतिघोरास्यसंदर्शरितस्वरंच ॥ घण्टेश्वरं पाप विनाशकत्वं क्षेत्राधिनाथं भगवन्तमीडे] ॐ भू० घण्टेश्वराय० घण्टेश्वरमा० ॥२७॥ ॐ व्वायो शुक्रो ऽअयामि ते मद्ध्वो ऽअग्रं दिविष्टिषु ॥ आयाहि सोमपीतये स्प्पार्हो देव निय्युत्वता ॥ [एह्येहि वीरेन्द्र सुवन्दितांघ्रे विख्यातनाम्ने वित-तोग्रधाम्ने ॥ वामप्रियायाथ विनोदकर्त्रे विटङ्कसंज्ञाय नमो नमस्ते] ॐ भू० विटङ्काय० विटङ्कमा० ॥२८॥ ॐ दैव्या होतारा ऽऊर्द्ध्वमद्ध्वरं नोऽग्ग्ने र्जिह्वामभिग्गृणीतम् ॥ कृणुतं नः

स्विष्टिम् [एह्येहि नानामणिसंयुताय मारीगणाक्षाय मनोहराय मुनीन्द्रवन्द्याय च मोहहर्त्रे नमोऽस्तु तस्मै मणिमन्दिराय] ॐ भू० मणिमतये० मणिमतिमा० ॥२९॥ ॐ त्रीणि त ऽआहुर्द्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे ॥ उतेव मे व्वरुण श्छन्त्स्यर्व्वन्न्यत्त्रा त ऽआहुः परमं जनित्रम् [एह्येहि गौरी प्रियकारिकाय गणेश विघ्नौघविनाशकारिन् ॥ गानप्रियायाथ गुहाग्रजाय गणौघवन्धाय नमो नमस्ते] ॐ भू० गणवन्धाय० गणवन्धमा० ॥३०॥ ॐ प्रतिश्रुत्काया ऽअर्तनंघोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकᳬं शब्दायादुम्बराघातं महसे व्वीणा वादं क्रोशाय तूणवध्ममवरस्पराय शङ्खध्मं व्वनाय व्वनपमन्न्यतोऽरण्याय दावपम्॥ (प्रचण्डकोदण्डलसत्कराय करालरूपाय कुमारकाय ॥ कादम्बरीपानरताय तस्मै सडूडामराख्याय नमो नमस्ते) ॐ भू० डामराय० डामरं० ॥३१॥ ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नमोरूपाः पार्ज्जन्न्याः ॥ (एह्येहि ढक्कारचकप्रियाय भयापहाराय निवासिने च ॥ कुमारमित्राय विराजिताय सद्ढुण्ढिकर्णाय नमो नमस्ते) ॐ भू० ढुण्ढिकर्णाय० ढुण्ढिकर्णमा० ॥३२॥ ॐ व्वनस्पते व्वीड्वङ्गो हि भूया ऽअस्म्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः गोभिः सन्नद्धोऽअसि व्वीडयस्वास्त्थाता ते जयतु जेत्वानि (स्वस्थानसंस्थाय सुवेषकाय सुरारिहन्त्रे च गरिष्ठधाम्ने ॥ नेत्रार्चिषा दीपितवासधाम्ने नमो नमस्ते स्थविराभिधाय) ॐ भू० स्थविराय० स्थविरमा० ॥३३॥ ॐ सुपर्णं व्वस्ते

मृगो ऽअस्यादन्तो गोभिः सन्नद्धा पतति प्प्रसूता ॥ यत्रा नरः सं च व्वि च द्रुद्रवन्ति तत्रास्म्मब्भ्यमिषवः शर्म्म यॅ॑सन् (विशालदंष्ट्राविकरालरूप दन्तप्रभा-जुन्न-महान्धकार ॥ दारिद्र्यकान्तारसुधूमकेतो नमोऽस्तु ते दन्तुरनामधेयम्) ॐ भू० दन्तुराय० दन्तुरमा० ॥३४॥ ॐ अग्ने ऽअच्छा व्वदेहनः प्प्रति नः सुमनाभव ॥ प्र नो यच्छ सहस्रजित्वॅ॑हि धनदा ऽअसि स्वाहा (एह्येहि धर्मात्मजतुल्यरूप धराधिनाथस्तुतविक्रम प्रभो ॥ धनप्रदायाऽथ धुरन्धराय धनेशसंज्ञाय नमो नमस्ते) ॐ भू० धनदाय० धनदमा० ॥३५॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम० ॥ (एह्येहि नानाविधिविक्रमस्त्वं सुरेन्द्रनागाधिपगीतकीर्ते ॥ नारायणाख्यानरताय तस्मै सन्नागकर्णाय नमो नमस्ते) ॐ भू० नागकर्णाय० नागकर्णमा० ॥३६॥ ॐ बाहू मे बलमिन्द्रियॅ॑ हस्तौ मे कर्म्म व्वीर्यम् ॥ आत्मा क्षत्रमुरो मम (एह्येहि मारीगणनाशनाय मुनिप्रवन्द्याय मनोहराय ॥ दुःखप्रहर्त्रे च खलौघहर्त्रे महाभुजायाऽथनमो नमस्ते) ॐ भू० मारीगणाय० मारीगणमा० ॥३७॥ ॐ अपा फेनेन नमुचेः शिर ऽइन्द्रोदवर्त्तयः ॥ व्विश्श्वा यदजयः स्पृधः (एह्येहि फेत्कार महानुभाव दारिद्र्यदुःखौघविनाशकारिन् ॥ येनप्रभायप्रभवे सुराणां फेत्कारसंज्ञाय नमो नमस्ते) ॐ फेत्काराय० फेत्कारमा० ॥३८॥ ॐ इदॅ॑ हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशव्वीरॅ॑ सर्व्वगणॅ॑ स्वस्तये ॥ आत्मसनि प्प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्यभयसनि ॥ अग्निः प्प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽअस्म्मासु धत्त (एह्येहि चातुर्थ्यसमुद्रमूर्त्ते चञ्चत्करास्फाल-

नशोभिताङ्ग ॥ सुतप्तजातखरभास्वराङ्ग तं चीकराख्यं भ :-वन्तमीडे) ॐ चीकराय० चीकरमा० ॥३९॥ ॐ या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकं च रक्षति। श्येनं पतत्रिणᳬंसिᳬंहᳬंसेमं पात्वᳬंहसः (सिंहाकृति तिग्मकरालदंष्ट्रं नखायुधं भीतिकरं गजानाम् ॥ नागेन्द्रनीराजितपादपद्मं क्षेत्राधिपं सिंहवरं नमामि ॐ भू० सिंहाकृतये० सिंहकृतिमा० ।४०॥ ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत ऽआजगन्था परस्याः ॥ सृकᳬं सᳬंशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि विमृधोनुदस्व (एह्येहि मारीगणनाशनाय महेशपादार्चनतत्पराय ॥ मदप्रमत्तौघमदप्रहर्त्रे मृगाभिधानाय नमो नमस्ते) ॐ भू० मृगाय० मृगमा० ॥४१॥ ॐ इन्दुर्दक्षः श्येन ऽऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः ॥ महान्त्सधस्थे ध्रुव ऽआ निषत्तो ऽनमस्ते ऽअस्तु मा मा हिᳬंसीः (एह्येहि पाथोधिविलासकर्त्रे रुद्राक्षमालाविलसद्गलाय ॥ यक्षप्रभामण्डितभूतलाय यक्ष्माभिधानाय नमो नमस्ते) ॐ भू० यक्ष्मप्रियाय० यक्ष्मप्रियमा० ॥४२॥ ॐ जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्म्मी याति समदामुपस्थे॥ अनाविद्धया तन्वा जय त्वᳬंस त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु (एह्येहि कारुण्यसुधासमुद्र स्वकीयभासाहतचन्द्रकान्ते ॥ मेघाद्यकं वाहननामधेयं क्षेत्राधिनाथप्रवरं नमामि) ॐ भू० मेघवाहनाय० मेघवाहनमा० ॥४३॥ ॐ तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह वाजयन्तः अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्ति शत्रूँ १ रनपव्ययन्तः (एह्येहि तीक्ष्णांघ्र महानुभाव जयाप्रसूत प्रतिमोग्रतेजः ॥ नानाविभूषारुचिराय

तस्मै तीक्ष्णोष्ट्रसंज्ञाय नमो नमस्ते) ॐ भू० तीक्ष्णोष्ट्राय० तीक्ष्णोष्ट्रमा० ॥४४॥ ॐ व्वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितग्ग्रीवश्छागैर्न्न्यग्ग्रोधश्चमसैः शल्मलिर्व्वृद्ध्या ॥ एपस्य राथ्यो व्वृषा पड्भिश्चतुर्भिरेदगन्ब्रह्माऽकृष्णश्च नोऽवतु नमोऽग्नये (एह्येहि रातिव्रजनाशनाय खड्गोग्रधाराक्षतदुर्जनाय ॥ अग्निस्वरूपाय गुणैकधाम्नेऽनलाभिधानाय नमो नमस्ते) ॐ भू० अनलाय अनलं० ॥४५॥ ॐ अदित्यास्त्वापृष्ठे सादयाम्म्यन्तरिक्षस्य धर्त्रीं व्विष्टम्भनीं दिशामधिपत्नीं भुवनानाम् ॥ ऊर्म्मिर्द्रप्सो अपामसि व्विश्वकर्म्मा त ऋषिरश्विनाद्ध्वर्यू सादयतामिह त्वा (एह्येहि कोटीन्दुसमप्रभाय शुद्धाम्बराकल्पविराजिताय ॥ शरीरसामर्थ्ययुताय तस्मै तच्छुक्लतुण्डाय नमो नमस्ते) ॐ भूः० शुक्लतुण्डाय० शुक्लतुण्डं० ॥४६॥ॐ द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं व्वायुश्छिद्रं पृणातु ते ॥ सूर्य्यस्ते नक्षत्रैःसह लोकं कृणोतु साधुया (एह्येहीह सुधालाप संसारभयहारक ॥ सुखप्रदाय भक्तानां क्षेत्रपालाय ते नमः) ॐ भू० अन्तरिक्षाय० अन्तरिक्षं ॥४७॥ ॐ सम्बर्हिरङ्क्ताᳪं हविषा घृतेन समादित्यैर्व्वसुभिः सम्मरुद्भिः ॥ समिन्द्रो व्विश्वदेवेभिरङ्क्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत्स्वाहा (एह्येहि वन्दीगणबन्धमोचनं बुद्धिप्रदं बाहुबलप्रकाशम् ॥ बोधप्रदं बर्बरकाभिधानं क्षेत्राधिनाथं शिरसा नमामि) ॐ भू० बर्बरकाय० बर्बरकं० ॥४८॥ ॐ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण व्विचर्पणिः ॥ यः पोता स पुनातु मा (एह्येहि राकापतितुल्यवक्त्रः स्वरवसम्पूरितदिक्तटाय ॥ पूतात्मने सत्यवनाभिधाय क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते) ॐ भूः०

पावनाय नमः पावनमावाहयामि ॥४९॥ ॐ मनोजूति० इति अजरादिपावनान्ताः क्षेत्रपालाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु॥ ॐ अजरादिपावनान्तक्षेत्रपालेभ्यो नमः इति पूजयेत् ॥ नव कोष्ठानि कृत्वा मध्ये कोष्ठे पावनं पूजयेत् ॥ दिक्षु विदिक्षु अष्टसु कोष्ठेषु पञ्चकोणं कृत्वा मध्ये वृत्तं पूर्वादिक्रमेण अजरादिस्थापनं मध्ये पावनमिति क्रमः ॥ इति क्षेत्रपालपूजनं समाप्तम् ॥

* अथ सर्वतोभद्रमण्डलं देवतास्थापनञ्च *

प्रागुदीच्यां गता रेखा कुर्यादेकोनविंशतिः ॥ खण्डेन्दुस्त्रिपदः श्वेतपञ्चभिः कृष्णशृङ्खला ॥१॥ नीलैकादश वल्ली तु भद्रं रक्तं पदैर्नव ॥ चतुर्विंशत्सिता वापी परिधिः पीतविंशतिः ॥२॥ मध्ये षोडशभिः कोष्ठै रक्तं पद्मं सकर्णिकम् ॥ परिध्यावेष्टितं पद्मं बाह्ये सत्त्वं रजस्तमः ॥३॥ तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान् ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ब्रह्मादिदेवानावाहयेत् ॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन ऽआवः ॥ सबुध्न्या ऽउपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ (एह्येहि धातस्तु समस्तसृष्टेः पद्मोद्भवः पद्ममुखः प्रदातः ॥ सुराऽसुरैर्वन्दितपादपद्म यज्ञे ममाऽस्मिन् कुरु सन्निधानम् ॥) मध्ये ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं० ॥१॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवा वाजस्य सङ्गथे ॥ (कुबेरं गुह्यकाध्यक्षं सुराऽसुरनमस्कृतम् ॥ धनदं शिबिकारूढं चिन्तयामि सदा प्रियम् ॥) उत्तरे वाप्यां

ॐ भू० सोमाय० सोमं० ॥२॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थु-पस्पतिं धियञ्जिन्न्यमवसे हूमहे व्वयम् ॥ पूषा नो यथा व्वेद सोमसद्वृधे रक्षिता पायुरादब्धः स्वस्तये ॥ (आवाहयाम्यहं देवं ईशानं च वरप्रदम् ॥ सर्वलोकप्रपूज्यं त्वां ईशानं पूजया-म्यहम् ॥ ईशान्यां खण्डेन्दौ ॐ भू० ईशानाय० ईशानं० ॥३॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ (आवाहयाम्यहं देवं महेन्द्रञ्च महाप्रभुम् ॥ पीतवर्णं गजारूढं वज्रपाणिं सुरेश्वरम् ॥) पूर्वे वाप्यां ॐ भू० इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥४॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडो अवया-सिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वह्नितमः शौशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ (अथाऽग्निमूर्तिं ध्यायामि सर्वाभीष्टफल-प्रदाम् ॥ एकजिह्वां द्विशीर्षाश्च जटामुकुटमण्डिताम् ॥) आग्नेय्यां खण्डेन्दौ ॐ भू० अग्नये० अग्निमा० ॥५॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्मःपित्रे ॥ (आवाहयाम्यहं देवं यमं महिषवाहनम् । ऊर्ध्व-केशं विरूपाक्षं भैरवं रक्तलोचनम् ॥) दक्षिणे वाप्यां ॐ भू० यमाय० यममा० ॥६॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छस्तेनस्ये-त्यामन्विहि तस्करस्य ॥ अन्न्यमस्म्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ (आवाहयाम्यहं देवं निर्ऋतिं श्वेतरूपिणम् ॥ लम्बकेशं विरूपाक्षं खड्गपाणिं दुरासदम् ॥) नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ ॐ भू० निर्ऋतये निर्ऋतिमा० ॥७॥ ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।

अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशᳬंस मा न ऽआयुः प्रमोषीः(आवा-
हयाम्यहं देवं वरुणं कमलेक्षणम् ॥ रक्ताम्बरधरं देवं रक्तमाला-
विभूषितम्) पश्चिमे वाप्यां ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा०
॥८॥ ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरᳬ सहस्रिणीभिरु-
पयाहि यज्ञम् ॥ व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात
स्वस्तिभिः सदा नः (अहमावाहयिष्यामि वायुं सर्वत्र व्यापि-
नम् ॥ ऊद्र्ध्वकेशं विरूपाक्षं सर्वचैतन्यरूपिणम् ॥) वायव्यां
खण्डेन्दौ ॐ भू० वायवे० वायुं० ॥६॥ ॐ व्वसुभ्यस्त्वा रुद्रे-
भ्यस्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ
त्वावृष्ट्यावताम् ॥ व्व्यन्तु व्वयोक्तᳬ रिहाणा मरुतां पृषती-
र्ग्गच्छ व्वशा पृश्निर्भूत्वा दिवङ्गच्छ ततो नो व्वृष्टिमावह ॥
चक्षुष्पा ऽअग्नेसि चक्षुर्म्मे पाहि॥(धरोध्रुवश्च रोमश्च आप-
श्चैव नलाऽनलः॥ प्रत्यूषश्च प्रभातश्च वसवोऽष्टौ प्रकीर्तिताः)॥
वायुसोममध्ये भद्रे ॐ भू० अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसून०॥१०॥
ॐ नमस्ते रुद्र मन्न्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुतते
नमः ॥ (अजैकपादहिर्बुध्न्यो विरुपाक्षोऽथ रैवतः ॥ हरश्च
बहुरूपश्च त्र्यम्बकश्च सुरेश्वरः ॥ सविता च जयन्तश्च पिनाकी
रुद्र एव च ॥) सोमेशानयोर्मध्ये एकादशरुद्रेभ्यो नमः एका-
दश रुद्राना० ॥११॥ ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्म्नमादि-
त्यासो भवता मृडयन्तः ॥ आवोऽर्व्वाची सुमतिर्व्ववृत्त्यादᳬ
होश्चिद्या व्वरिवोवित्तरासत् (धाता मित्रो यमश्चेन्द्रो वरुणः
सूर्य एव च ॥ भगो विवस्वान् पुरुषः सविता विष्णुरेव च ॥
त्वष्टेति द्वादशादित्यान् पूजयामि यथाविधि) ॥ ईशानपूर्व-

योर्मध्ये ॐ भू० द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्याना० ॥१२॥ यावाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती ॥ तया यज्ञं मिमिक्षतम् (रूपेणाऽप्रतिमौ देवौ सूर्यस्य तनयावुभौ ॥ वडवा-गर्भसम्भूतौ मण्डले विशतावुभौ) इन्द्राग्न्योर्मध्ये भद्रे ॐ भू० अश्विभ्यां० अश्विनौ० ॥१३॥ ॐ व्विश्श्वेदेवास ऽआगतश्शृणुता मऽइमᳬ हवम् ॥ एदं बर्हिर्निषीदत ॥ उपयामगृहीतोऽसि व्वि-श्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य ऽएष ते योनिर्व्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः (क्रतु-र्दक्षो वसुः सत्यः कोमलौ धूम्रलोचनौ ॥ पुरुरवाद्रवश्चैव विश्वे-देवा इमे दश ॥) अग्नियममध्ये भद्रे ॐ भू० सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो० सपैतृकविश्वान् देवानावा० ॥१४॥ अभि त्यं देवᳬ सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्च्चामि सत्यसवᳬ रत्नधामभि प्प्रियं मतिं कविम् ॥ ऊर्द्ध्वा यस्याऽमतिर्भा ऽअदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः ॥ प्प्रजाभ्यस्त्वा प्रजा-स्त्वानुप्प्राणन्तु प्प्रजास्त्वमनुप्प्राणिहि ॥ (अहमावाहयिष्यामि सप्त यक्षान् महाबलान् ॥ पुण्यरूपान् पुण्यजनान् पुण्यकर्मरतान् सदा ॥) यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रे ॐ भू० सप्त यक्षेभ्यो० सप्तयक्षानावा० ॥ ॥१५॥ ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो० ॥ (आवाहयाम्यहं देवान् भूतान् नागान् महाबलान् ॥ सर्पराजान् महाकायान् मणिमण्डलभूषितान् ॥) निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये भद्रे ॐ भू० अष्टकुलनागेभ्यो० अष्टकुलनागानावा० ॥१६॥ ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्ग्गन्धर्व्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ॥ सन ऽइदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट् ताभ्यः स्वाहा ॥ (आवाहयामि गन्धर्वान् साऽप्सरान् गीततत्परान्

हाहा हूहूश्चैवमाद्यान् गन्धर्वाप्सरसस्तथा ॥) वरुणवायुमध्ये भद्रे ॐ भू० गन्धर्वाप्सरोभ्यो० गन्धर्वाप्सरसः आवा० ॥१७॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन्॥ (एह्येहि षण्मुख सुरेश्वर ! तारकारे ! श्री नीलकण्ठवरवाहन शक्तिपाणे ! । अङ्गारकोटर सुरेश्वरपूज्यमान सान्निध्यमत्र कुरु ब्रह्मकुबेरमध्ये ॥ ब्रह्मसाममध्ये वाप्यां ॐ भूः० स्कन्दाय० स्कन्दमा० ॥१८॥ ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घना घनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शतᳬ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः (आवाहयाम्यहं देवं वृषभं सर्वपूजितम्॥ महादेवासने मुख्यं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ स्कन्दादुत्तरे ॐ भू० वृषभाय० वृषभमा० ॥१९॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या ऽउन्नयामि ॥ समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥ (आवाहयामि तं शूलं शस्त्रराजं महोज्ज्वलम् ॥ दुष्टारिघातने दक्षं शिवबाहुविराजितम् ॥ वृषभोत्तरे ॐ भूः० शूलाय० शूलमा० ॥२०॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि॥ समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः (नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम् ॥ सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम् ॥ शूलादुत्तरे ॐ भू० महाकालाय० महाकालमा०॥२१॥ ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्ज्योतिष्माँश्च शुक्रश्च ऽऋतपाश्चात्यᳬहाः ॥ (आवाहयामि तान् देवान् कैलासाधिपपार्षदान् ॥ दक्षादिप्रमुखान् सप्तगणान् जीवसुखावहान्॥) ब्रह्मेशानयोर्मध्ये शृङ्खलायां ॐ भू० दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः

दक्षादिसप्तगणानावाहयामि ॥२२॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ [आगच्छ कोकिले दुर्गे ! सिंहारूढे महाभुजे ! ॥ विन्ध्याचलकृतावासे ! मण्डले त्वं समाविश ॥] ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्यां लिङ्गे वा ॐ भू०दुर्गायै०दुर्गामा०॥२३॥ ॐ इदं विष्णु० (आवाहयाम्यहं देवं श्रीविष्णुं कमलापतिम् ॥ जगच्चक्षुं विश्वजन्म-स्थितिसंहारकारकम्) दुर्गापूर्वे ॐ भू० विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि ॥२४॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ॥ अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ (कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छति ॥ तिष्ठत्युदीच्यां दिश्यर्कछविमावाहये स्वधाम् ॥) ब्रह्माग्न्योर्मध्ये शृङ्खलायां स्वधायै० स्वधामा० ॥२५॥ ॐ परं मृत्यो ऽअनु परेहि पन्थां यस्ते ऽअन्य ऽइतरो देवयानात् ॥ चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाᳬं रीरिषो मोत वीरान् ॥ (इहोपहूतो भगवान् मृत्युः शामित्रकर्मणि ॥ न कश्चिन् म्रियते तावद्यावदास्त इहान्तकः ॥) ब्रह्मयममध्ये वाप्यां लिङ्गे वा ॐ भू० मृत्युरोगेभ्यो० मृत्युरोगाना० ॥२६॥ ॐ गणानान्त्वा० ॥ (एकदन्तं महाकायं पक्वकाञ्चनसन्निभम् ॥ लम्बोदरं विशालाक्षं वन्देऽहं गणनायकम् ॥) ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये शृङ्खलायां ॐ भू० गणपतये० गणपतिमा० ॥२७॥ ॐ आपो हि ष्ठा (स्वच्छाः पवित्रा जनशुद्धिबीजा यादोभिरत्यन्तभयङ्कराश्च ॥ कुर्वन्तु सान्निध्य-

मथाम्बुवेगात् सर्वस्य विश्वस्य च जीवरूपोः ॥) ब्रह्मवरुण-योर्मध्ये वाप्यां लिङ्गे वा ॐ भू० अद्भ्यो नमः अपः आवा-हयामि ॥२८॥ ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवोविमहसः ॥ स सुगोपातमो जनः ॥ (आगच्छ त्वं महादेव! मृगारूढ! प्रभञ्जन! ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय मण्डले त्वं स्थिरा भव ॥) ब्रह्मवायुमध्ये श्रृङ्खलायां मरुद्भ्यो नमः मरुतः आवा० ॥२९॥ ॐ स्योना पृथिवी० (एह्येहि वसुधे देवि! शैलजीवनकानने ॥ ब्रह्मणः पादमूले तु सान्निध्यं कुरु मे सदा॥) ब्रह्मणः पादमूले ॐ भूः० पृथिव्यै नमः पृथिवीमा० ॥३०॥ ॐ इमम्मे वरुण० (गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति॥ नर्मदे सिन्धुकावेरी सान्निध्यं कुर्वतामिह ॥) ब्रह्मणः पादमूले पृथिव्या उत्तरे ॐ भू० गङ्गादिनदीभ्यो नमः गङ्गादिनदीः आ० ॥३१॥ ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्म्मयोभूरभि मा व्वाहि स्वाहा ॥ अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्म्मयोभूरभि मा व्वाहि स्वाहा ॥ (क्षारेक्षु रस-मद्योक्षन्घृतोदक्षीरकोदकौ ॥ दधिमण्डोदशुद्धोदौ सप्तैतान् स्थापयाम्यहम् ॥) ब्रह्मणः पादमूले गङ्गोत्तरे ॐ भू० सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरानावाहयामि ॥३२॥ ॐ प्र पर्व्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिच ऽइयानाः ॥ ता ऽआववृत्रन्नधरागुदक्ता ऽअहिम्बुध्न्यमनु रीयमाणाः ॥ विष्णोर्विक्रमणमसि व्विष्णोर्व्विक्रान्तमसि व्विष्णोः क्रान्तमसि ॥ (सुमेरुं सुन्दराकारं प्रकाशं सूर्यसन्निभम् ॥ पर्वतानां मुख्यराजा पूजां मे प्रतिगृह्यताम् ॥) कर्णिकापरिधौ ॐ भू० मेरवे नमः मेरुमा० ॥३३॥

अथ सोमादिक्रमेण सत्त्वबाह्यपरिधौ ॥ ॐ गणानान्त्वा० ॥ (निषिक्ता कुमुदाक्षस्य नाम्ना कौमोदकी गदा ॥ शान्तिदा स्मरणादेव तस्यै तुभ्यं नमो नमः ॥ ॐ भू० गदायै नमः ॥ गदामावाहयामि ॥३४॥ ईशाने ॥ ॐ त्रिᳬंशद्धाम व्विराजति व्वाक्पतङ्गाय धीयते ॥ प्रतिवस्तोरह द्युभिः (महायोगीन्द्र-हस्तस्य शङ्करस्य प्रियङ्कर ! । त्रिशूल ! त्वमिहागच्छ पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।।) ॐ भू० त्रिशूलाय० त्रिशूलमा० ॥३५॥ पूर्वे ॥ ॐ महाँ२॥ऽइन्द्रो व्वज्रहस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु ॥ हन्तु पाप्मानं य्योऽस्मान्द्वेष्टि ॥ उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वष ते योनिर्म्महेन्द्राय त्वा ॥ (तप्तकाञ्चनवर्णाभं वैज्रं वै शस्त्रनायकम् ॥ आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् गृहाणेमां नमोऽस्तुते ॥ (ॐ भू० वज्राय नमः वज्रमा० ॥३६॥ आग्नेये ॐ व्वसु च मे व्वसतिश्च मे कर्म्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म ऽएमश्च म ऽइत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ (सर्वदैत्यविनाशाय सर्वकामफलप्रदे ॥ सर्वसत्त्वहिते शक्ते शान्तिं यच्छ नमोऽस्तुते ॥) ॐ भूः० शक्तये० शक्तिमा० ॥३७॥ दक्षिणे ॥ ॐ इड एह्यदित ऽएहि काम्या ऽएत ॥ मयि वः कामधरणं भूयात् ॥ (धर्मराजस्य हस्तस्य यमस्य च सदा प्रिय ! ॥ दण्डायुध ! नमस्तेऽस्तु सर्वसिद्धिप्रदो भव ॥) ॐ भू० दण्डाय० दण्डमा० ॥३८॥ नैर्ऋत्ये ॥ ॐ खड्गो व्वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्द्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिᳬंहो मारुतः कृकलासः पिप्पिका शकुनिस्ते शरव्यायै व्विश्वेषां देवानां पृषतः ॥ [नीलजीमूतसङ्काश ! तीक्ष्णदंष्ट्र

कृशोदर ! खड्गराज ! नमस्तुभ्यं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥) ॐ खड्गाय० खड्गमा० ॥३९॥ पश्चिमे ॥ ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्म्मदवाधमं व्विमध्यमᳬं श्रथाय ॥ अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम ॥ [देवासि वरुणास्त्रं त्वं दैत्यवंशविदारणम् ॥ पाश! मां समरे रक्ष रज्जुराज! नमोऽस्तुते॥] ॐ भू०पाशाय०पाशमा० ॥४०॥ वायुकोणे ॥ ॐ अᳬंशुश्च मे रश्मिश्च्च मेऽदाभ्यश्च्च मेऽधिपतिश्च म उपाᳬंशुश्च्च मेऽन्तर्य्यामश्च्च म ऐन्द्रवायवश्च्च मे मैत्रावरुणश्च्च मऽआश्वि-नश्च्च मे प्रतिप्प्रस्थानश्श्च्च मे शुक्रश्च्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्प्पताम् ॥ [गजघ्नं वरवीरघ्नं परसैन्यापहारकम् ॥ गणेशस्य प्रियं तस्यामङ्कुशाय नमो नमः ॥] ॐ भू० अङ्कुशाय० अङ्कुशमा० ॥४१॥ तद्बाह्ये रजपरिधौ सोमादिक्रमेण ॥ उत्तरे॥ ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्न्मातरं पुरः ॥ पितरञ्च प्रय न्न्त्स्वः ॥ [गौतमः सर्वभूतानां ऋषीणाञ्च महाप्रियः ॥ श्रोत्रिणां कर्मणाञ्च त्वं सम्प्रदायप्रवर्त्तकः ॥] ॐ भू० गौतमाय० गौतमं० ॥४२॥ ईशान्याम् ॥ ॐ अयं दक्षिणा व्विश्श्वकर्म्मा तस्य मनो व्वैश्श्वकर्म्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्ष्टुब्ग्ग्रैष्ष्मी त्रिष्टुभः स्वारᳬंस्वारादन्तर्य्यामोन्तर्य्यामात्पञ्चदशः पञ्चदशाद्बृहद्भर-द्द्वाज ऽऋषिः प्प्रजापतिगृहीतया त्त्वया मनो गृह्णामि प्प्रजाब्भ्यः ॥ [भरद्वाज ! नमस्तुभ्यं सदा ध्यानपरायणः ॥ महाजटिलधर्मात्मा पापं हरतु मे सदा ।] ॐ भू० भरद्वा-जाय० भरद्वाजं ॥४३॥ पूर्वे ॥ ॐ इदमुत्तरात्त्स्वस्तस्य श्रोत्रᳬं सौवᳬंशरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऽऐडमैडान्न्मन्थी मन्थिन

ऽएकविꣳश ऽएकविꣳशादूर्द्ध्वैराजं व्विश्वामित्र ऽऋषिः प्प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्प्रजाब्भ्यः॥[विश्वामित्र! नमस्तुभ्यं बलिं मखमहाव्रतम् ॥ अध्यक्षीकृतगायत्रीं तपोरूपेण संस्थितः ॥] ॐ भू० विश्वामित्राय० विश्वामित्रमा० ॥४४॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥ [कश्यपः सर्वलोकेषु सर्वलोकेषु संस्थितः ॥ नराणांपापनाशाय ऋषिरूपेण तिष्ठति ॥] ॐ भू० कश्यपाय० कश्यपमा० ॥४५॥ दक्षिणे ॥ ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसंव्वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती व्वार्षी जगत्या ऽऋक्समम्मृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशादूर्द्ध्वै रूपं ज्जमदग्निर्ऋषिः प्प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्प्रजाब्भ्यः ॥ [जमदग्निर्महातेजा तपसा ज्वलितप्रभः ॥ लोकेषु सर्वसिद्ध्यर्थं सर्वपापनिवर्तकः ॥] ॐ भू० जमदग्नये० जमदग्निं० ॥४६॥ नैर्ऋत्याम्॥ ॐअयं पुरो भुवस्तस्य प्प्राणो भौवायनो व्वसन्तः प्प्राणाय नो गायत्री व्वासन्ती गायत्र्यै गायत्र्यं गायत्रादुपाꣳशुरुपाꣳशोस्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं व्वसिष्ठ ऽऋषिः प्प्रजापतिगृहीतया त्वया प्प्राणं गृह्णामि प्प्रजाब्भ्यः ॥ [नमस्तुभ्यं वशिष्ठाय लोकानां वरदाय च ॥ सर्वपापप्रणाशाय सूर्यान्वयहितैषिणे ॥] ॐ भू० वसिष्ठाय० वसिष्ठमा० ॥४७॥ पश्चिमे ॥ ॐ अत्र पितरो मादयद्ध्वं य्यथाभागमावृषायद्ध्वम् ॥ अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥ [अत्र ये च नमस्तुभ्यं सर्वभूतहितैषिणे ॥ तमोरूपाय सत्याय ब्रह्मणेऽमिततेजसे ॥] ॐ भू० अत्रये०

अत्रिमा० ॥४८॥ वायव्याम् ॥ ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः ॥ नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधिरोचने दिवः ॥ (अरुन्धति ! नमस्तुभ्यं महापापप्रणाशिनि ! । पतिव्रतानां सर्वासां धर्मशीलप्रवर्तके ! ॥ ॐ भू० अरुन्धत्यै० अरुन्धतीमा० ॥ ४९ ॥ तद्बाह्ये तमः परिधौ पूर्वादक्रमेण ॥ पूर्वे ॥ ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या ऽउष्णीषः॥ पूषासि घर्म्माय दीष्व ॥ (वज्रहस्तां विशालाक्षीं वृत्रासुरहतां शुभाम् ॥ ऐरावतसमारूढां ऐन्द्रीमावाहयाम्यहम् ॥) ॐ भू० ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीमा० ॥५०॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिके० (मयूरवाहनां देवीं षण्मुखां शक्तिसंयुताम् ॥ तारकासुरसंहन्त्रीं कौमारीं पूजयाम्यहम् ॥) ॐ भूः० कौमार्य्यै नमः कौमारीमा० ॥ ५१ ॥ दक्षिणे ॥ ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः ॥ उप ब्रह्माणि वाग्घतः (हंसारूढां प्रसन्नास्यां स्वायुधां वेदपारगाम् ॥ सत्यलोकस्थितां देवीं ब्राह्मीमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भू ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीमा० ॥५२॥ नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः ॥ पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ॥ (हिरण्याक्षहतां क्रुद्धां दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धराम् ॥ अचिन्त्यकायां दुर्धर्षां वाराहीं पूजयाम्यहम्) ॥ ॐ भू० वाराह्यै नमः वाराहीमा० ॥५३॥ पश्चिमे ॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिके० (चण्डमुण्डहतां देवीं खड्गखट्वाङ्गभूषिताम् ॥ रक्तबीजवधासक्तां चामुण्डां पूजयाम्यहम् ॥) ॐ भू० चामुण्डायै० चामुण्डां० ॥५४॥ वायव्ये ॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ॥ भवा

व्वाजस्य सङ्गथे ॥ (शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मैः शोभितां गरुडासनाम् ॥ अतसीपुष्पसङ्काशां वैष्णवीं पूजयाम्यहम् ॥) ॐ भू० वष्णव्यै नमः वैष्णवीं० ॥५५॥ उत्तरे ॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा ऽपापकाशिनी ॥ तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ (वृषारूढां पञ्चवक्त्रां त्रिशूलवरधारिणीम् ॥ कैलाससंस्थितां देवीं पूजयामि महेश्वरीम् ॥) ॐ भू० माहेश्वर्यै० माहेश्वरीं०॥५६॥ ईशान्याम्॥ ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा ॥ मा म ऽआयुः प्रमोषीर्म्मो ऽअहं तव व्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि ॥ (चतुर्भुजां त्रिनेत्राञ्च सर्वाभरणभूषिताम् ॥ आवाहयामि देवेशीं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भू० वैनायक्यै नमः वैनायकीमावाहयामि ॥५७॥

एवं सर्वतोभद्रमण्डले ब्रह्मादिदेवता आवाह्य गन्धादिभिः संपूज्य देविमूर्त्तिस्थापने सर्वतोभद्रमंडलस्थाने गौरीतिलकमंडलं ज्ञातव्यम्

* अथ गौरी तिलकमंडल पूजा *

प्राच्योदीच्याः कृता रेखा अष्टादशौवाष्टादश ॥ पदेषु स्थापये देवान्नवाशीतिशतद्वयम् ॥ तत्रादौ यज्ञ पुरुषस्य सुवर्ण प्रतिमां वह्न्युतारणं कृत्वा मध्य कलशोपरि स्थापयेत् ॥ कलश समीपे पीतकोष्ठेषु चतुरोदेवान् पूजयेत् ॥४॥ तद्यथा ॐ महाविष्णवे नमः [ऐशाने] ॐ महालक्ष्म्यै नमः (आग्नेय्याम्) ॐ महेश्वराय नमः (नैऋत्याम्) ॐ महामायायै नमः [वायव्याम्]॥ ततषडंगेषु देवान् पूजयेत् ॥ प्रथमं हृदयांगमध्ये चतुर्षु कोष्ठेषु चतुर्वेदान्पूजयेत् ४। ॐ ऋग्वेदाय नमः । पूर्वे । ॐ यजुर्वेदाय

नमः । दक्षिणे । ॐ सामवेदाय नमः । पश्चिमे । ॐ अथर्वेदाय नमः । उत्तरे । ततो पूर्वादीशानपर्यन्तं श्वेतकोष्ठेपु पञ्चदेवान् पूजयेत्५ ॥ तद्यथा प्रथमं पूर्वं । ॐ अद्भ्यो नमः ॥ ॐ जलोद्भवाय नमः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ प्रजापतये नमः ॥ ॐ शिवाय नमः ॥ तत अग्निकोणे श्वेतकोष्ठयोः२॥ ॐ अनन्ताय नमः । ॐ परमेष्ठिने नमः । पुनः अग्निकोणे चतुष्कोष्ठेपु४ । ॐ धात्रे नमः । ॐ विधात्रे नमः । ॐ अर्य्यम्णे नमः । ॐ मित्राय नमः । ततो दक्षिणे श्वेतेपु५ । ॐ वरुणायै नमः । ॐ अंशुमते नमः । ॐ भगाय नमः । ॐ इन्द्राय नमः । ॐ विवस्वते नमः । नैऋत्यकोणयोः २ ॐ पूष्णे नमः । पर्जन्याय नमः । नैर्ऋत्यकोणे श्वेतेषु४ । ॐ त्वष्ट्रे नमः । ॐ दक्षयज्ञाय नमः । ॐ देवसवे नमः । ॐ महासुताय नमः । पश्चिमे श्वेतेषु५ । ॐ सुधर्मणे नमः । ॐ शंखपदे नमः । ॐ महाबाहवे नमः । ॐ वपुष्मते नमः । ॐ अनन्ताय नमः । वायौश्वेतयोः२। ॐ महेरणाय नमः । ॐ विश्वासवे नमः । वायौश्वेतेपु४ । ॐ सुपर्वणे नमः । ॐ विष्टराय नमः । ॐ रुद्रदेवतायै नहः। ॐ ध्रुवायै नमः। उत्तरे श्वेतेषु५ । ॐ धराय नमः । ॐ सोमाय नमः । ॐ आपवत्साय नमः। ॐ नलाय नमः । ॐ अनिलाय नमः । ईशान्ये श्वेतयोः२ । ॐ प्रत्यूषाय नमः । ॐ प्रभासाय नमः । ईशानकोणे श्वेतेषु४ ॐ आवर्त्ताय नमः । ॐ सावर्ताय नमः । ॐ द्रोणायनमः । ॐ पुष्करायनमः । [इति हृदयांगपूजा] (अथ शिरोंग शक्ति पूजयेत्) प्रथममीशाने हरित्कोष्ठेपु११ ॥ ॐ ह्रीं कार्यै नमः । ॐ ह्रीं यै नमः । ॐ कात्यायन्यै नमः ।

ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महादिव्यायै नमः११ ॐ महाशब्दायै नमः। ॐ सिद्धिदायै नमः। ॐ ह्रीं कार्यै नमः। ॐ ऐं नमः ॐ श्रीं श्रीयै नमः। ॐ ह्रीं ह्रियै नमः। ततः ईशानकोणे पीतकोष्ठेषु८ ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ श्रियै नमः। ॐ सुघनाय नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ मत्यै नमः। ॐ स्वाहायै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ततः अग्निकोणे हरि-कोष्ठेषु११। ॐ गौर्यै नमः। ॐ पद्मायै नमः। ॐ शच्यै नमः। ॐ सुमेधायै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ देवसेनायै नमः। ॐ स्वाहायै नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ मात्रे नमः। ॐ गायत्र्यै नमः। ततः अग्निकोणे पीत कोष्ठेषु ८ ॐ लोकमात्र्यै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ पुष्ट्यै नमः। ॐ तुष्ट्यै नमः। ॐ आत्मदेवतायै नमः। ॐ गणे-श्वर्यै नमः। ॐ कुलमात्र्यै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ईशाने वाप्यां कृष्णकोष्ठे१ श्वेतेषु४ ॐ जयन्त्यै नमः। ॐ मङ्गलायै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ भद्रकाल्यै नमः। ॐ कपालिन्यै नमः। अग्नि कोणे वाप्यां कृष्णकोष्ठे १ श्वेतेषु ४ ॥ ॐ दुर्गायै नमः। ॐ क्षमायै नमः। ॐ शिवायै नमः। ॐ धात्र्यै नमः। ॐ स्वाहा स्वधाभ्यां नमः। (इति शिरोंग पूजा) [अथ शिखांगदेव पूजा) नैर्ऋत्यकोणे हरित्कोष्ठेषु ११ ॐ दीप्यमानायै नमः। ॐ दीप्तायै नमः। ॐ सूक्ष्मायै नमः। ॐ विभूत्यै नमः। ॐ विमलायै नमः। ॐ परायै नमः। ॐ अमोघायै नमः। ॐ विद्युतायै नमः। ॐ सर्वतोमुख्यै नमः। ॐ आनन्दायै नमः। ॐ नन्दिन्यै नमः। नैर्ऋत्य-

कोणे पीतकोष्ठेषु ८ ॐ शात्वै नमः। ॐ महासूक्ष्मायै नमः। ॐ करालिन्यै नमः। ॐ भारत्यै नमः। ॐ ज्योतिषे नमः। ॐ ब्राह्मै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। वायुकोणे हरित्कोष्ठेपु ११ ॐ वैष्णवे नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चण्डिकायै नमः। ॐ ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ लज्जायै नमः। ॐ वपुष्मत्यै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ प्रीत्यै नमः। वायुकोणे पीतकोष्ठेषु ८ ॐ कीर्त्यै नमः। ॐ प्रभाय नमः नमः। ॐ काम्यायै नमः। ॐ कांतायै नमः। ॐ ऋद्ध्यै नमः। ॐ दयायै नमः। ॐ शिवदूत्यै नमः। ॐ श्रद्धायै नमः। नैऋत्यवाप्यां कृष्णकोष्ठे१ श्वेतेषु४। ॐ क्षमायै नमः ॐ क्रियायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ मोहिन्यै नमः। ॐ यशोवत्यै नमः। वायौवाप्यां कृष्णकोष्ठे१ श्वेतेषु४ ॐ कृपावत्यैनमः। ॐ सलिलायैनमः। ॐ सुशीलायै नमः। ॐ ईश्वर्यै नमः। ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः। [इति शिखांग पूजा] (अथ कवचाङ्गेपु ऋषीन्पूजयेत्) प्रथमं पूर्वे रुणकोष्ठयोः२। ॐ द्वैपायनाय नमः। ॐ भारद्वाजाय नमः। पीतकोष्ठयोः ॐमित्राय नमः। ॐ सनकाय नमः। दक्षिणेऽरुणकोष्ठयोः२। ॐ गौतमाय नमः। ॐ सुमन्तवे नमः। पीतकोष्ठयोः ॐ त्वष्ट्रे नमः। ॐ सनन्दाय नमः॥ पश्चिमे ऽरुणकोष्ठयोः२ ॐ देवलाय नमः। ॐ व्यासाय नमः। पीतकोष्ठयोः ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ सनातनाय नमः॥ उत्तरेऽरुणकोष्ठयोः२। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ च्यवनाय नमः॥

पीतकोष्ठयोः ॐ पुष्कराय नमः। ॐ सनत्कुमाराय नमः॥ ईशाने कृष्णकोष्ठे१ । कण्वाय नमः। अग्निकोणे कृष्णकोष्ठे१ । ॐ मैत्राय नमः। नैऋर्त्यकोणे कृष्णकोष्टे१ ।ॐ कवये नमः। वायुकोणे कृष्णकोष्ठे१ ॐ विश्वामित्राय नमः मध्यपीतकोष्ठेपु८ ॐ वामदेशाय नमः। ॐ सुमन्ताय [तये] नमः। ॐ जैमि-नये नमः। ॐ क्रतवे नमः। ॐ पिप्पलादाय नमः। ॐ परा-शराय नमः। ॐ गर्गाय नमः। ॐ वैशंपायनाय नमः। मध्ये कृष्णकोष्ठेपु ईशानतः । ॐ मार्कण्डेयाय नमः। ॐ मृकंडाय नमः। ॐ लोमशाय नमः। ॐ पुलहाय नमः। ॐ पुलस्त्याय नमः। ॐ बृहस्पतये नमः। ॐ जम-दग्नये नमः। ॐ जामदग्न्याय नमः। ॐ दालभ्याय नमः। ॐ गालवाय नमः। मध्ये हरित् कोष्ठेपु ईशानतः ॐ याज्ञवल्काय नमः। ॐ दुर्वाससे नमः। ॐ सौभरये नमः। ॐ जाबालये नमः। ॐ जाजलये नमः। ॐ वाल्मीकाय नमः। ॐ वह्वृचाय नमः। ॐ इन्द्रप्रमितये नमः। ॐ देवमित्राय नमः। ॐ शाकल्याय नमः। ॐ मुद्ग-लाय नमः। ॐ जातूकर्ण्याय नमः। ॐ बलाकाय नमः। ॐ कृपाचार्याय नमः। ॐ सुकर्मणे नमः। ॐ कौशल्याय नमः। (इति कवचांग पूजा)॥ अथ नेत्राङ्गपूजा॥ ईशानकोणेऽरुण कोष्ठेपु१२॥ ॐ ब्रह्माग्नये नमः। ॐ गार्हपत्याग्नये नमः। ॐ ईश्वराग्नये नमः। ॐ दक्षिणाग्नये नमः। ॐ वैष्णवाग्नये नमः। ॐ आहवनायाग्नये नमः। ॐ सप्तजिह्वाग्नये नमः। ॐ इध्मजिह्वाग्नये नमः। ॐ प्रवर्ग्याग्नये नमः। ॐ वडवाग्नये

नमः । ॐ जठराग्नये नमः । ॐ लोकाग्नये नमः । अग्निकोणे वरुणकोष्ठेषु ॥ ॐ सूर्याय नमः । ॐ वेदांगाय नमः ॐ भानवे नमः । ॐ इन्द्राय नमः । ॐ खगाय नमः । ॐ गभस्तिने नमः । ॐ यमाय नमः । ॐ अंशुमते नमः । ॐ हिरण्यरेतसे नमः । ॐ दिवाकराय नमः । ॐ मित्राय नमः । ॐ विष्णवे नमः । नैऋत्यकोणेऽरुणकोष्ठेषु ॥ ॐ शंभवे नमः । ॐ गिरिशयाय नमः । ॐ अजैकपदे नमः । ॐ अहिंबुध्न्याय नमः । ॐ पिनाकपाणये नमः । ॐ अपराजिताय नमः । ॐ भुवनाधीश्वराय नमः । ॐ कपालिने नमः । ॐ विशांपतये नमः । ॐ रुद्राय नमः । ॐ वीरभद्राय नमः । ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥ वायुकोणेऽरुणकोष्ठेषु ॥ ॐ आवहाय नमः । ॐ प्रवहाय नमः । ॐ उध्वहाय नमः । ॐ संवहाय नमः । ॐ विवहाय नमः । ॐ परिवहाय नमः । ॐ परीवहाय नमः । ॐ धरायै नमः । ॐ अद्भ्याय नमः । ॐ अग्नये नमः । ॐ वायवे नमः । ॐ आकाशाय नमः । (इति नेत्राङ्ग पूजा) ॥ अथास्त्राङ्गऋषिन्पूजयेत् ॥ ईशानादीशपर्यन्तं बाह्यपंक्तौ कृष्णकोष्ठेषु ॥ ॐ हिरण्यनाभाय नमः । ॐ पुष्पञ्जयाय नमः । ॐ द्रोणाय नमः । ॐ भृंगिणे नमः । ॐ बादरायणाय नमः । ॐ अगस्त्याय नमः । ॐ मनवे नमः । ॐ कश्यपाय नमः । ॐ धौम्याय नमः । ॐ भृगवे नमः । ॐ वीतिहोत्राय नमः । ॐ मधुच्छंदसे नमः । ॐ वीरसेनाय नमः । ॐ कृतव्रुणवे नमः । ॐ अत्रये नमः । ॐ मेधातिथये नमः । ॐ अरिष्ठनेमये नमः । ॐ आङ्गिरसाय नमः ।

ॐ इन्द्रप्रमदाय नमः । ॐ इध्मवाहवे नमः । ॐ पिप्लादाय नमः । ॐ नारदाय नमः । ॐ अरिष्ठसेनाय नमः ॐ अरुणाय नमः । ॐ कपिलाय नमः । ॐ कर्दमाय नमः । ॐ मरीचये नमः ॐ क्रतवे नमः । ॐ प्रचेतसे नमः । ॐ उत्तमाय नमः । ॐ दधीचये नमः । ॐ श्राद्धदेवेभ्यो नमः । ॐ गणदेवेभ्यो नमः । ॐ विद्याधरेभ्यो नमः ॐ अप्सरेभ्यो नमः । ॐ यक्षेभ्यो नमः ॐ रक्षेभ्यो नमः । ॐ गंधर्वेभ्यो नमः । ॐ पिशाचेभ्यो नमः। ॐ गुह्यकेभ्यो नमः । ॐ सिद्धदेवेभ्यो नमः । ॐ औपधीभ्यो नमः । ॐ भूतग्रामाय नमः । ॐ चतुर्विध भूतग्रामाय नमः (इत्यस्त्राङ्गपू०) ॥ अथ स्थापित देवता यथाक्रमं पूजयेत् ॥ गौरीतिलकमण्डले येदेवास्तान् सर्वानावाहयामि स्थापयामि ॥ एवमासनंसः ॥ पाद्यमर्घ्यमाचमनीयं स्नानं वस्त्रं यज्ञोपवीतं गंधमक्षतान्पुष्पधूपदीप नैवेद्यंताम्बूलं दक्षिणां मन्त्रपुष्पाञ्जलीं च समर्पयामितिपू० ॥ इति हेमाद्रिकृत गौरीतिलकपूजाविधिः ॥ मण्डलपूजनान्तर वेदीके मध्यमें ताम्बेका कलश (कलशस्थापन विधि पृ०२३)से स्थापित कर वरुणं साङ्गम् पूजयित्वा दुर्गायाः स्वर्णमयीं प्रतीमाम् अग्न्युत्तारणपूर्वम् प्राणप्रतिष्ठाम् कृत्वा कलशोपरि सन्निधाय षड्वस्त्रैराच्छाद्य श्रीसूक्तेन पुराणोक्त मन्त्रेण वा सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ खड्गंचक्रमिति० अक्षस्त्रमिति० घटाशूलेति ॥

पहिले श्री सूक्त के १६ मन्त्रों से अपने शरीर में देह न्यास करे ॥ इसी प्रकार भगवती की मूर्ति से फूल लगाकर भगवती की मूर्ति में भी इन्हीं सब अङ्गों का ध्यान से न्यास

करना चाहिये ॥

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ॥ चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१ शिरसि ॥ ॐ ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामनीम् ॥ यस्यां हिरण्यंविन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥ नेत्रयोः ॥ ॐ अश्वपूर्णां (वां) रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् ॥ श्रियंदेवी मुपह्वये श्रीर्मादेवीजुषताम् ॥३॥ कर्णयोः ॥ ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामर्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तांतर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥ घ्राणयोः ॥ ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदारां ॥ तां पद्मनी (ने) मीं शरणमहं प्रपद्ये अऽलक्ष्मीर्मेंनश्यतां त्वां वृणे ॥५॥ मुखे ॥ ॐ आदित्यवर्णे तपसोधि जातो वनस्पतिस्तववृक्षो थबिल्वः ॥ तस्यफलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्चवाह्या अलक्ष्मीः । ६॥ ग्रीवायां॥ ॐ उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्चमणिना सह ॥ प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धि ददातु मे ॥७॥ करयोः ॥ ॐ क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ॥ अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुदमे गृहात् ॥८॥ हृदि ॥ ॐ गन्धद्वारांदुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरींसर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥६॥ नाभौ ॥ ॐ मनसः काममाकूतिंवाचःसत्यमशीमह ॥ पशूनां रूपमन्नस्यमयि श्रीः श्रयतांयशः ॥१०॥ लिङ्गे ॥ ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम ॥ श्रियंवासय मे कुलेमातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥ गुदे ॥ ॐ आपः स्रजन्तुस्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ॥ निचदेवीं मातरं श्रियंवासय मे कुले ॥ १२ ॥

ऊर्वोः ॥ ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलांपद्ममालिनाम् ॥ चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥ जानुन्मेः॥ ॐ आर्द्रांयः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ॥ सूर्यांहरिण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥ जंघयोः ॥ ॐ ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योश्वान् विंदेयं पुरुषानहम् ॥१५॥ चरणयोः ॥ ॐ यः शुचिः प्रयतोभूत्वाजुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततंजपेत् ॥१६॥ सर्वाङ्गे ॥

ततः कलशोपरि स्वर्णमयीं श्रीदुर्गा प्रतिमां अग्न्युत्तारणपूर्वकं संन्निधाय पट्टवस्त्रैराच्छाद्य श्रीसूक्तेन पुराणोक्त मन्त्रेण वा षोडशोपचारैः यथोपचारैर्वा संपूजयेत् ॥ तद्यथा ॥

॥ अथाग्न्युत्तारण विधिः ॥

तत्र तावत्साचार्यो यजमानः॥ देशकालौ संकीर्त्य अस्या स्वर्णमयी श्रीदुर्गा प्रतिमायाः घटनादिदोषपरिहारार्थं अग्न्युत्तरण पूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये। मूर्तिं घृतेनाभ्यज्य। तदुपरि दुग्धमिश्रित जलधरां कुर्यात् पातयेद्वा ॥

॥ अग्न्युत्तारण मन्त्राः ॥

ॐ समुद्रस्यत्वा व्यकयाग्ने परिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवोभव ॥१॥ ॐ हिमस्यत्वा ज़रायुणाग्ने परिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यꣳ शिवोभव ॥२॥ ॐ उपज्मन्नुपवेतसेवतर नदीष्वा ॥ अग्नेपित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि सेमन्नो यज्ञं पावक वर्णꣳ शिवंकृधि ॥३॥ ॐ अपामिदंन्ययनꣳ समुद्रस्य निवेशनम् ॥ अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको

अस्मभ्यॐ शिवोभव ॥४॥ ॐ अग्नेपावकरोचिषामन्द्रयादेव जिह्वया ॥ आदेवान्वक्षियक्षि च ॥५॥ ॐ सनः पावकदी दिवोग्नेदेवांऽऽ इहावह ॥ उपयज्ञॐ हविश्चनः ॥६॥ ॐ पावक या याश्चितयन्त्या कृपाक्षाभन्रुरुचऽउषसोनु भानुना ॥ तूर्वन्न- यामन्नेतशस्यनूरणऽआयोघृणेनततृषाणोऽअजरः ॥७॥ ॐ नमस्ते हरसेशोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तुहेतयःपाव- कोअस्मभ्यॐशिवोभव॥८॥ ॐ नृपदेव्वेडप्सुषदेव्वेड्वर्हिपदेव्वेड- वनसदेव्वेड स्वर्विदेवेट॥६॥ ॐ येदेवादेवानां यज्ञिया यज्ञियानाॐ संवत्सरीणामुपभागमासते ॥ अहुतादोहविषोयज्ञे अस्मिन्त्स्वयं पिवन्तु मधुनोघृतस्य ॥१०॥ ॐ ये देवादेवेष्वधि देवत्वमायन्ने ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽअवस्य ॥ येभ्योनऽऋते पवतेधाम किञ्चन- नतेदिवोन पृथिव्याऽअधिस्नुषु ॥११॥ ॐ प्राणदाऽ अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः ॥ अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽ अस्मभ्यॐ शिवोभव ॥१२॥

॥ ततः प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोहम् अस्याः श्रीदुर्गा प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोहं अस्याः श्री दुर्गा प्रतिमाया जीव इहस्थितः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोहम् अस्याः श्रीदुर्गा प्रतिमाया सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मन- स्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राणापाणिपाद पायूपस्थानि इहैवा- गत्य सुखंचिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञॐसमिमन्दधातु ॥ विश्वे

देवासऽइहमादयन्तामों३ प्रतिष्ठ एषवै प्रतिष्ठानामयज्ञो यत्र-तेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति। इति प्रतिष्ठाप्य॥

॥ अथ नेत्रोन्मीलनम् ॥

ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दाऽअसिचक्षुर्मेदेहि गंधादि पञ्चोपचारान्दत्वा संस्कारसिद्धये षोडशप्रणवावृत्तिं कुर्यात् ॥ अनेन अस्याः श्रीदुर्गाप्रतिमायाः गर्भाधानादिषोडशसंस्कारान्संपादयामि ॥ इति वदेत् ॥ ततः श्रीदुर्गाप्रतिमां प्रधानकलशोपरि धृत्वा षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजयेत् ॥

॥ फूल हाथों में लेकर अपने हृदय में ध्यान करना ॥

ॐ जटाजूटसमायुक्तामर्द्धेन्दुकृतलक्षणाम् ॥ लोचनत्रयसंयुक्ताम्पद्मेन्दुसदृशाननाम् ॥१॥ अतसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम् ॥ नवयौवनसम्पन्नां सर्वाभरणभूषिताम् ॥२॥ सुचारुवदनां तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम् ॥ त्रिभङ्गस्थानसंस्थानमहिषासुरमर्दिनीम् ॥३॥ त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात्खड्गंचक्रं क्रमादधः ॥ तीक्ष्णबाणं तथा शक्तिं वामतोऽपि निबोधत॥४॥ खेटकंपूर्णचापं च पाशमङ्कुशमूर्द्ध्वजम् ॥ घंटां वा परशुं वापिवामतः सन्निवेदयेत् ॥५॥ अधस्तान्महिषं तद्वद्विशिरस्कं प्रदर्शयेत् । शिरश्छेदोद्भवं तद्वद्दानवं खड्गपाणिनम् ॥६॥ हृदि शूलेन निर्भिन्नं निर्दयन्त्रविभूषितम् ॥ रक्तरक्तीकृताङ्गञ्च रक्तविस्फारितेक्षणम् ॥७॥ वेष्टितं नागपाशेन भ्रुकुटीभीषणाननम् ॥ सपाशवामहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया ॥८॥ वमद्रुधिरवक्त्रञ्च देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत् ॥ देव्यास्तु दक्षिणं

म्पादं समं सिंहोपरि स्थितम् ॥९॥ किंचिदूर्ध्वं तथा वामसं-गुष्ठो महिषोपरि ॥ स्तूयमानश्च तद्रूपममरैःसन्निवेशयेत्॥१०॥ उग्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायका ॥ चण्डाचण्ड-वतीचैव चण्डरूपातिचण्डिका ॥११॥ आभिः शक्तिभिरष्टाभिः सततं परिवेष्टितम् ॥ चिन्तयेत्सततं देवीं धर्मकामार्थमोक्षदाम् ॥१२॥ सिंहादुत्थाय कोपाद् धधड धड धडा धावमाना भवानी शत्रूणां शस्त्रपातैस्तत तडतडतडा त्रोटयन्ती शिरांसि । तेषां रक्तंपिवन्ती घुघुटघुटघुटा घोटयन्ती पिशाचान् । तृप्तास्तृप्ता हसन्ती खखल खलखला शाम्भवी वः पुनातु ॥१३॥

॥ ध्यानम् ॥

ॐ महिषघ्नीं महादेवीं कुमारीं सिंहवाहिनीम् । दानवांस्तर्ज-यन्तीश्च सर्वकामदुघां शिवाम् ॥१॥ ध्यायामि मनसा दुर्गां नाभिमध्ये व्यवस्थिताम् । आगच्छ वरदे देवि ! दैत्यदर्प-निपातिनी ॥२॥ पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये । सर्व-तीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्वितम् ॥३॥ इमं घटं समागच्छतिष्ठ देवगणैः सह । दुर्गेदेवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय ॥४॥ बलिपूजां गृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह । अस्मिन् घटे समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥५॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे विश्वेश्वरि नमोऽस्तु ते । एह्येहि दुर्गे दुरितौघनाशिनि प्रचण्ड दैत्यौघविनाशकारिणि । उमे महेशार्द्धशरीरधारिणि स्थिरा भव त्वं मम यज्ञकर्मणि । एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थसिद्धये ॥

॥ अथ वेदोक्त दुर्गा पूजनविधिः ॥

अथ आवाहनम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥ आगच्छेहमहादेवि सर्वसम्पत्प्रदायिनि । यावद्व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधौभव ॥इत्यावाहनम्॥

आसनम्

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यांहिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ दुर्गेदेवि सुरेशानि ज्ञानमार्गप्रदे शिवे आसनं मणिभूषाढ्यं गृहाण त्वं सुरेश्वरि ॥ इत्यासनम् ॥

पाद्यम्

ॐ अश्वपूर्णां (र्वां) रथमध्यां हस्तिनादप्रमो(बो)दि(धि)नीम् । श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवा जुषताम् ॥ कात्यायनि महादुर्गे चामुण्डे शङ्करप्रिये। पाद्यं गृहाण देवेशि भद्रकालि नमोऽस्तुते॥

अर्घ्यम्

ॐ काँसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ जगत्पूज्ये त्रिलोकेशि सर्वदानवभंजिनि । अष्टांगार्घं गृहाणत्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ॥ इत्यर्घम् ॥

मधुपर्कम्

ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीनः सन्त्वोषधीः ॥ दधि मधु घृत समायुक्तं पात्रं युग्मसमन्वितम् । मधुपर्कं गृहाणत्वं शुभदा भवशोभने ॥ इति मधु० ॥

आचमनम्

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोकेदेव जुष्टामुदारां। तां पद्मनेमिं शरणमहंप्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे ॥ पूरितं स्वर्णपात्रे च गाङ्गेयं निर्मलं जलम् । ददाम्याचमनं तुभ्यं स्वस्ति कुरु महेश्वरि ॥ इत्याचमनम् ॥

स्नानम्

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः। ज्ञानमूर्ते भद्रकालि दिव्यमूर्ते सुरेश्वरि । स्नानं गृहाणदेवेशि तीर्थोदकविभूषितम् ॥ इति स्नानम् ॥

पुनराचमनीयम्

ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् । स्नानवस्त्रोपवीतान्तेऽपितत्स्मृतम् ॥

सुगन्धित तैल व इत्र मलकर स्नान कराना

ॐ अᳬंशुनातेऽअᳬंशुः पृच्यतां परुषापरुः ॥ गन्धस्तेसोममवतु मदायरसोऽअच्युतः ॥ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि महानघे। सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥ इति सुगन्धिद्रव्यस्नानम् ॥

दुग्धस्नानम्

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥ कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

दधि स्नानम्

ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनःसुरभिनो मुखा करत्प्रण आयुᳬंपितारिषत्। पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ॥ दध्यानीतं मयादेवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ फिर शुद्ध जल से स्नान करना ॥

घृत से स्नान कराना

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसांवसा पावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो व्विदिश उद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ फिर शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

शहद से स्नान कराना

ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवᳬंरजः मधुद्यौरस्तुनः पिता। तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादुमधुरंमधु ॥ तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ फिर शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

शर्करा से स्नान कराना

ॐ अपाᳬं रसमुद्वयसᳬं सूर्यसन्तᳬं समाहितम्। अपाᳬं रसस्ययो रसस्तंवो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो सीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रा यत्वा जुष्टतमम् ॥ इक्षुसारसद्भूताशर्करा पुष्टिकारिका। मलापहारिकादिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ फिर शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

पञ्चामृत स्नानम्

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रोतसः ॥ सरस्वती तु पञ्च-

धासोदेशे भवत्सरित् ॥ पयोदधिघृतंचैव मधुचशर्करान्वितम्। पञ्चामृतंमयानीतं स्नानार्थंप्रतिगृह्यताम्। शुद्ध जलसे स्नानकराना

गन्ध से स्नान कराना

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम् । चन्दनं देवि ! देवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ फिर शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

सुगन्धित (उबटना) लगाकर स्नान कराना

ॐ अꣳशुनातेऽअꣳशुः पृच्यताम्परुषापरुः । गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽअच्युतः ॥ नानासुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ॥ उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

शुद्ध जल से स्नान कराना

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽ आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

युग्मवस्त्रम्

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे॥ पट्टकूलयुगं देवि कंचुकेन समन्वितम्। परिधेहि कृपां कृत्वा दुर्गेदुर्गतिनाशिनि ॥ इति युग्मवस्त्रम् ॥ पुनः आचमनम् ॥

यज्ञोपवीतम्

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुदमेगृहात् ॥ स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा

निर्मितंपुरा । उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥ यज्ञोपवीत के बाद आचमनम् ॥

चन्दन चढ़ाना

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व-भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ श्रीखंडागरुकस्तूरी सेचनाभि सुसंयुतम् । गृहाण गन्धं देवेशि सर्वकामप्रलऽदे । इति चन्दनम्

सौभाग्यसूत्रदानम्

ॐ सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्ण-मणि संयुतम् । कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहिमेसदा ॥ कण्ठसूत्रं समर्पयामि ॥

अक्षत चढ़ाना

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत । अस्तोषतस्वभानवोवि प्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी । अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान् । गृहाणेमान्महादेवि देहि मे निर्मलां धियम् । इत्यक्षतान् ॥

हरिद्रा चूर्ण चढ़ाना

हरिद्रारञ्जिते देवि सुखसौभाग्यदायिनि । तस्मात्त्वां पूजया-म्यत्र सुखं शान्ति प्रयच्छमे ॥ हरिद्राचूर्णं समर्पयामि ॥

गुलाल चढ़ाना

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम् । कुङ्कुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ इति गुलालं स० ॥

सिन्दूरम्

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम् । अर्पितं ते मया देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ सिन्दूरम् स० ॥

कज्जल चढ़ाना

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारकम्। कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि॥ इति नेत्रे कज्जलं स०॥

देवी को दूर्वा नहीं चढ़ाना

देवीपूजने वर्ज्यपुष्पाणि—(शक्तौ दूर्वाऽर्क मन्दारो मालूरं तगरं रवौ। निर्गन्धं केशकीटादि दूषितं चोग्रगन्धकम्)॥

बिल्वपत्र अर्पण करना

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोमआवह॥ अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवप्रियः सदा। बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि॥ इति बिल्वपत्राणि स०॥

पल्लव अर्पण करना

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योऽश्वान् विन्देयंपुरुषानहम्। गृहद्वारे चोग्रमपि दुष्टासुरनिबर्हिणि। पूजां करोमि चार्वङ्गि पल्लवर्नन्दनोद्भवैः॥ इति पल्ल० स०॥

फलमाला अर्पण करना

ॐ महादेवीं च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि तन्नोदेवी प्रचोदयात्। शरत्काले समुद्भूता निशुम्भासुरमर्दिनी। फलमालां वरां देवि गृहाण सुरपूजिते॥ इति फलमालां स०

रत्नमाला धारण करना

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि-दाशुषे॥ मुक्ताफलयुतांमालां रत्नवैडूर्यसुप्रभाम्। माणिक्य

स्वर्णग्रथितां गृह्यतां वरदे नमः ॥ इति रत्न० स० ॥

फूलों की माला धारण करना

ॐ आपःसृजन्तुस्निग्धानिचिक्लीत वसमेगृहे । निचदेवीं मातरं श्रियांवासयमेकुले ॥ पद्मशंखजपुष्पादि शतपत्रैर्विचित्रिताम् । पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाणत्वं सुरेश्वरि ॥ इति पुष्पमालांस०

पुष्प चढ़ाना

ॐ मनसः काममाकूर्तिवाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतांयशः ॥ नाना पुष्पविचित्राढ्यां पुष्पमालां सुशोभनाम् । प्रयच्छामि सुपुष्पाणि गृहाणत्वं सुरेश्वरि ॥ इति पुष्पाणि स० ॥

दुर्गाप्रदेयपुष्पाणि

कुन्दमन्दारपुन्नागपाटलीनागकेशरम् । आरग्वधंकर्णिकारं जयन्ती नवमल्लिका । सौगन्धिकं सकंकोलं पुन्नागाशोकमल्लिका अन्यान्यपि सुगन्धीनि पुष्पपात्राणिदेशिकैः ॥ इति शक्ति प०

अलङ्कारम्

हारकंकणकेयूरमेखलाकुण्डलादिभिः । रत्नाढ्यकुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ अलङ्कारम् स० ॥

सुगन्धित इत्र चढ़ाना

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुँज्यायाहेर्तिं परिबाधमानः । हस्तघ्नोविश्वाव्वयुना चिविद्वान्पमान्पुमाᳬंसम्परिपातुविश्वतः। चन्दनागरुकर्पूर कुङ्कुमं रोचनं तथा । कस्तूर्यादि सुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपयेत् ॥ इति परिमल (इत्र) द्रव्यं स० ॥

मालान्त पूजन के बाद अङ्ग पूजा करना

ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि नमः। ॐ महाकाल्यै नमः गुल्फौ पूजयामि नमः। ॐ मंगलायै नमः जानुद्वयं पूजयामि नमः। ॐ कात्यायन्यै नमः उरुद्वयं पूजयामि नमः। ॐ भद्र-काल्यै नमः कटिंपूजयामि नमः। ॐ कमलवासिन्यै नमः नाभिं पूजयामि नमः। ॐ शिवायै नमः उदरं पूजयामि नमः ॐ क्षमायै नमः हृदयं पूजयामि नमः। ॐ कौमार्यै नमः स्तनौ पूजयामि नमः। ॐ उमायै नमः हस्तौ पूजयामि नमः। ॐ महागौर्यै नमः दक्षिणबाहुं पूजयामि नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः वामबाहुं पूजयामि नमः। ॐ रमायै नमः स्कन्धौ पूज-यामि नमः। ॐ स्कन्दमात्रे नमः कंठं पूजयामि नमः। ॐ महिषमर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि नमः। ॐ सिंहवाहिन्यै नमः मुखं पूजयामि नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः शिरः पूज-यामि नमः। ॐ कात्यायन्यै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि नमः। इत्यङ्गपूजनम् ॥

धूप करना

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्च दशर्चंञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ गुग्गुलंगन्धसंयुक्तमगर्वादि समायुतम्। दशाङ्गं गृह्णधूपंतु भद्रकालि नमोऽस्तुते॥ धूपमाघ्रापयामि नमः॥

दीपकम्

ॐ सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक गन्धमाल्यशोभे भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥

सुरक्तसूत्रसद्वर्त्ति गोघृतेन च पूरितम् । दीपं गृहाण देवेशि नमस्त्रैलोक्यसुन्दरि ! ॥ दीपं दर्शयामि नमः ॥

नैवेद्यम्

दिव्यान्नरससंपुष्टं नाना भक्ष्यस्तु संस्कृतम् । चोष्यपेय समायुक्तमन्नंदेवि गृहाणमे ॥ इति नैवेद्यं स० ॥

आचमनम्

आचम्यतां त्वया देवि भक्तिमेह्यचलांकुरु । ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परांगतिम् ॥ आचमनं स० ॥

करोद्वर्तनम्

करोद्वर्तनकं देवि सुगन्धैः परिवासितैः । ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च पराङ्गतिम् ॥ करोद्वर्तनार्थं गन्धं स० ॥

हस्तप्रक्षालनार्थं जलम्

गन्धतोयं समानीतं सुवर्णकलशेस्थितम् । हस्तप्रक्षालनार्थाय पानीयं ते निवेदये ॥ इति हस्तप्रक्षालनम् ॥

अथ ऋतुफलम्

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वᳬहसः ॥ नानाफलानि दिव्यानि ऋतुदेश भवानि च । पूर्णफलैश्च सहितान्यंबत्वामर्पयाम्यहम् । इति फलम्

अथ ताम्बूलपूगीफलम्

ॐ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् । गृहाण देवि ताम्बूलं कर्पूरेण सुवासितम् । पूगीफलसमायुक्तं सचूर्ण-मुखमण्डलम् ॥ इति ताम्बूलम् ॥

दक्षिणा द्रव्यम्

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवींद्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम॥ पूजायाः सद्ग्रहार्थंतु दक्षिणा दीयते मया। तां गृहाण महेशानि पूजां मे सफलां कुरु॥ इति दक्षिणाद्रव्यम् समर्पयामि

नमस्कारम्

दुर्गेस्मृता हरसिभीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैःस्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। दारिद्र्यदुःखभयहारिणिकात्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥ इति नमस्कारं कुर्यात्॥

अथ भैरव पूजा

अथ ध्यानम् ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्॥ नीलजीमूतसंकाशं नीलांजनसमप्रभम् ॥१॥ अष्टबाहुंत्रिनयनं चतुर्बाहुंद्विबाहुकम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम् ॥२॥ भुजंगमेखलं देवमग्निवर्णं शिरोरुहम् ॥ दिगम्बरं कुमारेशं बटुकाख्यं महाबलम् ॥३॥ खट्वाङ्गमसिपाशंच शूलं दक्षिणभागतः॥ डमरुश्चकपालश्च वरदं भुजगंतथा ॥४॥ अग्निवर्ण समोपेतं सारमेयसमन्वितम् ॥ एवं ध्यात्वाहिबटुकं ततोयजनमारयेत् ॥५॥ तत्रमन्त्रः ॥ अक्षतानादाय—देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित ॥ यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावद्देव इहावह ॥१॥ आगच्छ देव बटुकस्थाने चात्रस्थिरोभव ॥ यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौभव ॥२॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीबटुक भैरवदेवते इहागच्छ इहतिष्ठ इत्यक्षतान्निःक्षिप्य आवाहनीमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इत्यावाहनम् ॥१॥ तवेयं महिमामूर्त्तिस्तस्यां

त्वां सर्वगप्रभो ॥ भक्तिस्नेहसमाकृष्टं दीपवत्स्थापयाम्यहम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेवते इहतिष्ठ ॥ इत्यक्षतान्निःक्षिप्य स्थापिनी मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति स्थापनम् ॥२॥ अनन्या तव देवेश मूर्त्तिशक्तिरियंप्रभो ॥ सान्निध्यंकुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रहतत्परः ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुक भैरवदेवते इहसन्निधेहि — इत्यक्षतान्निःक्षिप्यसन्निधापनी मुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति सन्निधापनम् ॥३॥ आज्ञया तव देवेश कृपाम्भोधेगुणाम्बुधे। आत्मानन्दैकतृप्तं त्वां निरुणध्मि पितर्गुरो ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेवते इह सन्निरुध्य ॥ इत्यक्षतान्निःक्षिप्य सन्निरोधनमुद्रां प्रदर्शयेत् । इतिसन्निरोधनम् ॥४॥ अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च ॥ यदपूर्णं भवेत्कृत्यं तत्राप्यभिमुखोभव ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुक भैरवदेवते इह सम्मुखोभव—इत्यक्षतान्निःक्षिप्य सम्मुखीकरणमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति सम्मुखीकरणम् ॥५॥ अभक्तवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रदूरातिगद्युते ॥ स्वतेजः पञ्जरेणाशुवेष्टितोभव सर्वतः ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवदेव अवगुंठितोभव इत्यक्षतान्निःक्षिप्य अवगुंठनीमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इत्यवगुंठनं कृत्वा सुस्वागतं कुर्यात् ॥६॥ तत्रमंत्रः ॥ यस्य दर्शनमिच्छन्तिदेवाः स्वाभीष्टसिद्धये ॥ तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च ते ॥१॥ ॐ श्रीवटुकभैरवाय नमः सुस्वागतं समर्पयामि ॥ इति सुस्वागतम् ॥७॥ देव देव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते ॥ आसनंदिव्यमीशान दास्येऽहं परमेश्वर ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वटुकभैरवाय नमः आसनं समर्पयामि ॥ इत्यासनंदत्वा करौ-

बद्ध्वा प्रार्थयेत् ॥८॥ तत्रमंत्रः ॥ स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि ॥ इतिप्रार्थ्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः सम्पूजयेत् ॥८॥ अथ पाद्यादि पूजनम् ॥ ॐ यद्भक्तिलेशसंपर्कात्परमानन्द विग्रहः ॥ तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पयेत् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः पाद्यं समर्पयामि ॥ इति सामान्यार्घोदकेन पाद्यं दद्यात् ॥१॥ ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ॥ तापत्रयविनिर्मुक्त तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि॥ इत्यर्घः ॥२॥ ॐ सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने ॥ मधुपर्कमिमंदेव कल्पयामि प्रसीद मे ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः मधुपर्कं समर्पयामि ॥ इति मधुपर्कम् ॥३॥ ॐ वेदानामपिवेदाय देवानांदेवतात्मने ॥ आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आचमनं समर्पयामि ॥ इत्याचमनम् ॥४॥ ॐ इत्याचमनं दत्वा पञ्चामृतस्नानादिकं च सर्वदेवोपयोगिपद्धति मार्गेण कृत्वा जलस्नानं कुर्यात् ॥ ॐ गंगा सरस्वती रेवापयोष्णी नर्मदा जलैः ॥ स्नापितोऽसि मयादेव तथा शांतिंकुरुष्वमे ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः शंखोदकस्नानं समर्पयामि॥ इति स्नानम् ॥५॥ ॐ सर्वभूषादिकेसौम्ये लोकलज्जानिवारणे॥ मयैवापादिते तुभ्यं वाससीप्रतिगृह्यताम् ॥१॥ ॐ श्रीवटुकभैरवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥ इति वस्त्रम् ॥६॥ ॐ नवभि-

स्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ॥ उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ इति यज्ञोपवीतम् ॥७॥ ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनंप्रतिगृह्यताम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः गन्धं समर्पयामि ॥ अंगुष्ठौ कनिष्ठामूललग्नौ गन्धमुद्रा ॥ इति गन्धम्॥८॥ ॐ अक्षताश्चसुरश्रेष्ठ! कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ॥ मयानिवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुकभैरवाय नमः अक्षतान्समर्पयामि ॥ इत्यक्षतान् ॥६॥ ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनिवैप्रभो ॥ मयानीतानिपुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीवटुक भैरवाय नमः पुष्पं समर्पयामि ॥ तर्जन्यावंगुष्ठमूललग्ने पुष्प मुद्रा इति पुष्पाणि ॥१॥ एवंपुष्पांतं पूजयित्वा तता देवाज्ञयावरणपूजां कुर्यात् ॥

अथावरणपूजा तत्रक्रमः

श्रीपदंपूर्वमुच्चार्य पादुकापदमुच्चरेत् ॥ पूजयामि नमः पश्चात्पूजयेदंगदेवताः ॥१॥ इत्युच्चरन् आवरणदेवताः पूजयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलिमादाय ॐ संविन्मयः परोदेवः परामृतरसप्रिय ॥ अनुज्ञांदेहि वटुकपरिवारार्चनाय मे ॥२॥ इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं भैरवोपरिदत्वा आज्ञां गृहीत्वा अत्रसर्वत्र पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीतदनुसारेण अन्यादिशः प्रकल्प्यप्रयोगोक्तावरणपूजां कृत्वा धूपादिभिः पूजनं कुर्यात् ॥ अथधूपादि पूजाप्रयोगः ॥ फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य मूलेन नमः इति गन्धपुष्पाभ्यां संपूज्य

पुरतोनिधाय (ॐ रं) इति वह्निबीजेनोपरि अग्निसंस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगंदत्वा घंटांवादयन् ॥ ॐ वनस्पति रसाद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धउत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीवटुकभैरवाय नमः धूपं समर्पयामि ॥ इति नाभिदेशतः धूपयित्वा देववामतः धूपपात्रं निधाय तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगे धूपमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति धूपम् ॥१॥ ततो दीपपात्रे गोघृतमापूर्य एकविंशतितंतुभिर्वर्तिं निक्षिप्य प्रणवेन (ॐ) प्रज्वाल्य घंटांवादयन् नेत्रादिपादपर्यन्तं दीपं प्रदर्शयेत्॥ ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः ॥ सबाह्याभ्यंतरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय सायुधायसवाहनाय श्रीवटुकभैरवाय नमः दीपं समर्पयामि ॥ इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधापयेत्॥ ततः शंखजलमुत्सृज्य मध्यमांगुष्ठयोगे दीपमुद्रांप्रदर्शयेत्। इति दीपम् ॥२॥ देवस्याग्रे जलेनचतुरस्रमण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्येषड्रसोपेतंमाषपिष्टं तैलपक्वं वटकं च विविधप्रकारं वा नैवेद्यं संस्थाप्य ॥ ॐ ह्रीं नमः। इति मन्त्रेणार्घ्यजलेनसंप्रोक्ष्य मूलेनसंवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्येनाच्छद्य (ॐ यं)इति वायुबीजं षोडशधा संजप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य ततो दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्नं वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य (ॐरं) इति वह्निबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्पन्नाग्निनातद्दोषं दग्ध्वाततो वामकरतले अमृतबीजं विचिन्त्य ततपृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलंकृत्वा

नैवेद्यं प्रदर्श्य(ॐ वं) इति सुधाबीजंषोडशवारं संजप्य तदुत्थामृत-धारयाप्लावितं विभाव्य मूलेनप्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेना-ष्टधाऽभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाभ्यां संपूज्य वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिण करेण जलं गृहीत्वा ॥ ॐ सत्पात्रसिद्धं सुहवि-र्विविधानेकभक्षणम् ॥ निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायसपरिवाराय सायुधाय सवाहनाय श्रीवटुकभैरवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि ॥ इति जलमुत्सृज्य ॥ ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ इति देवस्यदक्षहस्ते जलं दत्वा देवेनतज्जलं प्राशितमितिभावयन् ततो वामहस्तेनानामा मूलांगुष्ठयोगेग्रासमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ दक्षिणहस्तेनप्राणादि पञ्च मुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ एवं पञ्चमुद्राः प्रदर्श्य देवंभुक्तवंतं विभाव्य जलंदद्यात् ॥ इति नैवेद्यम् ॥३॥ ॐ नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्ति-करोवरः ॥ परमानन्दपूर्णस्त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायसपरिवाराय श्रीमद्वटुकभैरवाय जलं समर्प-यामि ॥ इति मन्त्रेण स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं जलंनिवेद्य अन्तःपटं दद्यात् ॥४॥ तद्यथा ब्रह्मेशाद्यैः सरस-मभितः सोपविष्टः समंतात्सिंजद्वालव्यजननिकरैर्वीज्यमानो वयस्यैः ॥ नर्मक्रीड़ाप्रहसनपरान्हासयन्पंक्तिभोक्तृन् भुङ्क्ते पात्रे कनकघटितेषड्रसान् भैरवेशः ॥१॥ शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपसूपंलेह्यंपेयं च चोष्यं सितममृतफलं क्षीरकाद्यंसुखाद्यम् ॥ आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैलामरीचस्वादीयः शाकराजीपरिकरममृताहारजोषं जुषस्व ॥२॥ इति अन्तःपटं दत्वाऽऽचमनंदद्यात ॥५॥ तद्यथा

ॐ वेदानामपि वेदाय देवानांदेवतात्मने ॥ आचामं कल्पगामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायसपरिवाराय श्रीमद्वटुकभैरवाय नमः आचमनं समर्पयामि॥ इत्याचमनं दत्वा गंडूषार्थं मूलमन्त्रेण जलंदद्यात् ॥ इत्याचमनम् ॥६॥ ततो गतसारं नैवेद्यं किञ्चिदुद्धृत्य ॐ चण्डेश्वराय नमः॥ इति देवस्योच्छिष्टं चण्डेश्वरायैशान्यांदिशि दद्यात् ॥ ततः ऋतुफलम् । इदं फलं मयादेव स्थापितंपुरतस्तव ॥ तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय श्रीमद्वटुकभैरवाय नमः॥ ऋतुफलम् समर्पयामि॥ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलेयुतम् ॥ एत्लादि चूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सांगायसपरिवाराय श्रीमद्वटुकभैरवाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि॥ दक्षिणा–हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतःशांतिं प्रयच्छ मे ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमद्वटुकभैरवाय नमःदक्षिणां समर्पयामि ॥ कृतेनानेन पूजनेन श्रीवटुकभैरवः प्रीयताम् न मम ॥

ज्योतिः पूजनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः आद्यासवसुरौजोद्भवतेजस्वरूप श्रीदुर्गायै नमः । ॐ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदहाति वेदः॥ सनःपर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥

ध्यानम्

प्रधानसाधारविकल्पसत्ता स्वभावभावाद्भुवनत्रयस्य ॥ सा

विद्यया व्यक्तमपीह माया ज्योतिः परापातु जगन्ति नित्यम् ॥ देशकालौ संकीर्त्य नवदुर्गा महोत्सवे ॥ श्रीदुर्गाप्रसादसिद्धि द्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकं ममाभीष्टसिद्धये निर्विघ्नतयापूर्वकं समाप्त्यर्थं वटुक गणेशादिसहितं कुमारीपूजनं करिष्ये ॥

वटुक पूजनम्

ॐ वं वटुकाय नमः पाद्यादि पूजनं विधाय ॥ ॐ करकलित कपालःकुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती ॥ क्रतुसमयसपर्याविघ्नविच्छेदहेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

अथ कुमारी पूजा

यजमानः पूजयेच्च कन्यानां नवकं शुभम् । द्विवर्षाद्यादशाब्दान्ताः कुमारीः परिपूजयेत् ॥१। अर्थदिकहायनाल्पवयस्का वयस्का वर्ज्याः ॥ तो आसने उपवेश्यावाहयेत् मन्त्र ण ॥ मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणाम् रूपधारिणीम् । नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्या-मावाहयाम्यहम् ॥ अनेनैव मन्त्रेण नवापि आवाहयेत् ॥ अशक्तौ यथाशक्ति एकामपि । अथ नवानाम् पूजा मन्त्राः ॥ द्विहायना कुमारी संज्ञका ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तुते ॥२॥ त्रिहायना त्रिमूर्ति-संज्ञाः ॥ त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्गज्ञानरूपिणीम् । त्रैलोक्य वंदितांदेवी त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥३॥ चतुरब्दा कल्याणी तत्पूजा मन्त्रः ॥ कलात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयांशिवां ॥ कल्याणजननीं देवी कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥४॥ पंचवर्षा रोहणीतत्पूजा मन्त्रः ॥ अणिमादि गुणाधारा मकाराद्यक्ष-

रात्मिकाम् ॥ अनन्तां शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥५॥ षडवर्षाकालिका तत्पूजा मन्त्रः ॥ कामचारां शुभांकांतां कालचक्रस्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणोदारांकालिकां पूजयाम्यहम् ॥६॥ सप्तवर्षा चण्डिका तत्पूजा मन्त्रः ॥ चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभञ्जनीम् ॥ पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥७॥ अष्टवर्षाशांभवी तत्पूजामन्त्रः ॥ सदानन्दकरीं शांतां सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शांभवीं पूजयाम्यहम् ॥ नवहायनीदुर्गा तत्पूजामन्त्रः ॥ दुर्गमे दुस्तरेकार्ये भवदुःखविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिनाशिनीम् ॥८॥ दशवर्षा सुभद्रा तत्पूजा मन्त्रः ॥ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥१०॥ इति प्रत्येक मन्त्रान्ते तत्तन्नाम मन्त्रेण नवापि षोडशोपचारैः पंचोपचारैर्वा पूजयेत् इति ॥

अथ नारिकेलकुष्मांडादि बलिदान विधिः

स यजमानो स्वस्तिवाचनपूर्वकं संकल्पं विधाय ॥ देशकालौ संकीर्त्यप्रतिपदि गणपत्यादि स्थापितानांदेवानां नारिकेलबलिसहित उत्तरपूजनमहं करिष्ये ॥ इति प्रतिज्ञांकृत्वा यथोपचार सहितं गणपत्यादि देवान् प्रपूज्य ॥ ततो शुद्धनारिकेलं, कूष्माण्डं वा गृहीत्वा तं संपूज्य तत्र जीवन्यासादिकं कृत्वा ॥ ॐ महामाये जगन्मातः सर्वकामप्रदायिनि ॥ ददामि नारिकेल (कूष्माण्ड) बलिं प्रसीद वरदाभव ॥ अर्द्धभागं देव्यग्रं संस्थाप्य पुनः ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा

एभिः स्वाहान्त मन्त्रैः पञ्च आहुतिं ज्योतिरग्नौ जुहुयात् ॥ अथ बलिदानं मूलांते श्रीमहालक्ष्म्यै नमः पायसबलिं समर्पयामि ॥ इति महाकाल्यादि योगिन्यंतयंत्रस्थावरणदेवताभ्यः प्रत्येकं सर्वेभ्यो बलिंदद्यात् ॥ अथ कूष्माण्डबलिविधानम् ॥ आचम्य प्राणानायम्य देशकालाद्युच्चार्य ममसकुटुम्बस्य सर्वारिष्ट प्रशांतिसर्वाभीष्टसिद्धिकल्पोक्तफलावाप्तिद्वारा श्रीमहाकाली देवता प्रीत्यर्थं कूष्माण्डबलिदानं करिष्ये तदङ् गत्वेन पञ्चोपचारैः पूजनं बलिपूजनं च करिष्ये ॥ मूलेन मुख्यदेवतां पञ्चोपचारैः संपूज्य ततपुरतः स्वयमुदङ्मुखो बलिंप्राङ्मुखं पीठे वस्त्रगुंठितं कूष्माण्डंविधाय ॐ कूष्माण्डबलये नमः इति आवाहनवस्त्र गन्धादिभि संपूज्य अभिमन्त्रयेत् ॥ पशुस्त्वं बलिरूपेण ममभाग्यादवस्थितः ॥ प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ॥१॥ चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् ॥ चामुण्डा बलिरूपाय बलेतुभ्यं नमोऽस्तु ते ॥२॥ यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥ अतस्त्वां घातयाम्यद्यतस्माद्यज्ञे-मतोवधः ॥ इति ॥ ततः शस्त्रं गन्धादिनासंपूज्य अभिमन्त्रयेत् ॥ ऐं ह्रीं श्रीं रसनात्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधकः ॥ इति ह्रां ह्रीं खड्ग आंह्रुं फट् इति हस्ते शस्त्रं गृहीत्वा ॐ कालिकालि वज्रेश्वरि लोहदण्डायै नमः इति पठन्छित्वा छेदनावसरेनविलोकयेत् ॥ कौशिकिरूधिरेणाप्यायताभिति

टिप्पणी निरुत्तर तन्त्रे—पूजया लभते पूजां जपसिद्धिर्नसंशयः । होमेन सिद्धिःस्यात्तस्मात्त्रितयमर्चयेत् ॥ बलिहीनेतु दुर्भिक्षं गन्धहीनेत्वभाग्यताम् ॥ धूपहीने ततोद्वेगं वस्त्रहीनेधनक्षयम् ॥

रात्मिकाम् ॥ अनन्तां शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥५॥ षडवर्षाकालिका तत्पूजा मन्त्रः ॥ कामचारां शुभांकांतां कालचक्रस्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणोदारांकालिकां पूजयाम्यहम् ॥६॥ सप्तवर्षा चण्डिका तत्पूजा मन्त्रः ॥ चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभञ्जनीम् ॥ पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥७॥ अष्टवर्षाशांभवी तत्पूजामन्त्रः ॥ सदानन्दकरीं शांतां सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शांभवीं पूजयाम्यहम् ॥ नवहायनीदुर्गा तत्पूजामन्त्रः ॥ दुर्गमे दुस्तरेकार्यें भवदुःखविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिनाशिनीम् ॥८॥ दशवर्षा सुभद्रा तत्पूजा मन्त्रः ॥ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥१०॥ इति प्रत्येक मन्त्रान्ते तत्तन्नाम मन्त्रेण नवापि षोडशोपचारः पंचोपचारैर्वा पूजयेत् इति ॥

अथ नारिकेलकुष्मांडादि बलिदान विधिः

स यजमानो स्वस्तिवाचनपूर्वकं संकल्पं विधाय ॥ देशकालौ संकीर्त्यप्रतिपदि गणपत्यादि स्थापितानांदेवानां नारिकेलबलिसहित उत्तरपूजनमहं करिष्ये ॥ इति प्रतिज्ञांकृत्वां यथोपचार सहितं गणपत्यादि देवान् प्रपूज्य ॥ ततो शुद्धनारिकेलं, कुष्माण्डं वा गृहीत्वा तं संपूज्य तत्र जीवन्यासादिकं कृत्वा ॥ ॐ महामाये जगन्मातः सर्वकामप्रदायिनि ॥ ददामि नारिकेल (कुष्माण्ड) बलिं प्रसीद वरदाभव ॥ अर्द्धभागं देव्यग्रं संस्थाप्य पुनः ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा

एभिः स्वाहान्त मन्त्रैः पञ्च आहुतिं ज्योतिरग्नौ जुहुयात् ॥ अथ बलिदानं मूलांते श्रीमहालक्ष्म्यै नमः पायसबलिं समर्पयामि ॥ इति महाकाल्यादि योगिन्यंतयंत्रस्थावरणदेवताभ्यः प्रत्येकं सर्वेभ्यो बलिंदद्यात् ॥ अथ कूष्माण्डबलिविधानम् ॥ आचम्य प्राणानायम्य देशकालाद्युच्चार्य ममसकुटुम्बस्य सर्वारिष्ट प्रशांतिसर्वाभीष्टसिद्धिकल्पोक्तफलावाप्तिद्वारा श्रीमहाकाली देवता प्रीत्यर्थं कूष्माण्डबलिदानं करिष्ये तदङ्गत्वेन पञ्चोपचारैः पूजनं बलिपूजनं च करिष्ये ॥ मूलेन मुख्यदेवतां पञ्चोपचारैः संपूज्य ततपुरतः स्वयमुदङ्मुखो बलिंप्राङ्मुखं पीठे वस्त्रगुंठितं कूष्माण्डंविधाय ॐ कूष्माण्डबलये नमः इति आवाहनवस्त्र गन्धादिभि संपूज्य अभिमन्त्रयेत् ॥ पशुस्त्वं बलिरूपेण ममभाग्यादवस्थितः ॥ प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम् ॥१॥ चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम् ॥ चामुण्डा बलिरूपाय बलेतुभ्यं नमोऽस्तु ते ॥२॥ यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥ अतस्त्वां घातयाम्यद्यतस्माद्यज्ञेमतोवधः ॥ इति ॥ ततः शस्त्रं गन्धादिनासंपूज्य अभिमन्त्रयेत् ॥ ऐं ह्रीं श्रीं रसनात्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधकः ॥ इति ह्रां ह्रीं खड्ग आंहुं फट् इति हस्ते शस्त्रं गृहीत्वा ॐ कालिकालि वज्रेश्वरि लोहदण्डायै नमः इति पठन्छित्वा छेदनावसरेनविलोकयेत् ॥ कौशिकिरूधिरेणाप्यायतामिति

टिप्पणी निरुत्तर तन्त्रे—पूजया लभते पूजां जपसिद्धिर्नसंशयः । होमेन सिद्धिःस्यात्तस्मात्त्रितयमर्चयेत् ॥ बलिहीनेतु दुर्भिक्षं गन्धहीनेत्वभाग्यताम् ॥ धूपहीने ततोद्वेगं वस्त्रहीनेधनक्षयम् ॥

दैव्यैः अर्धनिवेद्य अवशिष्टार्धस्यपञ्चभागान्कृत्वा पूतनायैं बलि भागं निवेदयामि चरक्यैबलिः विदार्यैबलिः पापराक्षस्यैबलिः ततोमाषपिष्टपशुं शत्रुं शस्त्रेणछित्वा स्कंदाय पश्वर्धं समर्पयामि विशिखाय पश्वर्धं सः इति समर्प्य शेषंरक्षेभ्योहरेत्॥ मन्त्रास्तु ॐ ह्रीं स्फुरस्फुर ॐ क्रीं ॐ ह्रीं फट् मर्दमर्द हुँ इति तच्छेषं वहिर्दद्यात् ॥ बलिं गृह्णन्त्विमेदेवा आदित्या वसवस्तथा॥ मरुतश्चाश्विनौ रुद्रासुपर्णाः पन्नगाग्रहाः ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः॥ डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥ जृम्भकाःसिद्ध गन्धर्वाः साध्या विद्याधरानगाः ॥ दिक्पाला लोकपालाश्चये च विघ्नविनायकाः॥ जगतांशान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्चमहर्षयः ॥ मापिघ्नां माचमेपापं मासन्तुपरिपंथिनः ॥ सौम्याभवन्तु तृप्तास्ते भूतप्रेतसुखावहाः भूतानि यानीहवसन्तितानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तं ॥ अन्यत्रवासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तुमांतानिसदैवचात्रेति ॥ ततः स्नात्वा कृततिलकोदेवीं प्रार्थयेत् खड्गनीशुः॥ शूलेनपा० ४ सर्वस्वरूपे० ५ रूपंदेहि जयंदेहि भगंभगवतिदेहिमे ॥ पुत्रान् देहि धनंदेहि सर्वकामांश्चदेहिमे ॥ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यंदेहिदेवि नमोऽस्तुते। इतिप्रार्थयेत् एतद्बलिदानं होमांगंतच्चहोमोत्तरमेव

आर्तिक्यम्

जय अम्बे गौरी मैया श्यामा गौरी ॥ मैया जय मंगलकरणी मैया जय आनन्दकरणी ॥ तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ जय० ॥१॥ मांग सिन्दूर विराजत टीको

मृगमदको ॥ मैया टीको० ॥ उज्ज्वल से दोऊ नैना चन्द्र वदननीको ॥ जय अम्बे० ॥२॥ कनक समान कलेवर रक्ताम्बरराजै ॥ मैया रक्ता० ॥ रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर साजै ॥ जय अम्बे० ॥३॥ केहरिवाहन राजत खड्ग खप्पर धारी ॥ मैया खड्ग खप्प्र० ॥ सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुःखहारी ॥ जय अम्बे० ॥४॥ कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती ॥ मैया नासाग्रे० ॥ कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत समज्योति ॥ जय अम्बे ॥५॥ शुम्भ निशुम्भ बिदारे महिषासुर घाती ॥ मैया महिषा० ॥ धूम्र विलोचन नैना निशिदिन मदमाती ॥ जय अम्बे० ॥६॥ चण्डमुण्ड संहारे शोणित बीज हरे ॥ मैया शो० ॥ मधुकैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे ॥ जय अम्बे० ॥७॥ ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी ॥ मैया तुम० ॥ आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्बे० ॥८॥ चौंसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरों ॥ मैया नृत्य० ॥ बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥ जय अम्बे ॥९॥ तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता ॥ मैया तुम० भक्तन की दुःख हरता ॥ सुख सम्पत्ति करता ॥ जय अम्बे० ॥१०॥ भुजा चार अति शोभित वर अभय धारी ॥ मैया वर० ॥ मन वांछित फल पावत सेवत नरनारी ॥ जय० ॥ ॥११॥ कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती ॥ मैया अगर० श्रीमाल केतुमें राजत कोटि रतन ज्योति ॥ जय अम्बे० ॥ ॥१२॥ मां अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावे ॥ मैया० जो० ॥ भणत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावे ॥ जय अम्बे गौरी ॥१३॥

मन्त्र पुष्पाञ्जलिः

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकम्ममहिमानः सचन्तयत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः ॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमोवयंवैश्रवणायकुर्महे ॥ समे-कामान्कामकामायमह्यं ॥ कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाधिराजाय नमः॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यंमहाराज्यमाधिपत्य-मयं समन्त पर्यायी स्यात् सार्वभौमः सर्वायुष आन्तादापरा-र्धात् ॥ पृथिव्यै समुद्र पर्यान्ताया एकराडिति तदप्येष श्लो-कोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे ॥ आवी-क्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोवाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमीजनयन्देवएकः ॥ मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्प-यामि नमः ॥ सेवन्तिकावकुलचम्पकपाटलाब्जैः ॥ पुन्ना-गजाति करवीर रसाल पुष्पैः। विल्वप्रवाल तुलसीदलमंजरीभिः त्वां पूजयामि जगदीश्वरि ! मे प्रसीद ॥ पापोऽहं पापकर्म्माहं पापात्मा पापसम्भवः ॥ त्राहि मां सर्वदा मातः सर्व पाप-हरोभव ॥ अतः परंउत्तराङ्गपूजा विमर्जनादीनि ॥

दुर्गा गायत्री

ॐ महादेव्यै च विद्महे दुर्गायै धीमहि। तन्नोदेवी प्रचोदयात् एवं पुनः पनः प्रणम्य स्तुवीत ॥

प्रदक्षिणा

ॐ यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तंपञ्चदशंचश्च

श्रीकामः सततं जपेत् ॥ ॐ येतीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता-निषङ्गिणः ॥ तेषाᳬ सहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि ॥ नमस्ते देवदेवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे ॥ नमस्ते जगतांधात्रि नमस्ते शंकरप्रिये ॥ नमः सर्वहितार्थायै जगदाधारहेतवे । साष्टाङ्गो ऽयंप्रणामस्ते प्रयत्नेनमयाकृतः ॥ इति प्रदक्षिणा । साष्टाङ्ग प्रणाम करना ॥ पुनः शान्तिस्तवम् पठेत् ॥

ॐ दुर्गां शिवां शान्तिकरीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम् । सर्वलोक-प्रणेत्रीश्च प्रणमामि सदाम्बिकाम् ॥१॥ मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम् ॥ विश्वेश्वरीं विश्वधात्रीं चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥२॥ सर्वदेवमयीं देवीं सर्वलोकभयापहाम् ॥ ब्रह्मेशविष्णुनमिताम् प्रणमामि सदा उमाम् ॥३॥ विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां दिव्यस्थाननिवासिनीम् ॥ योगिनीं योग-जननीं चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ॥४॥ ईशानमातरं देवीमीश्वर-मीश्वरप्रियाम् ॥ प्रणतोऽस्मि सदा दुर्गां संसारार्णवतारिणीम् ॥ यइदं पठति स्तोत्रं शृणुयाद्वाऽपि यो नरः । स मुक्तः सर्वपापेभ्यो मोदते दुर्गया सह । इति मत्स्य सूक्तोक्तं दुर्गास्तोत्रम् ॥

वरप्रार्थना

रूपंदेहि यशोदेहि भगं भवति देहि मे ॥ पुत्रान्देहि धनंदेहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥१॥ ॐ महिषघ्नि ! महामाये चामुण्डे ! मुण्डमालिनी । आयुरारोग्यविजयं देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥२॥ भूतप्रेतपिशाचेभ्यो रक्षोभ्यः परमेश्वरि ! । भयेभ्यः मानु-षेभ्यश्च देवेभ्यो रक्ष मां सदाः ॥३॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । उमे ब्रह्माणि कामारि विश्वरूपे प्रसीद मे ॥४॥

कुङ्कुमेन समालब्धे चन्दनेनविलेपिते ॥ बिल्वपत्रकृतापीडेदुर्गे
त्वां शरणंगतः ॥५॥ गतंपापं गतंदुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥
आगतासुखसम्पत्तिः पुण्याच्च तवदर्शनात् ॥६॥ ॐ हरपापं
हरक्लेशं हरशोकंहरःसुखम् ॥ हररोगंहरक्षोभं महामारीं हरप्रिये
॥७॥ ॐ कायेनमनसावाचा कर्मणा यत्कृतंमया ॥ ज्ञानाज्ञान-
कृतंपापं दुर्गे ! त्वं हर दुर्गतिम् ॥८॥ पूजाफलाग्निकार्याद्यैः
सुकृतं यन्मयार्चितम् ॥ तत्सर्वं फलदं मे ऽस्तु भक्तिमुक्तिश्चदेहिमे
॥९॥ लक्ष्मि ! त्वत्प्रज्ञया नित्यं कृतापूजा तवाज्ञया ॥ स्थिरा-
भवगृहे ह्यस्मिन्मम सन्तान (ऐश्वर्य) कारिणि ॥१०॥ विपद्-
गणध्वान्तसहस्रभानवः ॥ समीहितार्थान्प्रतिकामधेनवः ॥
अपारसंसारसमुद्रसेतवो मां पातु चण्डी चरणाब्जरेणवःइत्यु-
च्चार्यमूलमन्त्रेण पुष्पाञ्जलित्रयं दद्यात् ॥

विसर्जनम्

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ॥ उपप्रयन्तु मरुतः
सुदानवऽइन्द्रप्राशूर्भवासचा ॥१॥ ॐ ब्रह्मणस्पते त्वमस्ययन्ता
सूक्तस्यबोधितनयञ्चजिन्व ॥ विश्वन्तद्भद्रं यदवन्ति देवाबृह-
द्वदेमविदथेसुवीराः ॥ यऽइमाविश्वा विश्वकर्मायोनः पितान्न
पतेनोदेहि ॥२॥ सर्वरूपमयी देवी सर्वंदेवीमयं जगत् ॥ अतोऽहं
विश्वरूपां त्वां नमामि परमेश्वरीम् ॥ विधिहीनं क्रियाहीनं
भक्तिहीनं यदर्चितम् ॥ पूर्णं भवतु तत्सर्वं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि! ॥
मातः क्षमस्वेत्युक्त्वा ॐ दुर्गाय नमः ॥ इत्यैशान्यामेकं
पुष्पं निक्षिपेण विसर्जयेत् ॥ ततो स्थापितकलशोदकेन
यजमानाभिषेकः ॥

कलश का जल किसी पात्र में लेकर सकुटुम्ब यजमान को अभिषेक करना ।

ॐ पुनस्त्वा रुद्रादित्यावसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणोव्वसुनी- थयज्ञैः ॥ घृतेनत्वं तन्वं वर्द्धयस्वसत्याः सन्तुयजमानस्यकामाः ॥ ॥१॥ ॐ इषेत्वोर्जेत्वावायवस्थदेवोवः सविता प्रार्पयतुश्रेष्ठतमाय कर्म्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्रायभागंप्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा वस्तेनऽईशतमाघशꣳसोध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौस्यात वह्वीर्य- जमानस्यपशून्पाहि ॥ करोतुस्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्तिवापिद्विजा- तयः ॥ सरीसृपाश्चयेश्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा ॥ ययाति- नहुपश्चैव धुन्धमारोभगीरथः ॥ तुभ्यंराजर्षयःसर्वे स्वस्तिकुर्वन्तु- नित्यशः ॥ स्वस्तितेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्यएव च ॥ स्वाहा- स्वधाशची चैव स्वस्तिं कुर्वन्तु ते सदा ॥ लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्तितेऽनघ ॥ असितोदेवलश्चैवविश्वामित्रस्तथांगिराः ॥ स्वस्तितेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्तिकेयश्चषण्मुखः ॥ विवस्वान्भगवा- न्स्वस्तिकरोतु तव सर्वशः ॥ दिग्गजाश्चैवचत्वारः क्षितिजाग- गनंग्रहाः ॥ अधस्ताद्धरणीं योऽसौनागोधारयतेसदा ॥ शेषश्च पन्नगाः श्रेष्ठो स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु ॥ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणा- मुदयस्तथा ॥ अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः ॥ अधनाः सधनाः सन्तु सन्तु सर्वार्थसाधकाः ॥ आयुष्कामो यशस्कामो पुत्रपौत्रस्तथैव च ॥ आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामाः भवन्तु ते (मे) ॥

श्रीमाधोपुरनगर निवासिना सांकृतिगोत्रत्रिवेदकुलोद्भवेन

श्रीगंगावक्षसूनुना श्रीदुर्गाभक्तेनगौडेन पण्डितेननानगराम शर्मणा संगृहीताःसर्वाङ्गदुर्गापूजनपद्धतिपूजाक्रमः समासोऽयम्॥ तत आचार्योऽग्नेर्दक्षिणतः परिस्तरणभूमित्यक्त्वा ब्रह्मणं आसनं दत्वा तदुपरि प्रागग्रानुदगग्रान्कुशानास्तीर्य ब्रह्माणमग्नि प्रदक्षिणक्रमेणानीय अस्मिन्दुर्गाहवनकर्मणि त्वं मे ब्रह्माभव॥ इत्यभिधाय ॥ वरण कर्मणा पूर्वं संपादितं ब्राह्मणं तदभावे५० पञ्चाशत्कुशनिर्मितं (ब्रह्माणं)१ कल्पितासने उदङ्मुखं उपवेश-येत्पूजयेच्च ॥ ततः प्रणीतापात्रं पुरुतः कृत्वा जलेनऽऽपूर्य कुशत्रयेणाच्छाद्य ब्रह्मणोमुखमवलोक्य ॥ अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् ॥

ततः परिस्तरणम्

वर्हिषश्चतुर्थ (१६) भागमादाय चतुर्भिर्दर्भैं पूर्वाग्रैराग्नेयादी-शानान्तम् ॥ ४ ॥ प्रागग्रैर्ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम् ॥ ४ ॥ प्रागग्रैर्२ नैऋत्याद्वायव्यान्तम् ॥ ४ ॥ प्रागग्रैरग्नितः प्रणीता पर्यन्तम्

---

(१) उत्तरे सर्वपात्राणि प्रणीतादीन्यनुक्रमात् ।
पूर्वेणैव द्विजाःसर्वे ब्रह्मा किमुतदक्षिणे ॥ इति प्रश्नः ॥
दक्षिणे दानवाः प्रोक्ताः पिशाचोरगराक्षसाः ।
तेषां दूरीकरणार्थाय ब्रह्मा तिष्ठति दक्षिणे ॥

(२) प्रागग्रैरुदगग्रैश्च तृणैरग्रैः परिस्तरणं कृत्वेत्यर्थः प्राच्यां प्रथम-मुदगग्रैः प्रक्षेपः दक्षिणतः प्रागग्रैः ततः प्रतीच्यामुदगग्रैः तत उदीच्यां प्रागग्रैः ॥ इति विश्वनाथः ॥

अथ तृणैः परिस्तृणाति ॥ इति श्रुतिः ॥ तदेतत्परिस्तरणमग्ने हीनता परिहारार्थं कर्त्तव्यम् । तथा च शतपथश्रुतिः—सहैष यज्ञ उवाच नग्नतायावैविभमितिका ते नग्नतेत्यभित एवे मा परिस्तृणान्ति ॥ इति ॥ अत्रदर्भसंख्या न निश्चिता ॥

॥४॥ परिस्तरणं कृत्वा ॥ ततः अग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रछेदनार्थं कुशत्रयम् ॥ पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भंद्वे-कुशपात्रे ।। प्रोक्षणीपात्रम् ॥ आज्यस्थाली ॥ चरुस्थाली संमार्जनकुशाःपञ्च ॥ उपयमनकुशाः सप्त ॥ वेणीरूपकुशत्रयंसमि-धस्तिस्रः पालाश्यः प्रादेशमात्राः ॥ स्रुवः१ खादिरोहस्तमात्रः॥ आज्यं२ गव्यम् ॥ शोधितास्तन्दुलाः प्रस्थत्रययुतं पूर्णपात्रम् ॥ पवित्रछेदनकुशानां पूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम् ॥ ततः पवित्रछेदनैः पवित्रकरणम् ॥ द्वयोः पवित्रयोरुपरि पवित्र त्रयंनिधाय ॥ चाग्रतः प्रादेशमात्रंविहाय त्रिभिः कुशैर्द्वंकुश-तरुणेप्रच्छिद्य ॥ द्वयोर्मूलं त्रीणिचोत्तरतःक्षिपेत् ॥ ततः सपवित्रपवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम् ॥ प्रोक्षणीपात्रस्य सव्य-हस्ते करणं अनामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्गिङ्गनम् ॥ ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम् ॥ प्रोक्षणीजलेन आज्य-स्थाल्यादीनि पूर्णपात्रपर्यन्तानि क्रमेणैकैकशः प्रोक्ष्य ॥ अस-ञ्चरे प्रणीताग्न्योरन्तराले प्रोक्षणीपात्रं निधाय ॥ आसादित-माज्यं पश्चादग्नेर्निनिहितायामाज्यस्थाल्यां प्रक्षिप्य ॥ चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकमासिच्य ॥ आसादितांस्तंडुलान्प्रक्षिप्य ॥ तत्राज्यं ब्रह्माधिश्रयति तदुत्तरतः स्वयं चरुमेव युगपदग्नावा-

(१) अग्रेधृत्वा तु वैधव्यं मध्ये धृत्वा प्रजाक्षयः ।
मूले च म्रियते होता स्रुवस्थानं कथं भवेत् ॥ इति प्रश्नः ॥
अग्रान्मध्यस्तु यन्मध्यं मूलान्मध्यस्तु मध्यमम् ।
स्रुवं च धारयेद्विद्वानायुरारोग्यदं सदा ॥

(२) उत्तमं गोघृतं प्रोक्तं मध्यमं महिषीभवम् ।
अधमं छागली जातं तस्माद् गव्यं प्रशस्यते ॥

रोप्य ईषच्छृतेचरौज्वलदुल्मुकं प्रदक्षिणं आज्यचर्वोः समन्ताद् भ्रामयेत् ॥ दक्षिणपाणिना स्रुवमादाय ॥ अधोमुखमग्नौ तापयित्वा सव्यपाणौ कृत्वा ॥ दक्षिणेन संमार्जनाग्रे मूलतोऽग्र पर्यन्त मूलैरग्रमारभ्य अधस्तान्मूलपर्यन्तम् ॥ स्रुवंसंमृज्य प्रणीतोदकेनाभिषिञ्चय ॥ पुनः प्रतप्य दक्षिणतोनिदध्यात् ॥ ततः आज्यमुत्थाप्य ॥ चरोः पूर्वेण नीत्वाग्नेरुत्तरतः स्थापयित्वा ॥ चरुमुत्थाप्य ॥ आज्यस्य पश्चिमतोनीत्वाज्यस्योत्तरतः स्थापयित्वा आज्यमग्नेः पश्चादानीय ॥ चरुंचानीय आज्यस्योत्तरतोनिदध्यात् ततः पूर्ववत्पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूर्य ॥ अवलोक्य ॥ तस्मादपद्रव्यनिरसनं पुनः प्रोक्षिण्युत्पवनम् ॥ ततः उपयमन कुशानादाय ॥ उत्तिष्ठन् प्रजापतिम्मनसा ध्यात्वा ॥ तूष्णीमग्नौघृताक्ताः समिधस्तिस्रः प्रक्षिपेत् ॥ ततः उपविश्य ॥ प्रोक्षिण्युदकेन सपवित्रेणाग्निमोशानादिउदक्पर्यन्तं परिषिञ्च्य ॥ दक्षिणजान्वाच्य ॥ ब्रह्मणान्वारब्धः यजमानेनान्वारब्धश्च समिद्धतमेऽग्नौस्रुवेणाज्याहुतीर्जुहुयात् ॥ तत्राघारावाज्यभागौ हुत्वा अनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषं घृतस्य प्रोक्षणीपात्रेप्रक्षेपः ॥

अथ होमः

अग्नेरुत्तरभागे ॥ ॐ (नमः) प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतये इदं नमम ॥ अग्नेर्दक्षिणभागे ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा, इन्द्रायेदन्नमम ॥ इत्याघारौ ॥ मध्ये समिद्धतमे ॥ ॐ अग्नये स्वाहा अग्नयइदन्नमम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा, सोमायेदन्नमम ॥ इत्याज्यभागौ ॥ अथाचार्योऽग्निसम्पूज्य गणेशादिमण्डलस्थदेवानां प्रीणनार्थं हवनं कुर्यात् ॥

अथ ग्रहादिहोमः

तत्र तावत् गणपतये ॐ गणानात्वा० स्वाहा ॥ इदं गणपतये न मम ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० स्वाहा ॥ इदं अम्बिकायै न मम ॥ ततो ग्रहादित्रिमध्वक्तसमित्तिलचर्वाज्यद्रव्यैः प्रत्येकमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौ वा जुहुयात् ॥ तद्यथा ॥ ॐ आकृष्णेनरजसा० स्वाहा ॥ इदं सूर्य्याय० ॥१॥ ॐ इमं देवा० स्वाहा ॥ इदं चन्द्रमसे० ॥२॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धा० स्वाहा ॥ इदं भौमाय० ॥३॥ ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने० स्वाहा ॥ इदं बुधाय० ॥४॥ ॐ बृहस्पते० स्वाहा ॥ इदं बृहस्पतये० ॥५॥ ॐ अन्नात्परिस्रुतो० स्वाहा ॥ इदं शुक्राय० ॥६॥ ॐ शन्नो देवी० स्वाहा ॥ इदं शनैश्चराय० ॥७॥ ॐ कयानश्चित्र० स्वाहा इदं राहवे० ॥८॥ ॐ केतुं कृण्वन्नि० स्वाहा ॥ इदं केतवे० ॥९॥ [इति नवग्रहाणां होमः ॥] अथाधिदेवता होमः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० स्वाहा ॥ इदमीश्वराय० ॥१०॥ ॐ श्रीश्चते० स्वाहा ॥ इदं उमायै० ॥११॥ ॐ यदक्रन्दः० स्वाहा ॥ इदं स्कन्दाय० ॥१२॥ ॐ विष्णोरराट० स्वाहा ॥ इदं विष्णवे० ॥१३॥ ॐ सयोषा इन्द्र० स्वाहा० ॥ इदमिन्द्राय० ॥१४॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानं० स्वाहा ॥ इदं ब्रह्मणे० ॥१५॥ ॐ यमाय० त्वाङ्गिर० स्वाहा ॥ इदं यमाय० ॥१६॥ ॐ कार्पिरसि० स्वाहा ॥ इदं कालाय० ॥१७॥ ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा ॥ इदं चित्रगुप्ताय० ॥१८॥ अथ प्रत्यधिदेवता होमः ॥ ॐ अग्निं दूतं० स्वाहा ॥ इदमग्नये०

---

१ अत्र केवलं मन्त्रप्रतीकमात्रमेव उट्टङ्कितम् सम्पूर्णमन्त्राः पूजाकर्मणिद्रष्टव्याः

॥१६॥ ॐ आपो हिष्ठा० स्वाहा ॥ इदमद्भ्यो० ॥२०॥ ॐ स्योना पृथिवी० स्वाहा ॥ इदं पृथिव्यै० ॥२१॥ ॐ इदं विष्णुर्वि० स्वाहा ॥ इदं विष्णवे० ॥२२॥ ॐ त्रातारमिन्द्र० स्वाहा॥ इदमिन्द्राय०॥२३॥ ॐ आदित्यै रास्ना० स्वाहा०॥ इदमिन्द्राण्यै० ॥२४॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये० ॥२५॥ ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो० स्वाहा ॥ इदं सर्पेभ्यो०॥२६॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानं० स्वाहा ॥ इदं ब्रह्मणे० ॥२७॥ * अथ पञ्च-लोकपाल होमः * ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा ॥ इदं गणपतये० ॥२८॥ ॐ अम्बेऽअम्बिके० स्वाहा ॥ इदं अम्बिकायै० ॥२६॥ ॐ वायो ये ते० स्वाहा ॥ इदं वायवे० ॥३०॥ ॐ घृतं घृत-पावानः स्वाहा ॥ इदमाकाशाय० ॥३१॥ ॐ यावाङ्कशा० स्वाहा ॥ इदमश्विभ्यां ॥३२॥ ॐ वास्तोष्पते० स्वाहा ॥ इदं वास्तोष्पतये० ॥३३॥ ॐ नहि स्पसम० स्वाहा ॥ इदं क्षेत्र-पालाय० ॥३४॥ अथ दशदिक्पाल होमः ॥ ॐ त्रातारमिन्द्र० स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय० ॥३५॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने० स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥३६॥ ॐ यमाय त्वा० स्वाहा इदं यमाय०॥३७ ॐ असुन्वन्तम० स्वाहा ॥ इदं निर्ऋतये० ॥३८॥ ॐ तत्त्वा-यामि० स्वाहा ॥ इदं वरुणाय० ॥३९॥ ॐ आनो नियुद्भि० स्वाहा ॥ इदं वायवे ॥४०॥ ॐ वयॐ सोम० स्वाहा ॥ इदं सोमाय० ॥४१॥ ॐ तमीशानं० स्वाहा ॥ इदमीशानाय० ॥४२॥ ॐ अस्मे रुद्रा० स्वाहा ॥ इदं ब्रह्मणे० ॥४३॥ ॐ स्योना पृथिवी० स्वाहा ॥ इदं अनन्ताय० ॥४४॥

वास्तुदेवानां हवनमन्त्राः पूजनविषये द्रष्टव्याः

चतुःषष्टियोगिनीनांहोमः

ॐ दिव्ययोगिन्यै स्वाहा इदं० ।१। ॐ महायोगिन्यै स्वाहा ।२। ॐ सिद्धयोगिन्यै स्वाहा ।३। ॐ गणेश्यै० ।४। ॐ प्रेताक्ष्यै० ।५। ॐ डाकिन्यै०।६। ॐ काल्यै० ।७। ॐ कालरात्र्यै० ।८। ॐ निशाचर्यै० ।६। ॐ कंकर्यै० ।१०। ॐ रौद्रवेताल्यै० ।११। ॐ भूतल्यै०।१२। ॐ भूतडामर्यै०।१३। ॐ ऊर्ध्वकेश्यै०

॥ अथ योगिनी स्तोत्रम् ॥

ॐ जया च विजयाचैव जयन्तीचापराजिता। दिव्ययोगी महायोगी सिद्धयोगी महेश्वरी ॥१॥ प्रेताशी डाकिनी काली कालरात्रिस्तथैव च। टंकाक्षी रौद्री वैताली हुंकारीचोर्ध्वकेशिनी ॥२॥ विरूपाक्षी च शुष्कांगी नरभोजनिकातथा। फट्कारी वीरभद्राधूम्राक्षी कलहप्रिया ॥३॥ राक्षसीघोररक्ताक्षी विश्वरूपा भयंकरी। चण्डमारी च चण्डी च वाराही मुण्डधारिणी ॥४॥ भैरवी च तथोर्ध्वाक्षी दुर्मुखी प्रेतवाहिनी। खट्वांगी चैव लम्बोष्ठी मालिनी मत्तयोगिनी ॥५॥ कालीरक्ता च कंकाली तथा च भुवनेश्वरी। त्रोटकी च महामारी यमदूती करालिनी ॥६॥ केशिनीदामिनीचैव रोमगंगाप्रवाहिनी। विडाली कामुका लाक्षी जया चाऽधोमुखीतथा ॥७॥ मुण्डाग्रधारिणी व्याघ्री कांङ्क्षिणी प्रेतभक्षिणी। धूर्जटीनिकटीघोरी कपालीविषलंबिनी ॥८॥ चतुःषष्टिः समाख्याता योगिन्योऽथवरप्रदाः। त्रैलोक्ये पूजितानित्यं देवमानुषयोगिनी ॥६॥ चतुर्दश्यांतथाष्टम्यां सङ्क्रातौनवमीपुच। पवित्रस्तु ततो भूत्वा तस्य विघ्नं प्रणश्यति ॥१०॥ राजद्वारेपथेघोरे संग्रामेशत्रु संकटे। अग्निचौरनिपातेषु सर्वग्रहनिवारिणी ॥११॥ जप्यतेतज्जपेनित्यं शरीरेभयमागते। स्तुत्वा नारायणीं देवीं सर्वोपद्रवनाशिनी ॥ इति योगिनी स्तोत्रम् ॥

।१४। ॐ विरूपाक्ष्यै० ।१५। ॐ शुष्काम्यै० ।१६। ॐ नर-भोजिन्यैं० ।१७। ॐ भट्टाक्ष्यैं० ।१८। ॐ वीरभद्रायै० ।१९। ॐ धूम्राक्ष्यै० ।२०। ॐ कलिप्रियायै० ।२१। ॐ राक्षस्यै० ।२२। ॐ घोररक्ताक्ष्यै० ।२३। ॐ विरूपाक्ष्यै० ।२४। ॐ भयं-कायै० ।२५। ॐ चण्डिकायै० ।२६। ॐ वीरकौमार्यैं० ।२७। ॐ वाराह्यै० ।२८। ॐ मुण्डधारिण्यै० ।२९। ॐ सासूर्य्यैं०।३० ॐ रौद्रझकारभाषिण्यै० ।३१। ॐ त्रिपुरांतकायै० ।३२। ॐ भैरवध्वसिन्यै०।३३। ॐ क्रोधदुमिख्यै०।३४। ॐ प्रेतवाहिन्यै० ।३५। ॐ खट्वांग्यै० ।३६। ॐ दीर्घलंबोष्ठ्यै ।३७। ॐ मालिन्यै० ।३८। ॐ मन्त्र योगिन्यै० ।३९। ॐ कालाग्नि-ग्रहण्यै० ।४०। ॐ चक्र्यै० ।४१। ॐ कंकाल्यै० ।४२। ॐ भुवनेश्वर्यैं० ।४३। ॐ कटक्यै० ।४४। ॐ काटिन्यै० ।४५। ॐ रौद्र्यै० ।४६। ॐ यमदूत्यै० ।४७। ॐ करालिन्यै०।४८। ॐ घोराक्ष्यै० ।४९। ॐ कामुक्यै० ।५०। ॐ काकदंष्ट्र्यै० ।५१। ॐ अधोमुख्यै० ।५२। ॐ मुण्डधारिण्यै० ।५३। ॐ व्याघ्र्यै ।५४। ॐ किंकिण्यै० ।५५। ॐ प्रेतभक्षिण्यै० ।५६। ॐ कालरूपायै ।५७। ॐ कामाख्यायै० ।५८। ॐ उष्ट्रिण्यै० ।५९। ॐ योगपीठायै० ।६०। ॐ महालक्ष्म्यै ।६१। ॐ एक वीरायै० ।६२। ॐ कालरात्र्यै० ।६३। ॐ पीठिकायै स्वाहा इदं० ।६४। अनेनचतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम् ॥

अथ क्षेत्रपाल होमः

ॐ अजराय स्वाहा इदमजराय ।१। ॐ आपकुंभाय० ।२। ॐ इन्द्रस्तुतये० ।३। ॐ इडाचाराय० ।४। ॐ उक्तसंज्ञाय०

।५। ॐ उन्मादाय० ।६। ॐ ऋषिसूदनाय० ।७। ॐ ऋमुक्ताय० ।८। ॐ लिप्तकेशाय० ।९। ॐ लिप्तकाय० ।१०। ॐ एकदंष्ट्र-काय०।११। ॐ ऐरावताय०।१२। ॐ ओवन्धनाख्याय स्वाहा ॐ ओषधीशाय० ।१४। ॐ अंजनाय० ।१५। ॐ अस्त्रवाराय० ।१६। ॐ कवलाय० ।१७। ॐ खरूखानलाय० ।१८। ॐ गामुख्य० ।१९। ॐ घटादाय० ।२०। ॐ डमनसे० ।२१। ॐ चण्डवारणाय० ।२२। ॐ घटाटोपाय० ।२३। ॐ जटलाय० ।२४। ॐ झंगीवाय० ।२५। ॐ घण्टेश्वराय० ।२६। ॐ टंक-पाणये० ।२७। ॐ गणबन्धनाय० ।२८। ॐ डामराय० ।२९। ॐ ढक्कारवाय० ।३०। ॐ मणिमतये० ।३१। ॐ तडिद्देहाय० ।३२। ॐ स्थविराय० ।३३। ॐ दंतुराय० ।३४। ॐ धनदाय० ।३५। ॐ नागकर्णाय० ।३६। ॐ प्रचण्डकाय० ।३७। ॐ फटकराय० ।३८। ॐ वीरसंघाय० ।३९। ॐ भृंगाय० ।४०। ॐ मेघभासुराय० ।४१। युगांताय० ।४२। ॐ रोह्यवाय० ।४३। ॐ लम्ब्रोष्टाय० ।४४। ॐ वसवाय० ।४५। ॐ शुकनन्दाय० ।४६। ॐ षडालाय० ।४७। ॐ सुनाम्ने स्वाहा ।४८। ॐ हं भ्रुकाय स्वाहा इदं ।४९। एतानि एकोन पञ्चाशत् क्षेत्रपाल-नामानि ॥

एवमेव गौरीतिलकस्थसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवानामपि कुर्यात् ॥ पुनःकवचार्गलाकीलकं पठित्वा नवार्णन्यासान्विधाय नवार्णे-नापि १०८ हुत्वा ततः सप्तशती न्यासान्कृत्वा पुनः मार्कण्डेय उवाच इत्यारभ्य ॐ सावर्णिर्भविताममुरित्यन्तं हुत्वा ॥ पुन-रुत्तरन्यासान्विधाय १०८ नवार्णं च जुहुयात् ॥ ततो हुतशेष

हविर्द्रव्यं गृहीत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात् ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये० ॥ ततो भूराद्यानवाहुतयः ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये ॥ ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे ॥ ॐ स्वः स्वाहा, इदमग्निवायुसूर्येभ्यः ॥ ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वेदेवाᳬंसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा, इदमग्निवरुणाभ्याम् ॥ ॐ सत्वन्नोऽअग्नेवमो भवोतीनेदिष्ठो अस्याऽउषसोव्युष्टौ अवयक्ष्वनो वरुणᳬं रराणोवीहि मृडीकᳬं सुहवोनऽएधि स्वाहा, इदमग्निवरुणाभ्याम् ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशास्तिपाश्चसत्वमित्वमयाऽअसि ॥ अयानो यज्ञं वहास्ययानोधेहिभेषजᳬं स्वाहा इदं अयसेऽअग्नये ॥ ॐ येतेशतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाःपाशावितता महान्तः ॥ तेभिर्नोऽअद्यसवितो त विष्णुर्मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा, इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च ॥ ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमᳬं श्रथाय । अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते ॥

अथ बलिदानम्

अद्य कृतस्य कर्मणःसांगता सिद्ध्यर्थं दिक्पालपूर्वकं आदित्यादिग्रहमण्डलस्थापितदेवताभ्यो बलिदानञ्चकरिष्ये ॥ पूर्वे ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रᳬं हवे हवे सुहवᳬं शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रᳬं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥

इन्द्राय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पादिना सम्पूज्य एवं सर्वत्र ॥ ॐ इन्द्राय सांगायसपरिवारायसायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो इन्द्रदिशं रक्षबलिं भुङ्क्ष्व मम सकुटुम्बस्यअभ्युदयं कुरु आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदोभव । अनेनबलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् ॥ अग्निकोणे ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने तवदेव पायुभिर्मघोनो रक्षतन्वश्चवन्द्य ॥ त्राता तो कस्यतनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तवव्रते ॥ अग्नये नमः ॥ अग्नये सा० ॥ भो अग्नदिशं० । दक्षिणेयमम् ॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ यमाय नमः । भो यम० । नैऋत्यां । ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामान्वहितस्करस्य । अन्य मस्मदिच्छसातऽ इत्यानमोदेवि निऋते तुभ्यमस्तु ॥ निऋतये नमः ॥ पश्चिमे ॥ ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेहवीध्युरुशꣳ समानऽआयुः प्रमोषीः ॥ वरुणाय नमः । वायव्याम् ॥ ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रीणीभिरुपयाहियज्ञम् वायोऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्वं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः । वायवे० । उत्तरे ॥ ॐ वयꣳ सोमव्रते तवमनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि । सोमाय० । ईशान्यां । ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियं जिन्वमवसेहूमहे वयम् । पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये । ईश्वराय० । पूर्वेशानयोर्मध्ये । ऊर्ध्वं । ॐ अस्मे रुद्रामेहना पर्वतासो वृत्र-

हत्वेभरहूतौसजोषाः ॥ यः श७ँ सतेस्तुवते धायिवज्र इन्द्रोज्ये-ष्ठाऽअस्मांऽप्रवन्तु देवाः । ब्रह्मणे० । निर्ऋति पश्चिमयोर्मध्ये अधोभागे ॥ ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्म स प्रथाः ॥ अनन्ताय० । ततो ग्रहवेदिसमीपे सूर्यादिग्रहाणां बलिः ॥ ॐ आकृष्णेन रजसा० ॥ सूर्यादि ग्रहेभ्यः अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितेभ्यः सांगेभ्यः सप० सश-क्तिकेभ्यः इमं सदीपंदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो भो सूर्यादि देवताः दिशो रक्षत बलिंभक्षत दीपानि पश्यत ॥ मम (यजमानस्य) सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरुत ॥ आयुः कर्तारः क्षेम कर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः वरदाभवत ॥ अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम् ॥ ततो षोडशमातृकाणामेकबलिं दद्यात् । ॐ समख्ये देव्याधि-यासं दक्षिणयो रुचक्षसा । मामऽआयुः प्रमोषीर्मोऽ अहन्तवबी-रम्बिदेय तवदेवि सदृशि । गौर्यादिमातृभ्य इमं सदीपंमाष-भक्तबलिं समर्पयामि भो भो गौर्यादि मातर इमं बलिं गृह्णीत मम (यजमानस्य) सकुटुम्बस्याऽभ्युदयं कुरुत आयुः-कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्र्यः वरदाभवत । बलिदानेन गार्यादिषोडश मातरः प्रीयन्ताम् । ततः प्रधानबलिः । भो दुर्गे दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य अभ्युदयं कुरु आयुकर्त्री क्षेमकर्त्री शान्तिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री निर्विघ्नकर्त्री वरदा भव ॥

अथ क्षेत्रपालबलिदानविधिः

एकस्मिन् पात्रे कुशानास्तीर्य तदुपरि आहार चतुर्गुणं

द्विगुणं वा माषभक्तदध्योदनं जलपात्रं च निधाय हरिद्रा-कुँकुम सिन्दूर कज्जलद्रव्यपताका दीपयुतं कृत्वा ॥ ॐ अद्येत्यादि० सकलारिष्ट शान्तिपूर्वकं प्रारीप्सितस्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालपूजनं बलिदानञ्च करिष्ये। इति प्रतिज्ञा। अक्षतान्गृहीत्वा। ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्मा द्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यंवैश्वानरं क्षेत्रजित्यायदेवाः। ॐ ह्रीं (क्षं) क्षेत्रपालाय नमः इति मन्त्रेण यथोपचारैः सम्पूज्य ध्यायेत् ॥ ॐ नीलाञ्जनाद्रिनिभमूर्ध्व पिशंगकेशम्। वृत्तोग्रलोचनमुदान्तगदाकपालम् ॥ आशा-म्बरं भुजगभूषणमुग्रदंष्ट्रम्। क्षेत्रेशमद्भुततनुंप्रणमामिदेवम् ॥१॥ ॐ करकलितकपालः कुण्डलीदण्डपाणिः। तरुण तिमिर नीलव्यालयज्ञोपवीती ॥ क्रतुसमयसपर्याविघ्नविच्छेदहेतु-र्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥२॥ ॐ क्षेत्रपाल महाबाहो महाबलपराक्रम। क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिंगृह्ण नमोऽस्तुते ॥ क्षं क्षेत्रपालाय सांगाय भूतप्रेतपिशाच डाकिनी शाकिनीवेतालादि परिवारयुतायसायुधाय सशक्तिकाय सवा-हनाय इमं सदीपं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि नमः ॥ भो भोः क्षेत्रपाल सर्वतोदिशं रक्ष बलिं भक्ष दीपं पश्य मम (यज-मानस्य) सकुटुम्बस्य अभ्युदयंकुरु आयुःकर्ता क्षेमकर्ता पुष्टि-कर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता शुभदो वरदोभव। बलिदानेन क्षेत्रपः प्रीयताम् ॥ ततो ऽनवेक्ष्यमाणेन दुर्ब्राह्मणेन शूद्रेण वा (नापितद्वारा) बलिं गृहीत्वा यजमानस्य मस्तकोपरि सकृद् भ्रामयित्वा चतुष्पथे निक्षिपेत्। ततोयजमानस्य पृष्ठतो द्वार-

पर्यन्तं गत्वा हिंकारायेतिमन्त्रेण जलं क्षिपेत् ॥

अथ पूर्णाहुतिः

पूजास्विष्टं नवाहुत्यो बलिः पूर्णाहुतस्तथा । आशीर्वादप्रदानं च अभिषेको विसर्जनम् ॥ ततो यजमानपत्नीमाहूय ग्रन्थि बन्धनं कृत्वा तद्दक्षिणे स्थित्वा गणेशादिदेवताभ्यो नमः। इत्यनेन गंधाक्षतादिभिः सम्पूज्य। पश्चात् ॐ अग्नेनय सुपथा-रायेऽअस्मान्विश्वानि देवव्वयुनानि व्विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहु-राणमेनो भूमिष्ठान्तेनमऽउक्तिंविधेम ॥ मृडाग्नये नमः इति गन्धादिभिः सम्पूज्य। ॐ अद्येत्यादि० कृतस्य दुर्गाहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं वसोर्धारासमन्वितं पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये॥ ततः पात्रान्तरे स्रुवेण चतुर्गृहीताज्यं द्वादशवारं गृहीतं वा गृहीत्वा पात्रोपरि वस्त्रवेष्टितं श्रीफलं धृत्वा फलताम्बूलगन्ध-माल्यादिभिरलंकृत्य गृहीत्वा पात्रं स्रुच्युपरि निधाय धृत्वोभय-पाणिभ्यां यजमानस्तिष्ठेत् ॥ ॐसमुद्रादूर्म्मिर्मधुमाँ२ ऽउदा-दुपाᳬ शुनासममृतत्वमानट् ॥ घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥१॥ व्वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्या-स्मिन्यज्ञे धारयामानमोभिः ॥ उपब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुः शृङ्गोऽवमीद्गौरऽएतत् ॥२॥ चत्वारि शृङ्गास्त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो ऽअस्य ॥ त्रिधाबद्धो व्वृषभोरोरवीति महो-देवोमर्त्त्याँ२॥ आविवेश ॥३॥ त्रिधाहितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् ॥ इन्द्रएकᳬ सूर्यऽएकं जजानव्वेना-देकᳬ स्वधया निष्टतक्षुः ॥४॥ एता ऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्रा-च्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे ॥ घृतस्यधारा ऽअभिचाकशीमि

हिरण्ययो व्वेतसो मध्य ऽआसाम् ॥५॥ सम्यक्स्रवन्ति सरितो न धेना ऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ॥ एते ऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगा ऽइव क्षिपणोरीषमाणाः ॥६॥ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ॥ घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥७॥ अभिप्रवन्त समनेव्व योषाः ॥ कल्याण्यः स्मयमानासो ऽअग्निम्॥ घृतस्यधाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्य्यति जातवेदाः ॥८॥ कन्या ऽइव व्वहतुमेतवाऽउ ऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि ॥ यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभि तत्पवन्ते ॥९॥ अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ॥ इमं यज्ञं नयत देवतानो घृतस्यधारा मधुमत्पवन्ते ॥१०॥ धामं ते व्विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तःसमुद्रे हृद्यन्तरायुषि ॥ अपामनीके समिथे य ऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऽऊर्म्मिम् ॥११॥ पुनस्त्वादित्या रुद्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः घृतेन त्वं तन्वं व्वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥१२॥ सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि ॥ सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेन स्वाहा ॥१३॥ मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआ जातमग्निम् ॥ कविꣳ सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥१४॥ पूर्णादर्व्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ॥ वस्नेव व्विक्रीणावहा ऽइषमूर्जꣳ शतक्रतो स्वाहा ॥१५॥ इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते ऽअग्नये अद्भ्यश्च न

मम ॥ इति प्रोक्षणीपात्रे त्यागः ॥ [इति पूर्णाहुतिः]

अथ वसोर्द्धारां जुहुयात्

तत्र मन्त्राः ॥ ॐ सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्तधाम प्रियाणि ॥ सप्तहोत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वाघृतेन स्वाहा ॥१॥ शुक्रज्योतिश्च चित्र-ज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च ॥ शुक्रश्च ऋतपा-श्चात्यꣳहाः ॥२॥ ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च॥ मितश्च सम्मितश्च सभराः ॥३॥ ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च ॥ धर्त्ता च विधर्त्ता च विधारयः ॥४॥ ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च ॥ अन्तिमित्रश्च दूरे ऽअमित्रश्च गणः ॥५॥ ईदृक्षास ऽएतादृक्षास ऽऊषुणः सदृक्षासः प्रतिसदृ-क्षास ऽएतन ॥ मितासश्च सम्मितासो नो ऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्मिन् ॥६॥ स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च ॥ क्रीडी च शाकी चोज्जेषि ॥७॥ इन्द्रं दैवी-र्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रंदैवीर्विशो मरुतोऽनु-वर्त्मानोऽभवन् ॥ एवमिमं यजमानं दैवीश्च विशो मानुषी-श्चानुवर्त्मानोभवन्तु ॥८॥ इमꣳ स्तनमूर्ज्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये ॥ उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्व्वन्त्समु-द्रियꣳ सदनमाविशस्व ॥९॥ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्यधाम ॥ अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥१०॥ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ॥ देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥११॥ इदमग्नये

वैश्वानराय न मम ॥ [इति वसोर्द्धारा समाप्ता]

ततः अग्नि प्रार्थना ॥ श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम् ॥ तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन ! ॥ भो भो अग्ने महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधन ॥ कर्मान्तरेऽपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सर्वदा ॥ त्र्यायुपकरणम् ॥ ॐ त्र्यायुपं यमदग्नेरितिललाटे ॥ ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् ॥ ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणांसे ॥ ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमितिहृदि ॥ वामस्कन्धे च ॥ ततः संस्रवप्राशनम् ॥ तद्यथा अद्येत्यादि पठित्वा पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् । तद्यथा अद्येत्यादि पठित्वा । अद्य कृतैतद् दुर्गाहवनाख्यकर्मणि हवनकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं प्रजापतिदैवतममुकगोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः । ततः प्रणीतोदकेन ॥ ॐ सुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्त्विति ॥ ॐ आप शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमाः तास्ते कृण्वन्तु भेषजमिति ॥ यजमानमूर्धानमभिषिञ्चति ॥ ततः दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्मान्द्वेष्टियं च वयंद्विष्मः इति ईशान्यां प्रणीतां न्युब्जीकुर्यात् ॥ ततः परिस्तरणक्रमेण वर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिधार्य ॥ ॐ देवागातु विदोगातुंवित्वागातुमित ॥ मनसस्पतऽइमं देवयज्ञꣳ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥ इति मन्त्रेण हस्तेनैवजुहुयात् । ततः कलशजलं एकस्मिन्पात्रे निधाय दूर्वया यजमानमूर्द्धानमभिषिञ्चति । आपोहिष्ठेत्यादि ३ मन्त्रैः ॥ आपोऽअस्मान्मा-

तरः शुन्धयन्तुघृतेननौ घृतप्वः पुनन्तु ॥ विश्वᳬ हिरिप्रम्प्रवह-
न्तिदेवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि ॥४॥ इदमापः प्रवहता-
व्वद्यञ्च मलञ्च यद् ॥ यच्चाभिदुद्रोहा नृतन्यच्चशेपेऽअभीरुणम्
आपोमातस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु ॥५॥ शिरोमे श्रीर्यशो-
मुखन्त्विषिः केशाश्चश्मश्रूणि ॥ राजामे प्राणोऽअमृतᳬ सम्राट्
चक्षुर्विराट् श्रोत्रम् ॥६॥ जिह्वा मे भद्रं वाङ्महोमनो मन्युः
स्वराड्भामः ॥ मोदाः प्रमोदाऽअंगुली रङ्गानिमित्रम्मे सह
॥७॥ वाहूमे वलमिन्द्रियᳬ हस्तौ मे कर्म्म वीर्यम् ॥ आत्माक्षत्र-
मुरोमम ॥८॥ पृष्टीमे राष्ट्रमुदरमᳬ सौग्रीवाश्च श्रोणी ॥ ऊरू
अरत्नीजानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतः ॥९॥ नाभिर्मेचित्तम्वि-
ज्ञानम्पायुर्मेऽपचितिर्भसत् आनन्दनन्दावाण्डौमेभगः सौभा-
ग्यम्पसः ॥ जङ्घाभ्यांपद्भ्यां धर्मोस्मिव्विशिराजा प्रतिष्ठितः
॥१०॥ यतोयतः समीहसे ततोनोऽअभयङ्कुरु । शन्नः कुरुप्रजाभ्यो
भयन्नः पशुभ्यः ॥११॥ अथ पुराणोक्तमन्त्राः ॥ देवास्त्वा-
मभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः । वासुदेवो जगन्नाथस्तथा-
संकर्षणोविभुः ॥१॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयायते
आखण्डलोऽग्निर्भगवान्यमोवै निरृ'तिस्तथा ॥२॥ वरुणः पवन-
श्चैव धनाध्यक्षस्तथाशिवः । ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः
पान्तु ते सदा ॥ कीर्तिर्लक्ष्मीधृ'तिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रियामतिः।
बुद्धिर्लज्जावपुः शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्चमातरः ॥४॥ एता-
स्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ॥ आदित्यश्चन्द्रमा
भौमवुधजीवसितार्कजाः ॥५॥ ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुकेतु-
श्चतर्पिताः ॥ देवदानवगन्धर्वाः यक्षराक्षसपन्नगाः ॥६॥

ऋषयोमनवोगावो देवमातरएव च ॥ देवपत्न्योद्रुमानागा दैत्याश्चाप्सरसांगणाः ॥७॥ अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ॥ औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्चये ॥८॥ सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदानदाः एतेत्वाम-भिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳫं शांतिः०

अथ छायापात्रदानम्

कांस्यपात्रेस्थिताज्यं च आत्मरूपंनिरीक्ष्यतु। ससुवर्णन्तु यो दद्यात्सर्वविघ्नोपश।न्तये ॥१॥ मन्त्रः। ॐ रूपᳫंरूपं प्रतिरूपो बभूव तस्यरूपं प्रतिचक्षणाय। इन्द्रोमायाभिः पुरुरूपऽएते युक्त ह्यस्यहरयः शतादशोत्ययंवैहरयोयंदश च सहस्राणि बहूनि च नन्तातदेतद् ब्रह्मपूर्वमनवाह्यजमनुः सर्वानुशासनम्। इत्याज्ये मुखमवलोक्य। संकल्पः। अद्येत्यादि० ममैतच्छरीरावच्छिन्न-समस्त–पापक्षय–सर्वग्रहपीड़ा–शान्ति शरीरोत्थार्तिनाशाय प्रासादवांछायुरारोग्यादिसर्वसौभाग्यादि सर्वसौभाग्यप्राप्तये सर्वसौख्यप्राप्तये च इदं स्वदेहच्छायावीक्षिताज्यपूरितकांस्य-पात्रं ससुवर्णं (सदक्षिणाकं) विष्णुदैवतं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय सुपूजिताय तुभ्यमहं सम्प्रदे ॥ मन्त्रौ ॥ याऽ लक्ष्मीर्यंच्चमे दौःस्थ्यं सर्वाङ्गसमुपस्थितम्। तत्सर्वं नाशयाज्य। त्वं प्रियमायुश्च वर्द्धय ॥१॥ आज्यंसुराणामाहारः सर्वमाज्ये प्रतिष्ठितम्। आज्यपात्रप्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम ॥२॥ इति छायापात्र दानविधिः ॥

अथ मण्डप परिक्रमा

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्तानिषङ्गिणः। तेषाᳬंसहस्र योजने वधन्वानितन्मसि ।१। यानिकानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ।२। पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भव। त्राहि मां चण्डिके देवि सर्वपापहरा भव॥ गोचारिणी दक्षिणा॥ अद्येत्यादि कृतेऽस्मिन् दुर्गाहवनाख्य कर्मणि अपूण पूर्णार्थं न्यूनातिरिक्तदोषपरिहार्थं गौरभावे गोचारिणीं (गोदुग्धपानार्थं) दक्षिणां अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥ कृतस्य दुर्गाहवन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं गोत्रेभ्यः आचार्यादि ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां यथा यथा विभज्य-युष्मभ्यमहमुत्सृजे॥ भूयसी दानम्॥ कृतस्य दुर्गाहवन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं अपूर्णपूर्णार्थं भूयसीं दक्षिणां नाना-नाम गोत्रेभ्यः ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यो अन्धपंगुभ्यश्च यथायथा विभज्यदातुमहमुत्सृजे॥

आशीर्वादः

पुत्रवती दक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्ये प्रजाम्मेदाः पुत्रवती दक्षिणतऽइति नात्र तिरोहितमिवास्तीन्द्रस्याधिपत्य ऽइतीन्द्रेवास्याऽअधिपतिङ्करोति नाष्ट्राणां रक्षसामपहत्यै प्रजाम्मेदाऽइति प्रजामेव पशूनात्मन्धत्तेतमोह पुत्रो पशुमान् भवति॥ शतंभवति शतायुर्वै पुरुषः शतेन्द्रियऽआयुरेवेन्द्रियं वीर्यमात्मन्धत्ते ॥१॥ ध्रुवासिध्रुवोयं यजमानोस्मिन्नायतने प्रजयापशुभिर्भूयात् ॥२॥ अथैनमभिपद्यवाययसि ध्रुवासिध्रुवोयं यजमानोस्मिन्नायतने

प्रजयाभूदिति पशुभिरितिवैवं यं कामं कामये तस्मैकामः समृध्यते शतंभवति शतायुर्वै पुरुषः शतेन्द्रियऽआयुरेवेन्द्रियं वीर्यमात्मन्धत्ते ॥१॥ ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो० ॥ श्रीवर्चस्वमा० ॥ पुनस्त्वा रुद्रादित्या० ॥ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तथा ॥ आयुष्कामो यशस्कामो पुत्रपौत्रस्तथैव च ॥ आरोग्यं धन-कामश्च सर्वेकामा भवन्तु मे ॥ आशिषोगृह्णीयात् ॥ ततो देवताग्निविसर्जनम् ॥ यान्तु देवगणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजिता मया ॥ इष्टकामप्रसिध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ! ॥ यत्रब्रह्मादयोदेवास्तत्र गच्छ हुताशन ! ॥

अथाऽवभृथस्नानम्

हयशीर्षे ॥ अतः परंप्रवक्ष्यामि देवस्यावभृथंतव ॥ शोधयेद्गो मयैर्विप्र यागस्थानन्तु सर्वतः ॥१॥ सिक्त्वा गन्धोदकेनाथ पञ्चगव्येन शोधयेत् ॥ विकिरैः शोधयेद्भूमिं वितानेन विभू-षयेत् ॥२॥ पुष्पदाम्ना त्वधश्चोर्ध्वं पार्श्वतश्चापि शोभयेत् ॥ जुहुयाद्वैष्णवोवह्नौघृतमष्टोतरं शतम् ॥३॥ विष्णोर्नुकंवीर्याणि प्रवोचंष्षः पार्त्थिवानिव्विममेरजाᳬंसि ॥ योऽअस्कभाय-दुत्तर सधस्त्थ व्विचक्रमाणस्त्रधारुगायो विष्णवेत्वा ॥ मन्त्रेण समीधोऽष्टतथा शतम् ॥ विद्यामालिख्य विधिना एकाशीते पदाबुधः ॥४॥ वैष्णवं कलशंमध्य आजिघ्र कलशंमह्यात्वावि-शंत्विन्दवः पुनरुर्जानिवर्तस्वसानः ॥ सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः (निवेशयेत्) ॥ एकाशीति पदेकुं-

भान् श्रीसूक्तेन निवेशयेत् ॥ ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ॥ चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोमऽआवह ।१। तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥ अश्वपूर्णां(र्वां)रथमध्यां हस्ति-नादप्रबोधिनीम् ॥ श्रियंदेवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीजुषताम् ॥३॥ कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तांतर्पयन्तीं ॥ पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥ चन्द्रां प्रभासां यशसाज्वलन्तीं श्रियंलोके देवजुष्टामुदाराम् ॥ तां पद्मनेमीं शरणमहंप्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणोमि ॥५॥ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथविल्वः ॥ तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायांतरायाश्चबाह्याऽअलक्ष्मीः ॥६॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिनासह ॥ प्रादुर्भूतो-स्मिराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिंददातुमे ॥७॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ॥ अभूतिमसमृद्धिञ्च सर्वान्नि-र्णुदमेगृहात् ॥८॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥९॥ मनसः काममा-कूतिं वाचसत्यमशीमहि ॥ पशूनांरूपमन्नस्यमयि श्रीः श्रयतां-यशः ॥१०॥ कर्दमेन प्रजाभूतामयिसम्भवकर्दम ॥ श्रियंवासय मे कुलेमातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥ आपः स्रजन्तुस्निग्धानि चिक्लीतवस मे गृहे ॥ निचदेवीं मातरं श्रियंवासय मे कुले ॥१२॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलांपद्ममालिनीम् ॥ चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१३॥ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ॥ सूर्यांहिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो

आवह ॥१४॥ ताम्मआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुपानहम् ॥ यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्तंपञ्चदशर्चंश्च श्रीकामः सततंजपेत् ॥१६॥ शन्नोदेवीरभिष्टय आपोभवन्तुपीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः॥ इति मन्त्रेण कलशानभिमन्त्रयेत् ॥ कलशे विन्यसेत्पंचगव्यम् मन्त्रैर्विशेषतः ॥ फलं पुष्पंन्यसेत्तत्र द्रावितं कदलीजलम् ॥ मन्त्रद्वयंचैतत् ॥ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चत्वᳬ हसः ॥ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानिदाशुषे ॥ इति फलम् ॥ अक्षरं च रसं विद्वान् यादिव्या आपः पयसासं बभूवुर्याऽअन्तरिक्ष ऽउतपार्थिवीर्याः हिरण्यवर्णायज्ञियास्तान आपशिवाःसᳬशस्योनासुहावा भवन्तु निवेशयेत् मन्त्रतोयन्यसेन्मध्येनवकानां सुरोत्तम तवभूमासऽआशुयापत्न्यैनुस्पृशधृशता शोशुचानः तपुᳬष्मेजुह्वान सन्दितोविषवशुल्का ॥ इत्यृचा विद्वान् वस्त्रपूतं समाहितः ॥ नदीनद तडागोत्थैः शेषंतोयैः प्रपूरयेत् ॥ अपराजितेन मन्त्रेण सर्वानेवाभिमन्त्रयेत् ॥ नवेन शुक्ल वस्त्रेण सर्वानेवाभिमन्त्रयेत् ॥ गायत्रीं वैष्णवींजप्त्वा मूलमन्त्रं शतंजपेत् ॥ जप्त्वाध्यायं हरिंसम्यक् प्रविश्याभ्यन्तरं शुचिः ॥ कृष्णोशीति च निर्माल्यं विष्वक्सेनाय निक्षिपेत् ॥ अर्घ्यं दत्वा शुद्धवत्या शुद्धतोयेन सेचयेत् ॥ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ॥ अपाᳬऽरेताᳬसिजिन्वति इति उष्णजलैः स्नपनंतत्रकारयेत् ॥ हरिं प्रक्षाल्य गोमूत्रैः गोमयेन विलेपयेत् ॥ क्षीरेणस्नापयेत्पश्चात दध्नावैतदनन्तरम् ॥

घृतैः संस्नाप्य विधिना धूपंदद्यात्सगुग्गुलम् ॥ प्रक्षाल्यचोष्ण-तोयेन फलतोयेनसेचयेत् । स्नापयेत् कदलीतोयैस्तदास्त्वि-क्षुरसेन च॥ यैमन्त्रैमन्त्र ये त्तोऽयम् तै मन्त्रैः स्नापयेद्धरिम्॥ पञ्चनद्यः सरस्वती मपियंतिसस्रोतसः ॥ सरस्वतीतु पञ्चधासो देशे भवत्सरित् इति ऋचापश्चान्नदीनदतडागैः स्नापयित्वा विधानेन वस्त्रयुग्ममुपाहरेत् ॥ कार्पासपट्ट सूत्रं वा कौशेयंवाथ भूषितम् ॥ बृहस्पते इति हरिपरिधायार्चयेत्क्रमात् ॥ गन्धा-दिभिः समभ्यर्च्य पार्षदान् पूजयेतत्तः ॥ निवेदयेत नैवेद्यं भक्ष्यंभोज्यं च पुष्कलम् ॥ पेयंचोष्यं तथा लेह्यं प्रभूतम् द्विज सत्तमः ॥ बलिंविनिःक्षिपेत् पश्चात् दिशासु विदिशासु च॥ ॐ नमः पार्षदेभ्योऽबलिंपीठेविनिः क्षिपेत् ॥ ततः प्रदक्षिणी कृत्य मण्डलं ब्राह्मणेनतु ॥ प्रविश्य भवनं भूयः सर्वमावश्यकं पठेत् ॥ पौराणैश्चस्तवैः स्तुत्वा महापुरुषपूर्वकैः ॥ दण्डवत् प्रणमेत् पश्चान्नृत्यगीतादिकञ्चरेत् ॥ दद्यात् सुवर्णंगावस्त्रं दक्षिणांदेशिकायतु ॥ वैष्णवान् पूजयेत् शक्त्या ब्राह्मणेभ्यश्च दक्षिणाम् ॥ यावत् सन्तोष्यचाचार्यं सन्ध्यायां बलिमाहरेत् बलिकर्म विधिश्चायं हयशीर्षेश्च विस्तरात् ॥ उक्तोऽतिव्यक्त-मेकत्रज्ञेयः स्यात् पञ्चरात्रके ॥ इत्यवभृथस्नानम् ॥

यज्ञ मण्डप में जाकर ब्राह्मण भोजन कराये पश्चात् दक्षिणा देवे । ब्राह्मणों से आशीर्वाद लेवे ॥

अथ पूजाविधिः

यथा कामनया वस्त्र युग्मं परिधाय तिलकं चन्दनादिनाकृत्वा पूजागृह समीपमागत्य ॥ सूर्यः सोमोयमः कालो महाभूतानि

पञ्च च ॥ एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः ॥ देवि ! त्वं प्राकृतं चित्तं पापाक्रांतमभून्मम ॥ तन्निःसारयचित्तान्मे पापं फट्फट् ते नमः ॥ इति मन्त्रेण पापोत्सादनं कृत्वा ॥ वज्रोदके हूं फट् स्वाहा ॥ इति मन्त्रेण जलमानीय आसनमभ्युक्ष्योपविश्य ॥ ॐ विशुद्धे सर्वपापानि शमयाशेषविकल्पानयनापहं इति मन्त्रेण हस्तौपादौ प्रक्षाल्य ॥ ॐ हूं स्वाहेत्याचम्य ॥ शिखाबन्धनम् कृतं चैतेनैव मन्त्रेण विधायसामान्यार्घ्यं स्थापयेत् ॥ यथा स्ववामे त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलं कृत्वा ॥ ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः ॥ इति सम्पूज्याधारं संस्थाप्य ॥ ॐ क्रः अस्त्राय फट् ॥ इति पात्रं प्रक्षाल्य आधारे निधाय ॥ ॐ क्रां हृदयाय नमः इति जलेन सम्पूर्य ॥ तीर्थान्यावाह्य ॥ ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ कावेरि नर्मदे सिंधो जलेऽस्मिन्संनिधिं कुरु ॥ इति मन्त्रेणांकुशमुद्रया सूर्यमण्डलात्तीर्थान्यावाह्य ॥ ओं मितिगन्धादि निक्षिप्य ॥ वमिति धेनुमुद्रां प्रदर्शयेदिति सामान्यार्घ्यः ततस्तेन जलेन पूजागृहद्वारं प्रोक्ष्य द्वारदेवताः पूजयेत् ॥ द्वारोर्ध्वे गं गणपतये नमः ॥ वामे क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ दक्षे वां वटुकाय नमः ॥ अधः यां योगिनीभ्यो नमः ॥ एवं क्रमेण ऊर्द्ध्वे गं गंगायै नमः ॥ वामे यं यमुनायै नमः नमः ॥ दक्षे श्रीं लक्ष्म्यै नमः ॥ अधः ऐं सरस्वत्यै नमः ॥ एवं पूर्वादि द्वाराणि पूजयेत् ॥ द्वारश्रि इदमर्घ्यं परिकल्पयामि ॥ ततो ॥ द्वारपानाम्बलोकस्य द्वारं रक्षतु यत्नतः ॥ निवार्य विघ्नसंघातमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥ इति देवताज्ञां श्रावयित्वा वामाङ्गं संकोचयन्देहलीं लंघयन्दक्ष-

पादपुरःसरमंतः प्रविश्य ॥ ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेत-गुह्यकाः ॥ ये चात्रनिवसंत्यन्ये देवता भुवि संस्थिताः ॥ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भुविसंस्तिाः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ ॐ सर्वविघ्नानुत्सारयोत्सारय हूं फट् स्वाहा ॥ एभिरभिमन्त्रेण वामपार्ष्णिघातेनोर्ध्वोर्द्धताल त्रयेण निमेपरहित दृष्टया च भौमांतरिक्षदिव्यान्विघ्नानुत्सार्य ॥ अर्घ्यजलेन तं गृहं प्रोक्ष्य ॥ नैऋतकोणे वास्तुपुरुषाय नमः ॥ ईशानकोणे दीपना-थाय नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥ ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्त-दहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुर्महसि ॥ इति भैरवाज्ञां गृहीत्वा ॥ ॐ रक्षरक्ष हूं फट् स्वाहेति भूमिपरिषिच्य ॐ पवित्र हूँ हूँ फट् स्वाहेति भूमिमभिमन्त्र्य ॥ ॐ आसुरेखे वज्ररेखे हुँफट् स्वाहेति भूमौ त्रिकोणमण्डलं कृत्वा ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥ तत्र कम्बला-द्यासनं संस्थाप्य ॥ आग्नेयादि कोणेषु प्रादक्षिण्येन गणेशाय नमः ॥ सरस्वत्यै नमः ॥ दुर्गायै नमः ॥ क्षेत्रपालाय नमः ॥ इत्यासनं सम्पूज्य हस्तंधृत्वा ॥ आसनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः ॥ ॐ पृथ्वि त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुनाधृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इति पठित्वाऽधोभागे विष्टरं दत्वा वीराद्यासनेनोदङ्मुखं उपविशेत् ॥ ततः पूजा द्रव्यं स्वीकृत्य ॥ दक्षे गुं गुरुभ्यो नमः ॥ वामे गं गणपतये नमः ॥ मध्ये चण्डिकादेव्यै नमः ॥ इति नत्वा ॥ वामे अर्घ्यं संस्थाप्य ॥ किंचिज्जलं प्रोक्षणीपात्रे निधाय तेन जलेनात्मानं पूजोपकरणं

प्रोक्ष्य स्वदक्षभागे पुष्पादिकं ॥ स्वपृष्ठभागे करप्रक्षालनाथ पात्रं ॥ देवीपृष्ठभागे पूजाद्रव्याणि संस्थाप्य ॥ ॐ पुष्पकेतु राजार्हत शताय सम्यक् संवद्धाय ॥ ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे ॥ पुष्पं च योवकीर्णं हुँ फट् स्वाहेति मन्त्रेण पुष्प शुद्धिं विधाय ॥ ॐ ह्रीं हूँ फट् इति मन्त्रेण नाराच-मुद्रया समदृष्ट्यावलोकनेन च गन्धादिसर्वसंभारशुद्धिं विधाय ॥ रमिति दीपशिखां स्पृष्ट्वा ॥ ॐ हुँ फट् स्वाहेति मन्त्रेण कायवाक् चित्तशोधनं विधाय ॥ रक्षरक्ष हुँ फट् स्वाहेति हृदि हस्तं दत्वा आत्मरक्षांविधाय ॥ चन्दनाक्तानिपुष्पाणि कराभ्यां मर्दयित्वा तानि वामहस्ते समादायाघ्राय ॥ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसति हिंसकाः ॥ मृत्युरोगभयक्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके ॥ इति मन्त्रेण ईशान्यां दिशि दूरतः क्षिप्त्वा ॥ नवार्णेन तालत्रयं दिग्बन्धनं च कृत्वा ॥ काली कूर्चं वधूर्माया फडन्ता परमेश्वरि ॥ पञ्चाक्षरी चण्डिकाया-कुल्लुका इति विशुद्धेश्वर तन्त्रे ॥ इति कुल्लुकांमूर्द्धिन विचिन्त्य आचमनं कुर्यात् मूलं आत्मतत्वाय स्वाहा ॥१॥ मूलं विद्यातत्वाय स्वाहा ॥२॥ मूलं शिवतत्वाय स्वाहा ॥३॥ इत्याचम्य ॥ मूलेन इतिद्विरोष्ठावुन्मृज्य ॥ मूलेन इति करं प्रक्षाल्य जलेन सप्त छिद्राण्युपस्पृशेत् ॥ ॐ महाकाल्यै नमः आस्ये ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ ॐ महासरस्वत्यै नमः नसोः ॥ ॐ नन्दजायै नमः ॥ ॐ रक्तदन्तिकायै नमः नेत्रयोः ॥ ॐ शाकंभर्य्यै नमः ॥ ॐ दुर्गायै नमः श्रोत्रयोः ॥ ॐ भीमायै नमः नाभौ ॥ ॐ भ्रामर्यै नमः उरसि ॥ ॐ अष्टादश भुजायै

नमः शिरसि ॥ ॐ अष्टभुजायै नमः ॥ ॐ दशभुजायै नमः भुजयोः ॥ एवं अङ्गानि स्पृष्ट्वा ॥ हुँ हं ह्रीं अस्त्राय फट् ॥ अनेन दिग्बन्धनं कृत्वा प्राणायामं कुर्यात् ॥ यथा मूलाधारे मनः संयोज्य दक्षिणांगुष्ठेन दक्षिणनासापुटं धृत्वा प्रणवं मूलाद्यबीजं वा षोडशवारं जपन् वामनासया वायुमापूर्य कनिष्ठानामिकाभ्यां वामनासापुटं धृत्वा चतुःषष्टि (६४) वारं जपन् वायुं स्तम्भयित्वा ॥ दक्षिण नासया द्वात्रिंशद्वारं (३२) जपन् रेचयेदित्येकः ॥ पुनस्तेनैव मानेन दक्षिणनासापुटं प्रपूर्य कुम्भयित्वा वामेन रेचयेदिति द्वितीयः ॥ पुनराद्यवत्तृतीयः मूलेन चैकेन पूरकं चतुर्भिः कुम्भकं द्वाभ्यां रेचकमित्येवं प्राणायामं विधाय ॥

भूत शुद्धिं कुर्यात्

यथा हूँकारेण मूलाधारात्कुण्डलिनीमुत्थाप्य जीवात्मनासंयोज्य हंस इति मन्त्रेण परमात्मनिविलोपयेत् ॥ ततः पादादिजानुपर्यन्तं स्थितां पृथ्वीं जान्वादि नाभिपर्यन्तं स्थितामप्सु प्रविलाप्य ताः ॥ नाभ्यादि हृदयान्तःस्थिते वह्नौ तं च हृदयादिभ्रूध्यान्तं प्रकृतौ तां च ब्रह्मणि विलापयेत् ॥ ततः पुरुषनिभं पापमनादिभवसञ्चितं ॥ ब्रह्महत्या शिरः स्कन्धं स्वर्णस्तेय भुजद्वयम् ॥ सुरापानहृदायुक्तं गुरुतल्पकटद्वयम् ॥ तत्संयोगिपदद्वंद्वसंगप्रत्यङ्गपातकम् ॥ उपपातकरोमाणां रक्तश्मश्रुविलोचनम् ॥ खड्गचर्मधरं पापमंगुष्ठपरिमाणकम् ॥ अधोमुखं कृष्णवर्णं वामकुक्षौविचिन्त्ययेत् ॥ इति पापपुरुषं विचिन्त्य यमिति बीजेन षोडशवारमावृत्तेन वामनासया वायु-

मापूर्यनाभौ संयोज्य तत्र यं संचिन्त्य सपापं देहं विशोष्य रमिति चतुःषष्टिवारमावृतेनबीजेन कुम्भक प्रयोगेन मूलाधारे संयोज्य रं सचिन्त्य सपापं देहं भस्मान्तं संदह्य पुनर्यमिति बीजेन द्वात्रिंशद्वारमावृतेन दक्षिणनासया पापपुरुष भस्म रेचयेत् ॥ ततो वमिति बीजजपात् ललाटेचन्द्रान्मातृकावर्ण-मयीममृतवृष्टिं निपात्य भस्माप्लाव्य न्यासक्रमेणावयवान् निष्पाद्य ॥ लमितिजपाद्दृढीकृत्य ॥ परमात्मनः प्रकृतिं तस्याः महत्तत्वं ततोऽहंकारं तस्मादाकाशं ततो वायुं तस्मात्तेजस्त-स्माज्जलं तस्मात्पृथिवीं निगम्य स्वस्वस्थाने स्थापयित्वा ब्रह्मरन्ध्रस्थ परमात्मनः सकाशात् सोऽहमिति मन्त्रेण जीवात्मानं प्रदीपकलिकाकारं कुण्डलिनीद्वारहृदयकमलमानीय कुण्डलिनीं मूलाधारे स्थापयित्वा स्वशरीरं निरस्तसमस्तकिल्बिषं देव-ताराधनयोग्यं विभावयेदितिभूतशुद्धिः ॥ एवं भूतशुद्धिं कृत्वा स्वशरीरे चण्डिकायाः प्राणान्प्रतिष्ठापयेत् ॥

अथ स्वप्राणप्रतिष्ठाप्रकारः

ॐ अस्य स्वप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वराऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आँबीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं स्वशरीरे चण्डिकादेवता प्राणप्रतिष्ठापने विनि-योगः ॥ अथ ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ ॐ ऋग्यजुस्सामानि छन्दोभ्यो नमः मुखे ॥ ॐ प्राणशक्त्यै नमो हृदि ॥ ॐ आँ बीजाय नमो गुह्ये ॥ ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ॐ क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥ अथाक्षरन्यासः ॥ ॐ ङं कं खं घं गं

नमो वाय्वग्निवाभूम्यात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ (हृदयायनमः) ॐ ञं चं छं झं जं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः ॥ (शिरसे स्वाहा) ॐ णं टं ठं ढं डं श्रोत्र त्वङ्नयन जिह्वाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः (शिखायैवषट्)॥ ॐ नं तं थं धं दं वाक्पाणीपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः ॥ (कवचाय हूं) ॐ मं पं फं भं बं वक्तव्यादानगमन-विसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ (नेत्रत्रयायवौषट्) ॐ शं यं रं वं लं हं षं क्षं सं लं वक्तव्याद्या बुद्धिमनोहंकार-चित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्रायफट्) इति षडङ्ग न्यासः एवं हृदयादिकरषडंगन्यासान् कृत्वा ॥ नाभेरारभ्य पादान्तम् (आँ) इतिपाशबीजं स्मरेत् ॥ हृदयादाभ्यनाभ्यन्तम् (ह्रीं) इति शक्ति बीजं न्यसेत् ॥२॥ मस्तकादारम्य हृदयान्तम् (क्रों) इति सृणि बीजं स्मरेत् ॥३॥ ॐ यं त्वगात्मने नमः ॥ ॐ रं असृगात्मने नमः ॥ ॐ लं मांसात्मने नमः ॥ ॐ वं मेदात्मने नमः ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः ॥ ॐ षं मज्जात्मने नमः ॥ सं शुक्रात्मने नमः ॥ ॐ हों ओजात्मने नमः ॥ ॐ ॐ हं प्राणात्मने नमः ॥ ॐ सं जीवात्मने नमः इति दृष्ट्वा हृदि विन्यसेत् ॥ ॐ यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं इति मूर्द्धादि चरणावधि व्यापकं कुर्यात् ॥४॥ ततः ॐ मण्डूकादि परतत्वांत पीठदेवताभ्यो नमः ॥१॥ ॐ जयादि शक्तिभ्यो नमः ॥२॥ इति नत्वा ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों पीठाय नमः इति पीठेप्राणशक्ति देवीं ध्यायेत् ॥ ध्यानम् ॥ ॐ पाशांचापासृक्कपाले सृणी-छूपूल्लं हस्तर्बिभूतीं रक्तवर्णम् ॥ रक्तोदिन्वत्पोतरक्ताम्बुजस्थां

देवीं ध्याये प्राणशक्तिं त्रिनेत्रां॥ इति ध्यात्वा हृदि करं निधाय॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हं सः॥ ॐ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः प्राणाः इह स्थिताः (प्राणाः) ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं ह्रीं हं सः ॐ मम शरीरे चण्डिका देवताया जीव इह स्थितः (जीवः)॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हं सः॥ ॐ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा॥३॥ इति वारत्रयेण स्वशरीरे चण्डिका देवतायाः प्राणान् प्रतिष्ठाप्य॥ ततः ॐ इति प्रणवेन पञ्चदशावृत्तिं कृत्वा अनेन मम देहस्थचण्डिकायाः गर्भाधानादि पञ्चदशसंस्कारान्संपादयामि॥ एवं प्राणान्प्रतिष्ठाप्य॥ देवीभूत्वा देवीं यजेत चण्डिकारूपमात्मानं भावयेदिति प्राणप्रतिष्ठा॥

अथोऽन्तरमातृकान्यासः

अथाऽन्तरमातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः गायत्रीछन्दः मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं अखिलाप्तये न्यासे विनियोगः॥ इति जलं भूमौ निक्षिप्य प्राणायामं कुर्यात्॥ तथा च इडया॥ अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ अं अः एभिः स्वरैः पूरयेत्॥ पुनः कु चु टु तु पु इति पञ्चवर्गकेन कुम्भयेत्॥ पुनः य र ल व श ष स ह एभिरष्टवर्णैः रेचयेत् इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादि न्यासं कुर्यात्॥ तथा च ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि॥ ॐ इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं मुखे॥ ॐ उं सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदये॥ ॐ एं हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये॥ ॐ ओं स्वरेभ्यो

शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ॥ ॐ अं क्षं कीलकाय नमः अः सर्वाङ्गे ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां (हृदयाय) नमः ॥ ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा) ॥ ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्) ॥ ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हूम्)॥ ॐ ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयाय वौषट्) ॥ ॐ अं यं रं लं व शं षं हं लं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)॥ इति करन्यासः ॥ एवं हृदयादिकरपडंगन्यासान् कृत्वा ॥ ततः कण्ठस्थ षोडशदलपद्मे [ॐ अं नमः एवं क्रमेण सर्वत्र]ॐ आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः इति षोडश स्वरान्न्यसेत् ॥ पुनः हृदिस्थद्वादशदले ॐ कं नमः एवं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं नमः ॥ इति द्वादशवर्णान् विन्यसेत् ॥ ततः नाभौ दशदले ॐ डं नमः इति एवं ढँ णँ तँ थँ दँ धँ नँ पँ फँ नमः इति दशवर्णान्न्यसेत् ॥ अधोलिंगे षड्दले ॐ बँ नमः एवं ॐ भँ मँ यँ रँ लँ इति षड्वर्णान् विन्यसेत् ॥ आधारे [गुदे] चतुर्दले ॐ वँ नमः एवं शं षं सं इति चतुर्वर्णान्न्यसेत् ॥ पुनः ललाटे द्विदले ॐ हं नमः ॐ क्षं नमः द्वौवर्णौ न्यसेत् ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ आधारे लिङ्गनाभं प्रकटित हृदये तालुमूले ललाटे द्वेपत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के ॥ वासान्ते बालमध्ये डफकठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां हं क्षं तत्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ इत्यन्तरमातृकान्यासः ॥

अथ बहिर्मातृकान्यासः

जयार्थं सर्वदेवानां विन्यासे च लिपेर्विना ॥ कृते तद्विफलं विद्या-त्तदादौ तु लिपिं न्यसेत् ॥ ॐ अस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीछन्दः मातृका सरस्वतीदेवीदेवता हलो-बीजानि स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं अखिलाप्तये न्यासे विनि-योगः ॥ प्राणायामं कुर्यात् ॥ तथा च इडया अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ अं अः एभिः स्वरैः पूरयेत् ॥ पुनः कु चु टु तु पु एभिः पञ्चवर्गकेन कुम्भयेत् ॥ पुनः अष्टभिः ॥ य र ल व श ष स ह आदिना रेचयेत् ॥ इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादिन्यासं कुर्यात् ॥ तथा च ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आँ शिरसि ॥ ॐ इँ गायत्री छन्दसे नमः ईं मुखे ॥ ॐ उँ सरस्वती देवतायै नमः ऊँ हृदि ॐ एँ हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः ऐँ गुह्ये ॥ ॐ ओं स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ॥ ॐ अँ क्षँ कीलकाय नमः अः सर्वाङ्गे ॥ ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अँ कँ ५ आं अंगु-ष्ठाभ्यां नमः हृदयाय० ॥ ॐ इँ चँ ५ ईं तर्जनीभ्यां शिरसे स्वाहा ॥ ॐ उं टं ५ ऊं मध्यमाभ्यां शिखायै वषट् ॥ ॐ एं तं ५ ऐं अनामिकाभ्यां कवचाय हुम् ॥ ॐ पं ५ औं कनिष्ठिकाभ्यां नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट् ॥ ध्यानम् ॥ मृगबालं वरं विद्यामक्ष सूत्रं दधत्करैः ॥ मालाविद्यालसद्धस्तां वहन्ध्येयः शिवो-गिरः । ततः बहिर्मातृकान्यासं कुर्यात ॥ ॐ अं नमः शिरसि ॥ ॐ आं नमः मुखे ॥ ॐ इं नमः दक्षिणनेत्रे ॥ ॐ ईं नमः वामनेत्रे ॐ उं नमः दक्षिणकर्णे ॥ ॐ ऊं नमः वामकर्णे ॥ ॐ

ॠं नमः दक्षिणनासापुटे ॥ ॐ ऋं नमः वामनासापुटे ॥ ॐ लृं नमः दक्षिणकपोले ॥ ॐ लॄं नमः वामकपोले ॥ ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे ॥ ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ॥ ॐ औं नमः अधोदन्तपंक्तौ ॥ ॐ अं नमः मूर्द्धनि ॥ ॐ अः नमः मुखवृत्ते ॥ ॐ कं नमः दक्षिणबाहुमूले ॥ ॐ खं नमः द० कूर्परे ॥ ॐ गं नमः द०मणिबन्धे ॐ घं नमः द० हस्तांगुलिमूले ॥ ॐ ङं नमः हस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ चं नमः वामबाहुमूले ॥ ॐ छं नमः वा० कूर्परे ॥ ॐ जं नमः वा० मणिबन्धे ॥ ॐ झं नमः वा० हस्तांगुलिमूले ॥ ॐ ञं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ ॐ टं नमः दक्षिणपादमूले ॥ ॐ ठं नमः द० जानुनि ॥ ॐ डं नमः द० गुल्फे ॥ ॐ ढं नमः द० पादांगुलिमूले ॥ ॐ णं नमः द० पादांगुल्यग्रे ॥ ॐ तं नमः वामपादमूले ॥ ॐ थं नमः वामजानुनि ॥ ॐ दं नमः वामगुल्फे ॥ ॐ धं नमः वामपादांगुलिमूले ॥ ॐ नं नमः वा० पादांगुल्यग्रे ॥ ॐ पं नमः दक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ फं नमः वामपार्श्वे ॥ ॐ बं नमः पृष्ठे ॥ ॐ भं नमः नाभौ ॥ ॐ मं नमः उदरे ॥ ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि ॥ ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षांसे ॥ ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि [गर्दनमें] ॥ ॐ वं मेदात्मने नमः वामांसे ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षहस्तान्तम् ॥ ॐ षं मज्जात्मने नमः हृदयादि वामहस्तान्तम् ॥ ॐ सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्षपादान्तम् ॥ ॐ हं आत्मने नमः हृदयादिवामपादान्तम् ॥ ॐ लं परमात्मने नमः जठरे ॥ ॐ क्षं प्राणात्मने नमः मुखे ॥

इति विन्यस्य ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्त मुखदोः यत्सन्धिवक्षःस्थलां भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुङ्गस्तनीम् ॥ मुद्रामक्षगुणं सुदाढ्यं कलशं विद्यां च हस्ताम्बुजैर्बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये ॥१॥ इति बहिर्मातृकान्यासः ॥

पाठविधिः

आधारं स्थापयित्वा तु पुस्तकं वाचयेत्ततः ॥ हस्ते संस्थापनाद् देवि ! भवेदर्धफलं यतः ॥ यावन्नपूर्यतेऽध्यायस्तावन्नविरमेत्पठन् ॥ यदि प्रमादादध्याये विरामो भवति प्रिये ! ॥ पुनरध्यायमारभ्य पठेत्सर्वं मुहुर्मुहुः ॥ अनुक्रमात्पठेद् देवि शिरः कम्पादिकं त्यजेत् ॥

वाराहीतन्त्रे

देहसंरक्षणार्थाय कवचमादौततोऽर्गलाम् ततः कीलकम्पठेत् पश्चात् सप्तसत्यास्तवं जपेत् ॥१॥ रात्रिसूक्तं जपेदादौ मध्ये सप्तशतीस्तवम् ॥ अन्ते तु जपनीयं वै देवीसूक्तमितिक्रमः ॥२॥ एवं सम्पुटितं स्तोत्रं सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥३॥ पञ्चावृत्तौ स्वर्णमेकं त्रिरावृत्तौ तदर्धकम् ॥ एकावृत्तौ पादमेकं दद्याद्वाशक्तितोबुधः ।४। अन्यः क्रमः॥ अर्गलंकीलकश्चादौ जपित्वा कवचं पठेत् ॥ जपेत्सप्तशतीं पश्चाद्क्रम एष शिवोदितः ॥५॥ प्रथमं चरितं प्रोक्तं मधुकैटभनाशनम् ॥ द्वितीयं विद्धि चरितं महिषासुरघातनम् ॥६॥ उत्तमं चरितं ज्ञेयं शुम्भदैत्यवधान्वितम् ॥ चरितानि जपेत् त्रीणि सरहस्यान्यतन्द्रितः ॥७॥ तथा शतमादौ शतंचान्ते जपेन्मन्त्रं नवार्णकम् ॥ चण्डी सप्तशती मध्ये

सम्पुटोऽयमुदाहृतः ॥ सकामः सम्पुटोजाप्यो निष्कामः सम्पुटं विना ॥

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॥

संकल्पः

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॥ श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे (सप्तमे) वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम-चरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तस्य अमुकैकदेशे अमुके श्रीशालीवाहनशाके अमुकनामसम्वत्सरे तथा च अमुके श्रीविक्रमवर्षे अमुकसम्वत्सरे अमुकायने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशि-स्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्य-तिथौ मम अमुकगोत्रोत्पन्नस्य अमुक शर्मणः (वर्मणः गुप्तस्य दासस्य वा) सपरिवारस्य आत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तपुण्य-फलावाप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभिवृद्ध्यथमप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्त-लक्ष्मी चिरकालसंरक्षणार्थं सकलमनईप्सितकामनासंसिद्ध्यर्थं लोके वा सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादिप्राप्त्यर्थं तथा च मम सभार्यस्य सपुत्रस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य स पशोः समस्तभयव्याधिजरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यै-

श्वर्याभिवृद्धयर्थं तथा च मम जन्मराशेरखिलकुटुम्बस्य वा जन्मराशेः सकाशाद्येकेचिद्विरुद्धचतुर्थाष्टमस्थानस्थिताः क्रूर-ग्रहाः तैः सूचितं सूचयिष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टन्तद्विनाशद्वारा सर्वदा तृतीये एकादशस्थानस्थितवच्छुभफलप्राप्त्यर्थं पुत्र-पौत्रादि सन्ततेरविच्छिन्नवृद्धयर्थमादित्यादिनवग्रहानुकूल-तासिध्यर्थमिन्द्रादिदशदिक्पालप्रसन्नतासिध्यर्थमाधिदविका ऽऽधिभौतिकाध्यात्मिकत्रिविधतापोपशमनार्थं धर्मार्थकाम-मोक्षफलावाप्त्यर्थमद्य वा अद्यारभ्य अमुककालपर्यन्तं त्रिगु-णात्मिका श्रीदुर्गाप्रीतिद्वारा मनोऽभिलपितकामनासंसिद्ध्यर्थं यथासंपादितसामग्र्या पूजनपूर्वकं यथासंख्यक श्रीदुर्गासप्तशती पाठाख्यं कर्म करिष्ये ॥ तदंगत्वेनादौ कवचार्गलाकीलकनवार्ण मन्त्रजपं रात्रिसूक्तं चरितत्रयस्य न्यासादिकं विधाय सप्तशती पाठान्त उत्तरन्यासादिके नवार्णमन्त्रजपं देवीसूक्तं तथा च रहस्यत्रयपाठं च करिष्ये ॥ यजमानपक्षे करिष्यामि ॥

शापोद्धार मन्त्रः

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिके देवि शापानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति सप्तवारं जपेत् ॥ ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ २१ वारं पठादौ पाठान्ते च जपेत् ॥ ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापविमोचन-मन्त्रस्य. वशिष्ठनारदसम्वादसामवेदाधिपतिब्रह्माण ऋपयः सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गादेवता चरित्रत्रयं बीजं ह्रीं शक्तिः त्रिगुणात्मस्वरूपिणे चण्डिकाशापविमुक्तौ मम संकल्पितकार्य-सिध्यर्थे जपे विनियोगः ॥

अथ चण्डिशापविमोचनम्

ॐ (ह्रीं) रीं रेतःस्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्तो भव॥१॥ ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुर सैन्यनाशिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥२॥ ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥३॥ ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥४॥ ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसम्वादिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥५॥ ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥६॥ ॐ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥७॥ ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥८॥ ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥९॥ ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥१०॥ ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुतिन्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव ॥११॥ ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥१२॥ ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥१३॥ ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥१४॥ ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मवशिष्ठ-

विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥१५॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥१६॥ ॐ क्रीं काल्यै काली ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेद स्वरूपिण्यै ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव ॥१७॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-स्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मकायै दुर्गादेव्यै नमः ॥१८॥ इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वर ! ॥ चण्डीपाठं दिवारात्रौ कुर्यादेव न संशयः ॥१९॥ एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः ॥ आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्नसं-शयः ॥२०॥ इति चण्डीशाप विमोचनम् ॥

अथ सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

शिव उवाच

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्॥ येन मंत्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत् ॥१॥ न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ॥ न सूक्तं नापि ध्यानञ्च न न्यासो न च वार्चनम् ॥२॥ कुञ्जिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ॥ अतिगुह्यतरं देवि! देवानामपि दुर्लभम् ॥३॥ गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ! ॥ मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्॥ पाठ-मात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥४॥

अथ मन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥ नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि ॥ नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥१॥ नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिनि ॥२॥ जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे ॥ ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका ॥३॥ क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥ चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ॥४॥ विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥५॥ धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी ॥ क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥६॥ हुँ हुँ हुँकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी ॥ भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥७॥ अं कं चं टं तं पं यं सं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥ पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥८॥ सां सीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धिं कुरुष्व मे ॥ इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागर्तिहेतवे ॥ अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ! ॥ यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ॥ न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥ इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ देव्याः कवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुप्छन्दः चामुण्डा देवता अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम् दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम् श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ॥

अथ ध्यानम्

सृष्टौ संस्थापनाय त्वपहरणविधौ मोहनेऽनुग्रहेऽपि ॥ सर्वेषा-मर्गलानां निजमहिमवशात्सङ् क्रमेणैव यालम् ॥ नित्यं क्रीडा प्रसक्ता रचयति सकलं स्वात्मशक्त्या प्रपञ्चम् ॥ सा नस्त्राणाय भूयादभिमतफलदा भद्रकाली च काली ॥२॥ अष्टादशभुजां सिद्धां सर्वतेजोंऽशसम्भवाम् ॥ त्रिगुणान्तां महालक्ष्मीं वन्दे महिषमर्दिनीम् ॥२॥ ॐ महिषघ्नि महामाये चामुण्डेमुण्डमा-लिनी ॥ काम्यादिचिन्तितं देवि देहि मे ब्रह्मचारिणी ॥४॥

ॐ नमश्चण्डिकायै

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥ यन्नकस्यचिदा-ख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ! ॥१॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ॥ देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥२॥ प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ॥ तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥३॥ पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ॥ सप्तमं काल-रात्रीति महागौरीतिचाष्टमम् ॥४॥ नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः॥ उक्तान्येतानिनामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥५॥

अग्निनादह्यमानस्तु शत्रुमध्येगतोरणे ॥ विषमे दुर्गमेचैव भयार्ताः शरणंगताः ॥६॥ न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसङ्कटे ॥ नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयंनहि ॥७॥ यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ॥ ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥८॥ प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ॥ ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुड़ासना ॥९॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ॥ लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ॥१०॥ श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ॥ ब्राह्मी हंससमारुढा सर्वाभरणभूषिता ॥११॥ इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ॥ नानाभरण-शोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ॥१२॥ दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ॥ शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसला-युधम् ॥१३॥ खेटकंतोमरंचैव परशुं पाशमेव च ॥ कुन्तायुधं त्रिशूलञ्च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥१४॥ दैत्यानांदेहनाशाय भक्तानामभयाय च ॥ धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानाञ्चहिताय वै ॥१५॥ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ॥ महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनी ॥१६॥ त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणांभयवर्धिनि ॥ प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्नि-देवता ॥१७॥ दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी ॥ प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यांमृगवाहिनी॥१८॥ उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी ॥ ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा ॥१९॥ एवं दशदिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ॥ जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥२०॥ अजिता

वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ॥ शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥२१॥ मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी ॥ त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥२२॥ शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ॥ कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी ॥२३॥ नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ॥ अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥२४॥ दन्तान्रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका ॥ घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥२५॥ कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्वमङ्गला ॥ ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥२६॥ नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी ॥ स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ॥२७॥ हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ॥ नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥२८॥ स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोकविनाशिनी ॥ हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥२९॥ नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ॥ पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ॥३०॥ कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्यवासिनी । जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥३१॥ गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ॥ पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ॥३२॥ नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ॥ रोमकूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥३३॥ रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ॥ अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥३४॥ पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ॥ ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्व-

सन्धिषु ॥३५॥ शुक्रं ब्रह्माणी मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ॥ अहंकारं मनोबुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥३६॥ प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ॥ वज्रहस्ता च मे रक्षेत्प्राणं कल्याण-शोभना ॥३७॥ रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ॥ सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥३८॥ आयू रक्षतु वाराही धर्म रक्षतु वैष्णवी॥ यशः कीर्तिश्चलक्ष्मीश्च धनंविद्याश्च चक्रिणी ॥३९॥ गोत्रमिन्द्राणी मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ॥ पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी॥४०॥ पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरीतथा ॥ राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ॥४१॥ रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ॥ तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ॥४२॥ पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ॥ कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥४३॥ तत्रतत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ॥ यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ॥ परमैश्वर्य-मतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥४४॥ निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः ॥ त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥४५॥ इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ॥४६॥ दैवीकला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ॥ जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्यु-विवर्जितः ॥४७॥ नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ॥ स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमंचापियद्विषम् ॥४८॥ अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ॥ भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चो-पदेशिकाः ॥४९॥ सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी

तथा ॥ अन्तरिक्षचराघोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥५०॥ ग्रह-भूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥५१॥ नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ॥ मानान्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं परम् ॥५२॥ यशसा वर्द्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले ॥ जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ॥५३॥ यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनका-ननम् ॥ तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ॥५४॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥ प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥५५॥ लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॥ॐ॥५६॥ इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम् ॥

अथार्गलास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहालक्ष्मीर्देवता श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥१॥ जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ॥ जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥२॥ मधुकैटभविद्राविविधातृवरदे नमः॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥३॥ महिषासुरनिर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥४॥ रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि ॥ रूपं देहि

जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥५॥ शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनी ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥६॥ वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥७॥ अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥८॥ नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥९॥ स्तुवद्भ्यो भक्ति-पूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१०॥ चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥११॥ देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१२॥ विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१३॥ विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१४॥ सुरासुरशिरोरत्ननि-घृष्टचरणेऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१५॥ विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं च मां कुरु ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१६॥ प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१७॥ चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१८॥ कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१९॥ हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं

देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२०॥ इन्द्राणीपति-सद्भावपूजिते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२१॥ देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२२॥ देवि भक्तजनोद्दाम-दत्तानन्दोदयेऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२३॥ पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ॥ तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥२४॥ इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ॥ स तु सप्तशतीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम् ॥२५॥ इति देव्या अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ कीलकम्

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहासरस्वती देवता श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै

मार्कण्डेय उवाच

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ॥ श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे ॥१॥ सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामभिकीलकम् ॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥२॥ सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ॥ एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्ध्यति ॥३॥ न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते ॥ विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥४॥ समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः ॥ कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥५॥ स्तोत्रं वै

चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः ॥ समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥६॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः ॥ कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥७॥ ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति ॥ इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥८॥ यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ॥ स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥९॥ न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते ॥ नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥१०॥ ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्य कुर्वाणो विनश्यति ॥ ततो ज्ञात्वैव सम्पन्न-मिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥११॥ सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने ॥ तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जप्यमिदं शुभम् ॥१२॥ शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः ॥ भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥१३॥ ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः ॥ शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ॥ॐ॥१४॥ इति देव्याः कीलकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ नवार्णविधिः

श्रीगणपतिर्जयति ॥ ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्योदेवताः ऐं बीजम् ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टु-प्छन्देभ्यो नमो मुखे ॥ महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती देवताभ्यो नमो हृदि ॥ ऐं बीजाय नमः गुह्ये ॥ हस्त-

प्रक्षालनं कुर्यात् ॥ ह्रीं शक्तयेनमः पादयोः ॥ क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति मूलेन करौ संशोध्य ॥ ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादिन्यासः ॥ ॐ ऐं हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ क्लीं शिखायै वषट् ॥ ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् ॥ ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् ॥ ततोऽक्षरन्यासः॥ ऐं नमः शिखायाम् ॥ ॐ ह्रींनमः दक्षिणनेत्रे ॥ ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे ॥ ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे ॥ ॐ मुं नमः वामकर्णे॥ ॐ डां नमः दक्षिण नासापुटे ॥ ॐ यैं नमः वामनासापुटे ॥ ॐ विं नमः मुखे ॥ ॐ च्चें नमः गुह्ये ॥ एवं विन्यस्याऽष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात् ॥ ॐ ऐं प्राच्यै नमः ॥ ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः ॥ ॐ ह्रीं दक्षिणाय नमः ॥ ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः ॥ ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः ॥ ॐ क्लीं वायव्यै नमः ॥ ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः ॥ ॐ विच्चे ईशान्यै नमः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः ॥

अथ ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥ नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो

हन्तुं मधुं कैटभम् ॥१॥ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिञ्च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ॥ शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ॥ गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥३॥

ततः मालां संपूज्य प्रार्थयेत्

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणी । चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे । जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥ इति मालां संप्रार्थ्य ॥ ॐ सिद्ध्यै नमः इति मालां नत्वा (ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे) इति मन्त्रमष्टोत्तरशतं १०८ सहस्रं १००८ वा अयुतं १०००८ यथाशक्ति (महासरस्वत्यादि रूपे चिदानन्द मये चण्डिके त्वां ब्रह्मविद्या प्राप्त्यर्थं वयं सर्वदा ध्यायामः) इत्यर्थानुसन्धानपूर्वकं जपेत् ॥

अथ रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥१॥

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका । सुधात्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥२॥ अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्याविशेषतः ॥ त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं

देवि जननी परा ॥३॥ त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥४॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥५॥ महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥६॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥७॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥८॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥९॥ सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥१०॥ यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥११॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥१२॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥१३॥ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥१४॥ प्रबोधश्च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥१५॥ इति रात्रिसूक्तम्।

अथ सप्तशतीन्यासः

प्रथममध्यमोत्तरचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः श्रीमहाकाली महालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि

नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः रक्तन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि ऋग्यजुःसामवेदा ध्यानानि सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा । शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके । घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याञ्च चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि! ॥ मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते । यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ खड्गशूलगदादानि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके । करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा० हृदयाय नमः । शूलेन पाहि नो देवि० शिरसे स्वाहा । प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च० शिखायै वषट् । सौम्यानि यानि रूपाणि० कवचाय हुम् । खड्गशूलगदादीनि० नेत्रत्रयाय वौषट् । सर्वस्वरूपे सर्वेशे० अस्त्राय फट् ॥ ध्यानम् ॥ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् । हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

अथ श्रीदुर्गासप्तशतीप्रारभ्यते

प्रथमोऽध्यायः

ॐ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः महाकालीदेवता गायत्री छन्दः नन्दा शक्तिः रक्तदन्तिका बीजम् अग्निस्तत्त्वम् ऋग्वेदः स्वरूपम् श्रीमहाकाली प्रीत्यर्थं प्रथमचरित्रजपे विनियोगः ॥

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥ नीलाश्मद्युतिमास्यपाद-दशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै

ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच ॥१॥

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ॥ निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम ॥२॥ महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः ॥ स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥३॥ स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः ॥ सुरथो नाम राजाऽभूत्समस्ते क्षितिमण्डले ॥४॥ तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान् ॥ बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसि-नस्तदा ॥५॥ तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः ॥ न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥६॥ ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् ॥ आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रब-लारिभिः ॥७॥ अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः ॥ कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥८॥ ततो मृगयाव्याजेन

हृतस्वाम्यः स भूपतिः ॥ एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥९॥ स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः ॥ प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥१०॥ तस्थौ कंचित्सकालञ्च मुनिना तेन सत्कृतः ॥ इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे ॥११॥ सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः ॥ मत्पूर्वैः पालितं पू मया हीनं पुरं हि तत् ॥१२॥ मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा ॥ न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः ॥१३॥ मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते ॥ ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः ॥१४॥ अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम् ॥ असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥१५॥ सञ्चितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति ॥ एतच्चाऽन्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥१६॥ तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः ॥ स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ॥१७॥ सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे ॥ इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम्॥१८॥ प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्॥१९॥

वैश्य उवाच ॥२०॥

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥२१॥ पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः ॥ विहीनश्च धनैदारैः पुत्रैरादाय मे धनम् ॥२२॥ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः ॥ सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम् ॥२३॥ प्रवृत्तिं स्वजनानाञ्च दाराणाञ्चात्र संस्थितः ॥ किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम्॥२४॥ कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः

किं नु मे सुताः ॥२५॥

राजोवाच ॥२६॥

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः ॥२७॥ तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् ॥२८॥

वैश्य उवाच ॥२९॥

एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ॥३०॥ किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः ॥ यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ॥३१॥ पतिस्वजनहार्दञ्च हार्दि तेष्वेव मे मनः ॥ किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥३२॥ यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु ॥ तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यञ्च जायते॥३३॥ करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम्॥३४॥

मार्कण्डेय उवाच ॥३५॥

ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥३६॥ समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः ॥ कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् ॥३७॥ उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥३८॥

राजोवाच ॥३९॥

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥४०॥ दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना ॥ ममत्वं गतराजस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि ॥४१॥ जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम ! ॥ अयञ्च निःकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ॥४२॥ स्वजनेन च सन्त्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति ॥ एवमेष

तथाहञ्च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ॥४३॥ दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ ॥ तत्किमेतन्महाभाग ! यन्मोहो ज्ञानिनोऽपि॥४४॥ ममाऽस्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढ़ता ॥४५॥

ऋषिरुवाच ॥४६॥

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ॥४७॥ विषयाश्च महाभाग यान्ति चैवं पृथक् पृथक् ॥ दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे ॥४८॥ केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः ॥ ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किन्तु ते न हि केवलम् ॥४९॥ यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः॥ ज्ञानञ्च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम्॥५०॥ मनुष्याणाञ्च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः ॥ ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥५१॥ कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा॥ मानुषा मनुजव्याघ्र ! साभिलाषाः सुतान् प्रति ॥५२॥ लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि ॥ तथापि ममतावर्ते मोहगर्ते निपातिताः ॥५३॥ महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा ॥ तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥५४॥ महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत् ॥ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥५५॥ बलादाकृष्य[1] मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ तया विसृज्यते विश्वं जगतेतच्चराचराचरम् ॥५६॥ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ॥ सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥५७॥ संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥५८॥

---

१ शर्करा से

राजोवाच ॥५९॥

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥६०॥ ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज ! ॥ यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥६१॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥६२॥

ऋषिरुवाच ॥६३॥

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥६४॥ तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम ॥ देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ॥६५॥ उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते ॥ योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥६६॥ आस्तीर्य१ शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान् प्रभुः ॥ तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ॥६७॥ विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ ॥ स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥६८॥ दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम् ॥ तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः ॥६९॥ विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम् ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥७०॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥७१॥

ब्रह्मोवाच ॥७२॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥७३॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्याविशेषतः ॥७४॥ त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥ त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयै-

---

१ कमलबीज (कमलगट्टा) से

तत्सृज्यते जगत् ॥७५॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥७६॥ तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ महाविद्या महा-माया महामेधा महास्मृतिः ॥७७॥ महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ ॥७८॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ त्वं श्रीस्त्व-मीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥७९॥ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ खड्गिनी[१] शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥८०॥ शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डी-परिघायुधा ॥ सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥८१॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ यच्च किञ्चित्क्व-चिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥८२॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥८३॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतु-मिहेश्वरः ॥ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥८४॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि ! संस्तुता ॥८५॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥ प्रबोधश्च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥८६॥ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥८७॥

---

१ "खड्गिनी शूलिनी" इस मन्त्र से लेकर "विष्णुः शरीरग्रहण-महमीशान एव च" इस मन्त्र पर्यन्त अर्थात् ८० के मन्त्र से ८४ के मन्त्र तक जो ५ मन्त्र हैं उनके वदले मूलमन्त्र नवार्ण से ही हवन करें उनसे हवन न करें ।

ऋषिरुवाच ॥८८॥

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥८९॥ विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ॥ नेत्रास्यनासिकाबाहु-हृदयेभ्यस्तथोरसः ॥९०॥ निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्त-जन्मनः ॥ उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः ॥९१॥ एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ। मधुकैटभौ दुरात्माना-वतिवीर्यपराक्रमौ ॥९२॥ क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितो-द्यमौ। समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥९३॥ पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः। तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥९४॥ उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियता-मिति केशवम् ॥९५॥

श्रीभगवानुवाच ॥९६॥

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥९७॥ किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम ॥९८॥

ऋषिरुवाच ॥९९॥

वञ्चिताभ्यामिति१ तदा सर्वमापोमयं जगत् ॥१००॥ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः। आवां जहि२ न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥१०१॥

ऋषिरुवाच ॥१०२॥

तथेत्युक्त्वा३ भगवता शङ्खचक्रगदाभृता। कृत्वा चक्रेण वै

---

१ कर्पूर से

२ कमलबीज (कमलगट्टा) से

३ मधु, केला गुग्गुल, नागरपान से

च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥१०३॥ एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्। प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥ऐं ॐ१०४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

ॐ साङ्गायै१ सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै वागूभव बीजाधिष्ठातृ महाकाल्यै नमः स्वाहा ॥१॥

—— ० ——

द्वितीयोऽध्यायः

ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिर्महालक्ष्मीर्देवता उष्णिक्छन्दः शाकम्भरी शक्तिः दुर्गाबीजं वायुस्तत्त्वं यजुर्वेदः स्वरूपं श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुःकुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिञ्च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच ॥१॥

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा। महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ॥२॥ तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्। जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥३॥ ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्। पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुड-

---

१ मधु - पुष्प द्वारा एक आहुति दें

ध्वजौ ॥४॥ यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्। त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥५॥ सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च। अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥६॥ स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि। विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥७॥ एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्। शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥८॥ इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः। चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥९॥ ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः। निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शङ्करस्य च ॥१०॥ अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः। निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥११॥ अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्। ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥१२॥ अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्। एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥१३॥ यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाऽजायत तन्मुखम्। याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥१४॥ सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्। वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः ॥१५॥ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा। वसूनाञ्च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥१६॥ तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा। नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥१७॥ भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च। अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा ॥१८॥ ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्। तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषा-

र्दिताः ॥१९॥ शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्। चक्रञ्च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः ॥२०॥ शङ्खञ्च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः। मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥२१॥ वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः। ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात् ॥२२॥ कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ। प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥२३॥ समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः। कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम् ॥२४॥ क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे। चूड़ामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥२५॥ अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु। नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥२६॥ अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च। विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुञ्चातिनिर्मलम् ॥२७॥ अस्त्राण्यनेकरूपाणि१ तथाभेद्यञ्च दंशनम्। अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥२८॥ अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्। हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥२९॥ ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः। शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् ॥३०॥ नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्। अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा॥३१॥ सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः। तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥३२॥ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्। चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥३३॥

---

१ कर्पूर से

चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः। जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् ॥३४॥ तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः। दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥३५॥ संनद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः । आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥३६॥ अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः । स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥३७॥ पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्। क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम्॥३८॥ दिशो भुजसहस्रेणसमन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्। ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम्॥३९॥ शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम्। महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥४०॥युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः। रथानामयुतैःषड्भिरुदग्राख्यो महासुरः॥४१॥अयुध्यतायुतानाञ्च सहस्रेण महाहनुः। पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥४२॥ अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे। गजवाजि सहस्रौघैरनेकैः परिवारितः ॥४३॥ वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत। बिडालाख्योऽयुतानाञ्च पञ्चाशद्भिरथायुतैः ॥४४॥ युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः। अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः ॥४५॥ युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः। कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥४६॥ हयानाञ्च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः। तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥४७॥ युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः। केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे ॥४८॥ देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः। सापि देवी

ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥४६॥ लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी। अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ॥५०॥ मुमोचाऽसुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी। सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेशरी ॥५१॥ चाचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः। निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥५२॥ त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः। युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दपालासिपट्टिशैः ॥५३॥ नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः। अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खास्तथापरे ॥५४॥ मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे। ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्ति वृष्टिभिः ॥५५॥ खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्। पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् ॥५६॥ असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्। केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥५७॥ विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते। वेमुश्च किचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥५८॥ केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि। निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥५९॥ श्येनानुकारिणः[1] प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः। केषाञ्चिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥६०॥ शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः। विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥६१॥ एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः। छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥६२॥ कबन्धा युयुधुर्देव्या

१ सरसों से

गृहीतपरमायुधाः। ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥६३॥ कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः। तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥६४॥ पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा। अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः ॥६५॥ शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः। मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥६६॥ क्षणेन१ तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका। निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥६७॥ स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेशरः। शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥६८॥ देव्यार गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः। यथैषां तुष्टुवुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥ॐ६९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥१७३॥

ॐ साङ्गायै३ वीजाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा ॥

— —:०:— —

तृतीयोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्। हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

१ राई से

२ पुष्प, बिल्वपत्र से

३ गुग्गुल की एक आहुति दें

ॐ ऋषिरुवाच ॥१॥

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः । सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥२॥ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः । यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ॥३॥ तस्यच्छित्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान् । जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥४॥ चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजञ्चातिसमुच्छ्रितम् । विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥५॥ सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः । अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥६॥ सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि । आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥७॥ तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन । ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः ॥८॥ चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः । जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥९॥ दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत । तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः ॥१०॥ हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ । आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥११॥ सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम् । हुँकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥१२॥ भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः । चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत् ॥१३॥ ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः । बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥१४॥ युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ । युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥१५॥ ततो

वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा। करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् ॥१६॥ उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः। दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥१७॥ देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्। वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम् ॥१८॥ उग्रास्यमुग्रवीर्यञ्च तथैव च महाहनुम्। त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥१९॥ बिडालस्यासिना१ कायात्पातयामास वै शिरः। दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥२०॥ एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः। माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान्गणान् ॥२१॥ कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्। लाङ्गूलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्याञ्च विदारितान् ॥२२॥ वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च। निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले ॥२३॥ निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः। सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥२४॥ सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः। शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च ॥२५॥ वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत। लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥२६॥ धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः। श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥२७॥ इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्। दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत् ॥२८॥ सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्। तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥२९॥ ततः

१ नीम्बू कागजी से

सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः। छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत ॥३०॥ तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः। तं खड्गचर्मणा सार्द्धं ततः सोऽभून्महागजः ॥३१॥ करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च। कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥३२॥ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः। तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥३३॥ ततः१ क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्। पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥३४॥ ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः। विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥३५॥ सा च तान् प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः। उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम् ॥३६॥

देव्युवाच ॥३७॥

गर्ज गर्ज२ क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्। मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥३८॥

ऋषिरुवाच ॥३९॥

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्। पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥४०॥ ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः। अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः ॥४१॥ अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः। तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥४२॥ ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्। प्रहर्षञ्च परं जग्मुः सकला

---

१ दूध और गुड़ से   २ मधु से

३ लौकी (घिया) से

देवतागणाः॥४३॥ तुष्टुवुस्तां१ सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः। जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥४४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥२१७॥

ॐ साङ्गायै२ अष्टाविंशतिवर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा ॥२॥

——०——

चतुर्थोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्। सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं ध्यायेद्दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः॥

ॐ ऋषिरुवाच ॥१॥

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या। तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥२॥ देव्या३ यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या। तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥३॥ यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलञ्च। सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशाय

---

१ पान–सुपारी से

२ इस मन्त्र द्वारा गुग्गुल, उड़द, दही और खोवा से एक आहुति दें

३ केला से

चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥४॥ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताऽस्म परिपालय देवि विश्वम् ॥५॥ किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत् किञ्चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि। किञ्चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥६॥ हेतुः१ समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषैर्नज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा। सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतमव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥७॥ यस्याः२ समस्तसुरतासमुदीरणेन तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि !। स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतुरुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥८॥ या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्वमभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः। मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषैर्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि ॥९॥ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधानमुद्गीथरम्यपदपाठवतांश्च साम्नाम्। देवी त्रयी भगवती भवभावनाय वार्त्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥१०॥ मेधासि३ देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा। श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥११॥ ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र विम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्। अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥१२॥ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकरालमुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः। प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव

१ विल्वफल से २ श्वेत चन्दन से ३ कपूर से

चित्रं कैर्जीग्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥१३॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि। विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥१४॥ ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः। धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥१५॥ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति। स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन॥१६॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोप-कारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥१७॥ एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्। संग्राममृत्युमधि-गम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥१८॥ दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु यत्प्रहि-णोषि शस्त्रम्। लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी ॥१९॥ खड्गप्रभानिकर-विस्फुरणैस्तथोग्रैः शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्। यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्डयोग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥२०॥ दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं रूपं तथैतद-विचिन्त्यमतुल्यमन्यैः। वीर्यञ्च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥२१॥ केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य रूपञ्च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र। चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥२२॥

त्रैलोक्यमेतदखिलं१ रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा। नीता दिवं रिपुगणाभयमप्यपास्तमस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥२३॥ शूलेन२ पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥२४॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याञ्च चण्डिके रक्ष दक्षिणे। भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥२५॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते। यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥२६॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके। करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥२७॥

ऋषिरुवाच ॥२८॥

एवं३ स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः। अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥२९॥ भक्त्या४ समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता। प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान् ॥३०॥

देव्युवाच ॥३१॥

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥३२॥

देवा ऊचुः ॥३३॥

भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते ॥३४॥ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः। यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥३५॥ संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।

---

१ सीता फल (शरीफा)

२ बड़ी इलायची से अथवा खीर से। प्रथम मन्त्र से लेकर २७ मंत्र तक खीर अथवा हलवा की आहुति दें। ऐसे भी प्रमाणित लेख हैं।

३ रक्त चन्दन से ४ धूप से

यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥३६॥ तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम् । वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥३७॥

ऋषिरुवाच ॥३८॥

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथात्मनः। तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ! ॥३९॥ इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा। देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥४०॥ पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्। वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः ॥४१॥ रक्षणाय[१] च लोकानां देवानामुपकारिणी । तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते ॥ ह्रीं ॐ ॥४२॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

उवाच५ अर्धश्लोक २ श्लोकाः ३५ एवम् ४२ एवमादितः२५९॥

ॐ साङ्गायै०[२] त्रिवर्णात्मिकायै त्रिशक्त्यै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा ॥४॥

———०———

पञ्चमोऽध्यायः

ॐ अस्य श्रीउत्तर(म)चरित्रस्य रुद्रऋषिः महासरस्वती देवता अनुष्टुप्छन्दः भीमाशक्तिः भ्रामरी बीजम् सूर्यस्तत्त्वं सामवेदः स्वरूपं महासरस्वतीप्रीत्यर्थे उत्तर(म)चरित्रपाठे विनियोगः।

---

१ तिल, धूप, मधु से
२ इस मन्त्र से घृत मिश्रित खीर अथवा हलुवा से अन्त में एक आहुति दें।

ध्यानम्

ॐ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् । गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥

ॐ क्लीं ऋषिरुवाच ॥१॥

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः । त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥२॥ तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम् । कौबेरमथ याम्यञ्च चक्राते वरुणस्य च ॥३॥ तावेव पवनर्धिञ्च चक्रतुर्वह्निकर्म च । ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥४॥ हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः । महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥५॥ तयाऽस्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः । भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥६॥ इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् । जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥७॥

देवा उचुः ॥८॥

नमो१ देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताःस्म ताम् ॥९॥ रौद्रायै२ नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः । ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥१०॥ कल्याण्यै३ प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः । नैऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥११॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै । ख्यात्यै

---

१ हलुवा से   २ आमला (धात्री) से   ३ भोजपत्र से

तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥१२॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः। नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥१३॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता। नमस्तस्यै ॥१४॥ नमस्तस्यै ॥१५॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते। नमस्तस्यै ॥१७॥ नमस्तस्यै ॥१८॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥२०॥ नमस्तस्यै ॥२१॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥२३॥ नमस्तस्यै ॥२४॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥२५॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥२६॥ नमस्तस्यै ॥२७॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥ या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥२९॥ नमस्तस्यै ॥३०॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥३१॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥३२॥ नमस्तस्यै ॥३३॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥३४॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥३५॥ नमस्तस्यै ॥३६॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥३७॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥३८॥ नमस्तस्यै ॥३९॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥४०॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥४१॥ नमस्तस्यै ॥४२॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥४३॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जा-रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥४४॥ नमस्तस्यै ॥४५॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥४६॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥४७॥ नमस्तस्यै ॥४८॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥४९॥

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥५०॥ नमस्तस्यै ॥५१॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥५२॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥५३॥ नमस्तस्यै ॥५४॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥५५॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥५६॥ नमस्तस्यै ॥५७॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥५८॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥५९॥ नमस्तस्यै ॥६०॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥६१॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥६२॥ नमस्तस्यै ॥६३॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥६४॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥६५॥ नमस्तस्यै ॥६६॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥६७॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टि-रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥६८॥ नमस्तस्यै ॥६९॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥७०॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥७१॥ नमस्तस्यै ॥७२॥ नमस्तस्यै नमो नमः॥७३॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥७४॥ नमस्तस्यै ॥७५॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥७६॥ इन्द्रियाणा-मधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या । भूतेषु सततं तस्यै व्याप्ति-देव्यै नमो नमः ॥७७। चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत् । नमस्तस्यै ॥७८॥ नमस्तस्यै ॥७९॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥८०॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता । करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥८१॥ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यता-पितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते । या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥८२॥

ऋषिरुवाच ॥८३॥

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती। स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन॥८४॥ साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रू र्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का। शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा ॥८५॥ स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः। देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥८६॥ शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका। कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥८७॥ तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती। कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥८८॥ ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्। ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः ॥८९॥ ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा। काप्यास्ते स्त्री महाराज! भासयन्ती हिमाचलम् ॥९०॥ नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्। ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥९१॥ स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा। सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति ॥९२॥ यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो। त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥९३॥ ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात्। पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥९४॥ विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे। रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् ॥९५॥ निधिरेष[1] महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्। किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम् ॥९६॥ छत्रं

---

१ कमलबीज (कमलगट्टा) से

ते वारुणं गेहे काञ्चनस्राचि तिष्ठति । तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः ॥९७॥ मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता । पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥९८॥ निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः । वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥९९॥ एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते । स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥१००॥

ऋषिरुवाच ॥१०१॥

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः । प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥१०२॥ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम । यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥१०३॥ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने । सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥१०४॥

दूत उवाच ॥१०५॥

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः । दूतोऽहं प्रेपितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः ॥१०६॥ अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु । निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥१०७॥ मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः । यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥१०८॥ त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः । तथैव गजरत्नञ्च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम् ॥१०९॥ क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः । उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम् ॥११०॥ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च । रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव

शोभने ॥१११॥ स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्। सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ॥११२॥ मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्। भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः ॥११३॥ परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्। एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ॥११४॥

ऋषिरुवाच ॥११५॥

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ। दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥११६॥

देव्युवाच ॥११७॥

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किञ्चित्त्वयोदितम्। त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥११८॥ किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम्। श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥११९॥ यो१ मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति। यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥१२०॥ तदागच्छतु२ शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः। मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु॥१२१॥

दूत उवाच ॥१२२॥

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः। त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः ॥१२३॥ अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि। तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥१२४॥ इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां

---

१ कज्जल से २ हिंगुल से

न संयुगे। शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् ॥१२५॥ सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः। केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ॥१२६॥

देव्युवाच ॥१२७॥

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान्। किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा॥१२८॥ सा[1] त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः। तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत् ॥ॐ॥१२९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥ उवाच ९ अर्धश्लोकाः ६६ श्लोकाः ५४ एवं १२९ आदितः ३८८॥

ॐ साङ्गायै[2] विष्णुमायादिचतुर्विंशति देव्यै सरस्वत्यै नमः स्वाहा ॥

——:०:——

षष्ठोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावलीभास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्। मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूड़ां परां सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये॥

ॐ ऋषिरुवाच ॥१॥

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः। समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥२॥ तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्या-सुरराट् ततः। सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ॥३॥

---

१ ताम्बुल-सुपारी-इक्षु से। २ सफेद चन्दन, रोली, विल्वपत्र से

हे१ धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः। तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥४॥ तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वात्तिष्ठतेऽपरः। स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा॥५॥

ऋषिरुवाच ॥६॥

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः। वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥७॥ स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम्। जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भ-निशुम्भयोः ॥८॥ न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति। ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् ॥९॥

देव्युवाच ॥१०॥

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसम्वृतः। बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् ॥११॥

ऋषिरुवाच ॥१२॥

इत्युक्तः२ सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः। हुँकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः ॥१३॥ अथ क्रुद्धं महासैन्य-मसुराणां तथाम्बिका। ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्ति-परश्वधैः ॥१४॥ ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्। पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥१५॥ कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्। आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान् ॥१६॥ केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी। तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् ॥१७॥ विच्छिन्नबाहुशिरसः३ कृतास्तेन तथापरे।

---

१ गुग्गुल से २ नीम्बू विजौरा से ३ केशर से

पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेशरः ॥१८॥ क्षणेन१ तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना। तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥१९॥ श्रुत्वा२ तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्। बलञ्च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ॥२०॥ चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः। आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥२१॥ हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुलैः परिवारितौ। तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥२२॥ केशेष्वाकृष्य३ बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि। तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥२३॥ तस्यां४ हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते। शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॥ॐ॥२४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भनिशुम्भ सेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

उवाच ४ श्लोकाः २० = २४ आदितोपूर्णयोगः ४१२

ॐ साङ्गायै०५ धूम्राक्ष्यै शक्त्यै नमः स्वाहा ॥

——:०:——

सप्तमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्। कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम् ॥

---

१ राई से
२ सुपारी, लौहबान, कमलगट्टा से
३ भोजपत्र से
४ इक्षु, कनेर पुष्प से
५ कुष्माण्ड से

ॐ ऋषिरुवाच ॥१॥

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः। चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥२॥ ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम्। सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥३॥ ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः। आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः ॥४॥ ततः१ कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति। कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा ॥५॥ भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम्। काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी ॥६॥ विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा। द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा ॥७॥ अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा। निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा ॥८॥ सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्। सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् ॥९॥ पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान्। समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥१०॥ तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह। निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम् ॥११॥ एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्। पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ॥१२॥ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः। मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ॥१३॥ बलिनां तद्बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्। ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा ॥१४॥ असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः। जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्रा-

---

१ कस्तूरी से

भिहतास्तथा ॥१५॥ क्षणेन तद् बलं सर्वमसुराणां निपातितम्। दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥१६॥ शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः। छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः ॥१७॥ तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्। बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् ॥१८॥ ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी। काली करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥१९॥ उत्थाय१ च महासिं हं देवी चण्डमधावत। गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत् ॥२०॥ अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्। तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा ॥२१॥ हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्। मुण्डश्च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥२२॥ शिरश्चडस्य२ काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च। प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥२३॥ मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू। युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भञ्च हनिष्यसि ॥२४॥

ऋषिरुवाच ॥२५॥

तावानीतौ३ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ। उवाच कालीं कल्याणीं ललितं चण्डिका वचः ॥२६॥ यस्माच्चण्डञ्च४ मुण्डञ्च

पाठान्तरम्—उत्थाप्य च महासिं हुँ कृत्वा चण्डमधावत।

१ केला से　　　　२ नीम्बू विजौरा से

३ कमलबीज (कमलगट्टा) से　　　　४ चिरौंजी से

गृहीत्वा त्वमुपागता । चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ।।ॐ।।२७।।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ।।७।।

उवाच २ श्लोकाः २५ एवम् २७ एवमादितः ४३६ ।।

ॐ साङ्गायै[१] कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै काली चामुण्डा देव्यै
नमः स्वाहा ।।

——:०:——

अष्टमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ।।

ॐ ऋषिरुवाच ।।१।।

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते । बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ।।२।। ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान् । उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ।।३।। अथ सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः । कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ।।४।। कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै । शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ।।५।। कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः । युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ।।६।। इत्याज्ञाप्यासुरपतिः

---

१ चिरौंजी दाना, मिसरी, बदाम अथवा लज्जावती के पुष्पों से एक आहुति दें ।

शुम्भो भैरवशासनः । निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥७॥ आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् । ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ॥८॥ ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप । घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत् ॥९॥ धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा । निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारिताननना ॥१०॥ तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् । देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥११॥ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् । भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥१२॥ ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः । शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥१३॥ यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम् । तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ ॥१४॥ हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः । आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ॥१५॥ माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी । महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा ॥१६॥ कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना । योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी॥१७॥ तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता । शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥१८॥ यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः । शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रतीतनुम् ॥१९॥ नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः । प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥२०॥ वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता । प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥२१॥ ततः परिवृतस्ताभिरीशानो

देवशक्तिभिः । हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम् ॥२२॥ ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा । चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी ॥२३॥ सा चाह धूम्रजटिलमाशानमपराजिता । दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥२४॥ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भञ्च दानवावतिगर्वितौ । ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥२५॥ त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः । यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥२६॥ बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः । तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥२७॥ यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् । शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥२८॥ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः सर्वाख्यातं महासुराः । अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥२९॥ ततः प्रथममेवाग्र शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः । ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः ॥३०॥ सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान् । चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥३१॥ तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान् । खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा ॥३२॥ कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः । ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति॥३३॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी । दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना ॥३४॥ ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः । पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥३५॥ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः । वाराहमूर्त्या न्यपतं-

श्चक्रेण च विदारिताः ॥३६॥ नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान् । नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥३७॥ चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः । पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा ॥३८॥ इति१ मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् । दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥३९॥ पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान् । योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः ॥४०॥ रक्तबिन्दुर्यदा२ भूमौ पतत्यस्य शरीरतः । समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः ॥४१॥ युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः । ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ॥४२॥ कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् । समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥४३॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः । तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥४४॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः । समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम् ॥४५॥ पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा । ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥४६॥ वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह । गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥४७॥ वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः । सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥४८॥ शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना । माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् ॥४९॥ स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक् । मातृः कोपसमा-

---

१ सरसों से   २ लाल चन्दन से

विष्टो रक्तवीजो महासुरः ॥५०॥ तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि। पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥५१॥ तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्। व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥५२॥ तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा। उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥५३॥ मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान्। रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥५४॥ भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान्। एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥५५॥ भक्ष्यमाणास्त्वया१ चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे। इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥५६॥ मुखेन२ काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्। ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ॥५७॥ न चास्या वेदनाञ्चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि। तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ॥५८॥ यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति। मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ॥५९॥ तांश्चखादाथ३ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्। देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ॥६०॥ जघान४ रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम्। स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः ॥६१॥* नीरक्तश्च५ महीपाल रक्तबीजो महासुरः। ततस्ते

---

१ लाल चन्दन से २ लाल चन्दन से
३ इक्षु से ४ लाल चन्दन से ५ नीम्बू बिजौरा से

* ३९ के मन्त्र से ६१ मन्त्र तक केवल लाल चन्दन का ही हवन होता है।

हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप ॥६२॥ तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॥ॐ॥६३॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥ उवाच १ अर्ध-श्लोकः १ श्लोकाः ६१ एवम् ६३ एवमादितः ॥५०२॥

ॐ साङ्गायै०१ अष्टमातृ सहितायै रक्ताख्यै देव्यै नमः स्वाहा

——:०:——

नवमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः । बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्रमर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ॥

ॐ राजोवाच ॥१॥

विचित्रमिदमाख्यातं२ भगवन् भवता मम । देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥२॥ भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते । चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥३॥

ऋषिरुवाच ॥४॥

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते । शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥५॥ हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् । अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया ॥६॥ तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः । संदष्टौष्ठपुटाः

---

१ लाल चन्दन और शहद से २ नीम्बू बिजौरा से

क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥७॥ आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः। निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥८॥ ततो युद्धमतीवासीद् देव्या शुम्भनिशुम्भयोः। शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥९॥ चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिकास्वशरोत्करैः। ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥१०॥ निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्। अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम्। ॥११॥ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्। निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥१२॥ छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः। तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥१३॥ कोपाध्माता निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः। आयान्तं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥१४॥ आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति। सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥१५॥ ततः१ परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम्। आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ॥१६॥ तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे। भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥१७॥ स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः। भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥१८॥ तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्। ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥१९॥ पूरयामास२ ककुभो निजघण्टास्वनेन च। समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥२०॥ ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः। पूरयामास

---

१ कपीठ (चक्र) से

२ केशर से

गगनं गां तथैव दिशो दश ॥२१॥ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्। कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः ॥२२॥ अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह। तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥२३॥ दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा। तदा जयेत्यभिहितं देवै-राकाशसंस्थितैः ॥२४॥ शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वाला-तिभीषणा। आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥२५॥ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्। निर्घा-तनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥२६॥ शुम्भमुक्ताञ्छ-रान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्। चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥२७॥ ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेना-भिजघान तम्। स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह ॥२८॥ ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः। आज-घान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥२९॥ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः। चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ॥३०॥ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी। चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् ॥३१॥ ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्। अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः ॥३२॥ तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका। खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥३३॥ शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्। हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥३४॥ भिन्नस्य[१] तस्य शूलेन

---

१ नीम्बू बिजौरा से

हृदयान्निःसृतोऽपरः । महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥३५॥ तस्य१ निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः । शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ॥३६॥ ततः सिंह-श्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् । असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् ॥३७॥ कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्ने-शुर्महासुराः । ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥३८॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे । वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि ॥३९॥ खण्डं खण्डश्च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः । वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ॥४०॥ केचिद्विनेशुरसुराः२ केचिन्नष्टा महाहवात् । भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॥ॐ॥४१॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥

उवाच २ श्लोकाः ३९ एवम् ४१ एवमादितः ॥५४३॥

ॐ साङ्गायै०३ भैरव्यै देव्यै नमः स्वाहा

———०———

दशमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्निनेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाश-शूलम् । रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम् ॥

---

१ कण गुग्गुल और इन्द्रजौ से २ पान, सुपारी, बेलगिरी से
३ निम्बू बिजौरा, जावित्री से

ॐ ऋषिरुवाच ॥१॥

निशुम्भं१ निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम्। हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥२॥ बलावलेपाद् दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह। अन्यासां बलमाश्रित्य युद्धयसे यातिमानिनी ॥३॥

देव्युवाच ॥४॥

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा। पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥५॥ ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणी प्रमुखा लयम्। तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका॥६॥

देव्युवाच ॥७॥

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता। तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥८॥

ऋषिरुवाच ॥९॥

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः। पश्यतां सर्व-देवानामसुराणां च दारुणम् ॥१०॥ शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथा-स्त्रैश्चैव दारुणैः। तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम् ॥११॥ दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका। बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥१२॥ मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी। बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चा-रणादिभिः ॥१३॥ ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः। सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥१४॥ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे। चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥१५॥ ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं

१ केशर कस्तूरी से

च भानुमत् । अभ्यधावत्तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥१६॥ तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका। धनुर्मुक्तैः शितर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ॥१७॥ हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः। जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥१८॥ चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः। तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥१९॥ स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः। देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् ॥२०॥ तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले। स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥२१॥ उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः। तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥२२॥ नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्। चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥२३॥ ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह। उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥२४॥ स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः। अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया ॥२५॥ तमायान्तं[१] ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्। जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥२६॥ स[२] गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः। चालयन् सकलां पृथिवीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥२७॥ ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि। जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥२८॥ उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः। सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥२९॥ ततो देवगणाः सर्वे

---

१ पक्का केला से २ भोजपत्र से

हर्षनिर्भमानसाः। बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः ॥३०॥ अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः। ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥३१॥ जज्वलुश्चाग्नयः[1] शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः ॥ॐ॥३२॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥ उवाच ४ अर्धश्लोकः१ श्लोकाः २७ एवम् ३२ एवमादितः ५७५

ॐ साङ्गायै[2] सिंहासनाधिष्ठात्र्यै त्रिशूलधारिण्यै देव्यै नमःस्वाहा

——:०:——

एकादशोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

ॐ ऋषिरुवाच ॥१॥

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम्। कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद् विकाशिवक्त्राब्जविकाशिताशाः ॥२॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥३॥ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि। अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये॥४॥ त्वं[3] वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं

---

१ वट पत्र में इन्द्र जौ कमलगट्टा से २ कस्तूरी से

३ नीम्बू बिजौरा से

परमासि माया। सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥५॥ विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु। त्वयैकया पूरितमम्बयैतत् का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः ॥६॥ सर्वभूता यदा देवी स्वर्ग-मुक्तिप्रदायिनी। त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥७॥ सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते। स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥८॥ कलाकाष्ठादिरूपेण परिणा-मप्रदायिनि। विश्वस्यापरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥९॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१०॥ सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि। गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥११॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१२॥ हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूप-धारिणि। कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१३॥ त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि। माहेश्वरी-स्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१४॥ मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे। कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१५॥ शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे। प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१६॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृत-वसुन्धरे। वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१७॥ नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे। त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१८॥ किरीटिनि महावज्रे सहस्र-नयनोज्ज्वले। वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते

॥१६॥ शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले। घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२०॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमाला-विभूषणे। चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२१॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रुवे। महारात्रि महाविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२२॥ मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि। नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२३॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥२४॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्। पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥२५॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषा-सुरसूदनम्। त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोस्तु ते ॥२६॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव ॥२७॥ असुरासृग्वसापङ्क-चर्चितस्ते करोज्ज्वलः। शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥२८॥ रोगानशेषानपहंसि[1] तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥२९॥ एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्। रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥३०॥ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या। ममत्वगर्तेऽति-महान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥३१॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र। दावानलो

१ राई या काली मरीच गिलोय से

यत्र तथाऽब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥३२॥ विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्। विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥३३॥ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः। पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥३४॥ प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि। त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव ॥३५॥

देव्युवाच ॥३६॥

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ। तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥३७॥

देवा ऊचुः ॥३८॥

सर्वाबाधाप्रशमनं१ त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि !। एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥३९॥

देव्युवाच ॥४०॥

वैवस्वतेऽन्तरे२ प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे। शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ॥४१॥ नन्दगोपगृहे३ जाता यशोदागर्भसम्भवा। ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥४२॥ पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले। अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ॥४३॥ भक्षयन्त्याश्च४ तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान्। रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः ॥४४॥ ततो५ मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः। स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥४५॥

---

१ काली मरीच से २ सरसों से ३ खोवा से
४ अनार पुष्प या दाड़िम बीज से ५ मजीठ से

भूयश्च१ शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि। मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा ॥४६॥ ततः२ शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्। कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षी-मिति मां ततः ॥४७॥ ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः। भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ॥४८॥ शाकम्भ-रीति३ विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि। तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥४६॥ दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति। पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥५०॥ रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्। तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ॥५१॥ भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति। यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥५२॥ तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्ये-यषट्पदम्। त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् ॥५३॥ भ्रामरीति४ च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः। इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥५४॥ तदा५ तदा-वतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥ॐ॥५५॥

इति श्रीमार्कण्डयपुराणे सावर्णिके मन्वतरे देवीमाहात्म्ये देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥ उवाच ४ अर्धश्लोकः १ श्लोकाः ५० एवम् ५५ एवमादितः ॥६३०॥

ॐ साङ्गायै०६ नारायण्यै देव्यै नमः स्वाहा

---

१ नारङ्गी से २ कमलगट्टा से ३ सूआ, पालक से ४ काली मरीचसे
५ सरसों से ६ कपूर या खीर या शर्करा या घृत से
इसी अध्याय में प्रथम मंत्र से लेकर २८ मंत्र तक खीर या हलुवा की आहुति दें तथा २४ मन्त्र से २८ मन्त्र तक मूल मन्त्र से हवन करें।

द्वादशोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् । हस्तैश्चक्रगदासिखेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

ॐ देव्युवाच ॥१॥

एभिः१ स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः । तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ॥२॥ मधुकैटभनाशञ्च महिषासुरघातनम् । कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भ-निशुम्भयोः ॥३॥ अष्टम्याञ्च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः । श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥४॥ न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः । भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥५॥ शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः । न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भ-विष्यति ॥६॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः । श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत् ॥७॥ उपसर्गा-नशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् । तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥८॥ यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम । सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम् ॥९॥ बलिप्रदाने२ पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे । सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥१०॥ जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम् ।

---

१ अगर से २ पेड़ा से

प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम् ॥११॥ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी। तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥१२॥ सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो१ धनधान्यसुतान्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥१३॥ श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः। पराक्रमश्च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥१४॥ रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते। नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥१५॥ शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने। ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥१६॥ उपसर्गाः२ शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः। दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥१७॥ बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्। संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥१८॥ दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्। रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥१९॥ सर्वं३ ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्। पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥२०॥ विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्। अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥२१॥ प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृत्सुचरिते श्रुते। श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति ॥२२॥ रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम। युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥२३॥ तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते। युष्माभिः

१ छोटी इलायची से २ भोजपत्र से
३ लौंग, बिजौरा, पुष्प, कर्पूर से

स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥२४॥ ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्। अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः ॥२५॥ दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः। सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः ॥२६॥ राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा। आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥२७॥ पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे। सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥२८॥ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात्। मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥२९॥ दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम ॥३०॥

ऋषिरुवाच ॥३१॥

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा ॥३२॥ पश्यतामेव[1] देवानां तत्रैवान्तरधीयत। तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा ॥३३॥ यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः। दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥३४॥ जगद्विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे। निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः ॥३५॥ एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः। सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥३६॥ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते। सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥३७॥ व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर!। महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया ॥३८॥ सैव[2] काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा। स्थितिं

---

१ सर्वौषधि से २ अनार फल के छिलका से

करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥३९॥ भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे। सैवाभावे तथालक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ॥४०॥ स्तुता[1] सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा। ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॥ॐ॥४१॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये फलस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥ उवाच २ अर्धश्लोकौ २ श्लोकाः ३७ एवम् ४१ एवमादितः ॥६७१॥

ॐ साङ्गायै० २ बालायै त्रिपुरसुन्दर्यै देव्यै नमः स्वाहा

——:०:——

त्रयोदशोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्। पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे ॥

ॐ ऋषिरुवाच ॥१॥

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्। एवंप्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् ॥२॥ विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया। तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥३॥ मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे। तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥४॥ आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ॥५॥

---

१ पुष्पों से

२ अगर, केशर, कस्तूरी, पुष्प मिश्रित करके एक आहुति दें।

मार्कण्डेय उवाच ॥६॥

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥७॥ प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम् । निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥८॥ जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने । संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः ॥९॥ स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् । तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ॥१०॥ अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः । निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥११॥ ददतुस्तौ[1] बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम् । एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥१२॥ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥१३॥

देव्युवाच ॥१४॥

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन । मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ॥१५॥

मार्कण्डेय उवाच ॥१६॥

ततो[2] वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि । अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥१७॥ सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः । ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम्॥१८॥

देव्युवाच ॥१९॥

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥२०॥ हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ॥२१॥ मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥२२॥ सावर्णिको नाम

---

१ गुड़, पुष्प से　　　२ काली मरीच से

मनुर्भवान् भुवि भविष्यति ॥२३॥ वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः ॥२४॥ तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति ॥२५॥

मार्कण्डेय उवाच ॥२६॥

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ॥२७॥ बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता । एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥२८॥ सूर्याज्जन्म[१] समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥२९॥ एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः । सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ क्लीं ॐ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथवैश्योर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

उवाच ६ अर्धश्लोकाः ११ श्लोकाः १२ एवम् २९ सप्तशत्यां समस्ता उवाच मन्त्राः ५७ अर्धश्लोकाः ४२ श्लोकाः ५३५ अवदानानि ६६ एवमादितः ७०० ॥

ॐ साङ्गायै०[२] श्रियै त्रिपुरसुन्दर्यै महावैष्णव्यै देव्यै नमः स्वाहा

——:o:——

नवार्ण विनियोगः

श्रीगणपतिर्जयति । अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

---

१ पान, सुपारी से २ सफेद तिल, केशर, कपूर और श्वेत पुष्प से सप्तशती में जितने भी उवाच हैं उनमें किसी भी फल से आहुति देना चाहिये यह भी किसी आचार्य का मत है ।

ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्दोभ्यो नमः मुखे । महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि । ऐं बीजाय नमः गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । क्लीं कीलकाय नमः नाभौ । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति मूलेन करौ संशोध्य ।

करन्यासः

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः

ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ क्लीं शिखायै वषट् । ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् । ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् ।

अक्षरन्यासः

ॐ ऐं नमः शिखायाम् । ॐ ह्रीं नमः दक्षिण नेत्रे । ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे । ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे । ॐ मुं नमः वामकर्णे । ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे । ॐ यैं नमः वाम-नासापुटे । ॐ विं नमः मुखे । ॐ च्चें नमः गुह्ये । एवं विन्यस्याऽष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात् ।

दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्य नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्। नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥१॥ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां, दण्डं शक्तिमसिञ्च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां, सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥२॥ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं, हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥३॥

ॐ ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः इति मालां सम्पूज्य प्रार्थयेत्

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥ ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥ ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय मे स्वाहा। एवं सम्प्रार्थ्य

नवार्णमन्त्रस्य १०८ वारं समावृत्तिं विधाय पुनः भगवत्या दक्षिणपार्श्वे समर्पयेत् "गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ।"

पुनः करन्यासः

ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ चं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ डिं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ क्लां अनामिकाभ्यां नमः । ॐ यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं चण्डिकायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ सप्तशती हृदयादिन्यासः

ॐ खड्गिनी शूलिना घोरा गदिनी चक्रिणी तथा । शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ।। हृदयाय नमः । ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके । घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ।। शिरसे स्वाहा । ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याञ्च चण्डिके रक्ष दक्षिणे । भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ।। शिखायै वषट्। ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते । यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ।। कवचाय हुम् । ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके । करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ।। नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ।। अस्त्राय फट् ।।

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् । हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ।।

ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम्

ॐ अहमित्यष्टर्चस्य सूक्तस्य वागाम्भृणी ऋषिः सच्चित्सुखात्मकः सर्वगतः परमात्मा देवता द्वितीयाया ऋचो जगती शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्दः देवीमाहात्म्यपाठे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः शङ्खं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता। आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला॥

अथ वैदिकं देवीसूक्तम्

ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥१॥ अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ॥२॥ अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्राभूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ॥३॥ मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्। अमन्तवो मां त उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ॥४॥ अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः। यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥५॥ अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ। अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥६॥ अहं सुवे पितरमस्य मूर्द्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। ततो वि

तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोपस्पृशामि ॥७॥ अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा। परो दिवापर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव ॥८॥

अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥१॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः। ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥२॥ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः। नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥३॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥४॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः। नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥५॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥६॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥७॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥८॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥९॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०॥ या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥११॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१२॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१४॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्य नमो नमः ॥१५॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै न स्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१७॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१८॥ या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२०॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२१॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२४॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या । भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥२७॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् । नमस्तस्यै

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता। करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥२९॥ या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते। या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥३०॥

अथ प्राधानिकं रहस्यम्

ॐ अस्य श्री सप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः यथोक्तफलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः।

राजोवाच

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः। एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि ॥१॥ आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज। विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे ॥२॥

ऋषिरुवाच

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते। भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप ॥३॥ सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी। लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता ॥४॥ मातुलिङ्गं गदां खेटं पानपात्रञ्च बिभ्रती। नागं लिङ्गं च योनिञ्च बिभ्रती नृप मूर्द्धनि ॥५॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा। शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥६॥ शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी। बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि ॥७॥ सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना। विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा ॥८॥

खड्गपात्रशिरः खेटैरलंकृतचतुर्भुजा । कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम् ॥९॥ सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा । नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः ॥१०॥ तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम् । ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ॥११॥ महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा । निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दु-रत्यया ॥१२॥ इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः । एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम् ॥१३॥ तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप । सत्त्वाख्येनाति-शुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ ॥१४॥ अक्षमालाङ्कुशधरा वीणा-पुस्तकधारिणी । सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ ॥१५॥ महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती । आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी ॥१६॥ अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम् । युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः ॥१७॥ इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम् । हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ ॥१८॥ ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम् । श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम् ॥१९॥ महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह । एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते ॥२०॥ नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम् । जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ॥२१॥ स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः । त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा ॥२२॥ सरस्वती

स्त्रियं गौरीं कृष्णश्च पुरुषं नृप। जनयामास नामानि तयो-रपि वदामि ते ॥२३॥ विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः। उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा ॥२४॥ एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे। चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः ॥२५॥ ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम्। रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥२६॥ स्वरया सह संभूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्। बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान् ॥२७॥ अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप। महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्था-वरजङ्गमम् ॥२८॥ पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः। संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः ॥२९॥ महालक्ष्मीर्महा-राज सर्वसत्त्वमयीश्वरी। निराकारा च साकारा सैव नाना-भिधानभृत् ॥३०॥ नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ॥ॐ॥३१॥

अथ वैकृतिकं रहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता। सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते॥१॥ योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा। मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः ॥२॥ दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा। विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया ॥३॥ स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीम-रूपापि भूमिप। रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ॥४॥ खड्गबाणगदाशूलचक्रशङ्खभुशुण्डिभृत्। परिघं कार्मुकं

शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ ॥५॥ एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया। आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम् ॥६॥ सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा। त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥७॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला। रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा ॥८॥ सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा। चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी ॥९॥ अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती। आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥१०॥ अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा। चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः ॥११॥ शक्तिर्दण्डश्चर्मं चापं पानपात्रं कमण्डलुः। अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ॥१२॥ सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप। पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥१३॥ गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया। साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥१४॥ दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत्। शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥१५॥ एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति। निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥१६॥ इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव। उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय ॥१७॥ महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती। दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम् ॥१८॥ विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे। वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम् ॥१९॥ अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दश-

नना । दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ॥२०॥ अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप । दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥२१॥ कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये । यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥२२॥ नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ । नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत् ॥२३॥ अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः । अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी ॥२४॥ महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती । ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ॥२५॥ महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः । पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥२६॥ अर्घ्यादिभिरलंकारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः । धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः ॥२७॥ रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप । (बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता ॥ तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित् ।) प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना ॥२८॥ सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः । वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम् ॥२९॥ पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया । दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम् ॥३०॥ वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम् । कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः ॥३१॥ ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः । एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥३२॥ चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात् । प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥३३॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः ।

प्रतिश्लोकञ्च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा ॥३४॥ जुहुयात्स्तोत्र-मन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः। भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सु-समाहितः ॥३५॥ प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि। सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत् ॥३६॥ एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्। भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥३७॥ यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्। भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्पर-मेश्वरी ॥३८॥ तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम्। यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि ॥३९॥ इति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम्।

अथ मूर्तिरहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा। स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥१॥ कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा। देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा ॥२॥ कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा। इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना ॥३॥ या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ। तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभया-पहम् ॥४॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा। रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥५॥ रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका। पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम् ॥६॥ वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी। दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ ॥७॥ कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयो-

निधी । भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ ॥८॥ खड्ग पात्रञ्च मुसलं लाङ्गलञ्च बिभर्ति सा । आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥९॥ अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावर-जङ्गमम् । इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ॥१०॥ (भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्) । अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम् । तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना ॥११॥ शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलो-चना । गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी ॥१२॥ सुकर्कश-समोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी । मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कम-लालया॥१३॥ पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम् । काम्या-नन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम् ॥१४॥ कार्मुकञ्च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी । शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥१५॥ विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम् । उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती ॥१६॥ शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन् । अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम् ॥१७॥ भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा । विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा ॥१८॥ चन्द्रहासञ्च डमरुं शिरःपात्रञ्च बिभ्रती । एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ॥१९॥ तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्ति-भृत् । चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता ॥२०॥ चित्र-भ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते । इत्येता मूर्तयो देव्याः याः ख्याता वसुधाधिप॥२१॥ जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः । इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥२२॥

व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम् । तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम् ॥२३॥ सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्म-हत्यासमैरपि। पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्बिषैः॥२४॥ देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत्। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम् ॥२५॥ (एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि। सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्। अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।)

इति मूर्तिरहस्यं सम्पूर्णम् ॥

क्षमापनम्

ॐ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद्भवेत्। क्षन्तुमर्हसि तद्देवि कस्य न स्खलितं मनः ॥१॥ अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यून-मधिकं कृतम्। विपरीतं तु तत्सर्वं क्षमस्व परमेश्वरि ॥२॥ यस्याः स्मृत्याचनामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥३॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्ति-हीनं सुरेश्वरि। या स्तुतासि मया देवी तस्मात्त्वं वरदा भव॥४॥ कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे। गृहाण त्वं स्तुति-मिमां प्रसीद परमेश्वरि ॥५॥ यदत्रपाठे जगदम्बिके मया विसर्गविन्द्वक्षरहीनमीरितम्। तदस्तु सम्पूर्णतमं प्रसादतः संकल्पसिद्धिश्च सदैव जायताम् ॥६॥ यन्मात्रा - विन्दु–विन्दु द्वितय-पद पद द्वन्द्व-वर्णादिहीनम्। भक्त्या भक्त्यानु पूर्वं प्रसभकृतिवशाद् व्यक्तमव्यक्तमम्ब ॥ मोहादज्ञानतो वा पठितमपठितं साम्प्रतं ते स्तवेऽस्मिन्। तत्सर्वं साङ्गमास्तां भगवति वरदे त्वत्प्रसादात्प्रसीद ॥७॥ प्रसीद भगवत्यम्ब

प्रसीद भक्तवत्सले । प्रसादं कुरु मे देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥८॥ यस्यार्थे पठितं स्तोत्रं तवेदं शङ्कर प्रिये । तस्य देहस्य गेहस्य शान्तिर्भवतु सर्वदा ॥९॥ यत्किञ्चित्क्रियते देवि मया सुकृतदुष्कृतम् । तत्सर्वं त्वयि सन्यस्तं त्वत्प्रयुक्तः करोम्यहम् ॥

॥ इति सर्वं समर्पयेत् ॥

अथ काम्यप्रयोगेषु शुभाशुभज्ञानार्थं शिवाबलिविधानमाह ॥ ततः सायंसमये देवतां संपूज्य आमिषान्नयथोपपन्नद्रव्य-जलसहितपक्कान्नपूजासामग्रीश्च श्मशानादिनिर्जने नीत्वा उदङ्मुखो भूत्वा प्राणानायम्य षडङ्गन्यासं कृत्वार्घं संस्थाप्य अर्घोदकं गृहीत्वा ॥ अद्येहेत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकराशि अमुक-शर्माहं श्रीमच्चण्डिकाप्रीतये शिवायाः पूजनं बलिदानञ्च करिष्ये ॥ इति संकल्प्य मुक्त चिकुर उत्थाय कालि कालि शिवाआहूय इष्टदेवतात्वेन भावयेत् ॥ ॐ शिवायै नमः इति गन्धाक्षतैः सम्पूज्य ॥ बिन्दु त्रिकोण वृत्त चतुरस्र मण्डले बलि-पात्रं निधाय अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां धृत्वा ॥ ॐ गृह्ण देवि । महाभागे शिवे ! कालाग्निरूपिणि ! शुभाशुभफलं व्यक्तं ब्रूहि गृह्ण बलिं त्विदम् ॥ इत्युत्सृजेत् ॥ तद्देशात्किंचिदुपसृत्य तासु भोक्त्रीषु तिष्ठन्तीषु पुष्पचन्दनसहितपुष्पाञ्जलिमादायोत्थाय स्वेष्टदेवताधिया प्रणम्य स्तोत्रं पठेत् ॥ ॐ शिवारूप धरे देवि ! कालि ! कालि ! नमोऽस्तु ते ॥ उल्कामुखि ! ज्वल-ज्जिह्वे घोर दंष्ट्रे करालिनि ! । श्मशानवासिनि प्रेते शवमांस-प्रियेऽनघे ! ॥ श्मशानचारिणि शिवे फेरोजंबुकरूपिणि ॥२॥ नमोऽस्तुते महामाये ! जगत्तारिणि ! कालिके ! । मातङ्गी

कुक्कुटे रौद्रि कालि ! कालि ! नमोऽस्तुते ॥३॥ सर्वसिद्धिप्रदे भीमे भयंकरि ! भयापहे ! । प्रसन्ना भवदेवेशि ! मम भक्तस्य कालिके ! ॥ संसारतारिणि ! जये ! जय सर्वशुभंकरि ॥ विस्रस्तचिकुरे चण्डे चामुण्डे ! मुण्डमालिनि ! ॥५॥ संसारकारिणि ! शिवे सर्वसिद्धिं प्रयच्छ मे ॥ दुर्गे ! किराति शवरि प्रेतासनगतेऽनघे ॥६॥ अनुग्रहं कुरु सदा कृपया मां विलोकय ॥ राज्यं प्रयच्छ विकटे वित्तमायुः स्त्रियं शिवम् ॥७॥ शिवावलिविधानेन प्रसन्ना भव फेरुके ॥ नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमोनमः ॥८॥ इति ॥ ततःस्तुत्वा तदुच्छिष्टं यथा काक खराश्च प्रभृतयो दुष्टजनाभुंजीरन् तथारात्रावेवभूमौ निखन्य गृहमागत्य पुनर्देवतायै चन्दनपुष्पादीनि विनिवेद्य विहितान्नजलञ्च द्वात्रिंशद्वारमभिमंत्र्य देवतायै निवेदयित्वा भोजनपानादिकंसुखेनकुर्यादिति शिवाबलि विधानं समाप्तम् ॥

अथ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो, न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः । न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं, परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥ विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया, विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् । तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥ पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः । मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥ जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता, न वा

दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया। तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥ परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया, मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि। इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता, निरालम्बो लम्बोदरजननि ! कं यामि शरणम् ॥५॥ श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा, निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः। तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं, जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥ चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो, जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः। कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं, भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥ न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे, न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः। अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥ नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः किं रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः। श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे धत्से कृपामुचितम्ब परं तवैव ॥९॥ आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि !। नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः, क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥ जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि। अपराधपरम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥ मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि। एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥ इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीमहालक्ष्मीपूजनम् ॥

आचमन प्राणायाम करके संकल्प वाक्य के अन्त में "स्थिरलक्ष्मी प्राप्तये श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकसर्वाभीष्टफल-प्राप्त्यर्थं आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं व्यापारे लाभार्थञ्च गणपति नवग्रहकलशादिपूजनपूर्वकं श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती लेखनीकुवेरादीनाञ्च पूजनं करिष्ये" कहकर संकल्प करे। पश्चात् गणपति, कलश और नवग्रहादि का पूर्वोक्त विधि से पूजन करके महालक्ष्मी का पूजन करे।

ध्यानम्—या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ॥ या लक्ष्मी-
र्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः। सा नित्यं
पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥

आवाहन—ॐ सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनाम्।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ॥

आसन—ॐ तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम्।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् । आ० स० ॥

पाद्य—ॐ गङ्गादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम् ।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तुते ॥ पा० स० ॥

अर्घ्य—ॐ अष्टगन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम्।
अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते ॥ अ० स० ॥

आचमन—ॐ सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्ण्वादिभिःस्तुता।
ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम् ॥ आ० स० ॥

स्नान—मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमांभोरुहवासितैः।
स्नानं कुरुष्व देवेशि ! सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥ स्ना० स० ॥

पञ्चामृतस्नान—ॐ पञ्चामृतसमायुक्तं जाह्नवीसलिलं शुभम्।
गृहाण विश्वजननि स्नानार्थं भक्तवत्सले ॥ प० स० ॥
शुद्धोदकस्नान— तोयं तव महादेवि ! कर्पूरागरुवासितम्।
तीर्थेभ्यः सुसमानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ शु० स० ॥
वस्त्र—ॐ दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम्।
दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके ॥ व० स० ॥
उपवस्त्र—कञ्चुकीमुपवस्त्रञ्च नानारत्नैः समन्वितम्।
गृहाण त्वं मया दत्तं मङ्गले जगदीश्वरी ॥ उ० स० ॥
मधुपर्क—कापिलं दधिकुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम् ।
स्वर्णपात्रस्थितं देवि ! मधुपर्कं गृहाण भोः ॥ म० स० पु० ॥
आभूषण—ॐ स्वभावसुन्दराङ्गायै नानादेवाश्रये शुभे।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥ आ० स० ॥
गन्ध—श्रीखण्डागरुकर्पूरमृगनाभिसमन्वितम्।
विलेपनं गृहाणाशु नमोऽस्तु भक्तवत्सले ॥ ग० स० ॥
चन्दन—केशरागरुकर्पूरचन्दनादिसमन्वितम् ।
विलेपनं महादेवि तुभ्यं दास्यामि भक्तितः ॥ च० स० ॥
रक्तचन्दन—रक्तचन्दनसंमिश्रं पारिजातसमुद्भवम् ।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम् ॥ रक्त० च० स० ॥
सिन्दूर—ॐ सिन्दूरं रक्तवर्णञ्च सिन्दूरतिलकप्रिये।
भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥ सि० स० ॥
कुंकुम—ॐ कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणम्।
अखण्डकामसौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम् ॥ कु० स० ॥
अक्षत—अक्षतान्निर्मलाञ्शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान्।

गृहाणेमान्महादेवि ! देहि मे निर्मलां धियम् ॥ अ० स० ॥
पुष्प—ॐ मन्दारपारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा ।
मरुवामोगरं चैव गृहाणाशु नमो नमः ॥ पु० स० ॥
पुष्पमाला—पद्मशंखजपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रिताम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ॥ पु० स० ॥
दूर्वा-ॐ विष्ण्वादिसर्वदेवानां प्रियां सर्वसुशोभनाम् ।
क्षीरसागरसम्भूते दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा ॥ दू० स० ॥
सुगन्धतैल (अतर)-ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि ! दया-निधे ।। सर्वलोकस्य जननि ! ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥सु० स०॥

अथाङ्गपूजा

ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि ॥१॥ ॐ चंचलायै नमः जानुनी पूजयामि ॥२॥ ॐ कमलायै नमः कटिं पूजयामि ॥३॥ ॐ कात्यायन्यै नमः नाभिं पूजयामि ॥४॥ ॐ जगन्मात्रे नमः जठरं पूजयामि ॥५॥ ॐ विश्ववल्लभायै नमः वक्षःस्थलं पूजयामि ॥६॥ ॐ कमलवासिन्यै नमः भुजौ पूजयामि ॥७॥ ॐ पद्मकमलायै नमः मुखं पूजयामि ॥८॥ ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः नेत्रत्रयं पूजयामि ॥९॥ ॐ श्रियै नमः शिरः पूजयामि ॥१०॥ इत्यंगपूजा ॥

अथ पूर्वादिक्रमेण अष्टदिक्षु अष्टसिद्धीः पूजयेत्

ॐ अणिम्ने नमः ॥१॥ ॐ महिम्ने नमः ॥२॥ ॐ गरिम्णे नमः ॥३॥ ॐ लघिम्ने नमः ॥४॥ ॐ प्राप्त्यै नमः ॥५॥ ॐ प्राकाम्यै नमः ॥६॥ ॐ ईशितायै नमः ॥७॥ ॐ वशितायै नमः ॥८॥ इति अष्टसिद्धिपूजनम् ॥

॥ अथैवं पूर्वादिक्रमेण अष्टलक्ष्मीपूजनम् ॥

ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः ॥१॥ ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः ॥२॥ ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः ॥३॥ ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः ॥४॥ ॐ कामलक्ष्म्यै नमः ॥५॥ ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः ॥६॥ ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः ॥७॥ ॐ योगलक्ष्म्यै नमः ॥८॥

इति अष्टलक्ष्मी पूजनम्

धूप—ॐ वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ धूपमाघ्रा० ॥

दीप—ॐ कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम् ।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरी ॥ दी० द० हस्त प्र० ॥

नैवेद्य—ॐ नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम् ।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥
नैवेद्यं निवेदयामि ॥ मध्ये पानीयम् ।

ऋतुफल—ॐ फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ ऋ० स० ॥

आचमन—ॐ शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम् ।
आचम्यतामिदं देवि । प्रसीद त्वं महेश्वरि ॥ आ० स० ॥

अखण्ड ऋतुफल - इदं फलं मयाऽऽनीतं सरसं च निवेदितम् ।
गृहाण परमेशानि प्रसीद प्रणमाम्यहम् ॥ अ० ऋ० स० ॥

ताम्बूल पूगीफल—ॐ एलालवंगकर्पूरनागपत्रादिभिर्युतम् ।
पूगिफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ता० पू० स० ॥

दक्षिणा—हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ द० स० ॥

प्रार्थना—ॐ सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तव-पादपङ्कजम्। परावरं पातु वरं सुमंगलं नमामि भक्त्या तव कामसिद्धये॥ भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनि। सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते॥ नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्॥

श्रीमहाकालीपूजनम्

दवातमें मोली बांधकर तथा साथिया करके नीचे लिखा ध्यान करें

ॐ मषि त्वं लेखनीयुक्ता चित्रगुप्ताशयस्थिता। सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम॥ या माया प्रकृतिः शक्तिश्चण्ड-मुण्डविमर्दिनी। सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदा भव॥ ॐ श्रीमहाकाल्यै नमः॥

पूजन करके नीचे लिखे ध्यान करें

या कालिका रोगहरा सुवंद्या वैश्यैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः॥ जनैर्जनानां भयहारिणी च सा देवमाता मयि सौख्यदात्री॥

लेखनी पूजनम्

कलम में मोली लपेट नीचे लिखे ध्यान करके पूजन करें

ॐ शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं वीणा-पुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्। हस्ते स्फाटिक-मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥ लेखन्यै नमः॥

पूजन करके नीचे लिखे प्रार्थना करें

प्रार्थना—कृष्णानने द्विजिह्वे च चित्रगुप्तकरस्थिते।
सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम॥

श्रीमहासरस्वतीपूजनम्

बही, बसना आदि में रोलीसे साथिया कर नीचे लिखे ध्यान करके पूजन करें

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता या वीणावर-दण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना। या ब्रह्माच्युतशङ्कर-प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥ ॐ वीणापुस्तकधारिण्यै नमः ॥

पूजन करके नीचे लिखे प्रार्थना करें

प्रार्थना—ॐ शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥

कुबेरपूजनम्

सन्दूकादिमें सिन्दूर से साथिया कर आवाहन करके पूजन करें।

आवाहयामि देव त्वामिहायाहि कृपां कुरु।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर ॥

प्रार्थना—धनाध्यक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने ॥

तुला तथा मान पूजनम्

सिन्दूरसे साथिया करके पूजन करें। पश्चात् नीचे लिखे प्रार्थना करें

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षिभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ॥

दीपावलीपूजनम्

दीपक चासकर पात्रमें रखकर, पूजन करके नीचे लिखे प्रार्थना करें

भो दीप त्वं ब्रह्मरूप अन्धकारनिवारक। इमां मया कृतां पूजां गृह्णंस्तेजः प्रवर्धय ॥ ॐ दीपेभ्यो नमः।

आरती—ॐ चक्षुर्दसर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम्।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥

॥ श्रीलक्ष्मीजी की आरती॥

जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुम कूं निशि दिन सेवत हर विष्णु धाता॥ टेर॥ ब्रह्माणी रुद्राणी कमला तुही है जगमाता। सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता॥ जय०॥ दुर्गारूप निरञ्जनि सुख सम्पति दाता। जो कोई तुमको ध्यावत ऋधि सिधि धन पाता॥ जय०॥ तू ही है पाताल बसन्ती तू ही है शुभ दाता। कर्म प्रभाव प्रकाशक जगनिधि से त्राता॥ जय०॥ जिस घर थारो वासो वाहि में गुण आता। करन सकै सोई कर ले मन नहिं धड़काता॥ जय०॥ तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न होय राता। खान पान को वैभव तुम बिन कुण दाता॥ जय०॥ शुभ गुण सुन्दर युक्ता क्षीरनिधीजाता। रत्न चतुर्दश तोकूं कोई भी नहिं पाता॥ जय०॥ या आरती लक्ष्मीजी की जो कोई नर गाता। उर आनन्द अति उमँगे पाप उतर जाता॥ जय०॥ स्थिरचर जगत बचावै कर्म प्रेरल्याता। 'राम प्रताप' मैया की शुभ दृष्टि चाता॥ जय लक्ष्मी माता॥

मन्त्रपुष्पाञ्जलिक्षमाप्रार्थनादिकं पूर्ववत्

॥ शुभमस्तुसताम्॥

——:o:——

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ श्री दुर्गासहस्त्रनामप्रारभ्यते ॥

श्रीभैरव उवाच ।

ॐ अधुना शृणु वक्ष्यामि, दुर्गासर्वस्य धीश्वरी । रहस्यं सर्व–देवानां दुर्लभं जन्मिनामपि ॥ १ ॥ श्रीदुर्गातत्त्वमुद्दिष्टं, सारं त्रैलोक्यकारणम् । मन्त्रं नामसहस्त्रञ्च, दुर्गायाः पुण्यदं परम् ॥ २ ॥ यं पठित्वा शिवे धृत्वा, देवीनामसहस्त्रकम् । इह भोगी परत्रापि जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥ ३ ॥ इदं नाम सहस्त्रं ते, मन्त्रगर्भरहस्य–कम् । अश्वमेधायुतात्पुण्यं, लोके सौभाग्यवर्द्धनम् ॥ ४ ॥ श्रेयस्करं विश्ववंद्यं, सर्वदेवनमस्कृतम् । गुह्यं गोप्यतमं देवि, पठनात्सि–द्धिदायकम् । ॐ अस्य श्रीदुर्गानामसहस्त्रस्य, महेश्वरऋषिः; अनु-ष्टुप्छंदः, श्री दुर्गा देवता, दुं वीजं, ह्रीं शक्तिः ॐ कीलकम् धर्मार्थकाममोक्षार्थे, दुर्गासहस्त्रनामपाठे विनियोगः । ॐ ह्रीं दुं, जगदम्बा भा भद्रिका भद्रकालिका । प्रचण्डा चंडिका चंडी चण्ड–मुण्डनिपूदिनी ॥ ६ ॥ अनुरूपा त्रुटिस्तारा कृत्तिका कुब्जिका-लया । प्रलयस्थितिसंभूतिर्विभूतिर्भयनाशिनी ॥ ७ ॥ महामाया महाविद्या, मूलविद्या चिदीश्वरी । मदालसा मदोत्तुंगा, मदिरा मदना प्रिया ॥ ८ ॥ आलिव्यालप्रसूः पुण्या, पवित्रा परमेश्वरी । आदिदेवी कलाकान्ता त्रिपुरा जगदीश्वरी ॥ ६ ॥ मनोन्मनी महा-लक्ष्मीः सिद्धिलक्ष्मीः सरस्वती । सरित्कादम्बरी गोदा, गुह्यकाली गणेश्वरी ॥ १० ॥ गणाम्बिका जयातापी, तपना तापहारिणी । तपो-मयी दुरालम्बा, दुष्टग्रहनिवारिणी ॥ ११ ॥ दुःखदा सुखदा साध्वी, परमामृतसूसुरा । सुधा सुधांशुनिलया, मलया जलसन्निभा ॥ १२ ॥ समस्ता सपदम्भोजनिलया कालिका लया । विद्येश्वरी विश्वमयी

विराट् छन्दोगतिर्मतिः ॥ १३ ॥ धृतिर्दादम्बिकी दोला लोपामुद्रा पटीयसा। अरिष्टारिष्टहा दुष्टा, कृशा काशा कुलाकुला ॥ १४ ॥ अकुलस्था पदन्यासा, न्यासरूपा विरूपिणी। विरूपाक्षी च कोष्टाक्षी कुलकान्ता पराजिता ॥ १५ ॥ अजिता कुलकालम्पा लम्पटा त्रिपुरेश्वरी। त्रितयी वेदविन्यासा, संन्यासा सुमतिर्भया ॥ १६ ॥ अभया सुमुखा देवी, महौषधिरलंवुषा। चपला चण्डिका चण्डा, चंड-मुण्ड निषूदनी ॥ १७ ॥ चपलाक्षी मदाविष्टा, मदिरारुणलोचना। पुरी त्रिपुरसूरासना, रमा रामा मनोरमा ॥ १८ ॥ संध्या संध्याभ्रशीला च शाला श्यामपयोधरा। शशांकमुकुटा श्यामा सुरा सुन्दर-लोचना ॥ १९ ॥ विषमाक्षी विशालाक्षी वशा वागीश्वरी शिवा। मनःशिला च कस्तूरी मृगनाभिर्मृगेक्षणा ॥ २० ॥ मृगारिवाहना साध्वी मानदा मत्तभाषिणी। नारसिंही वामदेवी वामा वामश्रुतिः प्रिया ॥ २१ ॥ पुण्या पुण्यगतिः पुण्या पुत्री पुण्यजनप्रिया। चामुण्डा उग्र-चण्डा च महाचण्डा उमात्तमा ॥ २२ ॥ तपस्विनी प्रभा ज्योत्स्ना मह-ज्ज्योतिः स्वरूपिणी। सुरूपा सद्गतिः साध्वी सदसद्रूपराजिता ॥ २३ ॥ सृष्टिः स्थितिः क्षेमकरी क्षमा क्षामोन्नतस्तनी। क्षोणी क्षम-करी क्षीणा शवस्था शिववल्लभा ॥ २४ ॥ दन्तुरा दाडिमप्रीतिर्दया दाम्भिकसूदनी। राक्षसी डाकिनी योग्या योगिनी योगवल्लभा ॥ २५ ॥ कबन्धा कन्धरा कृत्या कृत्तिका कण्टकान्तका। कलंकरहिता काली कंपा काश्मीरवल्लभा ॥ २६ ॥ काशी कीर्त्तिप्रदा कांची काश्मीरी कोलिकस्वरा। प्रभावती महारौद्री रुद्रपत्नी रुजापहा ॥ २७ ॥ रतिः स्तुतिस्तुरी तुर्य्या तोतला भववासिनी। तपः प्रिया शरच्छ्रेष्ठा पंगुपुत्री यमस्वसा ॥ २८ ॥ यामी यामांतका याम्या यमुना स्वनदी-तडित्। नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी ॥ २९ ॥ विगता विगतप्रश्ना कृशा कृष्टासिधारिणी। वारिचारा वरधारा वरदा वीर-सूदनी ॥ ३० ॥ वीरसूर्वामनाकारा दीर्घसत्रा दयावती। दरी धन-प्रदा धात्री धात्रिवल्ली महोदरी ॥ ३१ ॥ गणेश्वरी गणाकांक्षी कांची किंकिणघण्टिका। माया मायावती मत्ता प्रमत्ता परमेश्वरी ॥ ३२ ॥

पौरन्दरी शची सीता शीता तपस्वभावजा। स्वाभाविकगुण गुण्या गांभीर्य्यगुणभूषणा ॥ ३३ ॥ सूतिः सूर्य्यकला सप्ता सप्तसप्ततिरूपिणी। तेजस्विनी सदानन्दा सदा सन्तोषवर्द्धिनी ॥ ३४ ॥ तर्प्पणा कर्षणा होता संकल्पा शुभमन्त्रिका। दर्भा द्रोणिकला शांता समिधा सुखवेदिका ॥ ३५ ॥ धूम्राहुतिश्चरमतिश्चमीकररुचाश्रिताः। चिन्ता नलेश्वरी नीला काला नीलसरस्वती ॥ ३६ ॥ अपर्णा सुफला यज्ञा सभया निर्भया भया। भीमस्वना गर्भशिखा भास्वती भास्करा विभा ॥ ३७ ॥ विभावरी नदी नन्द्या नद्यावर्त्तप्रवर्त्तिनी। पृथ्वीधरा विषधरा विश्वगर्भा प्रवर्त्तिका ॥ ३८ ॥ विश्वमाया विश्वपाली विश्वम्भरविलासिनी। उरगेशा पद्मनाभा पद्मनाभप्रसूः प्रजा ॥ ३९ ॥ तोरणा तुलसी दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्युतिः। संपुटशयना शय्या शासना शमनान्तका ॥ ४० ॥ शम्पाकवर्णा शार्दूली शष्पा शीतांशुवल्लभा। स्तुत्या प्रणीता निपतिः कम्पना कम्पहारिणी ॥ ४१ ॥ चम्पकाभा चरा चीना दीना दीनजनप्रिया। वसुन्धरा वासवेशी वसुनाथा वटेश्वरी ॥ ४२ ॥ समुद्रा संगमा पूर्णा तरला तरुवासिनी। पार्वती पामरी मान्या माननीया मधुप्रिया ॥ ४३ ॥ माधवी मधुपानस्था मान्दिरा मन्दुरा मृगी। मुमूर्षा रूरुपा रेवा रेवती रमणी रमा ॥ ४४ ॥ ऋद्धिहस्ता सिद्धिहस्ता अन्नपूर्णा महेश्वरी। मनुरूपा जगज्ज्योतिः समस्ता सुरघातिनी ॥ ४५ ॥ गारुडी गगनालम्बा लंबमानकचप्रिया। पीताम्बरा पीतपुष्पा पूतना गीतवल्लभा ॥ ४६ ॥ वलाका जगदन्ता च जरा जपवरप्रदा। प्रीतिः कठोरवदना करालरदना रसा ॥ ४७ ॥ जिह्वा हस्ता च वगला प्रणया विनयप्रदा। काली करालवपुषी शेमुखी मक्षिका मुखी ॥ ४८ ॥ उत्तीर्णा ऊर्णिका तीक्ष्णा श्लक्ष्णा कामेश्वरी शिवा। शिवपत्नी सरोजाक्षी पद्महस्ता सरस्वती ॥ ४९ ॥ तथ्या पथ्यवती रथ्या रथस्था विततस्वरा। महती रागिणी मार्गी शुचिहासा महेश्वरी ॥ ५० ॥ हरिद्रत्ना शूलसितालक्ष्मीर्नायकसुन्दरी। अंवालिकाम्बा देवेशी अनद्याग्निशिखा श्रुतिः ॥ ५१ ॥ अलसाल्पगतिश्चांत्यानन्तानन्तगुणाश्रया। आद्या चादित्यसंकाशा

आदित्यकुलसुन्दरी ॥ ५२ ॥ आत्मरूपाधिशमनी आदिमायादिदेवता। इन्द्रप्रसूरिनज्योतिरिनाग्निशशिलोचना ॥ ५३ ॥ इन्द्रावरजसंस्तुत्या इला चेक्षुरसप्रिया। ईश्वरी चेशवनिता ईशा चेश्वरवल्लभा ॥ ५४ ॥ उमा उर्मी उरुभुजा उत्तुंगा चोक्षवाहना। उत्तंका चोत्तमध्येया उल्लासा चोरुगर्विणी ॥ ५५ ॥ उष्मा उर्णा च उर्वंगी ऊर्ध्वाक्षी चोर्ध्वमस्तका। ऋद्धिर्ऋचा ऋवर्णेशी ऋणहंत्री ऋचार्त्तिकी ॥ ५६ ॥ ऋद्धिजा च ऋवस्त्रा च ऋणिवासा महालसा। लृकारा लृकरालीना लृकारवरधारिणी ॥ ५७ ॥ एणांकमुकुटा चेहा चारुचन्द्रकलाधरा। एकारगतिरैश्वर्यदायिनी चेश्वरी गतिः ॥ ५८ ॥ ओंकारबीजरूपा च औत्रिकी बीजधारिणी। अम्बिका लंबिका बीज अः परोद्धाररूपिणी ॥ ५९ ॥ काली च भद्रकाली च कालिका भद्रकालिका। कदंबनिलया कम्पा कांची मण्डनमण्डिता ॥ ६० ॥ कलंकरहिता कूर्मा कांचना भाकरी रमा। कनकाचलवासा च करुणा कुलमानसा ॥ ६१ ॥ कुलस्था कोलिनी कुल्ला कुरुकुल्ला कपालिनी। कपालकुलनिर्विण्णा क्रींकारा कंजलोचना ॥ ६२ ॥ खंजनाक्षी खड्गधरा खेटकायुधभूषणा। खर्पराढ्या च खलहा खेटिनी खेचरी खगा ॥ ६३ ॥ खड्गायुधा खगगति खकाराक्षरभूषणा। गणाध्यक्षा गजगतिर्गणेशजननी गदा ॥ ६४ ॥ गोदा गदाधर प्राज्या गगनेशी महीमला। घुर्घुरा घटभूर्घूका घुसृणाभा घनेश्वरी ॥ ६५ ॥ घनसारप्रिया घर्म्या घवर्णकृतभूषणा। चांद्री चंद्रस्तुता चार्वी चन्द्रिका चण्डनिःस्वना। चंचरीकस्वना देवी चंच्चचामीकरा गदा ॥ ६७ ॥ छत्रिका छुरिका छच्छा छत्रचामरभूषणा। झींकारी जलजिह्वा च जम्भिका जलयोगिनी ॥ ६८ ॥ जटाजूटधरा जाति-जातीपुष्पसमानना। जलेश्वरी जगध्येया जानकी जननी जरा ॥ ६९ ॥ झंझांकरी झरत्कारी झरत्कांचीरकिंकिणी। झंझिका झंपकृत् झंपा झंपत्रासनिभारिणी ॥ ७० ॥ ञणरूपा ञक्वहस्ता ञकाराक्षरसम्मता। टंकायुधा महातथ्या टकारा टरुणा टसी ॥ ७२ ॥ ठक्कुरा ठत्करा ठानी डिंडीरवसना डला। ढंढानिलमयी ढंढा ढणत्कारकरा ढमा ॥ ७२ ॥ णान्ता णीलाशुभ्रा

णम्रा, णवर्णाक्षरभूषणा । तरुणी तुंदिला तोदा तामसी तामस-
प्रिया ॥ ७३ ॥ ताम्रातना ताम्रकरा ताम्राम्बरधरा तुला। तापत्रयहरा
तापी तैलासक्ता तिलोत्तमा ॥ ७४ ॥ स्थाणुपत्नी स्थली स्थूला
स्थितिः स्थैर्य्यधरा स्थली । दंतिनी दन्तुरा दावा देवकी देव-
नायका ॥ ७५ ॥ दमनी शमनी दण्ड्या दण्डहस्ता दुरानतिः। दुर्वारा
दुर्गतिर्द्राक्षा दक्षा द्राविडवासिनी ॥ ७६ ॥ दूरस्था दुन्दुभिध्वाना
दरदादरनाशिनी । दुःखघ्नी द्रुतगा दृष्टा दया दाम्भिकनाशिनी । ७७।
धर्म्या धर्मप्रसूर्धर्म्या धनदा धातृवल्लभा। धनुर्धरा धनवल्ली धानुष्क-
वरदायिनी ॥ ७८ ॥ धूमाली धूम्रवदना धूम्रश्रीर्धूम्रलोचना ।
नलिनी नतुका नांता नाङ्गा नलिनलोचना ॥ ७९ ॥ निर्मला निगमा-
चारा निम्नगा नगजा निमिः। नीलग्रीवा निरीहा च नीपोपवन-
वासिनी ॥ ८० ॥ निरंजनजनी जन्या निद्रालुर्नीरवासिनी। नटिनी
नाट्यनिरता नवनीतप्रियानिला ॥ ८१ ॥ नारायणी निराकारा निर्लेपा
नित्यवल्लभा। पद्मावती पद्मकरा पुत्रदा पुत्रवत्सला ॥ ८२ ॥
परोत्तरा पुटी पाठा पीतश्रोत्रा पुलोमजा । पुष्पिणी पुस्तककरा
पटुः पाठीनवाहना ॥ ८३ ॥ पापघ्ना शयनी पाली पल्ली परमसुन्दरी।
पिशाची च पिशाचघ्नी पानपात्रधरा पुटा ॥ ८४ ॥ पूर्णिमा पंचमी
पौत्री पानकृत्या च वल्लभा । पंचयज्ञा पंचशरा पंचाशीतिमनु-
प्रिया ॥ ८५ ॥ पंचाली पंचपुत्रा च पूज्या पूर्णमनोरथा। फलिनी
फलदात्री च फलहस्ता फणिप्रिया ॥ ८६ ॥ फिरंगदा स्फीतमतिः
स्फीतिः स्फीतिमती स्फुरा । वलमाया वलस्तन्या वलसेना वला
वला ॥ ८७ ॥ वगलेश्वरपूज्या च वलिनी वलवर्द्धिनी । वुद्धमाता
वौद्धमतिर्वद्धा वन्धनमोचनी ॥ ८८ ॥ भगिनी भगमाला च भग-
लिंगा भूतसम्भवा। भीमेश्वरी च भेरुण्डा भगेशी भगसर्प्पिणी ॥ ८९ ॥
भगलिंगस्थिता भाग्या भाग्यदा भगमालिनी। मत्ता मनोहरा मेना
मेनाकजननी मुरा ॥ ९० ॥ मुरली मानवी होत्री महस्वजनमोदिता।
मत्तमात्तंगगा माद्री मरालगतिरंचला ॥ ९१ ॥ यज्ञेश्वरेश्वरी यज्ञा
यजुर्वेदप्रियाश्रिता । यशोवती यतिस्था च यतात्मा यतिवल्लभा.

॥ ६२ ॥ यवनी यौवनस्था च यवा यक्षजनाश्रया । यज्ञसूत्रप्रिय-ज्येष्ठा यज्ञभूर्यज्ञमालिनी ॥ ६३ ॥ रंजिता राजपत्नी च राजसूयफल-प्रदा। रजोवती रजश्चित्रा राज्यदा राज्यवर्द्धिनी ॥ ६४ ॥ राज्ञी रात्रिचरेशानी रोगघ्नी त्रिपुरेश्वरी। ललिता लतिका लाप्या लोपा ललनलालसा ॥ ६५ ॥ लाटीरद्रुमवासा च लाटीरद्रुमवर्त्तिनी। लंका ललज्जटाजूटा लांघेता सुरसुन्दरी ॥ ६६ ॥ लोकेशवरदा लीला लयकर्त्री महालया। वेदी वलघ्ना वाणी च वेणा वेणुवनेश्वरी ॥ ६७ ॥ वंद-माना ववर्णाढ्या वाराही वीरमातृका। शंखिनी शंखवलया शंखा-युधधरा शमा ॥ ६८ ॥ शशिमंडलमध्यस्था शीतलाम्बुनिवासिनी । श्मशानस्था महाघोरो श्मशान-निलयेश्वरी ॥ ६९ ॥ सिन्धुः सूत्रधरा सत्रा समस्तकुलचारिणी। सप्तमी सात्विकी सत्वा सत्रस्था सुर-सूदनी ॥ १०० ॥ सुरेश्वरी सम्पदाद्या समस्ताचलचारिणी। सामदा समितिस्सामा सवना सवनेश्वरी ॥ १०१ ॥ हंसी हरप्रिया हास्रा हरिनेत्रा हराम्बिका । हेला हठेश्वरी हीरा हलिनी हलदायिनी ॥ १०२ ॥ हेहा हहारवा हाला-हला हलहताशया। क्षमा क्षेमप्रदा क्षामा क्षौमांवरधरा क्षया ॥ १०३ ॥ क्षितिः क्षीरप्रिया लक्ष्मीः क्षिति-भृत्तनया क्षधा। क्षत्रिणी ब्राह्मणी क्षत्रा क्षपाक्षा वीजमंडिता ॥१०४॥ लं क्षः वीजस्वरूपा च क्षकारा क्षरमातृका। दुर्गन्धनाशिनी दूर्वा दुर्गमा दुर्गनाशिनी ॥ १०५ ॥ दुर्गा दुर्गार्त्तिशमनी ॐ ह्रीं दुं बीज मंडिता। इति नामसहस्रं तु मंत्रगर्भं महाफलम् ॥ १०६ ॥ दुर्गाया दुर्गतिहरं सर्वदेवनमस्कृतम्। सर्वमन्त्रमयं दिव्यं देवदानवपूजितम ॥ १०७ ॥ श्रेयस्करं महापुण्यं महापातकनाशनम् । यः पठेत्पाठ-येद्वापि शृणोति श्रावयेदपि ॥ १०८ ॥ स महापातकैर्मुक्तो देवदानव-सेवितः । इह लोके श्रियं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत् ॥ १०९ ॥ दुर्गा-नामसहस्रं तु मूलमंत्रैकसाधनम्। अर्धरात्रे पठेद्वीरो मधुरासवसेवनः ॥ ११० ॥ त्रिवारं वर्मपूर्वं तु भवेद्वागोशसन्निभः। यः पठेद्देवि मध्याह्ने स्त्रीयुतो मुक्तकुंतलः ॥ १११ ॥ तस्य वैरिकुलं नश्येदाशुना दैत्यसूदनी। दहना दिवि देवेशि पतंगकुलमद्रिजे ॥ ११२ ॥ यः पठे-

द्वेतसीमूले सायं पूजितभैरवः। तस्यास्यकुहराद्वाणी निस्सरेद् गद्य-पद्य-भाक्॥ ११३ ॥ यः पठेत्सततं देवि शयने स्मेरताकुलः। संभवेद्वैरि-विध्वंसी धनेन धनदोपमः॥ ११४ ॥ वाग्भिर्वागीशसदृशः कवित्वेन सितोपमः। तेजसा सूर्यसंकाशो यशसा सत्यसन्निभः॥ ११५॥ बलेन वायुतुल्योऽपि लक्ष्म्या गीर्वाणनायकः। देवि किं वहुनोक्तेन संभवेद्भैरवोपमः॥ ११६ ॥ स्तंभनाकर्षणोच्चाट-वशीकरणक-क्षमः। रवौ भूर्ज्जे लिखेद्देवि निशीथे चाष्टगंधकैः ॥ ११७ ॥ सस्तन्प-रेतो राजस्कैः साधको मंत्रसाधकः। लिखित्वा वेष्टयेन्नामसहस्र-मणिमीश्वरि।' ११८॥ श्वेतसूत्रेण संवेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत्। सुवर्णरजताम्रैश्च वेष्टयेत्पीतसूत्रकैः॥ ११९ ॥ सम्पूज्य गुटिकां देवि शुभेऽह्नि साधकोत्तमः। धारयेन्मूर्ध्नि वा वाहौ गुटिकां काम-दायिनीम्॥ १२०॥ रणे रिपून्विजित्याशु कल्याणी गृहमाविशेत्। वंध्या वामभुजे धृत्वा कृत्वा साधकपूजनम्॥ १२१ ॥ पुत्राँल्लभेन्महा-देवि साक्षाद्वैश्रवणोपमान्। गुटिकैषा महादेवि गोप्या कामफल-प्रदा ॥ १२२ ॥ साधकैस्सततं पूज्या साक्षाद् दुर्गास्वरूपिणी। योऽर्चयेत्साधको दुर्गा-गुटिकां धारयेत्प्रिये ॥ १२३ ॥ पठेद्वर्मं शिवे मंत्रनामसाहस्रकं परम्। अंगस्तोत्रं फलं तस्य देवि वक्ष्येऽधुना श्रृणु ॥ १२४॥ वने राजकुले वापि दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे। अरण्ये प्रान्तरे दुर्गे श्मशाने सिन्धुसंकटे॥ १२५॥ वधे यक्ष-पिशाचादि भूत-प्रेत-भये तथा। वीरो विगतभीर्देवि सर्वत्र विजयी भवेत्॥ १२६ ॥ स्तंभयेद्वायुसूर्यौ च चंद्रादीन्साधकोत्तमः। मोहयेदखिलान् शत्रुन् उच्चाटयति वैरिणः। वशयेद्देवताः सद्यः किं पुनर्मानवान् शिवे ॥ १२८ ॥ शमयेदखिलान् रोगान्महोत्पातानुपद्रवान्। किं किन लभते वीरो दुर्गापंचांगपूजनात्॥ १२९ ॥ इदं रहस्यं दुर्गाया अष्टाक्ष-र्य्या मयोदितम्। सर्वस्वं सारतत्वं च मूलविद्यामयं परम्॥ १३०॥ महनीचक्रमस्थानां साधकानां यशस्करम्। पठेत्संपूजयेद्देव्या मंत्रनाम-सहस्रकम्॥ १३१॥ इदं सारं हि तंत्राणां तत्वानां तत्त्वमुत्तमम्। दुर्गानामसहस्रं तु तव भक्त्या प्रकाशितम्॥ १३२॥ अभक्ताय न

दातव्यं गोप्तव्यं पशुसन्निधौ। अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्वा नरकमाप्नुयात् ॥ १३३ ॥ दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च। शान्ताय भक्तियुक्ताय देयं नाम सहस्रकम् ॥ १३४ ॥ विना दानं न गृह्णीयात् न दद्यात् दक्षिणां विना। दत्वा गृहीत्वाप्युभयोः सिद्धिहानिर्भवेद् ध्रुवम् ॥ १३५ ॥ इदं नामसहस्रं तु गुप्तं गोप्यतमं शिवे। तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥ १३६ ॥

इति श्री रुद्रयामले तंत्रे देवीरहस्ये दुर्गानामसहस्राख्यानं नामैकोनपञ्चाशत्तमः पटलः। समाप्तमिदं दुर्गासहस्रनामस्तोत्रम्।

संवत् २०१६ माघ कृ० १४ गुरुवासरे जोशी इत्युपाह्व माधवगणपति-शर्मणः संगृहीत पुस्तकद्वारा लिखितम्।

शुभम् भूयात्।

अथ श्रीमहाकाली स्तोत्रम्

प्राग्देहस्थो यदाऽहन्तवचरणयुगन्नाऽऽश्रितो नाऽर्चितोऽहन्तेनाद्याकीतिवर्गैर्ज्जठरजदहनैर्बाध्यमानो बलिष्ठैः। क्षिप्त्वा जन्मान्तरान्नः पुनरिह भविता काऽऽश्रयः काऽपि सेवा क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले !॥ १ ॥ बाल्ये बालाभिलापैर्ज्जडितजडमतिर्बाललीलाप्रसक्तो न त्वां जानामि मातः! कलिकलुषहराम्भोगमोक्षप्रदात्रीम्। नाऽऽचारो नैवपूजा न च यजनकथा न स्मृतिर्नैव सेवा, क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले ॥ २ ॥ प्राप्तोऽहं यौवनञ्चेद्विपधरसदृशैरिन्द्रियैर्दष्टगात्रो नष्टप्रज्ञः परस्त्रीपरधनहरणें सर्व्वदा साभिलाषः। त्वत्पादाम्भोजयुग्मं क्षणमपि मनसा न स्मृतोऽहङ्कदापि क्षन्तव्यो० ॥ ३ ॥ प्रौढो भिक्षाभिलापी सुतदुहितृकलत्रार्थमन्नादिचेष्टः, क्व प्राप्स्ये कुत्र यामीत्यनुदिनमनिशञ्चिन्तया

मग्नदेहः । नो ते ध्यानन्न चाऽऽस्था न च भजनविधिर्न्नामसङ्कीर्त्त-नम्वा क्षन्तव्यो० ॥ ४ ॥ वृद्धत्वे वुद्धिहीनः कृशविवशतनुः श्वासकासातिसारै कर्म्मानर्होऽक्षिहीनः प्रगलितदशनः क्षुत्पिपासाभिभूतः । पश्चात्तापेन दग्धो मरणमनुदिनन्ध्येयमात्रन्नचान्यत्क्षन्तव्यो० ॥ ५ ॥ कृत्वा स्नानन्दिनादौ क्वचिदपि सलिलं नो कृतं नैव पुष्पाते नैवेद्यादिकञ्च क्वचिदपि न कृतं नाऽपि भावो न भक्तिः । न न्यासो नैव पूजा न च गुणकथनं नापि चाऽऽर्चा कृता ते क्षन्तव्यो० ॥ ६ ॥ जानामि त्वां न चाऽहं भवभयहरणीं सर्वसिद्धिप्रदात्रीं नित्यानन्दोदयाढ्यां त्रितयगुणमयीन्नित्यशुद्धोदयाढ्याम् । मिथ्याकर्माभिलाषैरनुदिनमभितः पीड़ितो दुखसङ्घैः क्षन्तव्यो० ॥ ७ ॥ कालाभ्रां श्यामलाङ्गीं विगलितचिकुराङ्खड्गमुण्डाभिरामां त्रासत्राणेष्टदात्रीं कुणपगणशिरोमालिनीं दीर्घनेत्राम् । संसारस्यैकसाराम्भवजननहराम्भावितो भावनाभिः क्षन्तव्यो० ॥ ८ ॥ ब्रह्मा विष्णुस्तथेशः परिणमति सदा त्वत्पदाम्भोजयुग्मं भाग्याभावान्नचाहऽम्भवजननि ! भवत्पादयुग्मम्भजामि । नित्यंल्लोभप्रलोभैः कृतविवशमतिः कामुकस्त्वांम्प्रयाचे क्षन्तव्यो० ॥ ९ ॥ रागद्वेषैः प्रमत्तः कलुषयुततनुः ,कामनाभोगलुब्धः कार्य्याकार्य्याविचारी कुलमतिरहितः कौलसङ्घैर्विहीनः । क्व ध्यानन्ते क्व चाऽऽर्चा क्व च मनुजपनं नैवकिञ्चित्कृतोऽहं क्षन्तव्यो० ॥ १० ॥ रोगी दुःखी दरिद्रः परवशकृपणः पांशुलः पापचेता, निद्रालस्यप्रसक्तस्सुजठरभरणे व्याकुलः कल्पितात्मा । किन्ते पूजाविधानं त्वयि क्वनु (?) सुमतिः क्वाऽनुरागः क्वचाऽऽस्था क्षन्तव्यो० ॥ ११ ॥ मिथ्याव्यामोहरागैः परिवृतमनसः क्लेशसङ्घान्वितस्य क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरणविरहिणः पापकर्म्मप्रवृत्तेः । दारिद्र्यस्य क्व धर्म्मः क्व च जननि ! रुचिः क्व स्थितिः साधुसङ्घैः क्षन्तव्यो० ॥ १२ ॥ मातस्तातस्य देहाज्जननिजठरगः संस्थितस्त्वद्वशेऽहन्त्वं हत्राङ्कारयित्री करणगुणमयी कर्महेतुस्वरूपा । त्वम्बुद्धिश्चित्तसंस्थाऽप्यहमतिभवती सर्वमेतत्क्षमस्व क्षन्तव्यो० ॥ १३ ॥ त्वम्भूमिस्त्वं जलञ्च त्वमसि हुतवहस्त्वं जगद्वायुरूपा त्वञ्चाकाशम्मनश्चप्रकृतिरसि महत्पूर्व्विका पूर्व्व-

पूर्व्वा। आत्मात्वञ्चाऽसि मातः परमसि भवती त्वत्परन्नैवकिञ्चित्क्षन्तव्यो० ॥ १४ ॥ त्वं काली त्वञ्च तारा त्वमसि गिरिसुता सुन्दरी भैरवी त्वं त्वं दुर्गा छिन्नमस्ता त्वमसि च भुवना त्वं हि लक्ष्मी शिवा त्वम्। धूमा मातङ्गिनी त्वं त्वमसि च वगला मङ्गलादिस्तवाऽऽख्या क्षन्तव्यो० ॥ १५ ॥ स्तोत्रेणाऽनेन देवीम्परिणमति जनो यः सदा भक्तियुक्तो दुष्कृत्यादुर्गसङ्घम्परितरति शतम्विघ्नतानाशमेति। नाधिर्व्याधिः कदाचिद्भवति यदि पुनस्सर्वदा सापराधः सर्वन्तत्कामरूपे त्रिभुवनजननि ! क्षामये पुत्रबुद्ध्या ॥ १६ ॥ ज्ञाता वक्ता कवीशो भवति धनपतिर्दानशीलो दयात्मा निष्पापो निष्कलङ्की कुलपतिकुशलस्सत्यवाग्धार्मिकश्च। नित्यानन्दो दयाढ्यः पशुगण–विमुखः सत्पथाचारशीलः संसाराब्धिं सुखेन प्रतरति गिरिजापादयुग्मावलम्वात् ॥ १७ ॥

॥ इति श्रीकालीस्तोत्रं समाप्तम् ॥

दुर्गाष्टोत्तरशतनामनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुध्व कमलानने !। यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत्सती ॥ १ ॥ ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भव मोचनी। आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥ २ ॥ पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः। मनोबुद्धिरहङ्कारा चित्तरूपा चिताचितिः ॥ ३ ॥ सर्वमन्त्रमयी सत्या सत्यानन्दस्वरूपिणी। अनन्ता भाविनी भाव्या भवा भव्या सदागतिः ॥ ४ ॥ शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा। सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ५ ॥ अपर्णाऽनेकवर्णा च पाटला पाटलावती। पट्टाम्वरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी ॥ ६ ॥ अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी कुल (सुर) सुन्दरी। वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता ॥ ७ ॥ ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा। चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥ ८ ॥ विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना

क्रिया नित्या च वुद्धिदा । वहुला वहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना ॥ ६ ॥ निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी । मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ १० ॥ सर्वाऽसुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी । सर्वशास्त्रमयी सत्या (विद्या) सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥ ११ ॥ अनेक शस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य (वि) धारिणी । कुमारी चैककन्या च कैशोरी (कौमारी) युवती यतिः ॥ १२ ॥ अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता वलप्रदा । महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महावला ॥ १३ ॥ अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी । नरायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥ १४ ॥ शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी । कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा व्रह्मवादिनी ॥ १५ ॥ य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम् । नासाध्यं विद्यते देवि ! त्रिपु लोकेषु पार्वति ! ॥ १६ ॥ धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च । चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिञ्च शाश्वतीम् ॥ १७ ॥ कुमारीम्पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् । पूजयेत्परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम् ॥ १८ ॥ तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि ! सर्वैः सुरवरैरपि । राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥ १६ ॥ गोरोचनालक्तककुङ्कुमेन सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण । विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत्सदा धारयते (ता) पुरारिः ॥ २० ॥ भौमावास्या निशामग्रे (भागे) चन्द्रे शतभिषां गते । विलिख्य प्रपठेत्स्तोत्रं स भवेत्सम्पदाम्पदम् ॥२१॥

॥ इति श्रीदुर्गाष्टोत्तर शतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ अम्बाष्टकम्

चेटीभवन्निखिलखेटीकदम्वतरुवाटीषु नाकिपटलीकोटीरचारुतरकोटीमणीकिरणकोटीकरम्वितपदा । पाटीरगन्धकुचशाटी कवित्वपरिपाटीमगाधिपसुता घोटीकुलादधिकधाटीमुदारमुखवीटीरसेन तनुताम् ॥ १ ॥ कूलातिगाभिभयतूलावलिज्वलनकीला निजस्तुतिविधाकोलाहलक्षपितकालामरि कुशलकीलालपोपणनभाः । स्थूला कुचे जलदनीला कचे कलितलीला कदम्वविपिने शूलायुधप्रणतिशीला विभातु

हृदि शैलाधिराजतनया ॥ २ ॥ यत्राऽऽशयो लगति तत्रागजा वस्तु कुत्राऽपि निस्तुलशुका सुत्रामकालमुखसत्राशनप्रकरसुत्राणकारिचरणा। छत्रानिलातिरयपत्राभिरामगुणमित्रामरीसमवधूः कुत्रासहन्मणिविचित्राकृतिः स्फुरितपुत्रादिदाननिपुणा ॥ ३ ॥ द्वैपायनप्रभृतिशापायुधत्रिदिवसोपानधूलिचरणा पापापहस्वमनुजापानुलीनजनतापापनोदनिपुणा। नीपालया सुरभिधूपालका दुरितकूपादुदञ्चयतु मां रूपाभिका शिखरिभूपालवंशमणिदीपायिता भगवती ॥ ४ ॥ यालीभिरात्मतनुताली सकृत्प्रियकपालीषु खेलति भयव्यालीनकुल्यसितचूलीभरा चरणधूलीलसन्मुनिवरा। वालीभृति श्रवसि तालीदलं वहति यालीकशोभितिलका साळीकरोतु मम काली मनः स्वपदनालीकसेवनविधौ ॥ ५ ॥ न्यङ्का करे वपुषि कङ्कादिरक्तपुषि कङ्कादिपक्षिविषये त्वं कामनामयसि किं कारणं हृदयपङ्कारिमेहि गिरिजाम्। शङ्काशिलानिशितटङ्कायमानपदसंकाशमानसुमनोभङ्कारिमानततिमङ्कानुपेतशशिसङ्काशिवक्त्रकमलाम् ॥ ६ ॥ कुम्बावतीसमविडम्बा गलेन नवतुम्बाभवीणसविधा शम्बाहुलेयशशिविम्बाभिराममुखसम्बाधितस्तनभरा। अम्बा कुरङ्गमदजम्बालरोचिरिह लम्बालका दिशतु मे विम्बाधरा विनतशम्बायुधादिनकुरम्बा कदम्बविपिने ॥ ७ ॥ इन्धानकीरमणिबन्धा भवे हृदयबन्धावतीव रसिका सन्धावती भुवनसन्धारणेऽप्यमृतसिन्धावुदारनिलया। गन्धानुभानमुहुरन्धालिवीतकचबन्धा समर्पयतु मे शन्धाम भानुमपि सन्धानमाशु पदसन्धानगप्यगसुता ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितमम्बाष्टकं समाप्तम् ॥

अथ इन्द्राक्षीस्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीन्द्राक्षीस्तोत्रमन्त्रस्य सहस्राक्ष ऋषिः। इन्द्राक्षी देवता। अनुष्टुप्छन्दः। महालक्ष्मीः बीजम्। भुवनेश्वरीति शक्तिः। भवानीति कीलकम्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं इति बीजानि। मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे श्रीमदिन्द्राक्षीस्तोत्रजपे विनियोगः।

ॐ इन्द्राक्षी इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ महालक्ष्मीरिति तर्जनी-

भ्यां नमः। ॐ माहेश्वरीति मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अम्बुजाक्षी-त्यनामिकाभ्यां नमः। ॐ कात्यायनीति कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ कौमारीति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ इन्द्राक्षीति हृदयाय नमः। ॐ महालक्ष्मीरिति शिरसे स्वाहा। ॐ माहेश्वरीति शिखायैवषट्। ॐ अम्बुजाक्षीति कवचाय हुम्। ॐ कात्यायनीति नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ कौमारीत्यस्त्राय फट्। भूर्भुवस्वरोम् इति दिग्बन्धनम्।

पूर्वस्यां पातु मां ब्राह्मी चाऽऽग्नेय्यां तु महेश्वरी। कौमारी पातु याम्ये वै नैर्ऋत्यां पातु भैरवी ॥ १ ॥ पश्चिमे पातु वाराही वायव्ये नारसिंहिका। कालरात्रिरुदीच्यां वा ऐशान्यां सर्वशक्तिधृक् ॥ २ ॥ ऊर्ध्वं मे भैरवी पातु चाधस्थं विन्ध्यवासिनी। यद्यद्विपममस्थानं तत्तद्रक्षतु चेश्वरी ॥ ३ अथ ध्यानम् ॥ इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीत-वस्त्रद्वयान्वितःम्। वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेन वरप्रदाम् ॥ १ ॥ इन्द्राक्षीं युवतीं देवीं नानालङ्कारभूपिताम्। प्रसन्नवदनाम्भोजामप्स-रोगणसेविताम् ॥ २ ॥ द्विभुजां सौम्यवदनां पाशाङ्कुशधरां पराम्। त्रैलोक्यमोहिनीं देवीमिन्द्राक्षीनामकीर्तिताम्। ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं क्लूं इन्द्राक्ष्यै नमः। इन्द्र उवाच ! इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता। गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गा नाम्नीति विश्रुता ॥ ४ ॥ कात्यायनी महादेवि चन्द्रघण्टा महातपा। सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥ ५ ॥ नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला। अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ॥ ६ ॥ मेघश्यामा सहस्राक्षी मुक्तकेशी जलोदरी। महादेवी मुक्त-केशी घोररूपा महाबला ॥ ७ ॥ अजिता भद्रदा नन्दा रोगहन्त्री शिवप्रिया। शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ॥ ८ ॥ सदा सम्मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी। इन्द्राक्षी इन्द्ररूपा च इन्द्रशक्तिः परायणा ॥ ९ ॥ महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता। वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ॥ १० ॥ श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती। अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोकाऽपराजिता ॥ ११ ॥ भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा। एतैर्नामशतै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ॥ १२ ॥ आयुरारोगमैश्वर्यं वित्तं

ज्ञानं यशो बलम्। नाभिमात्रजले स्थित्वा सहस्रपरिसंख्यया ॥ १३॥ जपेत्स्तोत्रमिमं मन्त्रं वाचां सिद्धिर्भवेत्ततः। अनेन विधिना भक्त्या मन्त्रसिद्धिश्च जायते ॥ १४ ॥ सन्तुष्टा च भवेद्देवि प्रत्यक्षा सम्प्रजायते। शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते नाऽत्र संशयः ॥ १५ ॥ आवर्तनसहस्रेण लभ्यते वाञ्छितं फलम्। सायं शतं पठेन्नित्यं षण्मासात्सिद्धिरुच्यते ॥ १६ ॥ चोरव्याधिभयस्थाने मनसा ह्यनुचिन्तयन्। सम्वत्सरमुपाश्रित्य सर्वकामार्थसिद्धये ॥ १७ ॥ राजानं वश्यमाप्नोति षण्मासान्नाऽत्र संशयः ॥ १८ ॥

॥ इति श्रीन्द्राक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ दुर्गापदुद्धारकस्तोत्रम्

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे। नमस्ते जगद्वन्द्यपादारविन्दे नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ १ ॥ नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे। नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे नम० ॥ २ ॥ अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य भयार्त्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः। त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री नम० ॥ ३ ॥ अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्येऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे। त्वमेका गतिर्देवि! निस्तारनौका नम० ॥ ४ ॥ अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम्। त्वमेका गतिर्देवि! निस्तारहेतुर्नम० ॥ ५ ॥ नमश्चण्डिके चण्डदुर्द्दण्डलीलासमुत्खण्डिता खण्डिताशेषशत्रो। त्वमेका गतिर्देवि! निस्तारबीजं नम० ॥ ६ ॥ त्वमेवाघभावाधृतासत्यवादीर्नजाताजिताक्रोधनात्क्रोधनिष्ठा। इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाडी नम० ॥ ७ ॥ नमो देवि! दुर्गे! शिवे! भीमनादे सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे!। विभूतिः शची कालरात्रिः सती त्वं नम० ॥ ८ ॥ शरणमसि सुराणां सिद्धविद्याधराणां मुनिमनुज (दनुज) पशूनां दस्युभिस्त्रासितानाम्। नृपतिगृहगतानां व्याधिभिः पीडितानां त्वमसि शरणमेका देवि! दुर्गे! प्रसीद ॥ ९ ॥ इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धारहेतुकम्। त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा पठनाद्घोरसङ्कटात् ॥ १० ॥ मुच्यते नाऽत्र सन्देहो

भुवि स्वर्गे रसातले। सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेद्भक्तिमान् सदा ॥ ११ ॥ स सर्वं दुष्कृतं त्यक्त्वा प्राप्नोति परमं पदम्। पठनादस्य देवेशि! किं न सिध्यति भूतले ॥ १२ ॥ स्तवराजमिदं देवि ! सङ्क्षेपात्कथितं मया ॥ १३ ॥

इति श्रीसिद्धेश्वरीतन्त्रे उमामहेश्वरसम्वादे श्रीदुर्गापदुद्धारकस्तोत्रं समाप्तम् ॥

श्रीभवानीस्तुतिः

श्रीभवान्यै नमः। आनन्दमन्थर पुरन्दरमुक्तमाल्यं मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य। पादाम्बुजं भवतु वो विजयाय मञ्जुमञ्जीरशिञ्जितमनोहरमम्बिकायाः ॥ १ ॥ ब्रह्मादयोऽपि यदपाङ्गतरङ्गभङ्ग्या सृष्टिस्थितिप्रलयकारणताम्व्रजन्ति। लावण्यवारिनिधिवीचिपरिप्लुतायै तस्यै नमोऽस्तु सततं हरवल्लभायै ॥ २ ॥ पौलस्त्यपीनभुजसम्पदुदस्यमानकैलाशसम्भ्रमविलोलदृशः प्रियायाः। श्रेयांसि वो दिशतु निह्नुतकोपचिह्नमालिङ्गनोत्पुलकमासितमिन्दुमौलेः ॥ ३ ॥ दिश्यान्महासुरशिरः सरसीप्सितानि प्रेङ्खन्नखावलिमयूखमृणालनालम्। चण्ड्याश्चलच्चटुलनूपुरचञ्चरीकझाङ्कारहारि चरणाम्बुरुहद्वयम्वः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीभवानीस्तुतिः समाप्तम् ॥

श्रीकनक (लक्ष्मी) धारास्तवः

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्। अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला मङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥ १ ॥ मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपाप्रणिहितानी गतागतानि। माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले यां सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥ २ ॥ आमीलितार्धमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दमन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम्। आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥ ३ ॥ वाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावली च हरिनीलमयी विभाति। कामप्रदा भगवतोऽपि

कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ४ ॥ कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव। मातुः समस्त जगतां महनीयमक्षि भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥ ५ ॥ प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावान्मङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन। मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं मन्दालसाक्षि ! मकराकरकन्यकायाः ॥ ६ ॥ विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्षमानन्दहेतुरधिकं मधुविद्विषोऽपि । ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥ ७ ॥ इष्टा विशिष्टमतयोऽपि नरा यथा द्राग्दृष्टास्त्रिविष्टपसदश्च पदं भजन्ते। दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृपीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥ ८ ॥ दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारामस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे। दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरान्नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥ ९ ॥ धीर्देवतेति गरुड़ध्वजभामिनीतिशाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति । सृष्टिस्थितिप्रलयसिद्धिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥ श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणाश्रयायै । शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥ ११ ॥ नमोऽस्तु नालीकविभावनायै नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै। नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥ १२ ॥ नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै। नमोऽस्तु देवादिदयापरायै नमोऽस्तु शार्ङ्गायुधवल्लभायै ॥ १३ ॥ नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै। नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै ॥ १४ ॥ नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै। नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै नमोऽस्तु नन्दात्मजवल्लभायै ॥ १५ ॥ स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्। गुणाधिका गुरुधनभाग्यभागिनो भवन्ति ते भवमनु भाविताशयाः ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमद्भगवत्पादशङ्कराचार्यकृतः कनक (लक्ष्मी) धारास्तवः सम्पूर्णः ॥

———

आहुति संख्या के अनुसार कुण्ड का विस्तार निम्न रूप में जानना चाहिये ।

आहुतिमान	दश	पचास	एकसौ	एकहजार	दशहजार	पचासहजार	एकलाख	दशलाख	पचासलाख	करोड़
	१०	५०	१००	१०००	१००००	५००००	१०००००	१००००००	५००००००	१०००००००
	पद्म	रत्नि	अरत्नि	हस्त	दो हाथ	तीन हाथ	चार हाथ	छ हाथ	सात हाथ	आठ हाथ
कुण्डमेंहाथ मान	,	१	१	१	२	३	४	६	७	८
कुण्डमेंअङ्गुलीकामान	१२	२१	२२।।	२४	३४	४१।५	४८	५८।७	६३।४	६७।७

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ कुण्डविधानम् ॥

प्रश्न— कुण्ड किसे कहते हैं।

उत्तर

कुडि दाहे धातु से अधिकरण में घञ् प्रत्यय से बना है जिसका अर्थ है कुण्डयते यत्र (करणाधिकरणयोश्च) इति घञ्। अर्थ इसका है–जिसमें जलाया जावे। इससे अग्नि का आधार स्थल आ जाता है। दूसरा अर्थ है—कुण्डयते दह्यते येन जिससे जलाया जावे। इन दोनों व्युत्पत्तियों से आधार–भूमि तथा आधेय-अग्नि का बोध होता है। अथवा कुड़ि रक्षणे से कुण्ड बनाता है-- जिसको पचाद्यजन्त मानने से अर्थ होता है कुण्डयति जो रक्षा करता है- अर्थात् जो रक्षा के प्रति कर्तृत्व रखता है। अथवा इसी धातु से करण में घञ् करें तो अर्थ होता है जो रक्षा के प्रति 'असाधारण कारण है। अथवा कुण्डति वैकल्यं सम्पादयति कुण्डः। अनेन चतुष्कोणमुदरमायति यद् वेदी रूपम् वा तत्रस्थो जाठरोयो बुभुक्षया वैकल्यकृत्। इसीलिये पेट को पापी बताते हैं कि यह सब कुछ कराता है।

चतुरस्त्रकुण्ड की महत्ता पर विचार

अथ कुण्डविधि :-। तत्र मत्स्यपुराणम्। प्रागुदक् प्लवनां भूमिं कारयेद् यत्नतो नरः। प्रागुदक् प्लवनां पूर्वनीचां उत्तरनीचां वा। तत्र वशिष्ठपञ्चरात्रे तत्र विज्ञानलतिकायां च " सर्वाधिकारिकं कुण्डं चतुरस्रं तु सर्वदम् "। चतुरस्रं चतुष्कोणम्। भविष्योत्तरे—"सहस्रे त्वथ होतव्ये कुर्य्यात् कुण्डं करात्मकम्। द्विहस्तमयुते तच्च लक्षहोमे चतुष्करम्'। द्विहस्तादिके मानमाह यामलः।

पूर्वपूर्वस्य कुण्डस्य कोणसूत्रेण निर्मितम्। उत्तरोत्तर कुण्डानां मानन्तत् परिकीर्त्तितम् ।" पूर्वपूर्वस्य हस्तद्विहस्तादिमितस्य कोणसूत्रेण ईशान कोणान्नैर्ऋतिं कोणदत्तसूत्रेण यन्मानं निर्म्मितं परिमितं उत्तरोत्तर कुण्डानां तदेव पारिभाषिकं द्विहस्तादिमानं न तु प्रकृतहस्तद्वैगुण्यादि मितम्। तथात्वे द्विहस्तादिमितस्य चतुर्हस्तादिपरिमाणपत्तेः कृपक परिमाणवत् । वशिष्ठ पञ्चरात्रे—"यावान् कुण्डस्य विस्तारः खननं तावदिष्यते । हस्तैके मेखला तिस्रो वेदाग्निनयनाङ्गुलाः"। कुण्डे द्विहस्ते ता ज्ञेया रसवेदगुणाङ्गुलाः । चतुर्हस्तेतु कुण्डेता वसु-तर्क युगाङ्गुलाः ।" मेखला ब्रह्मचारिमेखलावत्। कुण्डवेष्टिता मृद्घ-टिताताश्च खातदेशाद्बाह्ये। एकाङ्गुल रूपं कण्ठं परित्यज्य उच्छ्रा-येण विस्तारेणचेत्यादि क्रमेण वेदाद्यङ्गुलाः। एतद्विपरीतास्तन्त्रा-न्तरोक्ता व्यवहारविरुद्धाः । वेदाश्चत्वारः । अग्नयस्त्रयः। नयने द्वे। रसाः षट् । गुणास्त्रयः। वसुतर्कयुगानि अष्टषट्चत्वारि । कालोत्तरे— "खाताद्बाह्येऽङ्गुलः कुण्डः सर्वकुण्डेष्वयं विधिः ।" पिङ्गलामतेऽपि— "खातादेवाङ्गुलं त्यक्त्वा मेखलानां विधिर्भवेत्"। एक कुण्डस्य पश्चिमादिक कर्त्तव्यतामाह-महादान निर्णये--भुक्तौ मुक्तौ तथा पुष्टौ जीर्णोद्धारे तथैव च। सदा होमे तथा शान्तावेकं वारु-णदिग्गतम् ।" शारदातिलके— "होतुरग्रे योनिरासामुपर्य्यश्वत्थ पत्रवत् । मुष्टिरत्न्येकहस्तानां कुण्डानां योनिरीरिता। षट्चतु-र्यङ्गुलायाम विस्तारोन्नतशालिनी। एकाङ्गुलंतु योन्यग्रं कुर्[illegible]-दीषदधोमुखम् । एकैकाङ्गुलितो योनिं कुण्डेष्वन्येषु वर्द्धये[त्]। यवद्वयक्रमेणैव योन्यग्रमपि वर्द्धयेत् । स्थलादारभ्य नालं [स्या]त योन्यामध्ये सरन्ध्रकम् "। आसां मेखलानाम् । अश्वत्थपत्रव[दि]-त्यनेन चतुरङ्गुलविस्तृतमूलाद्यथोक्त क्रमेणैकाङ्गुल्यन्तः संकुचि[त]-विस्तारा । यामले—"नालमेखलयोर्मध्ये परिधेः स्थापनाय[?] । रन्ध्रं कुर्य्यात्तथा विद्वान् द्वितीयमेखलोपरि ।" पुरश्चरणचन्द्रिका[यां] तु एतद्वचनात् पूर्वं "स्थलादारभ्य नालं स्यात् योनिमूलस्य धार[ा]।

इत्यर्द्धं लिखितम् । परिधीस्ताद्विन्यासाँश्चाह– छन्दोगपरिशिष्टम्–
"बाहुमात्राः परिधयः ऋजवः सत्वचोऽव्रणाः। त्रयो भवन्त्यशीर्णाग्रा
एतेषां तु चतुर्दिशम्। प्रागग्रवाभितः पश्चादुदग्रमथावरम्। न्यसे-
त्परिधिमन्यत्रचेदुदगग्रः स पूर्वतः।" अव्रणाः छिद्ररहिताः। अभितः
अग्नेः पार्श्वद्वये दक्षिणतः उत्तरतश्च पश्चात् पश्चिमे। उदगग्रमुत्तराग्रम्।
त्रैलोक्यसारे—"कुम्भद्वयसमायुक्ता अश्वत्थदलवन्नता। अङ्गुष्ठ-
मेखलायुक्ता मध्येखाज्यास्थितिर्यथा। कुम्भद्वयसमायुक्ता गजकुम्भा-
कारमूलदेशयुक्ता। नता नम्रा। अङ्गुष्ठमेखलायुक्ता अङ्गुष्ठ-
मितमृद्घटित मेखलावेष्टनयुक्ता।

तथात्वं हस्तगालिताज्यास्थित्या कुण्डेतत्पातो भवतीत्यर्थः। अत-
एव स्वायम्भुवे—"अङ्गुष्ठमानोष्ठकुण्डा कार्य्याश्वत्थदलाकृतिः"।
अङ्गुष्ठमानोष्ठः कंठे यस्या योनेः सा तथा ओष्ठोऽत्राग्रं। हयशीर्ष
पञ्चरात्रे— 'कल्पयेदन्तरे नाभिं कुण्डस्याम्बुजसन्निभम्। मुष्ट्य-
रत्न्यैकहस्तानां नाभिरुत्सेधविस्तृता। नेत्रवेदाङ्गुलोपेतो कुण्डेष्वन्येषु
वर्द्धयेत्। यवद्वयक्रमेणैव नाभिं पृथगुदारधीः। नाभिक्षेत्रं द्विधा
भित्त्वा मध्ये कुर्वीत कर्णिकाम्। बहिरंशद्वयेनाष्टौ पत्राणि परिकल्पयेत्।

॥ श्रीः ॥

कुण्ड विधान

१—कुण्ड आहुति संख्या के अनुसार छोटा बड़ा होता हैं जैसे—
५० आहूतियों के लिये यजमान वा आचार्य के मान से २१ अंगुल
का कुण्ड चाहिये। १०० आहूतियों में २२ अंगुल ४ जौ का तथा
१००० में २४ अंगुल अर्थात् एक हाथ का चाहिये। १०००० में
३४ अंगुल का यानी दो हाथ का आवश्यक है। १००००० लाख में
४ हाथ का यानी ४८ अंगुल का, १० लाख में ६ हाथ ५८ अंगुल
६ जौ का, १ कोटि में ८ हाथ ६७ अं० ७ जौ का चाहिये। कोई

कोई आचार्य कोटि होम में १६ हाथ का कुण्ड वताते हैं।

२—कुण्डों की भुजाओं के वनाने के लिये पहिले चतुरस्र की भुजाओं को समझ लेना चाहिये। भुजाओं के अलावा चतुरस्र कुण्ड के खात नाभिकुण्ड मेखला योनि पञ्चाङ्गों को भी भली भांति समझ लेना चाहिये फिर अन्य कुण्ड साङ्ग समझ में आ जावेंगे। चतुरस्र सव का मूल है। चतुरस्र यानी चौकोण कुण्ड में चारों भुजायें समान होती हैं। कितने हाथ के कुण्ड में एक भुजा किस मान की चाहिये इसके लिये शुद्ध मान निकालने की रीति नीचे दी जाती है ताकि भुजामान गल्ती भी छप जावेगा तो आप उसमें संशोधन कर शुद्ध कुण्ड उसके अनुसार वना सकेंगे।

३—एक हाथ के २४ अंगुल होते हैं। इस संख्या को (समद्विघातः कृतिः) नियमानुसार २४ से गुणाकर वर्ग वना लें। वर्ग ५७६ होगा। इसका मूल लेनेपर १ भुजा का मान भी २४ अंगुल ही होगा। परंच १ हाथ से आगे कुछेक कुण्डों को छोड़ ऐसा सीधा कार्य नहीं है। जैसे दो हाथ आदि के कुण्डों की भुजाओं का मान लेने के लिये आपको ५७६ जो एक हाथ के अंगुल २४ का वर्ग है—इसे क्रमशः २।३।४।५।६।७।८।९।१० से गुणाकर उसका (करणी) सावयव मूल लेना होगा। तव जाकर सही भुजमान निकलेगा। अव गुणनफल क्रम से लिखते हैं, छपने में भूल हो तो ५७६ को २ आदि संख्या से गुणाकर सुधार लें।

१	२	३	४	५	६	७	८
हाथ	हाथ	हाथ	हाथ	हाथ	हाथ	हाथ	हाथ
५७६,	११५२,	१७२८,	२३०४,	२८८०,	३४५६,	४०३२;	४६०८

९	१०	
हाथ	हाथ	इनके मूल लेने की रीति नीचे लिखेंगे।
५१८४,	५७६०,	

मूल लेने की रीति सोदाहरण लिखने के पहिले चक्र में सब का मूल लिखता हूं ताकि मूल निकालने की रीति से मिलान कर सकें। देखें नीचे का चक्र।

हा—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	थ
अं०-	२४,	३३,	४१,	४८,	५३,	५८,	६३,	६७,	७२,	७५,	गु
य-	०,	७,	४	०,	५.	६,	३,	७,	०,	७	व
यू-	०,	४,	४,	०,	२,	२,	७,	०,	०,	१	का
लि-	०,	४.	३.	०,	४,	३;	७,	३,	०,	२	का
बाला-	०,	३,	४,	०,	६,	२,	२,	५,	०,	०	प्र
र-	०,	५,	५	०,	४,	६,	०,	६,	०,	४	थ
ञ्य-	०,	४,	०,	०,	०,	०,	१,	०,	०,	०	स

हाथ १६ का भुज ६६ —

॥ श्रीः ॥

मूल लेने की विधि की प्रथम एक चक्र और देखें और उसके प्रथम स्थूल चक्र को देखें जिसके अनुसार कुण्ड भुजाएं बनानी चाहिये।

हाथ

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
क्षेत्रफल	५७६	११५२	१७२८	२३०४	२८८०	३४५६	४०३२	४६०८	५१८४	५७६०
अगु०	२४	३३	४१	४८	५३	५८	६३	६७	७२	७५
यवा	०	७	४	०	५	६	४	७	०	७
यूवा	०	४	४	०	२	२	०	०	०	३
लिक्षा	०	१	३	०	६	३	०	६	०	०
बालाग्र	०	६	३	०	०	४	०	०	०	०

पीछे लिखे अनुसार एक हाथ के कुण्ड में तथा दो हाथ आदि के कुण्डों में भुज लगाना चाहिये। एक हाथ के कुण्ड में जैसे २४-२४ अंगुल की चार भुजायें होती हैं वैसे ही दो हाथ आदि के कुण्ड में तत्तन्मान से ३३।७।४।४ ३।५।४ आदि मान की भुजायें होती हैं।

भगाकार कुण्ड की विधि

१ हाथ या २ हाथ वा ३, ४ आदि जितने हाथ का कुण्ड बनाना हो, चतुष्कोण उतने हाथ के कुण्ड पर सभी कुण्ड तैयार होंगे जैसे— भगाकार कुंड बनाना है तो चतुष्कोण पर निम्न प्रकार से बनावो। जितने प्रकृति क्षेत्र का भगाकार कुन्ड बनाना हैं उसके एक भुजा के अंगुलादि मान को ५ से विभक्त करो बालाग्रतक सहीमान निकालो फिर उस निकाले मान में इसी का ३२ वां भाग जोड़ो, एक हाथ में यह मान ५ अं० १ य० २ यू० होगा। ऐसे ही दो हाथ आदि के मान समझना। पश्चात् एक हस्तादि के चौकोण की नीचे की भुजा के मध्य भाग पर ऊपर तक इतनी बड़ी एक रेखा खींचो। पीछे उस चतुष्कोण के चार भाग पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण रेखाओं से करो। नीचे वाले दो चतुष्कोणों से अर्धगोलाकार बनावो जिसका एक भाग ऊर्ध्व जानेवाली मध्य रेखा के ऊपर वाले भाग से दोनों गोलों के दूसरे भागों को दो सीधी रेखाओं से मिलाओ भगाकार कुण्ड बन जावेगा।

अर्धचन्द्र कुण्ड विधि

प्रकृति क्षेत्र--मूलक्षेत्र फल को कहते हैं। जिस प्रकृतिक्षेत्र का अर्धचन्द्र करना हो—उसमें पांच का भाग दें पञ्चमांश ले लेवें और उसमें १.०० का भाग देने पर जो फल आवे पञ्चमांश में जोड़े। उस योगफल को प्रकृति क्षेत्र की भुजा के मान में घटावें जैसें—२४ पांचवां अंश ४।६।३। १।५ + इसी का शतांश ०।०।३।०।४ जोड़ने पर

४।६।६।२।१ हुआ। इसे २४ में घटाया तो १६।२।१।५।४ अंगुलादि मान हुआ परकाल को इतने मान से चौड़ा करो चतुरस्र की ऊपर की भुजा के मध्य में परकाल रख उसी रेखा को जायज समझते हुए नीचे धनुषाकार परकाल को घुमाते हुए बनाओ शुद्ध अर्धचन्द्र होगा।

त्रिकोण की विधि

जितने हाथ का त्रिकोण बनाना हो उसके भुजमान में ३ तीन का भाग दो जैसे एक हाथ का भाग तीसरा ८ अंगुल होगा। आठ अंगुल नीचे की भुज के मध्य से एक रेखा एक हाथ के २४ + ८= ३२ अंगुली का बनाओ। पश्चात् प्रकृतिक्षेत्र में ४ का भाग दो जैसे २४ ÷ ४ = ल० ६। प्रकृतिक्षेत्र की नीचे की भुजा को दोनों तरफ ६=६ अंगुल बढ़ाओ (पीछे तीनों के अन्त भागों को आपस में मिलाओ शुद्ध त्रिकोण बनेगा।

गोलकुण्ड विधि

जितना प्रकृतिक्षेत्र की एक भुजा का मान हो उसके २४ भाग करो। १३ भाग लो। जितना भागमान हो उसमें उसीका २४ वां हिस्सा मिलाकर व्यासार्घ बना लो परकाल को इतना ही चौड़ा कर वृत्त कुण्ड बनाओ शुद्ध कुण्ड होगा जैसे - १४ को १३+१३÷२४= ४।२।५।२= १३।४।२।५।२ इतने व्यासार्ध से वृत्त करने पर गोलकुण्ड एक हाथ का शुद्ध होता है, वैसे ही २ हाथ आदि का बनाओ॥

विषम षडस्रकुण्ड विधि

जो भी जिस क्षेत्र का भुजमान हो उसको २४ हिस्सा करो। उनमें से उसीमान के १८ भाग लो। पीछे उसी भाग में ७२ का भाग दे बालाग्रतक मान निकालो। इस मान को १८ भागों में

॥ श्री दुर्गादेव्यै नमः ॥

कुण्ड मण्डप विधान

यज्ञमण्डप बनाने के पहले स्थान का निरीक्षण कर लेना परमावश्यक है, कारण स्थान का भी प्रभाव फल पर बहुत कुछ पड़ता है। यद्यपि शास्त्रोक्त विधान के अनुसार, प्रवण, द्रव्य, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, शल्य आदि सभी परीक्षा करना तो कठिन ही प्रतीत होता है, तथापि सामान्य परीक्षा निम्न रीति से कर लें तदनन्तर मण्डप बनावें।

समुद्रगा नदीतीरे संगमे वा शिवालये।
आरामे विष्णुगेहे वा देवखातादिसन्निधौ।
गृहस्येशानभागे वा मण्डपं रचयेद् दृढम ॥

निम्नलिखित भूमि को त्याग देना चाहिये :—

स्फुटिता च स शल्या च वल्मीका रोहिणी तथा।
दूरतः परिवर्ज्या भूः कर्तुरायुर्धनापहा ॥
स्फुटिता मरणं कुर्यादूपरा धननाशिनी।
सशल्या क्लेशदा नित्यं विषमा शत्रुभीतिदा ॥

मण्डप-विधान

यद्यपि ग्रन्थान्तर में इसपर बहुत कुछ विचार किया गया है और मतमतान्तर भी बहुत हैं फिर भी यहां पर यथासम्भव निष्कर्ष बात को ही ध्यान में रखकर लिखा जाता है। मुख्यतः अधम, मध्यम और उत्तम ये तीन मण्डप प्रभेद माने गये हैं। दश हाथ का अधम बारह हाथ का मध्यम और सोलह हाथका उत्तम यह

किसी आचार्य का मत है। कोई १२-१४-१६ हाथ अधम, मध्यम और उत्तम मानते हैं। तुला दानादि में तो वीस हाथ मण्डप का क्षेत्रफल मानते हैं। मण्डप चतुरस्र होना चाहिये अर्थात् मण्डप का चारों कोण समान और सीधा होना चाहिये। विधान पारिजात में नव तरह का मण्डप निर्देश किया गया है, जैसे कि आठ हाथ का घन, दश हाथ का घोर; वारह हाथ का विराम, चौदह हाथ का काञ्चन, सोलह हाथ का कामराज, अठारह हाथ का सुघोष, वीस हाथ का घर्धर, वाईस हाथ का दक्ष और चौवीस हाथ का गहन। कहीं पर वारह हाथ से लेकर उपर्युक्त क्रम से अठाइस हाथ तक का भी उल्लेख है। वर्ण भेद से भी मण्डप का क्षेत्रफल का विस्तार दिखलाया गया है; जैसे वीस हाथ का ब्राह्मण के लिये, सोलह हाथ क्षत्रिय के लिये, वारह हाथ वैश्य के लिये, दश हाथ शूद्र के लिये और आठ हाथ हीन वर्ण के लिये मण्डप प्रशस्त बतलाया गया है। कोई सोलह चौदह और वारह हाथ भी उत्तम मध्यम अधम क्रम से मानते हैं। अतः उपर्युक्त मत को ध्यान में रखते हुए कार्यकारण के अनुसार व्यवस्था करनी चाहिये। इसके वाद जामुन या महुआ के लकड़ी का सोलह स्तम्भ (खम्भा) लगानी चाहिये। उक्त लकड़ी का जड़ छोड़कर जहां से दो शाखाएँ पृथक् होती हैं उसका सारिल भाग लेना चाहिये। खम्भा टेढ़ा नही होना चाहिये। खम्भे की मोटाई वारह अङ्गुल रहना चाहिये और खम्भा चौकोर या गोल होना चाहिये। उक्त सोलह खम्भों में चार खम्भा चारों वेदी के कोण पर आठ हाथ खड़ा होना चाहिये। उत्तम मण्डप में मण्डप के विस्तार के अनुसार आठ हाथ या नव हाथ खड़ाई हो सकता है। वांकी वारह खम्भे में चार खम्भा चारों मण्डप के कोण पर और दो दो चारों मण्डप के द्वार पर पांच हाथ खड़ाई का वाहर खम्भा रहना

चाहिये। ऊपर खम्भे की खड़ाई जो आठ हाथ या पांच हाथ दिखाई गई है उसका पञ्चमांश भाग भूमि के नीचे गाड़ना चाहिये। खम्भे का काष्ट छेदवाला नहीं होना चाहिये अर्थात् काष्ठ खता हुआ रहना चाहिये। यह काष्ठ और नीचे का गाड़ उपर्युक्त खड़ाई के प्रमाण से अतिरिक्त रहेगा। खम्भे के ऊपर जो वल्ले दिये जायेंगे वे चारों कोने पर सन्धि स्थान के दोनों तरफ छेदकर कील से युक्त होना चाहिये। वाहर मण्डप के कोण से वेदी के कोण तक खम्भे के ऊपर वल्ले पर तड़ख छेदयुक्त करके देना चाहिये। मण्डप के छप्पर से वेदी का छप्पर कम से कम चार अङ्गुली ऊपर उठा रहना चाहिये। इन वल्लों के ऊपर का जो चारों तड़ख उसके मुख भाग को एकत्र कर एक लकड़ी के ताम्वे में छेदयुक्त कर संलग्न कर देना चाहिये। उसके वाद उसपर यथाकाश लकड़ी देकर चारों तरफ ताल की चटाई से ढांक देना चाहिये या सुन्दर छप्पर वनाकर(खड़) से आच्छादित कर देना चाहिये।

मण्डप में चार द्वार होते हैं जिसमें दो हाथ का अधम, दो हाथ चार अंगुल का मध्यम और दो हाथ आठ अङ्गुल का उत्तम माना गया है। इन चारों द्वार के वगल में दो दो तोरण होते हैं जिसे कि द्वारशाखा कहते हैं। यह द्वार शाखा आठ होते हैं। द्वार शाखा वनाने के समय पूर्वादि क्रम से पीपल, गुल्लर, पाकरि और वड़ की लकड़ी का दो दो स्तम्भ देना चाहिये। ऊपर जो कील के विषय में लिखा गया है वह वैष्णवयाग में शङ्ख, क्र, गदा, पद्म युक्त होना चाहिये और शैव याग में त्रिशूल के समान नव अङ्गुल वड़ा देना चाहिये और २। अङ्गुल चौड़ाई होना चाहिये। मण्डप को सहर जमीन से कम से कम वारह अङ्गुल मिट्टी से भरकर ऊँचा वना देना चाहिये इससे अधिक भी शोभानुसार ऊँचा वना सकते हैं।

ध्वजा विचार

मण्डप पर पूर्वादि क्रम से आठो दिशाओ में निम्न रूप से ध्वजा देना चाहिये। ध्वजा दण्ड बाँस का दश हाथ होना चाहिये। ध्वजा का वर्ण पूर्व दिशा में पीला रंग का, अग्निकोण में रक्त रंग का, दक्षिण दिशा में काला रंग का नैऋत्य कोण में शुक्र के समान हरा रंग का, पश्चिम दिशा में श्वेत रंग का, वायव्य कोण में धूम्र रंग का, उत्तर दिशा में फीका हरा रंग का, ईशान कोण में श्वेत रंग का होना चाहिये। इन रंगों में मतान्तर भी ग्रन्थान्तर में मिलते हैं। लेकिन उपर्युक्त मत ही ठीक जचा है। उपर्युक्त ध्वजा के अतिरिक्त दो ध्वजा और देना चाहिये जो कि एक ईशान कोण और पूर्व दिशा के ध्वजा के मध्य में चित्र विचित्र रंग का और दूसरा नैऋत्य और पश्चिम दिशा के मध्य में धूम्र रंग का होगा। इन ध्वजाओं का क्रमशः गज, छाग (वकरी का वच्चा) महिष, सिंह, मत्स्य, मृग, अश्व, वृप, गरुड़ और हंस के चित्र से चित्रित कर देना चाहिये। इसी तरह पताका भी सात हाथ का उपर्युक्त पूर्वादि क्रम से देना चाहिये। रंग आदि भी पूर्ववत् रहेगा। ध्वजा या पताका का पञ्चमांश भूमि में गाड़ना चाहिये।

मण्डपको निम्न रूपसे सुसज्जित बनाना चाहियेः-

चूतपल्लवमालाढ्यं वितानैरुपशोभितम्। विचित्रवस्त्रसंछन्नं घंटाभिश्च विराजितम्॥ सफलैः कदलीस्तम्भैः क्रमुकैर्नारिकेलकैः। फलैर्नानाविधैर्भोज्यैर्दर्पणैश्चामरैरपि॥ भूषितं मण्डपं कुर्यान्नाना-पुष्पसुशोभितम्। कलशैर्घण्टिकाभिश्च साधारैः करकैस्तथा॥

अर्थात् मण्डप को आम्रपल्लव, पुष्प, माला, सुपारी, नारियल, दाड़िम, केलास्तम्भ, चित्रविचित्र वस्त्र घंटा, चामर आदि से पूर्ण सुसज्जित कर देना चाहिये।

मण्डप विधान
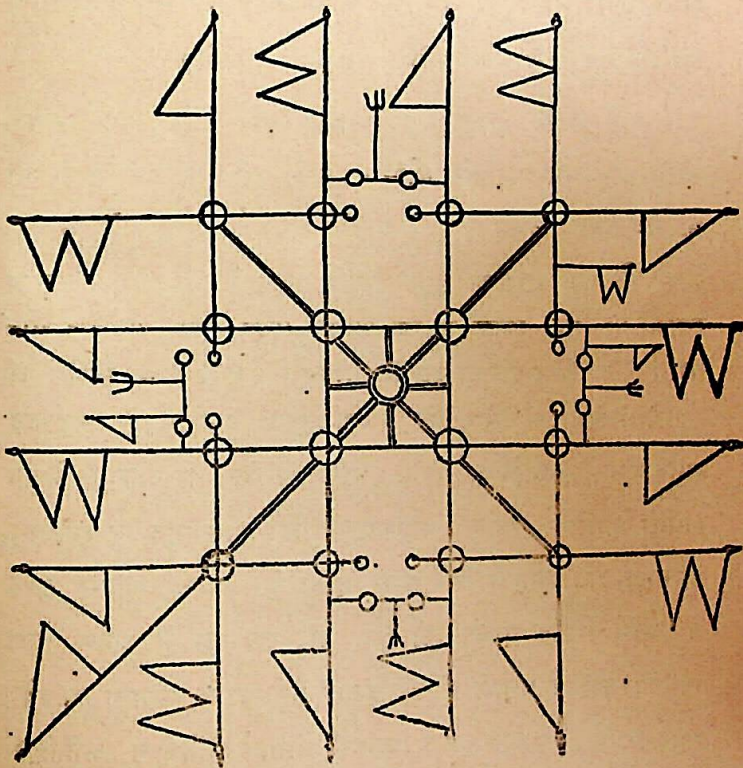
वेदी विधान

मण्डप क्षेत्र को पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण क्रम से तीन भाग में विभक्त कर मध्य भाग में ईंटे से बांधकर चतुरस्र वेदी बनाना चाहिये। वेदी समतल और दर्पण के समान चमकीला होना चाहिये। वेदी मण्डप के मध्य भाग में सात हाथ या पाँच हाथ बनाने का नियम है। वस्तुतः मण्डप के विस्तारानुसार जैसे पहले लिखा जा चुका है कि कार्यकारणानुसार मण्डप बनाना चाहिये वैसे ही वेदी बनाने में भी समझना चाहिये।

स्मार्त कर्म में अष्टाङ्ग कुण्ड होता है, स्थान, मान, क्षेत्र खात, नाभि, ओष्ठ, मेखला और योनि। आगे संक्षेप में इन आठों का परिचय क्रमशः दिया जाता है। जैसे स्थान :– साधन में कामना विशेष से दश तरहका कुण्ड वर्णन आया है। यथा :– चतुरस्र त्र्यस्र, पञ्चास्र, षडस्र सप्तास्र, अष्टास्र, पद्म वृत्त, अर्द्धचन्द्र और योनि। ये कुण्ड एक ही यज्ञ में कामना विशेष से कुण्ड विशेष भी बनाये जाते हैं :—जैसे पुत्रेष्टि में योनि कुण्ड, शुभकर्म में अर्द्धचन्द्र, शांति कर्म में वृत्त;पुष्ट्यर्थ पद्म, रोगनाश के लिये अष्टास्र, अभिचार शान्ति के लिये सप्तास्र, मारकाट के लिये षडस्र, भूत प्रेत शान्त्यर्थ, पञ्चास्र, शत्रु दमन के लिये त्र्यस्र होता है। परन्तु चतुरस्र कुण्ड से सर्वार्थ सिद्धि मानी गयी है। यदि एक यज्ञ में अनेक कुण्ड कामना विशेष से बनाना हो तो दिशा निम्न रूप में जानना चाहिये। शत्रुदमन के लिये चतुरस्र पूर्व दिशा में, भोगार्थ योनिकुण्ड अग्निदिशा

में, शत्रुमारने के लिये अर्द्धचन्द्र दक्षिण दिशा में. विद्वेष के लिये त्र्यस्र नैऋत्य दिशा में. शान्ति कर्म के लिये पश्चिम दिशा में वृत्त बनाना चाहिये उच्चाटन के लिये वायव्य दिशा में षडस्र, पुष्ट्यर्थ उत्तर दिशा में पद्म. मोक्ष के लिये अष्टास्र ईशान दिशा में, कामना भेद से एक एक कुण्ड वेदी से पूर्वोक्त दिशा में करें। सब कामना से नव कुण्डी बनाना चाहिये। संक्षेप में. उपर्युक्त कुण्डों के परिचय आगे दिये गये चित्र से जानना चाहिये।

(१)	सबसे ऊपर बांयी ओर	योनि कुण्ड	आग्नेय में
(२)	,, ,, बीच में	अर्धचन्द्र कुण्ड	दक्षिण में
(३)	,, ,, तीसरा	त्रिकोण	नैऋत्य में
(४)	मध्य में बांये से प्रथम	चतुरस्र	पूर्व में
(५)	वेदी में	मध्य में	वेदी
(६)	,, तीसरा	वर्तुल कुण्ड	पश्चिम में
(७)	सबसे नीचे पहला	षट्कोणकुण्ड	वायव्य में
(८)	,, बीच में	पद्म कुण्ड	उत्तर में
(९)	,, अन्तिम (तीसरा)	अष्टकोण कुण्ड	ईशान में

नोट—जहांपर पाठात्मक तथा जप प्रधान अनुष्ठान होगा वहां पर सर्वतो भद्र अथवा गौरीतिलक प्रधान मण्डल मध्य में ही होगा और यही प्रायः सर्वत्र होता ही है। उस स्थान पर नवमकुण्ड "गौरीपति महेन्द्रयोः" इस पक्ष के आधार पर पूर्व में चतुरस्र और ईशान के अष्टास्र के मध्य में आचार्य कुण्ड होगा। यह नवकुण्डी पक्ष "प्राच्यां चतुष्कोण भगेन्दु खण्डः" इस श्लोक के आधार पर है पञ्चास्र और सप्तास्र कहीं भी नहीं मिलता।

दक्षिण
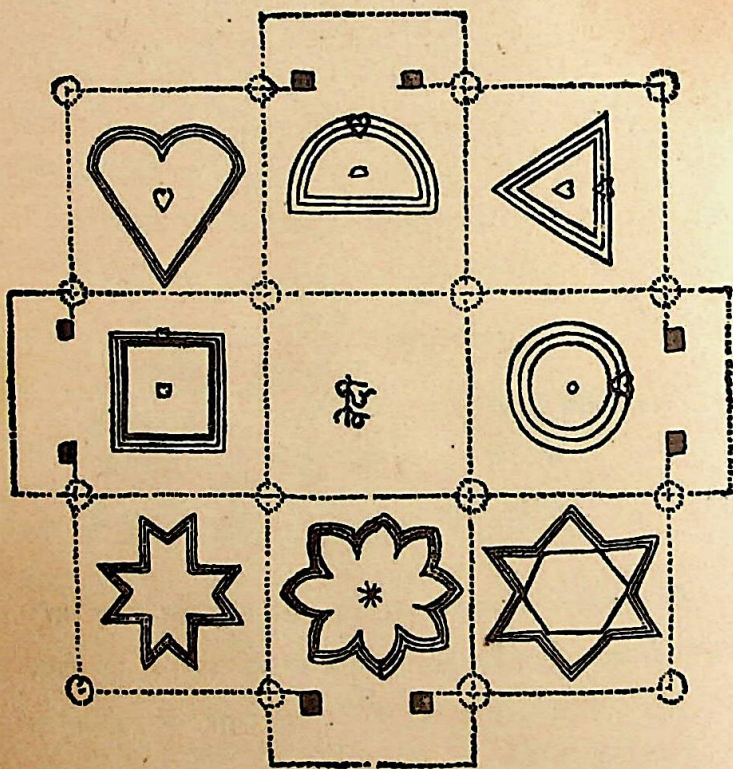
उत्तर

मिलाओ जैसे—एक हाथ में यह मान १८ अं० २ यव होगा। इतना ही चौड़ा परकाल कर एक वृत्त बनाओ। पश्चात् उत्तर की तरफ से इसी परकाल से ६ चिन्ह करो। एक एक चिन्ह को छोड़ तीसरे २ चिन्ह पर सूत्र दो षडस्र शुद्ध तैयार होगा।

दूसरे प्रकार का षडस्र

प्रकृतिक्षेत्र के २४ भाग करो—उनमें १५ भाग ग्रहण करो। इस भाग को दो जगह रक्खो। एक भाग में १६० भाग दो। भाग देने पर जो भी अंगुलादि फल मिले पूर्व भाग में हीन करो। जैसे-इसी प्रक्रिया से एक हाथ के में १५–१५÷१६०=१४ अं० ७ यव २ यूका मान हुआ। इसी मान से वृत्त बनाओ। उसी परकाल से वृत्त में उत्तर दिशा से ६ चिन्ह करो सब को मिलाओ सुन्दर षडस्र होगा।

पद्मकुण्ड विधिः

यह पहले कहा जा चुका है कि हरक्षेत्र की भुजमान में २४ का भाग दो जो अङ्गुलादि मान आवे उसे एक अंगुल का प्रमाण मान २४ वैसे मानों का एक हाथ मान एक हाथ के कुण्डों की निर्माण विधि के अनुसार क्रिया करोगे सब कुण्ड तैयार होंगे। इन्हीं मानों का प्रयोग हर कुण्ड की नाभि के रचना विधि में भी करना चाहिये। विधि सब की २४ अंगुल के हाथ मान की प्रक्रिया की भांति करनी चाहिये। अस्तु, अब कुण्ड निर्माण पर ध्यान दें।

२४ अङ्गुल प्रकृति के क्षेत्र में ८ का भाग दें। जो जितने अंगुल का क्षेत्र होगा उसी के अनुसार भिन्न २ अंगुलों के परिमाण छोटे बड़े होंगे। हर क्षेत्र को २४ अंगुल का मानें। जैसे- एक हाथ के क्षेत्रमान में ८ का भाग दिया तो ३ अंगुल आये पहिला वृत्त का यह व्यासार्ध है इससे प्रथम वृत्त बनाओ। पीछे इस पर दूसरा

वृत्त इससे दूना ६ अंगुल के व्यासार्ध से वनाओ, तीसरा तिगुने ६ अंगुल के व्यासार्ध से वनाओ। चौथा १२ अंगुल के व्यासार्ध से वनाओ। पांचवें वृत्त की विधि में कुछ विशेषता है कि उसे ५ गुणे से न वनाकर अर्थात् १५ अंगुल से न वनाकर अपने २८ वें हिस्से से हीन व्यासार्ध से वनाओ। एक हाथ में इसका मान १४ अंगुल ७ यव २ यूका १ लिक्षा २ वालाग्र होगा। अन्तिम वृत्त में दिशा विदिशाओं में ८ चिन्ह कर उनके वीच में आठ चिन्ह और करो। प्रथम वृत्त के ऊपर अर्थात् उसे सुरक्षित रखते हुए अन्तिम वृत्त में किये चिन्हों के हिसाव से दिशा विदिशा के वीच में पांचवे २ चिन्ह पर परकाल रखकर दिशा विदिशा में ८ पत्र करो। पत्र के मध्य केशर को छोड़ कर्णिका के मध्य में खोदो शुद्ध पद्म कुण्ड होगा।

अष्टकोण कुण्ड विधि

प्रकृतिक्षेत्र में २४ का भाग दो एक भाग होगा वैसे १८ भाग ग्रहण करो। इसे दो जगह रखो। एक में २८ का भाग दो अपने प्रथम भाग में जोड़ो। जैसे एक हाथ में यह मान १८ अंगुल ५ यव १ यूका १ लिक्षा १ वालाग्र होगा। यह व्यासार्ध हैं अर्थात् गोलचक्र का आधा है। इससे वृत्त वनाओ। दिशा विदिशा में इसपर ८ चिन्ह करो। इन चिन्हों के ऊपर एक एक को छोड़कर अर्थात् रेखा से अपने अपने तीसरे चिन्ह को मिलाते जाओ। वीच २ में एक चिन्ह छोड़ते जाओ ऐसे ८ रेखा देने पर तथा वृत्त व सन्धि रेखाओं के मिटाने से विषमाष्ट कोण शुद्ध होगा।

दूसरा प्रकार

मृदङ्गाकार वनाना हो तो प्रकृतिक्षेत्र के २४ हिस्से करो, उनमें से १४ हिस्से ग्रहण करो जैसे—२४ अंगुल के क्षेत्र में १४ हिस्से

चौदह अंगुल होते हैं। वैसे ही अन्य क्षेत्रों में भी चौदह हिस्से १४ अंगुल ही होंगे सिर्फ अपने २ हिसाव से अंगुलादि का मान बड़ा होगा। फिर अपने २ मान के चौदह हिस्सों को दो जगह रक्खो १ हिस्से में ४७ का भाग दो जो अंगुलादि मान आवे प्रथम भाग में जोड़ो। यह व्यासार्ध होगा। इस व्यासार्ध से एक वृत्त परकाल से करो। उस वृत्त पर दिशा विदिशाओं ८ चिन्ह करो आपस में चिन्हों पर रेखा देकर मिलाओ अष्टास्र शुद्ध मृदङ्गाकार होगा।

किस कुण्ड को किस दिशा में बनाना चाहिये इसपर विचार।

नवकुण्ड वनाने हों तो चतुरस्र पूर्व में योनिकुण्ड अग्नि में अर्ध-चन्द्र नैऋत्य में त्रिकोण पश्चिम में वृत्त वायव्य में तथा षट्कोण उत्तर में पद्म ईशान में, ईशानमें अष्टकोण, और अष्टास्र वा चतुरस्र के वीच में चतुरस्र वा गोल आचार्य कुण्ड वनावें।

पञ्च कुण्डी पक्ष में—

पूर्व में चतुरस्र दक्षिण में अर्धचन्द्र पश्चिम में वृत्त उत्तर में पद्म ईशान में चतुरस्र वा वृत्त वा अष्टास्र वनावें।

एक कुण्डी पक्ष में

पश्चिम में उत्तर में वा ईशान में वनावें।

अब खात आदि का विधि देखें।

अव खात योनि आदि का निर्माण प्रकार वताते हैं।

खात

योनि कुण्ड की खुदाई के विषय में दो मत हैं एक मत के अनुसार खात कुण्ड की लम्बाई चौड़ाई के अनुसार ही होनी चाहिये। एक हाथ में एक हाथ का सा दो हाथ आदि के में उनकी लम्बाई चौड़ाई के अनुसार।

दूसरा मत है कि मेखला की ऊँचाई और खुदाई मिलाकर लम्बाई चौड़ाई के बराबर मान करना चाहिये। जैसे एक हाथ के कुण्ड में मेखला ६ अंगुल खुदाई १५ अंगुल मिलाकर २४ अंगुल होती है विशेषतया ऐसा ही करते हैं।

वस्तुतः पूर्वोक्त प्रकार ही उत्तम है न कि दूसरा, क्योंकि मेखला के विना खात कुण्ड की लम्बाई चौड़ाई के बरावर में वहुत प्रमाण है। अतः सभी कुण्डों की खुदाई अपने २ मान से होनी चाहिये। जैसे एक हाथ के में २४ अंगुल खुदाई होनी चाहिये न कि मेखला निश्चित मान २४ अंगुल हो इसी प्रकार दो हाथ में ३३ अं० ७ यव ४ यूका ४ लिक्षा ३ वालाग्र ५ रथरेणु ४ त्र्यस्र खुदाई होनी चाहिये।

कण्ठ

कण्ठ एक हाथ में १ अंगुल होना चाहिये अर्थात् एक अंगुल भूमि कण्ठ को छोड़कर मेखला वनानी चाहिये। किसी ने २ अंगुल कण्ठ लिखा है उसका भी अभिप्राय एक अंगुल से ही है क्योंकि पूर्व पश्चिम उत्तर दाक्षण के १ १ अंगुल को मिलाकर दो लिखा है। शास्त्र में कुण्ड के २४ वें हिस्से के अनुसार कण्ठ मान वताया है। अतः एक हाथ में १ अंगुल भूमि छोड़कर मेखला वनावें। २ हाथ में ३३, ७, ४, ४, ३, ५, ४ के २४ भाग के समान वनावें। ऐसे ही अन्य कुण्डों में समझें।

मेखला

मेखला के विषय में ऐसी बात है कि शास्त्र में ५ मेखलाएं उत्तम बताई हैं और २ मेखला मध्यम एक मेखला अधम बताई है अथवा ऐसा भी मिलता है कि तीन मेखलाऐं उत्तम, दो मध्यम एक अधम होती है। दोनों ही मतों से एक मेखला अधम है। अधिकतर लोग त्रिमेखलाएं बनाते हैं।

१ यदि एक मेखला बनावें तो चार अंगुली ऊंची छः अंगुल चौड़ी अपने २ मान से बनावें। अर्थात् कुण्ड के मान में २४ का भाग देकर १ अंगुल मान लें उसी के अनुसार सभी क्रिया करें। कोई कोई विद्वान् एक मेखला को चार अंगुल चौड़ी चार अंगुल ऊंची मानते हैं। यथा रुचि करें। २ मेखला करें तो ५ अंगुल ऊंची ४ अंगुल चौड़ी करें। कोई २ कुण्ड के मान से पष्ठांश के बराबर ऊंचाई और अष्टांश के बराबर चौड़ाई बताते हैं। दोनों ही ठीक है यथा रुचि करें। अधिकतर विद्वान् तीन मेखलाएं बनाते हैं उनके बनाने का प्रकार यह है कि हर कुण्ड के मान में २४ का भाग देकर उस कुण्ड के १ अंगुल मान को निकालें उसी मान से पहली मेखला ४ अंगुल दूसरी ३ अंगुल तीसरी दो अंगुल चौड़ी बनावें। इनकी ऊंचाई चौड़ाई समान हो अर्थात् मेखलायें क्रमशः प्रथमा प्रकृतिक्षेत्र के षष्टांश के बराबर और दूसरी अष्टमांश के तीसरी द्वादशांश के बराबर की जावे।

पांच मेखलाएं बनावे तो उनकी ऊंचाई ६ अंगुल हो और चौड़ाई क्रमशः ६, ५, ४, ३, २ अंगुल होनी चाहिये सारी चौड़ाई २० अंगुल होती है। ऊंचाई के विषय में यहां बात यह है कि प्रकृतिक्षेत्र में पांच का भाग दें उस २ के मान से १ अंगुल ६ यव ३ यूका १ लिक्षा ५ वालाग्र होगा। इनके मिलाने पर ६ अंगुल ऊंचाई होती है। पहली में पूर्वोक्त ऊंचाई हो दूसरी में दूनी,

तीसरी में ३ गुनी ऐसे ही पांच तक करें पूरामान ६ अंगुल होगा। यह अपने २ क्षेत्रमान से करना चाहिये सब मान पारिभाषिक हैं। सब क्षेत्रों के २४ वां हिस्सा अपनी २ अंगुल मान है।

विधान पारिजात में तो त्रिमेखलाओं के निर्माण में निम्न प्रकार से बताया है कि—एक हाथादि के कुण्ड में मेखला की ऊंचाई तो अपने २ मान से नौ अंगुल ही होनी चाहिये। लेकिन चौड़ाई अधोलिखित प्रकार से करें।

हाथ	चौड़ाई	मान	अंगुलादि ऐसे हैं।
१	४	३	२
२	६	४	३
३	७	५	३
४	८	६	४
५	९	७	५
६	१०	८	८
७	१२	९	७
८	१२	१०	८
९	१३	११	९
१०	१४	१२	१०

योनि

यानि भी अपने २ प्रमाण से २४ भाग अंगुल समझकर बनाना चाहिये।

बनाने का प्रकार यह है कि अपने २ मान से १२ अंगुल लम्बी ८ अंगुल चौड़ी और १२ अंगुल ऊंची बनावें और यह आगे को १ अंगुल झुकती हुई हो तथा भीतर १ अंगुल कण्ठ के बाहर निकली हुई हो और इसके मध्य में गड्ढा रहे जो दो अंगुल कछुआ की पीठ सा हो। मिट्टी के गोले २ दोनों और पृष्ठ पर रखें। १ अंगुल

चौड़ी तथा एक अ० ऊंची उसकी परिधी चारों ओर हो। योनि के अग्रभाग के मध्य में छिद्र हो सब कुण्डों में ऐसा करें।

यदि १२ अंगुल की तीनों मेखला ४-४ अ० समान करें तो १० अं० चौड़ी १५ अं० लम्बी १५ अं० ऊंची बनावें। शेष कार्य पूर्व-वत् करे।

नाभि

नाभि के वनाने का प्रकार यह है कि स्व स्व प्रमाण से ही नाभि बनाई जाती है। आकार भी नाभि का कुण्ड का सा ही होता है या सभी कुण्डों में कमलाकार स्वकीय २ प्रमाण से वनाई जाती है। वनाने के निर्माण के विषय में निम्न वातों पर ध्यान दें।

१—नाभि कुण्ड के व्यास के द्वादशांश ऊंची तथा षष्ठांश के मान से लम्बी चौड़ी होती है। इससे सिद्ध हुआ कि एक हाथ के कुण्ड में नाभि २ अं० ऊंची तथा चार अंगुल चौड़ी एवं चार अं० लम्बी होती है। यहां भी द्विहस्तादि के कुण्ड में २४ वां भाग १ अं० समझकर कार्य करें।

२—यदि पद्माकार वनावें तो नाभि का जो क्षेत्रफल आवे उसका द्वादशांश वाहिर छोड़ अवशेष भूमि के तीन भाग करो। बीच के भाग में कर्णिका करो उससे दूसरे में केसर वाहिर के शेषांश में आठ पत्र करो उसके आगे शेष का द्वादशांश से पत्तों के दल वन जावेंगे।

पद्मकुण्ड में नाभि न करे। योनि कुण्ड में योनि न करे।

शम्

॥ श्रीः ॥

अब (आजकल) श्रद्धालु यजमान मिल नही रहे अतः श्रौत स्मार्त कर्मों का प्रायः लोप देखा जाता है। कुण्ड के निमित्त गड्ढा करने में जौ भर या आधा जौ भर न्यूनाधिक होने से उसका बहुत भारी दोष लिखा है अतः आधुनिक कर्मकांडी लोग संक्षिप्त होम कर्म में कुण्ड न बना उसकी जगह प्रायः वेदी ही बनाते हैं। इसलिये एक हाथ की वेदी को लेकर प्रमाण स्वरूप से कुछ वर्णन किया जाता है। (एकादशीति पदं कुर्या द्रुणभिः कनकेन च) यहां से प्रारम्भ करके अग्नि के स्थापना करने के लिये तीन मेखलाओं से युक्त विधान से कुण्ड करे। विशेषतया योनि का आकार बनावें अथवा बुद्धिमान् सारे ही कर्मों में कुण्ड की जगह वेदी ही बनावे यह परिशिष्ट प्रदीप में लिखा है। मत्स्य पुराण में ऐसा लिखा है कि वैदिक मंत्रों से या तत्तद्देवता के नाम मंत्रों से जो कि प्रणव और व्याहृतियों से युक्त हों शिख्यादि पैंतालिस देवताओं की पूजा करें और त्रि मेखला युक्त एक हाथ का कुण्ड बनाकर होम करें। इसी तरह शौनक कारिका में भी लिखा है कि वास्तु कर्म में यजमान के एक हाथ परिमित कुण्ड बनाकर होम करें। एक ही कार्य में गुणों में विशेषता होने के कारण फल में भी विशेपता रहती है यह कात्यायन ने कहा है। लेकिन इस कुण्ड विधान में बड़ी विद्वता की आवश्यकता है अन्यथा बड़ा अनर्थ हो जाता है। जैसे परशुराम पद्धति में कुण्ड मण्डप के विषय में लिखा है कि कुण्ड की खुदाई लम्बाई चौड़ाई जैसी वर्णित है वैसी ही होनी चाहिये। यदि उसमें कमी बेशी (न्यूनाधिक) हो जाती है तो वह कुण्ड यजमान का वंशनाशक हो जाता है। लिखा है कि कुण्ड यदि खोदने में अधिक खुद गया तो यजमान रोगी हो जावेगा और यदि कम खुद गया

तो यजमान के धेनुधन का नाश हो जावेगा। कुण्ड चिनने में टेढ़ा चिना गया तो संताप होगा। यदि मेखलायें छिन्न-भिन्न हो गयीं तो यजमान की मृत्यु फल है। यदि बिना मेखलाओं के बनाया गया तो शोक होगा मेखलायें प्रमाण से बड़ी हुई तो निर्धन बना देगी। यदि योनि के बिना कुण्ड बनाया गया तो स्त्री की मृत्यु होगी। यदि कण्ठ नहीं छोड़ा गया तो यजमान की मृत्यु होगी। इस तरह से कुण्ड में कहीं भी बनावट में त्रुटि होने से ऐसा फल लिखा है। इसलिये पहिले दोषों पर विचार कर कुण्ड निर्माण करे। कुण्ड की लम्बाई चौड़ाई बराबर होती है। ध्वजाय के लिये टेढ़ा ऊपर की ओर एक अंगुल अधिक खोदना चाहिये। सब कुण्डों की स्थापना करने में ध्वजाय सर्व सिद्धियों को देनेवाला है, ध्वजाय रहित कुण्ड सर्व अनिष्टफलकारक है। ठीक ढंग से बनाया हुआ कुण्ड ध्वजाय के बिना त्याज्य है। इसलिये कुण्ड विधान के लिये ध्वजाय पहिले लाना चाहिये। पहले ध्वजादि आयानुसार क्षेत्र-फल को साधारण माप से न्यून या अधिक करके शुद्ध कर लेना चाहिये परन्तु ध्यान रहे व्यास को चौड़ाई से गुणाकर आठ का भाग देने पर जो शेष रहता है वह ध्वजादि होता है।

गृह निर्माणादि में ध्वजादि आय निकाले जाते हैं उससे यहां विलक्षणता है जैसा कि लिखा है। इनकी संख्या आठ है जैसा कि विश्वकर्मा ने लिखा है लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा करो आठ का भाग दो जो शेष बचे उससे ध्वजादि आय जानो। संख्या इस प्रकार हैं १ ध्वज २ धूम ३ हरि ४ श्वा ५ गौ ६ खर ७ गज ८ काक इनका फल भी लिखा है (देखो मुहूर्तचिंतामणि वास्तु प्रक-रण श्लो० ४।५ और उसकी पीयूषधारा।) इन सब बातों को कुण्ड सिद्धि में पूर्णतया विचारना चाहिये। वेदी में कुछ विचारने की जरूरत नहीं वेदी मान से बड़ी हो जावे या छोटी हो जावे तो

कोई दोषापत्ति नहीं। कुण्ड बनाने में असमर्थ हो तो वहां स्थण्डिल (वेदी) का विधान है। प्रमाण जैसे कुण्ड रत्नाकर में लिखा है कि कुण्ड बनाने में असमर्थ हैं तो स्वल्प होम में लाल मिट्टी से वा बालूका से वेदी बनावें। वेदी या तो एक अंगुष्ठ जितनी ऊंची होनी चाहिये या चार अंगुल ऊंची होनी चाहिये और चौकोनी होनी चाहिये एक हाथ की जितनी बड़ी की जावे सब जगह ऐसा करना चाहिये। इस विषय में कुण्डोद्यत ग्रन्थ में लिखा है कि कुण्ड के अभाव में एक हाथ की चौकोनी वेदी बनावे। इसी तरह कुण्ड-कौमुदी में भी लिखा है कि स्वल्प होम करना हो तो कुण्ड को छोड़कर एक हाथ की वेदी बनावे वा बाण प्रमाण से बनावे। कुण्ड-मार्तण्ड में भी लिखा है कि स्वल्प होम करना हो तो बालु से अथवा लालरंग की मिट्टी से एक हाथ की चौकोनी वेदी बनावे जो कि कछूए की पीठ की तरह ऊँची हो और आचार्य की चार अंगुल परि-मित ऊँची अथवा एक अंगुल ऊंची हो ठीक मानी गई हैं। कितने ही विद्वान् तो वेदी में भी मेखला और योनि बनाते हैं और वे प्रमाण बतलाते हैं कि वेदी में कुण्डोक्त मेखलायें वेदी की आकृति की बनानी चाहिये जैसे कुण्ड में योनि लगाई जाती है उसी तरह वेदी में भी करना चाहिये। होम कर्म में वेदी मेखला सहित उत्तम मानी गई है। कुण्ड में ही कण्ठ लगाया जाता है वेदी में नहीं। वेदी में मेखला लगाना शास्त्र सम्मत है क्योंकि मेखला वगैरह अग्न्यायन के ही धर्म हैं—लेकिन कोटि होमादि पद्धति में कमलाकरभट्ट दिनकर भट्ट रामकृष्णभट्ट आदि ने सिद्धांत रूप से कहा है कि ये वचन निर्मूल है और इसे मान भी लिया जावे तो बौधायन शाखवालों को ही ये वचन मानने चाहिये। माध्यन्दिनीय शाखावाले हम हैं. हमारे मन्तव्य नहीं हैं। कुण्ड की तरह मेखला बनाकर उसके पश्चात् योनि बनाकर चौकोनी वेदी पर होम करना बौधायन के मत में

मन्तव्य हैं। इस एक श्लोक के अतिरिक्त किसी भी महर्षि का नाम इस विषय में नही मिलता इसलिये वेदी में मेखला वगैरह नहीं होती है यह मेरा मत है विशेषतया देखना चाहें तो स्मार्तवल्लभ ग्रंथ में देखें।

वास्तुमण्डलम्

कृष्ण
रक्त
श्वेत

कृष्ण रक्त श्वेत

श्वेत रक्त कृष्ण

श्वेत
रक्त
कृष्ण

देविमूर्तिस्थापने सर्वतोभद्रमण्डलस्थाने गौरीतिलकमण्डलं कर्त-व्यम् ॥ प्राच्योदीच्याः कृता रेखा अष्टादशैवाष्टादशपदेषु स्थापये देवांनवाशीतिशतद्वयम् ॥ १ ॥

गौरीतिलकमण्डलम्

सर्वतोभद्रमण्डलम्

कृष्ण

रक्त

श्वेत

॥ तत्र विशेषः ॥

एतेषु कुण्डेषु खातादीनि पञ्चाङ्गानि यथायथंरचयेत्। तथाच चतुरस्रे, त्रिकोणे, वर्तुले, षट्कोणे, पद्मे, अष्टकोणेतु पश्चिम मेखलासु पूर्वमुखीं तथैव अर्द्धचन्द्रे दक्षिणमेखलासूत्तरामुखींयोनिं विन्यसेत्। योनिकुण्डे तु योनिं न दापयेत्॥

॥ श्री ॥

अथ वटुकभैरवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

कालसंकर्षणतंत्रे

ओं अस्य श्री वटुकभैरवस्तोत्रमन्त्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषिः। अनुष्टुप्छंदः। आपदुद्धारकवटुकभैरवो देवता ह्रीं बीजं। भैरवी वल्लभः शक्तिः। नीलवर्णो दण्डपाणिरिति कीलकम्। समस्तशत्रु दमने समस्तापन्निवारणे सर्वाभीष्टप्रदाने च विनियोगः। ओं कालाग्निरुद्रऋषये नमः। शिरसि ॥ १ ॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥ २ ॥ आपदुद्धारकवटुकभैरवदेवतायै नमः हृदये ॥ ३ ॥ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ भैरवीवल्लभशक्तये नमः पादयो ॥ ५ ॥ नीलवर्णो दंडपाणिरिति कीलकाय नमः नाभौ ॥ ६ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ७ ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥ अथ मूलमंत्रः ॥ ओं ह्रीं वां वटुकाय क्ष्रौं आपदुद्धारणाय कुरुकुरु वटुकाय ह्रीं वटुकाय स्वाहा ॥ इति मूलमंत्रः ॥ अथ ध्यानम् ॥ नीलजीमूतसंकाशो जटिलोरक्तलोचनः ॥ द्रंष्ट्राकरालवदनः सर्पवासोपवीतवान्॥ १ ॥ दंष्ट्रायुधालंकृतश्च कपालस्रग्विभूषितः हस्तन्यस्तकरोटीको भस्मभूषितविग्रहः ॥ २ ॥ नागराज कटीसूत्रो

सर्वकामप्रदः शर्वः सर्वपापनिकृंतन ॥ इत्थमष्टोत्तरशतं नाम्न सर्वसमृद्धिदम ॥ २० ॥ आपदुद्धारजनकं वटुकस्यप्रकीर्तितम ॥ एतच्च शृणुयान्नित्यं लिखेद्वास्थापयेद्गृहे ॥ २१ ॥ धारयेद्वा गले बाहौ तस्य सर्वाः समृद्धयः ॥ न तस्य दुरितं किंचिन्न [illegible] भयम ॥ २२ ॥ न चापि स्मृतिरोगेभ्यो डाकिनीभ्यो [illegible] न कूष्माण्डग्रहादिभ्यो नापमृत्योर्न च ज्वरात ॥ २३ ॥ माससेकं त्रिसंध्यं च शुचिर्भूत्वा पठेन्नरः ॥ सर्वदारिद्र्य निर्मुक्तो निधिं पश्यति भूतले ॥ २४ ॥ मासद्वयमधीयानः पादुकासिद्धिमान भवेत् ॥ अंजनं गुटिकां खड्गं धातुवादरसायनम ॥ २५ ॥ सारस्वतं च वेतालवाहनंबिलसाधनम ॥ कार्यसिद्धिं महासिद्धिं मंत्रंचैव समीहितम ॥ २६ ॥ वर्षमात्रमधीयानः [illegible] एतत्ते कथितं [illegible]

[illegible] वटुकाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम ॥

॥ श्री ॥

इतिश्री माधोपुरनगरनिवासिना सांकृतिगोत्रत्रिवेदिकुलोद्भवेन श्रीगंगाबक्ससूनुना श्रीदुर्गाभक्तेन गौडेन पण्डितेन नानगराम शर्मणा संगृहीता सर्वाङ्ग दुर्गा पूजाः पद्धति समाप्तश्चायंग्रंथः ॥